

JAIN INScriptions.

जैन लेख संग्रह ।

भारतके प्राचीन इतिहासके प्रमाणोंके प्रधान साधन लेख ही हैं। विशेषतः जैनियोंके सिलसिले वार इतिहासके अभाव में इन्हीं के लेखों का संग्रह बहुत ही आवश्यक है। इतिहास का बहुतसा भाग शिलालेख पर निर्भर है। जो बात शिलालेखसे जानी जा सकती है वह इतिहाससे नहीं, क्योंकि इतिहास में समय परिवर्तनसे फेरफार पड़ जाता है किन्तु पत्थर पर जो कुछ लिखा गया वह पत्थर के अन्त तक बना रहता है। अतएव लेखों से इतिहास को बहुत सी सहायता मिल जाती है। यह ध्यानकी बात है कि आज कल बहुतसे सज्जनोंकी इस पर दृष्टी भी आकर्षित हुई है। मैं इस विषय पर अधिक लिखकर पाठकोका समय नष्ट करना नहीं चाहता, किन्तु संक्षेपमें कुछ सूचना देता हूँ ताकि इस ओर और भी लोग ध्यान देकर ऐसे संग्रहसे लाभ उठावें और मेरा परिश्रम सफल करें। मुझे लेखों का बहुत दिनों से प्रेम था, खास करके हमारे जैन लेख देखनेही मेरा जी हराभरा हो जाता था, परन्तु आंग्रेजी जर्नल, पत्रिका, रिपोर्ट और स्वदेशी भाषाके पत्र या पुस्तकों में लेख देखने के सिवाय स्वयं कोई लेख देखनेका अवसर न मिला था। कुछ दिनोंसे यह जैन लेखों की उपयोगिता मेरे मस्तिष्क में ऐसी घुम पड़ी कि जहाँ कहीं किसीके पास लेखका हाल सुना या किसी मन्दिरादि स्थानों में गया तो वहाँके लेख देखे बिना चित्त को शान्ति नही होती थी। इस कारण मैंने स्वयं जो लेख पढ़े हैं इतने इकट्ठे हो गये कि उनका एक संग्रह हो सकता है। इसी विचारमें यह कार्यमें मैं प्रवृत्त हुआ हूँ। मेरा संकल्प आदि भाषाओंमें अधिक प्रवेश नहीं है या मैं कोई बड़ा विद्वान नहीं हूँ, विशेष कर जैन शास्त्र में मेरा स्वल्प प्रवेश है, इस कारण बहुतने लेख पढ़नेमें भ्रम हो गया होगा सो, आशा है, कृपया सुधी जन सुभार कर पढ़ेंगे।

लेख खास करके पत्थर और धातु पर ही होते हैं। पत्थर परका लेख प्रायः से गीने धरा हो जाता है। इस कारण प्रायः पत्थर पर का लेख कुछ बाल में अस्पष्ट हो जाता है। अतएव मैंने विशेष करके धातु परके लेखों को अधिक पढ़ने का प्रयत्न किया है। लेखों पर प्रायः निम्नलिखित बातें लिखी रहती हैं—

- १ । वर्ष, मास, तिथि, वार आदि । २ । वंश, गोत्र, कुलों के नाम ।
 ३ । कुर्शिनामा । ४ । गच्छ, शाखा, गण आदिके नाम ।
 ५ । आचार्योंके नाम, शिष्योंके नाम, पहावली ।
 ६ । देश, नगर, ग्रामोंके नाम । ७ । कारिगरोके, खोदनेवालोंके नाम ।
 ८ । राजाओंके, मंत्रियोंके नाम । ९ । समसामयिक वृत्तान्त इत्यादि ।

ऊपरके विवरणों में जैन श्रावकोंकी ज्ञाति, वंश, गोत्रादि और जैन आचार्योंके गच्छ शाखादिकी दो सूची पाठकोंकी सेवामें उपस्थित की जायगी, जिसमें सुगमता के लिये (१) ज्ञाति, वंश, गोत्र (२) संवत्, आचार्योंके नाम और गच्छ रहेगा। सुज्ञ पाठकगणको ज्ञात होगा कि बहुतसे लेखोंमें वंश, गोत्रादिका उल्लेख पूर्णरूपसे पाया नहीं जाता है—जैसे कि कोई २ लेखमें केवल गोत्र ही लिखा है, ज्ञाति, वंशका नाम या पता नहीं है। ज्ञाति वंशादिके नाम भी कई प्रकारसे लिखे हुए मिलते हैं, जैसे कि “ओसवाल” ज्ञातिके नाम लेखोंमें आठ प्रकार से लिखे हुए मिलते हैं [१] उपदेश [२] उकेश [३] उवपश [४] ऊपश [५] उयसवाल [६] ओसलवाल [७] ओश [८] ओसवाल। लिखना निष्प्रयोजन है कि यहां मूनीमें ऐसे आठ प्रकारके नामोंको एक ‘ओसवाल’ हेडिङ्ग में दिया गया है। इसी प्रकार कोई २ लेखोंमें आचार्योंके नाम, उनके शिष्योंके नाम, गच्छादि का विवरण पूर्णतया नहीं है। प्रतिष्ठास्थानोंके नाम भी बहुतसे लेखोंमें विलकुल नहीं है। पुरातत्त्वप्रेमी सज्जनगण अच्छी तरह जानते हैं कि प्राचीन विषय में ऐसा बहुतसी कठिनाइयाँ मिलती हैं, स्थान २ में प्राचीन लेख घिस गये हैं, इस कारण बहुत सी जगह प्रयत्न करने पर भी खुलासा पढ़ा नहीं गया है।

यह “लेख संग्रह” संग्रह करनेमें हमें कहां तक परिश्रम और व्यय उठाना पड़ा है सो सुज्ञ पाठक समझ सकते हैं; “नहि वन्ध्या विजानाति गर्भप्रसववेदनाम्।” अधिक लिखना व्यर्थ है। यह संग्रह किसी भी विषयमें उपयोगी हुआ तो मैं अपना समस्त परिश्रम सफल समझूंगा।

आशा है कि और २ आचार्य, मुनि, विद्वान् और सज्जन लोग भी जैन लेख संग्रह करनेमें सहायता पहुँचावें और उनके पास के, या जिस स्थानमें वे विराजते हों वहाँके जैन लेखोंको प्रकाशित करें तो बहुत लाभ होगा और शीघ्र ही एक अत्युत्तम संग्रह बन जायगा। किं बहुना।

कलकत्ता
 इ० स० १९१५ }

निवेदक—
 पूरणचन्द्र नाहर।

	पत्रांक		पत्रांक
चिन्तामणिपार्श्वनाथका ,,	... १८७	केकिंद ।	
कड़लाजीका ,,	... १८६	पार्श्वनाथजीका मन्दिर २२२
महावीरजीका ,,	... "	सेवाची ।	
तपगच्छका उपाध्य	... १८२	महावीरजीका मन्दिर २२३
ओसिया ।		सांडेगाव ।	
महावीर स्वामीका मन्दिर	... १६२	शान्तिनाथजीका मन्दिर २२६
सचियाय माताका ,,	... १६८	नाना ।	
डुंगरीके चरण पर	... १६६	जैन मन्दिर २२६
पाली ।		लाठराई ।	
नौलखा मन्दिर	... "	जैन मन्दिर २३१
गोडीपार्श्वनाथका मन्दिर	... २०४	हटुंदी	
लोढारो वासका ,,	... २०५	महावीरजीका मन्दिर "
शान्तिनाथजीका ,,	... "	माताजीका ,,	... २३३
सोमनाथजीका ,,	... "	खण्डरमें मिला हुआ पत्थर पर २३४
नाडोल ।		जालोर ।	
आदिनाथजीका मन्दिर	... २०६	महावीरजीका मन्दिर २४१
ताम्र शासनमें	... २०८	चोमुखजीका ,,	... २४३
नाडलाई ।		तोपखानामें	... २३८
अदिनाथजीका मन्दिर	... २१२	हरजी ।	
नेसिनाथजीका ,,	... २१७	जैन मन्दिर २४३
कोट सोलंकी ।		जूना ।	
जैन मन्दिर	... २१८	जैन मन्दिर २४४
घाणेराव ।		जूना बेडा ।	
जैन मन्दिर	... "	जैन मन्दिर २४५
घेलार ।		नगर गांव ।	
भादिनाथाजीका मन्दिर	... २१९	जैन मन्दिर २४७
फलोदी ।			
बड़ा जैन मन्दिर	... २२१	जैन मन्दिर २४७

				पत्रांक					पत्रांक
	सांचोर				वधीणा				
जैन मंदिर	२४८	जैन मंदिर	२६७
	रत्नपुर				लाज-नोतीडा				
जैन मंदिर	२४८	जैन मंदिर	२६७
	बिलाडा				नोदिया				
जैन मंदिर	२५०	जैन मंदिर	२६६
	बोहिया (मारवाड़)				कोटरा				
जैन मंदिर	२५२	जैन मंदिर	२६६
	कोटार [गोड़वाड़]				वरमाण				
जैन मंदिर	२५१	जैन मंदिर	२६८
	किराडू				ठोटाना				
सुमानपालका	जर्ण मन्दिर	२५१	जैन मंदिर	२६६
	सुंधा पहाडी				माकरोरा				
जैन मंदिर	२५२	जैन मंदिर	२६६
	घटियाला				घपली				
जैन मंदिर	२५४	जैन मंदिर	२७५
	पिंड्याला				नीपेरा				
जैन मंदिर	२६२	जैन मंदिर	२७५
	वीरवाहा				जीराघर्य पार्श्वनाथ				
जैन मंदिर	२६५	जैन मंदिर	२७७
	दसंतगढ़				अजारा पार्श्वनाथ				
जैन मंदिर	२६५	जैन मंदिर	२७७
	पालही				बापडा पार्श्वनाथ				
जैन मंदिर	२६५	जैन मंदिर	२७७
	हालाजर				दाम्बरा				
जैन मंदिर	२६६	जैन मंदिर	२७७
	दाम्बरा				पटना म्युजियम				
जैन मंदिर	२६६	जैन मंदिर	२७७
	दण्डना								
जैन मंदिर	२६६					२७७

प्रतिष्ठा स्थान ।

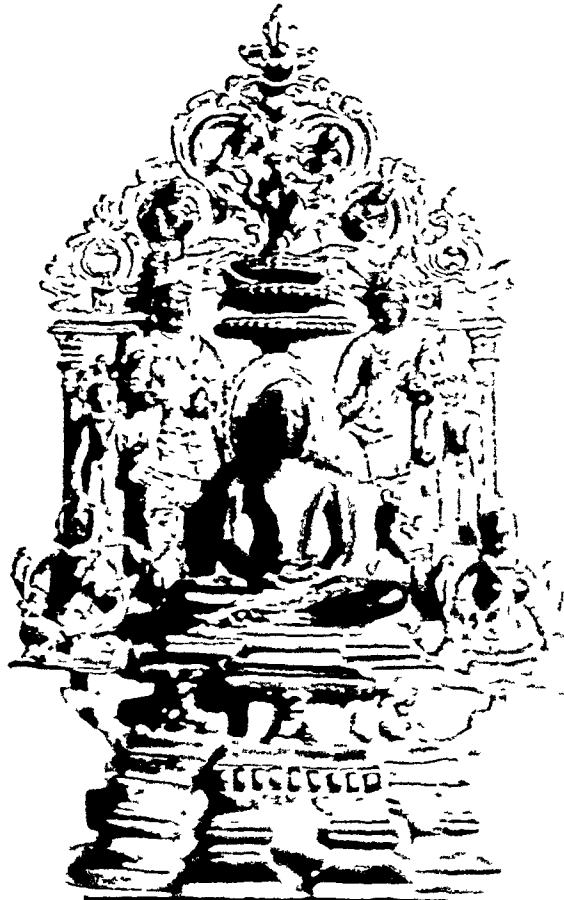
अजमेर	५६६
अजिमगञ्ज (मुर्शिदाबाद)	८५।७६।१४२
अतरी	४०
अलवर	१०००
अष्टार	५३२
अहमदाबाद	६६।७।१।१।२।३।५।६।३६।०।३।७।२।३।८।२
					४४४।५२६
अहिलाणी	४४८
भागरा	२८५।३०७।३०।६।३।१०।३।१।१
					३२२।४३।३।५०६
जामेण	१२५
आरामपुर	३२७
आवरणी	७६८
भासलपुर	८५६
इडर	६२७
इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली)	५२६
उदयगिरि (राजगृह)	२५३।२५४।२५५
उदयपुर	६४५।७४४
उद्यतनगर	६८७
उपकेश (ओसिया)	१३४
उमापुर	४८९
ऋजुवालुका	३३६
कडी	३५
कमलमेरु	४८३
कर्पटहेटक	६८१
कलकत्ता	८७
	६७४।६७५।६७६

लेखांक

कलागर (कालाजर)	६५६
काकंदी	१७३
काकर	४८१
कायपा	४७१
कालघरी	६४
कालुपुर	६६७
कास्मावजार (मुर्शिदाबाद)	८१।८४
कीराट कूप	६४२
कोठारा	६५२
कोरडा	१०६
खहेडा	८९६
खुदीमपुर	२२१
गणवाड़ा	६४७
गंधार	३९५।६०८।६५३।७६६
गुनशिला	१७७।१७८।१७९।१८०
गुब्बर ग्राम (वडगांव)	२७१
ग्रोहडी	३
गोरईया	५५४
गोलकुंडा	७७२
गोलीपा	४७६
चंपकदुर्ग	८५०
चंपकनर	४०४
चंपानगर	१४३।१६५
चंपापुुरी	१३७।१४६।१५८
चिमणीया	५१७
चुंपरा ग्राम	६२४
जयनगर	१६३
जलवाह	२७९
जवाच	१६

		लेखांक		लेखांक
जाणांधारा	...	२६३	नन्दियाक (नोदिया)	...
जालोर	...	८३७।६०५	नल	...
भावरनगर	...	७१५	नलीतपुर	...
जावालीपुर	...	८६६।६००	नागपुर	...
श्रीरावली पार्श्वनाथ	...	६७३।६७६	नाणा	...
श्रीर्णदुर्ग	...	६७७	नापलीया	...
जैनगर	...	५३६	पत्तन	...
जोधपुर	...	६६२।६२८।६३८		...
झुंझु	...	६२३	घाटण	...
डिंडिला ग्राम	...	८६६	रहिन	...
डेढेया	...	५६८	पालिका	...
तिजारा	...	४२३	पाली	...
दंतचई	...	७४	पलनद	...
दधानीया	...	४६६	पाटलिपुर	...
दिलि	...	५०७	पाटलिपुर	...
दिवता	...	६२४	पाटली	...
दिवरन्दर	...	६३०	पाटलीपुर	...
देवक पत्तन	...	६६६।६७०	पाटलीपुर	...
धधूटा	...	६	पाटलीपुर	...
धमरवा (कच्छ)	...	६२३	पटना	...
धाडू	...	६२३	पाटनलि (पाटली)	...
धर	...	६२६	पाटली	...
धुडेवा	...	६०७।६१६	पानलिगर	...
नहुन	...	८३७।६३६।६३५।६३८	पाकली	...
नहुन	...	६४३।६४४	पतिवडा	...
नहुन जातिर	...	८४३।६४३।६४६।६४७	पतिवडा	...
नहुन	...	८४३।६४४।६४६।६४७	पतिवडा	...
नहुन	...	८४३	पतिवडा	...
नहुन	...	८४३	पतिवडा	...





श्री वेंकटेश्वर
 श्री १०८ स्वामी
 श्री १०८

Metal Image of Lord Venkateswara of Tirumala
 at Tirumala Temple, Tirumala, Andhra Pradesh, India



संवत् १९०० मिति आषाढ सित ए गुरौ श्री आदिनाथ विंशं प्रतिष्ठितं । बृहत खरतर
कटारक गच्छेत् ज० । श्री जिन हर्ष पट्टे दिनकर ज० श्री जिन सौजाग्य सूरिनिः कारितं च
श्रीमात्र वंशे टाक गोत्रे मोह्या दास पुत्र हनुतसिंहस्य जार्या फूलकुमार्या स्वश्रेयोर्य ।

॥ श्री नेमिनाथजी का पंचायति मन्दिर ॥

संवत् १९११ व० माघ सु० ५ सोमे उत्सवाक्ष ज्ञाती खिगा गोत्रे समदडीया उडकेण
सदागते पु० कम्माकेन जा० कस्मीरदे पु० हेमा संसारचंद देवराज युतेन
श्री नेमिनाथ विंशं कारितं श्री उपकेश गच्छे श्री कुकुदाचार्य संताने प्र० श्री कक
मृगिनिः ।

संवत् १९२३ वर्षे वैशाख वदि ४ गुरो उत्सवाक्ष ज्ञातौ कटारीया गोत्रे सा० संखण
सा० मत्सा० विंशं जा० सोममिनि सु० सा० आडु नाम्ना जार्या विरणि सुत सा०
सुग्गनि प्रमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंशं कारितं
श्री सार्धामागर मृगिनिः ॥ श्री ॥

संवत् १९३३ वर्षे वैशाख वदि १ प्राग्वाट ज्ञा० व्यव० पेता जार्या मडी सुत
सा० मत्सा० विंशं जा० सदादेवा मडिनेन स्वपुत्रिज श्रेयोर्य श्री ज्ञानिनाथ ।
श्री देवविमल मृगि श्री कसल कसम मृगिनिः सिक्त्रा वास्तव्य ।

संवत् १९३३ वर्षे वैशाख वदि १० सोमे जवाड वास्तव्य बृवट ज्ञानीय मंत्रीश्वर गो

दो० स० हेमाकेन जा० राणी स० श्री पार्श्वनाथ विं० का० प्र० श्री तेजरत्न सूरिनिः ॥

॥ श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर ॥

[17]

संवत् १५०५ वर्षे माघ वदि २ रवौ उंशवाल ज्ञातीय जण्मारी गोत्रे सा० गेढहा पु० सो० पी जा० पोलश्री पु० हराकेन आत्म पुण्यार्थ श्री अजिनंदन विं० कारापितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गढे ज० श्री विजयचंद्र सूरि पढे श्री साधुरत्न सूरिनिः ।

[18]

संवत् १५२५ वर्षे वै० व० ११ बुधे छांवडी वास्तव्य उकेश ज्ञातीय व्य० पीमसी जा० वानू पुत्र व्य० गणमा जा० वावू पुत्र व्य० केढहाकेन जा० मानू वृद्ध जा० घूघा पुत्र मेघादि कुटुंब युतेन श्री मुनिसुव्रत स्वामी चतुर्विंशति पद कारितः प्रतिष्ठितः ॥ ० वम्रगत चांइ सगीया श्री मर्त सूरि श्री उकेश विंवदणीक गढे ० प्रतिष्ठा कारिता । * (अक्षर अस्पष्ट है) ।

[19]

संवत् १५२७ वर्षे माघ वदि ५ शुक्रे मंत्रि दली० वंश डुल्लह गोत्रे ठ० पाददण्मकीकेन पु० ठ० कर्णसी ठ० उजयचंद ठ० हेमा पुत्री अजाइव सहितेन परिवार युतेन श्री शीलज नाथ विं० कारितं श्री खरतर गढे श्री जिनसागर सूरि पढे श्री जिनसुंदर सुरयन्तपढे श्री जिनदृष सूरिनिः प्रतिष्ठितं ।

[20]

संवत् १५६३ वर्षे माह सुदि ५ गुरौ श्रेष्ठि गोत्रे ना० दना जा० वाजददे सु० इदा ना० पढह सु० ठिरा थिरा छांवा सद्दपा युतेन श्री पद्मप्रदु विं० कान्ति उपकेश गढे ककुदाचार्य संताने ज० श्री देवगुप्त सूरिनिः प्रतिष्ठितं ॥

[12]

संवत् १९०० मिति आषाढ सित ए गुरो श्री आदिनाथ विंभं प्रतिष्ठितं । वृहत खत
जहारक गहेश ज० । श्री जिन हर्ष पट्टे दिनकर ज० श्री जिन सौजाग्य मूरिजिः कारितं च
श्रीमाल बंशे टाक गोत्रे मोहया दास पुत्र हनुतसिंहस्य चार्या फूलकुमार्या स्वश्रेयोर्थ ।

॥ श्री नेमिनाथजी का पंचायति मन्दिर ॥

[13]

संवत् १५११ व० माघ सु० ५ सोमे उंसवाल झाती सिगा गोत्रे समदडीया उडकेण
सुहडा जा० सुहागदे पु० कम्माकेन जा० कस्मीरदे पु० हेमा संसारचंद देवराज युतेन
स्वश्रेयसे श्री नमिनाथ विंभं कारितं श्री उपकेश गहेश श्री कुकुदाचार्य संताने प्र० श्री कक
सूरिजिः ।

[14]

संवत् १५२३ वर्षे वैशाख वदि ४ गुरौ उंसवाल झाती कटारीया गोत्रे सा० संखण
जा० राणी सुत सा० सिंघा जा० सोमसिरि सु० सा० आडु नाम्ना चार्या विरणि सुत सा०
पुनपाल सा० सोनपाल सुरपति प्रमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंभं कारितं
प्रतिष्ठितं च । श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥ श्री ॥

[15]

संवत् १५५३ वर्षे वैशाख सुदि * प्राग्वाट झा० व्यव० पेता चार्या मदी सुत व्यं
जोजाकेन जा० राजू च्रातृ राजा रत्ना देवा सहितेन स्वपुर्विज श्रेयोर्थ श्री शांतिनाथ विंभं
का० प्र० तपागहेश श्री हेमविमल सूरि श्री कमल कलस सूरिजिः सिरुत्रा वास्तव्य ।

[16]

संवत् १६१५ वर्षे वैशाख वदि १० चोमे जवाठ वास्तव्य हुवड झातीय मंत्रीश्वर गोत्रे

दो० स० हेमाकेन जा० राणी स० श्री पार्श्वनाथ विं० का० प्र० श्री तेजरत्न सूरिनिः ॥

॥ श्री चिंतामणि पार्श्वनाथजी का मंदिर ॥

[17]

संवत् १५०५ वर्षे माघ वदि २ रवौ उशवाक्ष ज्ञातीय जण्णारी गोत्रे सा० गेदहा पु० नो० पी जा० पोलश्री पु० ह्राकेन आत्म पुण्यार्थ श्री अजिनंदन विं० कारापितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गच्छे ज० श्री विजयचंद्र सूरि पद्वे श्री साधुरत्न सूरिनिः ।

[18]

संवत् १५१५ वर्षे वै० व० ११ वृधे लांबडी दाम्नाच्य उकेश ज्ञातीय व्य० पीमनी जा० वान् पुत्र व्य० गणमा जा० वान् पुत्र व्य० केद्व्याकेन जा० मान् गुरु जा० तथा पुत्र मेघादि कुटुंब युतेन श्री मुनिमुव्रत स्वामी चतुर्विंशति पद्वे काग्निः प्रतिष्ठितः ॥ ७ वसुगत चांड रागीया श्री मर्त मृरि श्री उकेश विंबदणीक गच्छे ७ प्रतिष्ठा काग्निता । * (अक्षर प्रमृष्ट द्वे) ।

19

संवत् १५२७ वर्षे माघ वदि ५ शुक्रे मंत्रि वही० वंश दुसुद्ध गोत्रे ठ० पाददण्णार्माकेन पु० ठ० कर्णसी ठ० उजयचंद्र ठ० हेना पुत्री अज्ञातव मन्त्रितेन परिवार युतेन श्री जीनरा नात्र दिवं वारितं श्री खगतर गच्छे श्री जिनसागर मृरि पद्वे श्री जिनमुंदर मृग्यमयद्वे श्री जिनहर्ष मृरितिः प्रतिष्ठितं ।

20

संवत् १५८३ वर्षे माघ वदि ५ शुक्रे अंदि गोत्रे सा० वडा ना० वासुदेव सु० जडा ना० परद सु० विग दिग लांबा मन्त्र उमा युतेन श्री वसुदेव विं० काग्निं वसुदेव गच्छे कर्णदा-
वार्य मन्त्रने न० श्री वेणुन मृरितिः प्रतिष्ठितं

संवत् १६३० वर्षे माघ सुदि १३ दिने पत्तन वास्तव्य सा० सांडा जार्या लपमाइ सुन
बीर पालेन जार्या रंगाइ प्रमुख कुटुंब युतेन श्री संजवनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तथा
गच्छाधिराज श्री हीरविजय सूरिनिश्चिरं नंदतात् ।

॥ रौप्य के मूर्ति पर ॥

संवत् १७३३ का जैष्ठ शुक्ले १३ शनिवासरे श्री शांतिजिन पंचतिथीका उस वंशे दुधे
डिया गोत्रे बाबु हर्षचंद तत्पुत्र बाबु विसनचंद्रेन कारितं पुनमिया विजय गछे श्री शांति
सागर सूरिनिः प्रतिष्ठितं ।

॥ श्री संजवनाथजी का मंदिर ॥

संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३ गुरौ दिने ज० ज्ञातीय श्री वरलक्ष गोत्रे नाथु संताने
राजा जार्या राजलदे सुत सह सावदू राणा हुदा श्री मध्वयुतौ पितृ मातृ श्रेयसे श्री चंद्र
प्रज स्वामी विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बृहन्नछे श्री मुनिशेखर सूरि संताने श्री महेंद्र सूरि
पट्टे श्री श्री श्री रत्नाकर सूरिनिः शुभं ॥

संवत् १५४६ वर्षे माघ सु० १० रवौ श्री श्रीमाल ज्ञा० सं० जूजच जार्या सं० जरमादे
सुत सं० समरसी जार्या धनाइ सु० रा० थर्जन केन जार्या अहिवदे पु० सं० राणा शाणा
प्र० कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्य विंबं कारि० प्रति० श्री बृहत्तपा श्री ज्ञानसागर
सूरि पट्टे श्री उदय सागर सूरिनिः । बुयुज ग्राम ॥

संवत् १५६३ वर्षे माह ददि ११ दिने रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय सषु शापायां । वष
केसव जा० जरमी सुत व्य० वीका जा० संपू । त्रा० व्य० आसाकेन नार्या अमरादे जात
व्य० छाडण प्रमुख कुटुंब युतेन श्री वासुपूज्य चतुर्विंशति पद कारितः प्र० श्री सूरिजिः श्री
स्तम्भ तीर्थे । कुतवपुर वास्तव्यः ॥ शुभं भवतु ।

संवत् १५७७ वर्षे वैशाख सुदि ७ सोमे उंस्वाद्य ज्ञातीय सुराणा गोत्रे साह शिवदास
जिनदासकेन गृहे नार्या नाई नारिग सुत जात राजपाल सहितेन मातु नारिग श्रेयोथ श्री
कुंथुनाथ विंदं श्री चतुर्विंशति जिन सहित काराप्रित प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गृहे नंदिवर्द्धन
सुरि पदे नयचंद सुरिजिः ॥

संवत् १९०० वर्षे फागुण सु० १२ — — — — गृहे नट्टारक गुजकीर्ति उपदे-
सात् अत्ताल ज्ञाती गोपल गोत्रे सं । गोर राज नार्या सेदस पुत्र सं० चंगट राज नार्या जीर्ण
पुत्र बाळूमणी नित्यं प्रणमंति ॥

॥ श्री शान्तिनाथजी वा मंदिर ॥

संवत् १५१० वर्षे पौ० सु० १५ शुके उपवेद्य ज्ञातीय क० निवा ना० प्रीमखदे सुत क०
रामाकेन जा० आत् प्रमुख हंडव युतेन निज श्रेष्ठे श्री सुमतिनाथ विंदं वा० प्र० श्री नरा
मय नाथः श्री श्री श्री रत्नशंकर सुगिजिः ॥

॥ गणपतिनाथजी मंदिरात्वात् ॥

संवत् १५३२ वर्षे फागुण सुदि १२ दिने रवौ उंस्वाद्य गोत्रे साह शिवदास

घिरी सुवूणी पु० थावरसिंह । जटादि युतेनं स्वश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विंवं का० प्र० श्री खर
तर गछे श्री जिनचंद्र सुरि पदे श्री जिनचंद्र सुरिजिः ।

॥ श्री सांख्यिचाजी का मंदिर - रासबाग ॥

[30]

संवत् १५४६ माघ बदि ४ सुचिंतित गोत्रे सा० सोनपाल सु० सा० दासू जा० लालो
नाम्न्या पु० सिवराज जार्या सिंगारदे पु० चूहड़धन्ना आसकरणादि सहितया स्वपुण्यार्थं श्री
अजितनाथ विंवं का० प्र० उपकेश गछे कुकुदाचार्य सं० श्री देवगुप्त सुरिजिः ॥

जिला - मुर्शिदाबाद । स्थान - बालूचर ।

॥ श्री आदिनाथजी का मंदिर ॥

[31]

पत्थरों परकां लेख ।

॥ श्री जिनाय नमः ॥ श्री मत्स्यकामादित्य राज्यात् संवत् १७४५ मिते । श्री शाखिवाहन
शकाब्दाब्दके १९१० प्रवचमाने । मासोत्तम माघ मासे शुक्ले पक्षे ३ तृतीयायां तिथौ गुरुवासरे
श्री तपगच्छाधिगज चट्टारक श्री विजय जेनेंद्र सुरीश्वर विजय राज्ये । महिमापुर वास्तव्य
ठजयानी गोत्रे । साहजी श्री जीवणदासजी तत्पुत्र धर्मनार धुरंधर साहजी श्री केशरी
सिंहजी तस्यचार्या धर्म कर्मणि रता बीवी सरुपोजी पं । श्री चावविजय गणिरुपदेशात् ।
स्वच्छ जिन विंवं स्थापनार्थं ॥ बालोचर नगरे श्री जिन प्रासाद कारितं । प्रतिष्ठितं पं० चाव
विजय पं० गंतीर विजय गणिजिः । यावत्तराष्ट्रमेरोद्धि । यावन्नैलोक्य चाखरं । तावत्तिष्ठतु
प्रासादं निर्दिहन्तु सुनिश्चलं ॥ १ ॥ द्विविहृतं पं० चूपविजयेन ।

श्री जिन शासनो जयति ॥ श्री मत्तपागण शुजांवर धर्मरश्मिः । श्री सूरि हीर विज-
योर्जित ज्ञान लक्ष्मी ॥ यस्योपदेश वचनाय्यवनेश मुख्यो । हिंसानिराकृत परो प्रगुणो वञ्चुव
१ ॥ तत्पट्टे क्रमतोरवीव विजय जैनेन्द्र सूरेश्वर । स्तद्राज्ये प्रगुणो जिनालय वरो वालोचरे
डंगके ॥ श्री संवेश सहायता शुजरुचिः श्री केशरी सिंहक । स्तत्पत्न्या जिन राज जक्ति
वशतः कारापिनायं मुदा ॥ २ ॥ श्री वीर हीर सूरेश संघाटक गुणाकरः । वाचकोत्तम
चूमान्यः श्री रुद्धि विजयोजवत् ॥ ३ ॥ तद्विव्य जाव विजयोपदेश वाक्येन कारितं रस्यं
प्रतिष्ठितं च सदनं जिन देव निवेशनं । शुजतः ॥ ४ ॥ जडं जवतु संघस्य जडं प्रासाद कारके
तथा जडं तपा गहे जडं जवतु धर्मिणां ॥

॥ धातुर्योपरका लेख ॥

संवत् १४९० वैशाख सुदि ५ जार उडिया गोत्रे । सा० जौदा सुत । सा० पदाकेन पु०
फासु रजनादि लङ्घितेन स्वचार्या पदम श्री पुण्यार्थ श्री विमलनाथ विंवं श्रीहेमहंस सुरिनिः

संवत् १५१३ वै० सुदि ५ गुरौ श्री हुंवड ज्ञातीय फडी० शिवराज सुत महीया श्रेयमे
प्राट् हीराकेन प्राट्ज इरूया सुतेन श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्रति० वृद्ध तपा पद्मे श्री
रत्नसिंह सुरिनिः ॥

संवत् १५२० वर्षे नाथ वदि ५ गुरौ जपकेन ज्ञातीय श्रे० तेजा जा० तेजलेदे पुत्र जृवा
जा० पतसमादे पुत्र देवदास गणपति पोपट जैसिंग पोचा युतेन करणा श्रेयार्थं संजवनाथ
विंवं का० श्री साधू पुर्णिमा पद्मे श्री पुष्पचंद्र सूरिणामुपदेशेन प्र० श्री विजयतद्र सुरिणा
कडी वास्तव्यः ॥

संवत् १५३४ वर्षे — शुभ ३ दिने सा० अरसी जाया रानू पुत्र सा० लूणाकेन जार्या टीसु प्रमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ विंभं कारापितं प्रतिष्ठितं तथा गच्छे श्री ब्रह्मी सागर सुरिजिः पान विहार नगरे ॥

संवत् १५५३ वर्षे माह सुदि ६ दिने वारडेवा गोत्रे सा० कोहा जा० सोनी पु० साह सीहा सहजा सीहा जा० होरू श्रेयोर्थ श्री कुंथुनाथ विंभं कारितं प्र० श्री कारंट गच्छे श्री — सुरिजिः ।

संवत् १५७० वर्षे आषाढ सुदि २ रवौ श्री श्रीमालान्वये डण्डा गोत्रे साह श्री चंद्र पुत्र चौतावहण अजय राजा रायमह्व आसधीर आजा जार्या केली पुत्र सा० योगा इह्हा शकतन पासा नरपाल साह सहसमह्व पुत्र चिः कीर्त्तिसिंह साह रायमह्व पुत्र हेमा गजपति ठकुरसी । सा योगा पुत्र महिपाल ठा० इह्हा जार्या इह्हाणदे पुत्र सहसमह्व सीहमह्व साह आसधर जार्या हासी सिंगारदे पुत्र राया शकतन जा० शकतादे पुत्र पेटा जइतमल । पेटा पुत्र जैरोदास जइतमलेन राया शकतन पुण्यार्थः श्री शान्तिनाथ चउवीस पट्ट कारित प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री साधुरत्न सूरि पट्टे श्री कमलप्रज सूरि तत्पट्टे श्री उदयप्रज सुरिजिः ।

॥ श्री विमलनाथजी का मंदिर ॥

संवत् १४०२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ शनि० डुगड़ गोत्रे सा० धीहा पु० डाड़ा पुत्र साटा हाग रग सुकनान्या डाडा पितृव्य सा० रुह्हा पु० रेडा श्रेयसे श्री आदिनाथ विंभं कारितं प्र० वृहज्जतीय श्री अमरप्रज सुरिजिः ॥ शुभं चवतुः ।

संवत् १५१५ वै० च० ५ अतरी ग्रामे प्राग्वाट सा० आसा जा० संसारी पुत्र सा०

कर्म सीहैन जाण सारू सुत गोइंद गोपा हापादि कुटुंब युनेन जातृज माहराज श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत विंव काण प्रण तपा श्री सोम सुंदर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सुरिनिः ॥

[41]

सं० १५५१ वर्षे वैशाख सुदि १३ दिने श्री उकेश वंशे सखवाल गोत्र साण लाला जाण लखनादे पुत्र साण जावडेन जाण जवणादे पुत्र रायपाल तेजा बेला खीला रामपाल चार्या आंदू पुत्र सोइंट प्रमुख सपरिवार युतेन श्री मुनि सुव्रत विंव कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गछे श्री ३ जिनसमुद्र सूरिनिः ॥

[42]

उं संवत १५७६ वर्षे श्री खरतर गछ जाड़ीया गोत्रे साण नाथू पुत्र साण पावडू साण हाकू जाण नीप्या रा-सटक्या मपतीरू प्रमुख कुटुंबिन्या श्री आदिनाथ विण काण जण श्री जिनहंस सुरिनिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[43]

सं १६५७ वर्षे वैश्वंशु ५ जौमे श्रीमाख ज्ञातीय ढोर गोत्रे साण धरमगज चार्या धीरू सुत साण लतीदास चार्या वाण ईजाणी ताच्यां पूखार्थं श्री शांतिनाथ विंव कारितं प्रण खरतर गछे श्री जिनचंद्र सुरिनिः । श्री जिनजानु सूरिणासुपदेशेन । अर्चाईः ४२ वर्षे श्री अकरवर राज्ये ।

[44]

॥ सौप्यके सुनिंदर ॥

॥ सं १६२० नि । आत्तेज सुदि ९ दिने बुद्धदारे वृ । बाबु श्री प्रनार मियर्जा तपुत्र लवनीपत्त वि । धनरत्त उत्रासिं श्री आदिजिन विंव वागपिनं वाण मदाज्ञान प्रतिष्ठितं ॥ शांति जिनं. नेम जिनं. पार्श्व जिनं. धीर जिनं पखनिधीं । निः निगनर सुद २ ॥ श्रीः ॥

संवत् १५३४ वर्षे — शुभ ३ दिने सा० अरसी चाया रानूं पुत्र सा० लूणाकेन चार्या टीसु प्रमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ विंभं कारापितं प्रतिष्ठितं तपा गष्टे श्री वदमी सागर सुरिजिः पान विहार नगरे ॥

संवत् १५५३ वर्षे माह सुदि ६ दिने वारडेचा गोत्रे सा० कोहा जा० सोनी पु० साह सीहा सहजा सीहा जा० हीरूं श्रेयोर्य श्री कुंथुनाथ विंभं कारितं प्र० श्री कारंट गष्टे श्री — सुरिजिः ।

संवत् १५७० वर्षे आषाढ सुदि ३ रवौ श्री श्रीमालान्वये डण्डा गोत्रे साह श्री चंद्र पुत्र चौताव्हण अजय राजा रायमह्य आसधीर आजा चार्या केली पुत्र सा० योगा इह्हा शकतन पासा नरपाल साह सहसमह्य पुत्र चिः कीर्त्तिसिंह साह रायमह्य पुत्र हेमा गजपति ठकुरसी । सा योगा पुत्र महिपाल ठा० इह्हा चार्या इह्हाणदे पुत्र सहसमह्य सीहमह्य साह आसधर चार्या हासी सिंगारदे पुत्र राया शकतन जा० शकतादे पुत्र पेता जइतमस । पेता पुत्र जैरोदास जइतमलेन राया शकतन पुण्यार्थः श्री शांतिनाथ चउवीस पट्ट कारित प्र० श्री धर्मघोष गष्टे श्री साधुरत्न सूरि पट्टे श्री कमलप्रज सूरि तत्पट्टे श्री उदयप्रज सुरिजिः ।

॥ श्री विमलनाथजी का मंदिर ॥

संवत् १४०२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ शनि० डुगड़ गोत्रे सा० धीहा पु० डाडा पुत्र साटा दारा रग मुकनाच्या डाडा पितृव्य सा० रुह्हा पु० रेडा श्रेयसे श्री आदिनाथ विंभं कारितं प्र० वृद्धनीय श्री अमरप्रज सुरिजिः ॥ शुभं जवतुः ।

संवत् १५१५ वे० च० ५ अतरी ग्रामे प्राग्वाट सा० आसा जा० संतारी पुत्र सा०

कर्म लीहनेन जाण सारु सुत गोइंद गोपा हापादि कुटुंब युनेन जातृज माहराज श्रेयसे श्री सुनि सुव्रत विंवं काण प्रण तपा श्री लोम सुंदर सूरि शिष्य श्री रत्नशेखर सुरिजिः ॥

[41]

सं० १५५१ वर्षे वैशाख सुदि १३ दिने श्री उकेश वंशे सखवाल गोत्र साण लाला जाण ललनादे पुत्र साण जावडेन जाण जवणादे पुत्र रायपाल तेजा बेला छीला रामपाल जार्या आंदू पुत्र लोहंट प्रमुख सपरिवार युतेन श्री सुनि सुव्रत विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गढे श्री ३ जिनसमुद्र सुरिजिः ॥

[42]

सं० संवत् १५७६ वर्षे श्री खरतर गढ जाड़ीया गोत्रे साण नाथू पुत्र साण पादह साण लकू जाण नीप्या रा-सटक्या सपलीजू प्रमुख कुटुंबिक्या श्री आदिनाथ विंवं काण जण श्री जिनहंस सुरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

[43]

सं० १६५७ वर्षे वै० श्रु० ५ नैमे श्रीमाख ज्ञानीय ढोर गोत्रे साण धरमगज जार्या वीरु सुत साण लतीवाल जार्या वाण ईजाषी ताभ्यां पूष्यार्थ श्री शान्तिनाथ विंवं कारितं प्रण खरतर गढे श्री जिनचंड सुरिजिः । श्री जिनजानु सूरिगामुपदेशेन । अजाईः ४२ वर्षे श्री अकबर राज्ये ।

[44]

॥ सौम्यके नृनिगर ॥

॥ सं० १६२० नि । आनेज सुदि एतियो दुवदारे वृ । वावु श्री प्रनार निवर्ती नत्पुत्र ललनीपन नि । धनजन ठासिण श्री आदिजिन विंवं कानपितं साण मदायात प्रतिष्ठितं ॥ शानि जिनं, नेस जिनं, पार्श्व जिनं, धीर जिनं दशतिथीं । निः निगमर सुद २ ॥ श्रीः ॥

॥ श्री सन्जव नाथजी का मन्दिर ॥

॥ पञ्चरोपरका लेख ॥

[45]

संवत् १७४४ मिते बैशाख सुदि ५ रवौ । श्री बाबूचर पुरे । ज० श्री जिनचंद्र सूरि जी विजय राज्ये वाचनाचार्य श्री अमृतधर्म गणिनां० पं० कृमाकल्याण गणिः । तच्च कुमारदि युतानामुपदेशतः श्री मकसूदायाद वास्तव्य समस्त श्री सङ्गेन श्री सन्जव जिन प्रासादः कारितः प्रतिष्ठापितश्च विधिना । सतां कल्याण वृद्ध्यर्थम् ॥

[46]

अथ चैत्य वर्णनं । निधान कटपैर्नवजिर्मनोरमै । विशुद्ध द्वेजः कलशैर्विराजितं ॥ मुनारु वंटावलि कारणाकृति । ध्वनि प्रसन्नी कृत शिष्टमानसम् ॥ १ ॥ चलत्पताका प्रकरोः प्रकास । माकारयज्ञूनमंनिन्द्यसत्त्वान् ॥ निषेभयद्भिश्चित दुष्टबुद्धीन् । पापात्मनश्चापततः कथंचित् ॥ २ ॥ संसेव्यमानं सुतरां सुधीजि । जेव्यात्मनिर्चुरितर प्रमोदात् ॥ बाबूचराख्यं प्रवरे पुरेदो । जीयाच्चिरं सन्जवनाय चैत्यम् ॥ ३ ॥

धातुयोके मूर्त्तिपर ।

[47]

सं संवत् १५१५ वर्षे आषाढ वदि १ उकेश वंशे ठीक गोत्रे म० सिवा ज्ञा० हर्षु पु० म० हीराकेण ज्ञा० रङ्गादे पुत्री सेनाइ प्रमुख परिवार युतेन श्री चंद्रप्रज विंदं कारितं श्री खरतर गढे श्री जिनचंद्र सूरि पटे श्री जिनचंद्र सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्रीः ॥

[48]

सं १५१५ वर्षे आषाढ वदि १ श्री मंजिदलीय ठ० बाबू नार्या धर्मिणि पुत्र स० अचल रातेन पुत्र उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेन देवपाल धीरसेन पहिराजादि युतेन सन्जव

यसे श्री आदिनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गछे श्री जिनसागर सूरि पट्टे श्री जिन
सुन्दर सूरि पट्टालङ्कार श्री जिनहर्ष सूरिवरैः ॥ श्री ॥

[49]

सं० १५३३ वर्षे वैशाख षडि ४ शुभे श्री उपकेश वंशे सं० देवदा चार्या ब्रह्मदे पुत्र वक्रव
सुभावकेण चार्या मेघू पुत्र जयजस्ता पौत्र पूना सहितेन स्वश्रयसे श्री अश्वल गछेश्वर श्री जय
केसरि सूरिणामुपदेशेन श्री सम्भवनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ।

[50]

सं० १५३४ वर्षे मार्गशर्ष सुदि १० शुभे उपकेश ज्ञातौ । आदित्यनाग गोत्रे सं० गुणधर
पुत्र सं० कालण जा० कपूरी पुत्र सं० हेमपाल जा० जिणदेवाइ पुत्र सा० सोहिसेन जा० पार
दत्त देवदत्त चार्या नातू युतेन पित्रोः पुण्यार्थं श्री चंद्रप्रभ चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः
श्री उपकेश गछे कछुदाचार्य सन्ताने श्री कक सूरिजिः श्री जह्नगरं ॥

[51]

सं० १५३५ वर्षे ज्येष्ठ व० १ शुभे उपकेश पत्तन वास्तव्य सा० देवा जा० कपूरी पु० सा०
आता जा० नाजं पु० हर्षा जा० मनी जा० साइया रत्नसी सा० आसकेन रत्नसी नमि
श्री वासुपूज्य विंशं उपश० श्री सिद्धाचार्य सन्ताने प्र० ज० श्री सिद्ध सूरिजिः ॥

[52]

सं० संवत् १५३७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय वु० नांगा वु० मुजा पुत्र वु०
महिराज जा० रमाइ आदिकया श्री वासुपूज्य विंशं कारितं श्री खरतर गछे श्री जिनसागर
सूरी श्री जिनसुन्दर सूरि पट्टराज श्री ३ जिनहर्ष सूरिजिः प्रतिष्ठितं श्रीरस्तु कव्याणं चूयात् ।

[53]

सं० १५३८ वर्षे उपकेश ज्ञातीय वंशे गोत्रे सद्यधी जाटा जा० जयतलदे पु० माषिक

जगिन्या वीरिणी नाम्न्या श्री धर्मनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तया गच्छे श्री रत्नशेखर सूरि
पदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥

[54]

सं १५९१ वर्षे वैशाख वदि ६ शुके प्राग्वाट ज्ञातीय म० पाट्टा पुत्र म० पांचा जार्वा
वाइ देऊ पुत्र म० नाथा जार्वा श्रा० नाथी पुत्र म० विद्याधरेण पु० म० हंसराज हेमराज
जीमा पुत्री इंद्राणी इत्यादि कुटुंब युतेन श्रेयोर्थ श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं
कुतव पुरा गच्छे श्री इंद्रनन्दि सूरिपदे श्री सौजाग्य नन्दि सूरिजिः श्री पत्तन वास्तव्यः ॥

[55]

सं १६०० वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ शनौ श्री श्रीमाख ज्ञातीय सा० जेठा जा० मढ्हाई पुत्र
सोनाकर जा० वाइ कमलादे पु० सोना वीराकेन श्री पूष्णिमा पदे श्री मुनि रत्न सूरिणा-
मुपदेशेन श्री श्रेयांसनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥ शुभं भवतु कल्याणमस्तु ।

॥ रौप्यके मूर्तिपर ॥

[56]

संवत् १९०३ शाके १७६० प्र । माघ मासे कृष्ण पञ्चम्यां भृगौ वासरे श्री मह्यदावाद
बास्तव्य जंसवाल ज्ञाती वृद्धशाखायां साह निहालचन्द इंद्रसिंघ स्वश्रेयोर्थ श्री शांतिनाथ
जिन विंवं कारापितं । खरतर गच्छे श्री शांतिसागर सूरिजिः प्रतिष्ठितं । तप्पा सागर गच्छे ।

राय धनपत सिंहजी का घरदेरासर ।

[57]

सं १९१० फा० कृ० २ बुधे प्रताप सिंहजी डुगड़ जार्वा महताव कुंवर चंद्रप्रज पञ्च-
तीर्थीका । उ । सदा लाजेन प्र० श्री अमृत चंद्र सूरि राज्ये सं १९१७ आषाढ़ शुक्ल १०
धात्मनः कल्याणार्थं ।

क्रिस्तपन्दजी लेडिया का भरदेरासर - चावलगोला ।

[58]

सं० १५३३ वैशाख वदि ४ प्राग्वाट व्यं० अथा जाण आठडी पुत्र व्यं० जरसीहेन जाण
पह पु - भाव्वादि कुहेंड बुनेन अथेथसे श्री वासुपूज्य विं० काण ३० तथा रत्नशंकर सूरि
एदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ।

श्री सांवलियाजी का मन्दिर - कीर्तव्याग ।

[59]

पापाण के वृत्तियोंपर ।

॥ श्री सं० १७३० माघ शुक्ल ५ चंडे श्री पार्श्वचंद्र गणे उ० श्री हर्षचंद्रजी नित्यचंद्र-
जीत्कानासुपदेशेन । उल्ल वंशे गांधी गोत्रे साहजी श्री कनक नयनजी तत्पुत्र साण उदय
चंद्रजी तत्धर्मपत्नी तथा उल्ल वं० गहलड़ा गोत्रे जगत्सेठजी श्री फत्तेचंद्रजी तत्पुत्र सेठ
आणन्द चंद्रजी तत्पुत्री वाइ अजबोजी श्री सत्यश्वेनाथ विं० कारापितं । प्रतिष्ठितश्च विण
सूरिजिः श्री जालुचंडेणति आर्चं०, कंचिरं सन्दत्तत्तत्र श्रूयाद्यश्रियं ।

[60]

॥ श्री सं० १७३० माघ शुक्ल ५ चंडे श्री पार्श्वचंद्र गणे उ० श्री हर्षचंद्रजी नित्यचंद्र-
जीत्कानासुपदेशेन उल्ल वं० गांधी गोत्रे साण श्री कनक नयन तत्पुत्र साण उदय चंद्रजी
तत्धर्मपत्नी तथा उल्ल वंशे गहलड़ा गोत्रे जगत्सेठ श्री पार्श्वचंद्र जी तत्पुत्र सेठ आणन्द
चंद्र तत्पुत्री वाइ अजबोजी श्री वासुपूज्य विं० कारापितं । प्र० सूरि श्री जालुचंडेणति जत्र
श्रूयाछिवं तदा ॥

[61]

पापाण के वृत्तियोंपर ।

सं० १७३० वर्षे माघ शुक्ल ५ चंडेवत्तरे उल्ल वंशे गांधी गोत्रे साण श्री कनक नयन

जी तत्पुत्र सा० उदयचन्द जी तन्नार्या बाइ अजबोजीकेन श्री पार्श्व प्रथम आर्यविभ्र ग-
धर पाण्डुका कारापितं ।

[62]

सं० १७३० वर्षे माघ शुक्ल ५ सोमे गांधी गोत्रे सा० श्री कमल नयन जी तत्पुत्र सा०
श्री उदयचंद्र जी तत्धर्मपत्नी बाइ अजबोजीकेन श्री वासुशुज्य प्रथम सुभ्रुम गणध-
राण्डुका कारापितं ।

[63]

सं० १७६१ चैत्र शुक्ल पञ्चम्यां शनिवासरे चंद्र कुसाधिप श्री जिनदत्त सूरीणां वर-
गन्धापनं श्री सहायदेण श्री जिनहर्ष सूरीणासुपदेशात्प्रतिष्ठितं ॥

[64]

धातुके मूर्त्तियोंपर ।

सं० १५१४ वर्षे वै० व० ४ उके० व्य० गोइन्द जा० राजू पुत्र नाथू जार्या रूपिदि
जातृ-नाल्हा केन जार्या लीलू प्रमुख कुटुंब युतेन श्री श्रेयांसनाथ त्रिवं कारितं प्रतिष्ठितं
श्री सोमसुन्दर सूरिपदे श्री रत्नशेखर सूरि राज्येः ठ ॥ कालधरी ॥

[65]

सं० १५३० वर्षे चैत्र वदि ५ गुरु रजीआण गोत्रे हुवड़ झातीच दोसी ठाकुर सी जा०
नाइ इत्ती सुत दोसी बाबाकेन इरपाव दासा पौगा युतेन मातृ श्रेयसे श्री कुंथुनाथ त्रिवं
कारितं हुवड़ गडे श्री सिधदत्त मूरि प्रतिष्ठितं । उपाध्याय श्री शीलकुञ्जर गणि ।

[66]

सं० १५३१ वर्षे वैशाख वदि ११ सोमे श्री श्रीमाल झा० ना० गोआ जा० जाऊ सु०
सा० नाजण ता० महेश्वरि सु० सा० लटकण जा० गुराइ सु० सा० लोम सु० पासा

सहस्राख्यैः पितृ मातृ श्रेयसे श्री अजितनाथादि चतुर्विंशति षट्ः पूर्णिमा षट्ः श्री पुण्यरत्न
सूरीणामुपदेशेन कारितः प्रतिष्ठितश्च विधिना श्री अहमदाबाद नगरे ।

श्री दादास्थान का मन्दिर ।

पाषाण के चरणोंपर ।

[67]

॥ श्री ॐ नमः ॥ संवत् १७११ मिति माघ सुदि १५ दिने महोपाध्याय जी का ३ श्री
समयसुन्दर जी गणि गजेंद्राणां शिष्य मुख्योत्तम श्री १०५ श्री हर्षनन्दन जी का ज्ञायां
संनितोत्तम प्रवर श्री ७ श्री जीमजा श्री सारङ्गजी तत्शिष्य पं० बोधाजी तत्शिष्य पं० हजारी
नन्दस्य उपदेशेन सुश्रावक पुण्य प्रजावक कातेल गोत्रे साहजी श्री सोजाचन्द जी तत् जात
सोतीचन्द जी श्री मत् बृहत खरतर गढे जङ्गम युगप्रधान चारित्र चूडामणि जहारक प्रह
श्री १०७ श्री दादाजी श्री जिनदत्त सूरिजी दादाजी श्री १०७ श्री जिनकुशल सूरि चूरीश्व-
राणां पाण्डुका कारापिता मकुशूदाबाद मध्ये प्रतिष्ठितं महेंद्र सागर सूरिजिः ॥ शुभमस्तु ।

[68]

संव १७७६ रा वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्लपक्षे १० तिथौ शुक्रवारे बृहत श्री खरतर गढे
जं० । सु० । ज० । श्री १०७ श्री जिनचंद्र सूरि सन्तानीय सकल शास्त्राशार्थ पाठन प्रधान बुद्धि
निधान । श्री महुषाध्याय जी श्री १०७ श्री रत्नसुन्दर गणिजिठराणां चरण स्थापन म
राजी चूडामणि श्री दादु श्री सुधसिंह जी तत्पुत्र दादु श्री प्रतापसिंह जी व्यासदे-
वतिष्ठितं श्री रत्नः कल्याणमस्तुः ।

श्री आदिनाथजी का मन्दिर - कठगोदा ।

[69]

ॐ संवत् १४७९ वदं ज्येष्ठ वदि १० सुते श्री नीला ज्ञानीय गं० महुषा ज्ञायां मकुषु नयं ।

(१८)
सुतेन सह साधरेण स्वश्रेयसे श्री जीवत्स्वामि श्री सुपार्श्वनाथ विंशं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री
बृहत्तया पद्मे श्री रत्नसिंह सूरिजिः शुभंभवतु ।

[70]

सं० १५३० वर्षे माघ सुदि ४ शुके सांबोसण वासि प्राग्वाट ज्ञा० व्य० सोना जा० माज
पु० व्य० नारद बंधु व्य० विरूआकेन जा० वीट्ठणदे पु० देधर मेला राश्यादि कुटुंब युतेन
निज श्रेयसे श्री सरुचवनाथ विंशं का० प्र० श्री तथा गढे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः ॥

[71]

सं० १५०३ शाके १७६० प्रवर्त्तमाने माघ कृष्ण ५ भृगु अहमदावाद वास्तव्य लंसाव
ज्ञाती बृह्म शाखायां सा० केसरीसिंह तत्पुत्र साह विसंघजि तत्तर्प्या रुपमणी स्वअर्थे श्री
आदिश्वर जिन विंशं जरापितं श्री शांतिसागर सूरिजिः प्र० ॥

श्री जगत्सेठजी का मन्दिर - महिमापुर ।

[72]

सं० १५३३ वर्षे माघ वदि १ गुरो प्रा० ज्ञा० म० जेसा जा० सुरी पुत्र सर्वखेन जा०
रूपाइ मातृ पितृ श्रेयसे स्वश्रेयसे श्री कुंयुनाथ विंशं का० प्र० श्री साधु पूर्णिमा पद्मे श्री
पुखचंद्र सुरीणाःमुपदेशेन विधिना श्री निजयचंद्र सूरिजिः ॥ श्री रस्तु ।

[73]

सं० १५३६ व० फा० सु० १२ प्राग्वाट व्य० होरा जा० रूपादे पुत्र व्य० देपा जा०
गीरति पु० गांजाकेन जा० नाथी पुत्र मेरा जातृ गोगादि कुटुंब युतेन श्री नमिनाथ विंशं
का० प्र० तथा गढे श्री लक्ष्मीसागर सूरिजिः । पीरवाड़ा ग्रामे मुंठलिया बंशे श्रीः ।

[74]

सं १५७९ वैशाख सुदि ६ सोमे उपकेश ज्ञातो बलहि गोत्रे राका शाखायां सा०
 षष्ठ्यं ज्ञा० हापू पु० पेथाकेन ज्ञा० जीका पु० २ देपा छूदादि परिवार युतेन स्वपुण्यार्थ
 श्री पद्मप्रत्न विं वं कारितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गढे कङ्कदाचार्य सन्ताने ज० श्री सिद्ध
 सूरिजिः दन्तराज्ञ वास्तव्यः ।

[75]

स्फटिक के विं व पर ।

सं १७१० व० ज्येष्ठ सु० १ श्री स्तम्भ तीर्थ वा० उकेश ज्ञा० गांधि गोत्रे प—सी सीपति
 ज्ञा० शिवा श्री कुन्धुनाथ विं वं प्र० श्री विजयानन्द सूरिजिः । तप (नय) करण ।

[76]

रौप्यके मूर्ति पर ।

सं १७७६ वर्षे वैशाख शुक्ल ५ तिथौ । उलवाल वंशीय श्रेष्ठ श्री माणिक चन्द्रजी स्वधर्म
 परस्त्री माणिक देवी प्रतिष्ठितं श्रीमत् चतुर्विंशति जिन विं वं चिरं जयतात् ॥ श्रेयोस्तः ॥
 तद्म जवतुः ॥ १४

॥ श्री नमिनाथजी का मन्दिर — कासिमगजार ॥

[77]

धातुयोके मूर्तिपर ।

सं १४०० वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ उपकेश ज्ञानीय आचक्ष्णाय गोत्रे ज्ञा० आया ज्ञा०
 वाग्नि पु० राजू नाहू ज्ञा० रूपी पु० खेना ताब्दा सावड़ श्री नमिनाथ विं वं क० पूर्वतस्मि०
 पु० आत्मा श्रे० उपकेश कुक० प्र० श्री निद्ध सूरिजिः ।

[78]

सं० १५१९ वर्षे फागुण वदि १ दिने शुक्ले श्रीमाल वंशे साहू गोत्रे श्री सा० पद्म पुत्र
सा० पासा जा० पूनादे पुत्र साना पाझनादि परिवार परिवृतेन श्री श्रेयांसनाथ त्रिवं सपु
ण्यार्थ कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गष्टे श्री जिनजड सुरि पट्टे श्री जिनचंद्र सुरिजिः ॥

[79]

पापाणोंके मूर्ति और चरणपर ।

सम्बत १५४९ वर्षे बैशाख सुदि ९ श्री मुखसहे जटारक जी श्री जिनचंद्र देव साह
जीवराज पापड़ीवाल --- ।

[80]

॥ सं० १९५९ वर्षे मित्ती फागुण सुदि ५ गुरौ श्री गौतम स्वामि पाडुका कारापितं
काकरेचा गोत्रे सा० बीरदास पुत्र क्षमीपतिकेन ।

[81]

सम्बत् १९७० वर्षे मित्ती माह वदि ३ वार गुरु दिने कारितमिदं पंक्ति मुनिजड गणि
बरेण प्रतिष्ठितञ्च विधिना उ० श्री कर्पूरप्रिय गणिजिः --- कास्मावाजार --- ।

[82]

सं० १९७१ मिति आषाढ शुक्ल १० तिथौ शनिवारे पूज्य श्री हीरागरिजीना पाडुका
कारापिता सेठिया गुझाचन्द ॥

[83]

सं० १७२१ माघ शुक्ल १३ रवौ महोपाध्याय श्री नित्यचंद्रजी स्वर्गगतः । श्री पाश्र्वचंद्र
सुरि गष्टे ।

॥ सम्बत १७६७ वर्षे मिति आषाढ सुदि ए शुभदिन बुधवारे श्री जिनकुशल सुरिजी
सद्गुरुणा चरणन्यासः कारितः श्री सहेन । कार्मावाजार वास्तव्य श्रावकैः सुगुणोज्ज्वलैः ।
पूजनीयाः प्रतिदिनं गुरुपादाः — — — जितः १ ॥

॥ श्री सन्तवनाथजी का मन्दिर — अजिमगञ्ज ॥

85]

पाषाणकी विशाल मूर्त दिव पर ।

॥ श्री वीर गताब्दा १४०३ विक्रमादित्य सम्बत १९३३ जालिवाहन १७९७ माघ शुक्र
एकादश्यां गुरुवास्तरे रोहिणी नक्षत्रे मीन लभे ब्रह्मदेशे मधुदायाशान्तगर्भनाजिमगञ्ज नामी
वृद्धन श्रोत वंशे कुंपक गढे बुधसिंह पुत्र प्रतापसिंह राजार्या महतायं कुमर्य तन् गुरुत पत्र
राय लक्ष्मीपतिसिंह बहादुर तत् लघु ज्ञाना राय धनपतिसिंह बहादुर मयं एवं मनपतिसिंह
नरपतिसिंह सपरिद्वारेन श्री सन्तवजिन दिवं शान्तिनाथ जी नेमनाथ जी पार्श्वनाथ जी महा-
वीर जी परिकर सहित कागपितं जिह्दुरिया तन्नाट दिव्यामाने प्रतिष्ठितं सर्व मरिजिः ॥

. 86]

जीर्ण मन्दिर — उन्मुगदाट ।

ॐ जगदते नमः ॥ सम्बत १७९७ मिति आषाढ १७९७, इत्यादि हादसी सुगुणेश्वर ।
उन्मुगदाट हाद गोत्र गोश्वर श्री सहेन धर्मशी नाम । सन्तवन्दे के शमरचन्द मुत मिन
सुत सुतबनसिंह सुनाम । निम्बे धाम राय मन्दिर मन्त जगदीश्वरी तं न विद्याम ।

[78]

सं० १५१९ वर्षे फागुण वदि १ दिने शुक्ले श्रीमाल वंशे साहू गोत्रे श्री सा० पदा पुत्र सा० पासा जा० पूनादे पुत्र साना पाझनादि परिवार परिवृतेन श्री श्रेयांसनाथ विं वं स्वपुण्यार्थं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गढे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥

[79]

पाषाणोंके मूर्ति और चरणपर ।

सम्बत १५४९ वर्षे वैशाख सुदि ७ श्री मुखसङ्घे चट्टारक जी श्री जिनचंद्र देव साहू जीवराज पापड़ीवाल --- ।

[80]

॥ सं० १७५९ वर्षे मिति फागुण सुदि ५ गुरौ श्री गौतम स्वामि पाडुका कारापितं काकरेचा गोत्रे सा० वीरदास पुत्र लक्ष्मीपतिकेन ।

[81]

सम्बत् १७८० वर्षे मिति माह वदि ३ वार गुरु दिने कारितमिदं पंक्ति मुनिचंद्र गणिके वरेण प्रतिष्ठितञ्च विधिना उ० श्री कर्पूरप्रिय गणिजिः --- कास्मावाजार --- ।

[82]

सं० १७८१ मिति आषाढ शुक्ल १० तिथौ शनिवारे पूज्य श्री हीरागरिजीना पाडुका कारापिता सेठिया गुझाचन्द्र ॥

[83]

सं० १८२१ माघ शुक्ल १३ रवौ महोपाध्याय श्री नित्यचंद्रजी स्वर्गगतः । श्री पाश्र्वचंद्र सूरि गढे ।

॥ सम्बत १९६७ वर्षे मिति आषाढ सुदि ए शुक्रदिन बुधवारे श्री जिनकुशल सुरिजी
सद्गुरुणा चरणन्यासः कारितः श्री सङ्घेन । कास्मावाजार वास्तव्य श्रावकैः सुगुणोज्ज्वलैः ।
पूजनीयाः प्रतिदिनं गुरुपादाः — — — जिः १ ॥

॥ श्री सम्भवनाथजी का मन्दिर — अजिमगञ्ज ॥

[85]

पापाणकी विशाल मूल विंवा पर ।

॥ श्री वीर गताब्दा १४०३ विक्रमादित्य सम्बत १९३३ शालिवाहन १७९८ माघ शुक्ल
एकादश्यां गुरुवासरे रोहिणी नक्षत्रे मीन लभे वङ्गदेशे मधुदावादांतर्गनाजिमगञ्ज वासी
वृद्धत श्योस वंशे कुंपक गठे बुधसिंह पुत्र प्रतापसिंह तज्ञार्या महतावं कुमर्य तत् वृद्धन पुत्र
राय लक्ष्मीपतिसिंह बहादुर तत् लघु ज्ञाता राय धनपतिसिंह बहादुर स्वयं एवं गनपतिसिंह
नरपतिसिंह सपरिवारेण श्री सम्भवजिन विंवा शांतिनाथ जी नेमनाथ जी पार्श्वनाथ जी महा-
वीर जी परिकर सहित कारापितं जिक्कुरिया सम्राट विद्यामाने प्रतिष्ठितं सर्व सृग्निः ॥

[86]

जीर्ण मन्दिर — इस्तुगहाट ।

ॐ जगवते नमः ॥ सम्बत अष्टारह सै ग्यारह (१७११) कृष्ण षाडमी मृगशैश्याय ।
उत्सवाख कुल गोत्र गोखरु श्री मज्जन धर्मकी साख ॥ सत्ताचन्द के अमरचन्द सुत निग
सुत मुद्कमसिंह सुनाम । तिनके धाम राय मन्दिर यह नागीश्वरी तीर विश्राम ॥

[78]

सं० १५१९ वर्षे फागुण वदि १ दिने शुक्ले श्रीमाल बंशे साहू गोत्रे श्री सा० पद्म पुत्र सा० पासा जा० पूनादे पुत्र साना पाइनादि परिवार परिवृतेन श्री श्रेयांसनाथ विं वं स्वपु प्यार्थ कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरि पट्टे श्री जिनचंद्र सूरिजिः ॥

[79]

पापाणोंके मूर्ति और चरणपर ।

सम्बत १५४९ वर्षे वैशाख सुदि ७ श्री मुखसङ्घ जट्टारक जी श्री जिनचंद्र देव साह जीवराज पापड़ीवाल --- ।

[80]

॥ सं० १७७९ वर्षे मित्ती फागुण सुदि ५ गुरौ श्री गौतम स्वामि पाडुका कारापितं काकरेचा गोत्रे सा० वीरदास पुत्र क्षपमीपतिकेन ।

[81]

सम्बत् १७७० वर्षे मित्ती माह वदि ३ वार गुरु दिने कारितमिदं पंक्ति मुनिचंद्र गणि वरेण प्रतिष्ठितञ्च विधिना उ० श्री कर्पूरप्रिय गणिजिः --- कास्मावाजार --- ।

[82]

सं० १७७१ मिति आषाढ शुक्ल १० तिथौ शनिवारे पूज्य श्री ह्रीरागरिजीना पाडुका कारापिता सेठिया गुडाचन्द्र ॥

[83]

सं० १७२१ माघ शुक्ल १३ रवौ महोपाध्याय श्री नित्यचंद्रजी स्वर्गगतः । श्री पार्श्वचंद्र सूरि गच्छे ।

॥ सम्बत १७६७ वर्षे मिति आषाढ सुदि ए शुभदिन बुधवारे श्री जिनकुशल सुरिजी
सद्गुरुणा चरणन्यासः कारितः श्री सद्देन । कास्मावाजार वास्तव्य श्रावकैः सुगुणोज्ज्वलैः ।
पूजनीयाः प्रतिदिनं गुरुपादाः — — — जिः १ ॥

॥ श्री सम्भवनाथजी का मन्दिर — अजिमगञ्ज ॥

[85]

पापाणकी विशाल मूख विंव पर ।

॥ श्री वीर गताब्दा १४०३ विक्रमादित्य सम्बत १९३३ शालिवाहन १७९७ माघ शुक्ल
एकादश्यां गुरुवासरे रोहिणी नक्षत्रे मीन लग्ने बङ्गदेशे मल्लुदावागंतर्गताजिमगञ्ज वासी
वृद्ध श्योस वंशे लुंपक गढे बुधसिंह पुत्र प्रतापसिंह तन्नार्या महतावं कुमर्य तत् वृद्ध पुत्र
राय लक्ष्मीपतिसिंह बहादुर तत् लघु ज्ञाता राय धनपतिसिंह बहादुर स्वयं एवं गनपतिसिंह
नरपतिसिंह सपरिवारेण श्री सम्भवजिन विंव शांतिनाथ जी नेमनाथ जी पार्श्वनाथ जी महा-
वीर जी परिकर सहित कारापितं जिक्कुरिया सम्राट विद्यामाने प्रतिष्ठितं सर्व सुरिजिः ॥

[86]

जीर्ण मन्दिर — दस्तुरहाट ।

ॐ नमो भगवते नमः ॥ सम्बत अष्टारह सै ग्यारह (१७११) कृष्ण छादसी शृगु घेआग्य ।
उंसवाल कुल गोत्र गोखरु श्री मज्जन धर्मकी साग्व ॥ सत्ताचन्द के अमरचन्द सुन निन
सुन मुद्कमसिंह सुनाम । निनके धाम राय मन्दिर यह नागीन्धी तीर विश्राम ॥

कलकत्ता — बड़ाबजार ।

॥ श्री धर्मनाथ स्वामी का पञ्चायति मन्दिर ॥

पत्थर परका लेख ।

[87]

श्री ॥ सम्बत चंद्रमुनि सिद्धि मेदिनी । १०७१ । प्रतिष्ठितं शाके रसवह्नि मुनि शशी
१७३९ । संख्ये प्रवर्त्तमाने माघ मासे धवलषष्टि तिथौ बुधवासरे श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राणां
प्रासादोयम् । श्री कलकत्ता नगर वास्तव्यः श्री समस्त सङ्घेन कारितः प्रतिष्ठितः श्री स्वरा
गणेश जटारक श्री जिनहर्ष सूरिजिः । श्रीरस्तु ॥

[88]

धातूयों के मूर्तिपर ।

सम्बत ११९४ माघ सु० १४ पद्मप्रत्न सुत स्थिरदेव पत्नी रैवसिया श्रेयो ——— ।

[89]

सं० ११५९ वैशाख सु० ३ बुधे सो० जेहड़ सुत सा० बहुदेव हीर जडाज्यां मातृ राज
श्री श्रेयोर्य श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता मलधारी श्री देवानन्द सूरिजिः ।

[90]

सम्बत १३४९ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ वर्षे प्राग्वाट जाति० महं० सादा सुत महं० राज
श्रेयसे समुत महं० मालद्विवि श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठापितं ।

[91]

सं० १३७५ प्राग्वाट जार्तीय श्रे० आमचंद्र जार्या रत्नादेवी पुत्र सहजा श्री शान्तिः
नाथ का० श्री देवप्रद सूरिजिः प्र० महाहृदाय ।

सं० १४३४ वर्षे ज्येष्ठ वदि २ गुरौ बरहुडिया गोत्रे सा० जोजदेव पुत्र सु० सरसति
श्रेयसे श्री शान्तिनाथ विंवं कारितं प्र० देवाचार्य सं० — — सुरिजिः ।

[93]

सम्बत १४४९ आषाढ सुदि २ गुरौ श्री अञ्जल गह्वे उकेश वंशे गोखरु गोत्रे सा० नाङ्ग
चार्या तिहुणसिरि पुत्र सा० नाग राजेन स्वपितुः श्रेयसे श्री शान्तिनाथ विंवं कारितं प्रति-
ष्ठितञ्च श्री सुरिजिः ।

[94]

सं० १४५९ वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० रवना चार्या लक्ष्मादे पुत्र
सोमराजेन पित्रो श्रेयसे श्री आदिनाथ विंवं का० प्र० श्री — — ।

[95]

सं० १४५९ वर्षे मासि चैत वदि १ उवएस ज्ञानीय व्य० देवराज चार्या जस्मादे पुत्र
वृषा चा० धञ्जुणादे सहितेन पित्रो चातृ रामसी श्रेयसे श्री पद्मप्रज विंवं कारितं प्र० ब्रह्म-
पीय गह्वे श्री उदयानन्द सुरिजिः ।

[96]

स्वस्ति ॥ सम्बत १४७१ वर्षे फागुण सु० १२ दुधे श्रीमाख महरोख गोत्रे सा० ईदा सुत
सा० खेमराजे स० महादेवेन श्री आदिनाथ विंवं प्र० श्री विजयप्रज सुरिजिः ॥

[97]

सं० १५०३ वर्षे माघ सुदि ५ ओस वंशे काकरिया गोत्रे सा० साजण पुत्र सा० साखिग
चार्या पर्याईना शान्तिनाथ विंवं का० प्रतिष्ठितं कृष्णीय श्री नयचंड सुरिजिः ।

[98]

सं० १५०६ वर्षे पोष सुदि ५ उंस वंशे चत्तकरीया गोत्रे सा० पाद्देव जा० करणपुत्र
सामल जार्या नयणादे पु० श्रीवठ सहिता आत्म पुष्यार्थ श्री श्रेयांस विवं का० प्र० --
गच्छे श्री नयचंद्र सूरिजिः ।

[99]

सं० १५०६ वर्षे पोष सुदि १५ सोमे उपकेश वंशे श्री काकरिया गोत्रे सं० सुरजन जा
चंजी पुत्र श्रीरत्नेन आत्म श्रेयसे निज मातृ पितृ श्रेयसे श्री चंद्रप्रज विवं का० प्र० श्री
गच्छे श्री नयचंद्र सूरिजिः ॥

[100]

सं० १५१० वर्षे फागुण वदि ३ शुक्ले श्री श्रीमाल ज्ञातीय ठकुर धरणी जार्या बाई गत्री
सुत ठकुर मानण जार्या बाई अरघू तेन खकुटुम्ब श्रेयसे श्री आदिनाथ विवं कारितं प्रति
ष्ठितं आगम गच्छे श्री जिन रत्न सूरिनामुपदेशेन ॥ श्रीरस्तु कट्याण ॥

[101]

सम्बत १५१३ वर्षे मा० सु० ६ रवौ उंसवाल ज्ञातीय बहुरा गोत्रे सा० स्त्रीमा पुत्र
वरषा जा० बालहृदे स० जातृ रद्धा श्री विमलनाथ विवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चित्रवाल
गच्छे श्री दाणाकर सूरिजिः ।

[102]

सं० १५१४ वर्षे आषा० वदि १३ दिने वपुड्ढाणा गोत्रे तुंझिया गोत्रे सुत देवराजेन पु०
पहराज जुने विवं का० प्र० श्री सर्वानन्द सूरिजिः ।

[103]

सं० १५१९ वर्षे आषा० सुदि १० जंदिदहीय श्री काणा गोत्रे ठ० लाधू जा० धर्मिणि

पु० अचल दासेन पु० उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेन देवपाल वीरसेन महिराजादि
युतेन श्री शान्तिनाथ का० श्री जिनमद्र सूरि पद्ये श्री जिनचंद्र सूरिनिः प्रतिष्ठितं ॥

[104]

सम्मत १५१९ वर्षे कार्तिक वदि ४ गुरु श्रीमाली ज्ञातीय मंत्रि देण जार्या सहिजू सुन
वरजांगकेन जातु जेता नरवद हापा सहितेन पितृ मातृ श्रेयार्थं श्री अजितनाथादि चतु-
विंशति पद्य कारित प्रतिष्ठित श्री ब्रह्माण गढे श्री नुनिचंद्र सूरि पद्ये श्री वीर सूरिनिः ॥
जैया वास्तव्यः श्री शुभं चवतु ॥ श्रीः ॥

[105]

सं० १५१४ वै० शु० १० उकेश घेदर वासि स० महिराज जार्या चपाई सुत पद्मसिंहेन
जनिनी पद्माई प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्री शीतलनाथ विं० का० प्र० तपा श्री सोमसुन्दर सूरि
सन्ताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिनिः ॥ श्रीरस्तु ॥

[106]

सं० १५१४ वै० शु० प्रा० श्रे० पाता जा० वाटू पुत्र जोगाकेन जा० जावडि पु० रामदास
जातु अर्जुन जा० सोनाइ प्र० कु० युतेन श्री शीतलनाथ विं० का० प्र० श्री सोमसुन्दर
सूरि सन्ताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिनिः ॥

[107]

सं० १५१२ वर्षे वै० सु० ६ सोमे श्री उकेश वंशे आरू सन्ताने ज० जोजा पुत्र नखाना
इना ज० जोड्हा नारदाच्यां श्री चनिनन्दन जिन विं० कारितं प्र० श्री हग्नर गढे श्री
जिनचंद्र सूरिनिः ॥

[108]

सं० १५१२ वर्षे वैशाख सु० १० बुके श्री उकेश वंशे जोर गढे सा० नखर जा०

सं० १५११ वर्षे पोष वदि ५ बुधे श्री ब्रह्माण गह्वे श्री श्रीमाल ज्ञातीयः श्रे० मांझा
जा० राणा सु० वस्ता जा० अलवेसरि नाम्न्या स्वर्तृ श्रे० श्री कुन्थुनाथ वि० प्र० श्री
विमल सूरिजिः । बगुडा वास्तव्यः ॥

सं० १५३३ वर्षे वैशाख वदि ५ रवौ श्री जावमार गह्वे उपकेश ज्ञातीय वांठीया गोत्रे
व्य० मीमण जा० हलू पु० सादा जा० सूहगदे पु० नेमीचन्द — — — जातृ नेमा पुण्यार्थ
ममस्त कुटुम्ब श्रेयसे श्री सुविधिनाथ प्रमुख चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० श्री कालकाचार्य
सन्ताने ज० श्री जावदेव सूरिजिः ॥ सीरोही वास्तव्यः शुक्लम्भवतु ॥

सम्बत १५५१ वर्षे पोष सुदि १३ शुके श्री श्रीवंशे सा० अदा जा० धर्मिणि पुत्र सा०
वस्ता सा० तेजा सा० पीमा सा० तेजा चार्या लीलादे सुश्राविकया स्वपुण्यार्थ श्री शान्ति-
नाथ विंवं श्री अंचल गह्वेश श्रीमत् श्री सिद्धान्त सागर सूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं
श्री पत्तन नगरे श्री सङ्घेन ॥ श्रीः ॥

सं० १६६७ व० उ० ज्ञा० जड़िया गो० स० होला पुत्र स० पूरणमल्ल पुत्र सं० चूपतिना
श्री विमलनाथ विंवं महोपाध्याय श्री विवेकहर्ष गण्युपदेशात्का० प्र० तथा गह्वेंद्र ज० श्री
विजयसन सूरिजिः ॥

॥ श्री चंद्रप्रभु स्वामीका मन्दिर — माणिकतला ॥

सं० १५११ वर्षे व्याषाढ़ वदि ९ मागा उकेश ज्ञातीय सा० जौसिंग जा० चन्दी पुत्रेण

सा० वी०काकेन ज्ञा० नपी सहितेन स्वश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खर-
तर गढे श्री जिनचन्द्र सूरिजिः ॥ श्री जूँऊण् वास्तव्य ।

[122]

सं० १५१६ कार्तिक वदि २ रवौ श्री जणस वंशे लोहा गोत्रे सा० ठाजू ज्ञा० पीमिणि
पु० सा० गजसी ज्ञा० जूराइ पु० सा० धना ज्ञा० धर्मादे पु० सा० समधरेण ज्ञा० सूहवदे
सहितेन वृद्ध ज्ञातृ नरपति संनारचंद्र पुण्यार्थं श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं रुद्र
पल्लीय गढे श्री सोमसुन्दर सूरिजिः ॥

[123]

सम्बत १५२२ वर्षे कार्तिक वदि ५ गुरौ श्री जणस वंशे । स० घड़ीया जार्था कपूरी
पुत्र स० गोदल ज्ञा० लखमादे पुत्र खेनाकेन ज्ञातृ पितृ पितृव्य मातृ श्रेयसे श्री अंचलगगा-
धिराज श्री श्री जयकेशरि सूरिणासुपदेशेन श्री चंद्रप्रज स्वामी विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री
सधेन ॥ कठदेशे धसङ्का ग्रामे ॥ श्री ॥

[124]

सं० १६३४ वर्षे फा० शु० - शः पत्तने सं० नाइएना नमन्त कुटुम्ब युतेन श्री श्रेयांस
नाथ शि० का० प्र० श्री वृत्तरा गढाधिराज श्री दीर्गदिग्वय नृगितिः ॥

॥ श्री शीतलनाथ स्वामीना मन्दिर — नादिकतडा ॥

[125]

सं० १५२६ वर्षे वैशाख वदि १ रवौ श्री श्रीनाथ श्रेष्ठि श्रवण ना० वाडे सु० पितृ योग
मातृ नाएवे अयोध सुत सहायेन श्री बेमिनाथ विंवं कारितं श्री - वृ - म - मन्मृदि वदे
श्री सोमसुन्दर सूरिणासुपदेशेन प्रतिष्ठिते विदिते श्री, सोमनाथ ग्रामेण वास्तव्यः ।

श्री जिनचंद्र सूरिजिः बृहत् खरतर गढे अजिमगञ्ज वास्तव्य कारितं गोलेष्टा गोत्रे --
-- श्राविकया कारि ॥

(१ । शान्तिनाथ ३ । चंद्रप्रभु ४ । विमलनाथ -- -- अन्नयराजेन श्रेयर्थं ।)

[143]

॥ सं । १७५६ फाट्गुण कृष्ण प्रतिपत्तथौ श्री वासुपूज्य जिन चरण न्यासः प्र । सं
सूरिजिः । कारितं । सर्व संघेन । चंपानगर मध्ये ॥

[144]

॥ संवत १७५६ बैशाख शुक्ल पक्षे तृतीयायां तिथौ श्री जिनकुशल सूरि पाडुके ।
प्रतिष्ठितं चः श्री जिनचंद्र सूरिजिः बृहत् खरतर गढे कारितं । समस्त श्री संघेन श्रेयर्थं ।

[145]

संवत १७७१ मिति माग शुक्ल षष्ठ्यां शुक्रवार काष्ठासंघ माथुर गढे पुत्कर गणे लोहा
चार्याभ्याय नद्वारक श्री जगत्कीर्ति सदाभ्याय अग्रोत कान्वये पिपल गोत्रे प्रयाग नगर
वास्तव्य साठ क श्री हीरालाल पुत्र कृष्णदास पुत्र सन्नूलाल -- -- अगवरवाल प्रजा सा
-- श्री पद्मप्रभ -- -- प्रतिष्ठा कारिता ।

[146]

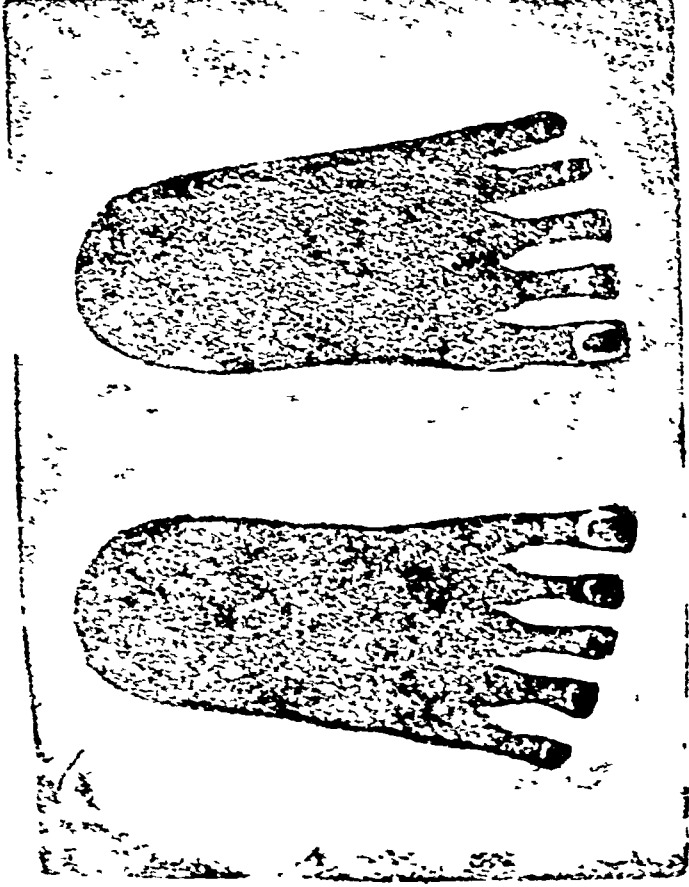
सं १९०० आषाढ शित ए गुरौ श्री संजवनाथ विंवं प्रतिष्ठितं बृहत् -- -- सूरिजिः
कारितं च डूगड़ सरूपचंद त्राटु करमचंद हुलासचंद जननी प्राण बीबी श्रेयर्थं ।

[147]

संवत १९०९ वर्षे मिः फागुण सुदि ३ दिने । श्री शान्तिनाथ विंवं कारितं मकसुदावाद
वास्तव्य श्री संघेन श्रेयसे प्रतिष्ठितं च न । श्री जिनहर्ष सूरि पट्टालङ्कार न । श्री जिन
सोनाग्य सूरिजिः बृहत् खरतर गढे ।

वासुपूज्यजिनचरणन्यासः ॥

॥सा२८५६फाल्गुणकृष्णष्टमिपक्षिद्योत्री



सर्वभूरिन्द्रिःकारितं।सर्वशंखनावंषान

गरभु॥

सं १९१० मि । फा० कृष्ण २ बुध — — दूगड़ प्रताप — — —

[140]

॥ सं १९१५ निनि जेठ शुक्र त्रीनीया तिथौ रविवारे दूगड़ गोत्रे श्री प्रतापसिंहजी
तत्पुत्र तत्पुत्र कुंवर तत्पुत्र राय लक्ष्मीपत्तसिंघ बहादुर तत् लघुजाना राय धनपत्तसिंघ
प्रतापुत तत्पत्नी प्राणकुंवर जन्म सकली कर्मकार्य । जं । शुभ शुभ श्री जिनहंस सूरिजी
विजैराज्य ॥ उ० श्री आनन्दवल्लभ गणित तत् शिष्य उ० श्री सदावाच गणित प्रतिष्ठिता ॥
पूज्याचार्य श्री रतनचन्द्र सूरि दुपक गठे ॥ श्रीः ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्री नवमदजी श्री चरो
पूराजी स्थापिताः ॥ श्रीः ॥

[150]

श्री बालुपूज्यजी जन्म कल्याणक । सं १९१५ मिः फाल्गुन कृष्ण ५ तिथौ । दूगड़ श्री
प्रतापसिंहजी तत्पुत्र राय लक्ष्मीपत्तसिंघ बहादुर तत्पुत्र श्री धनपत्तसिंघ बहादुर कारागिरि
जं । शुभ । शुभ । शुभ । श्री जिनहंस सूरिजी विजैराज्ये ॥ उ० श्री सागरचन्द्र गणित प्रति-
ष्ठितं ॥ शुभं भूयात् ।

[151]

धातुयोंके मूर्त्तिपर ।

सं १९०९ वर्षे ज्येष्ठ शुभ — रवौ मंगू जा० रमाई — — हेमा हाया बाबा पु० साठस जा०
लक्ष्मीरूपिणि एवार्थ श्री चतुर्विंशति जिन प्रतिमा श्री नमिनाथ विंवा का० प्र० श्री संकर
गठे श्री शान्ति सूरिजिः ॥ श्रीः

[152]

सं १९१७ वर्षे माघ व० १ सोमि प्रा० सं० धारा जा० सरूप मुनेन सा० वेत्त वंयुना

सं वनाकेन ज्ञा० सीत्रू प्रमुख कुटुम्ब युतेन निज श्रेयसे श्री सम्भवनाथ विंवं कारितं
प्रतिष्ठितं श्री सूरिजिः ॥ माध्यमन ग्रामे ॥

[153]

सं १५३० श्री मूलसंघे श्री मानिकचन्द देवराज प्रतिष्ठापितं - - - ।

[154]

सं० १५५१ वर्षे मा० सु० १३ गुरू उकेश वंशे सिंघाडिया गोत्रे सा० चांपा ज्ञा० राज
पु० सा० जोला ज्ञा० लडिकू पु० सा० पूजा० सा० काजा सा० राजा पु० धना सा० काळू सा०
काजा ज्ञा० कुनिगदे इत्यादि परिवृतेन सा० काजाकेन श्री आदिनाथ चतुविंशति पदे का
प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर सूरि पदे श्री जिनसुन्दर सूरि पदे श्री पूज्य श्री जिन
हर्ष सूरिजिः ॥

[155]

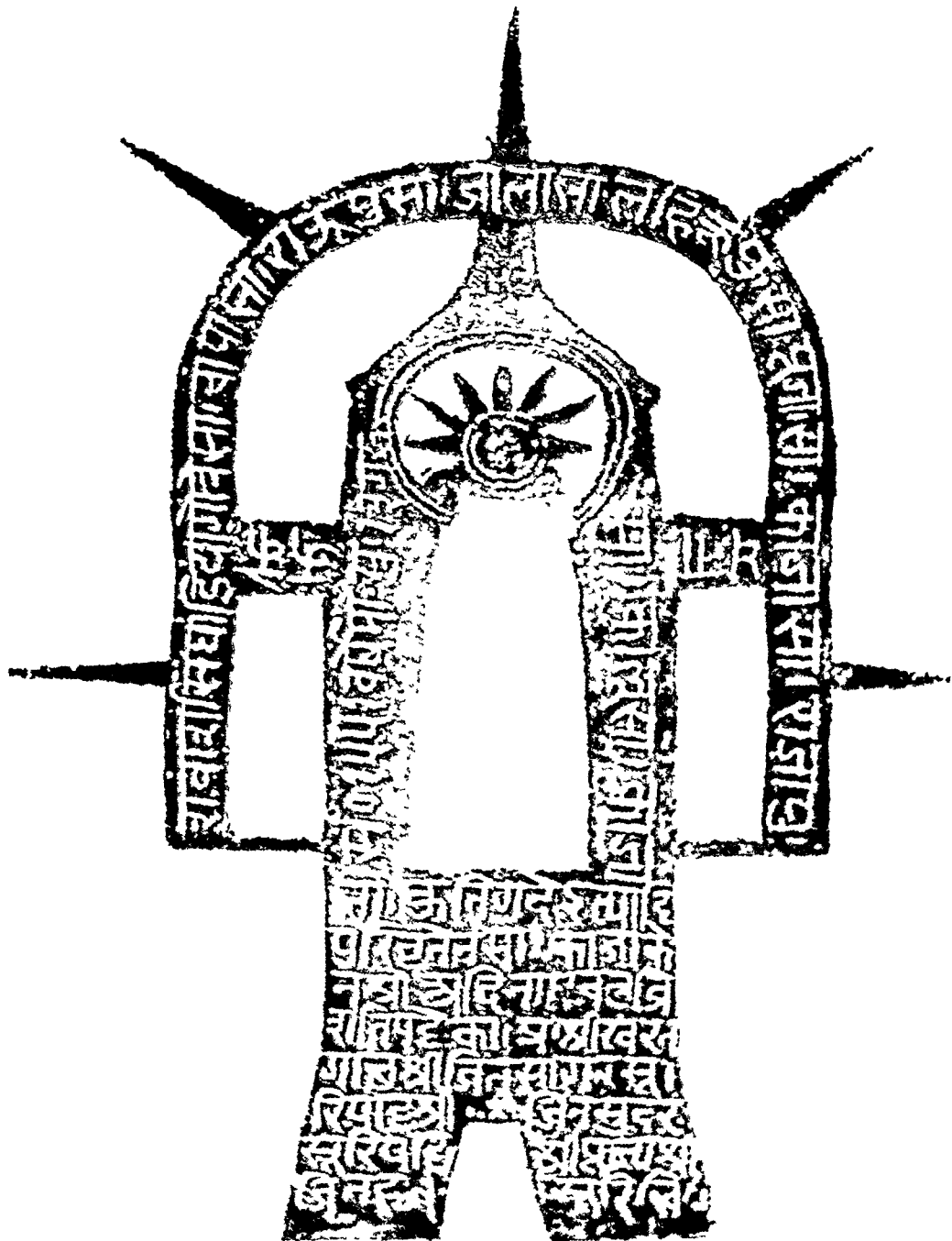
संवत् १५७१ वर्षे माघ वदि १० शुके श्री प्राग्वाट ज्ञा० वृद्धशाखायां व्य० सहित
सु० व्य० समधर ज्ञा० वडधू सुत व्य० हेमा ज्ञार्या हिमाई सुत व्य० तेजा जीवा वर्द्धमान
एते प्रतिष्ठापितं श्री निगम प्रजावक श्री आणंदसागर सूरिजिः ॥ श्री शान्तिनाथ विंवं श्री
रस्तु श्री पतन नगरे ॥

[156]

संवत् १५७५ वर्षे आषाढ सुदि ५ सोमे श्री उसवाल ज्ञातीय आश्चणी गोत्रे चोर
वेड़ीया शाखायं सं० जइता ज्ञार्या जइतलदे पु० सं० चूहड़ा ज्ञार्या जूरी सुत जधरण बंड
पाल आत्म श्रेयोर्थ श्री आदिनाथ विंवं कारितं श्री उपकेश गच्छे कुकदाचार्य सन्ताने प्रति
ष्ठितं श्री श्री श्री सिद्धि सूरिजिः । - - - -

[157]

संवत् १६०३ वर्षे माघशिर सुद ३ शुके प्रा० ज्ञा - - वास्तव्य - - ज्ञा० रङ्गादे सा०



सुग चाण सूरमादे साण श्री रङ्ग सदारङ्ग असीपलादि कुटुम्ब युतेन साह सण चवीरेण श्री
सुमनिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गळे श्री विशालसोम सूरि शिष्य श्री श्री ५ —
सूरिजिः ।

[158]

झींकार यंत्रपर ।

सम्बत १६६९ वर्षे शुक्लेपक्षे त्रयोदशी दिने शुक्रवारे श्री मूलसंघे सरस्वति गळे वखं
त्कार गणे चंपापूरी नगर शुभस्थाने — — —

[159]

सम्बत १६७३ वर्षे मूलसंघे ऋण श्री रत्नचंद्र उपदेशेन उपाण श्री जयकीर्ति प्रतिष्ठितं
— — ग्रामे समस्त श्री संघेन कारापितं ।

बाबु सुखराज रायजी का घरदेरासर — नाथनगर
पापाणके मूर्तिपर ।

[160]

सं० १७९७ साध सुदि १३ बुधे श्योस वंशे कठारा गोत्रीय लाला जमनादास नानार्था
श्यातकुंदर तथा श्री वासुपूज्य जिन विंवं कारितं मुनि हेमचंद्रोपदेशात्प्रतिष्ठितं श्री वृद्ध
खरतर गठीय श्री जिन — — — ।

पञ्चतीर्थीयों पर ।

[161]

सं० १५१९ — — — नंदिद्वीय श्री वाणगोत्र टण वाङ्ग नाण धर्मिणि सुण नदं

अचल दासेन पु० अग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेनादि युतेन श्री शान्तिनाथ विं
का० प्रति० श्री जिनसुन्दर सूरि पट्टे श्री जिनहर्ष सूरिभिः ।

[162]

सम्बत १५९१ वर्षे वैशाख सुदि ३ तामे श्रीमत्परा ॥ ते ॥ मिथूज गोत्रे । स० इन च
— सुश्रावकेण जा० जीवादे पु० आनन्द सा० सोहित प्रसुम्ब सहितेन श्री आदिनाथ
विं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गण्ड ॥ श्री जिनरत्न सूरिभिः ॥

ईकारके यंत्रपर ।

[163]

सम्बत १७५६ वर्षे वैशाख मासे शुक्लपक्षे तिथौ ३ बुधे श्री सिद्धचक्र यंत्र प्रतिष्ठितं
श्री जिन अक्षय सूरि पद्मलङ्कार श्री जिनचंद्र सूरिभिः जयनगर वास्तव्य श्री मातान्वये
अरगड़ गोत्रीय सुश्रावक खुन्नचन्द तत्पुत्र रोसनराय वृद्धिचन्द खुत्यालचन्द सरूपचन्द
सोतीचन्द रूपचन्द सपरिकरण कारित स्वश्रेयार्थ ॥

स्थान — जागलपुर ।

श्री वासुपूज्यजी का मन्दिर (धर्मशालामे)

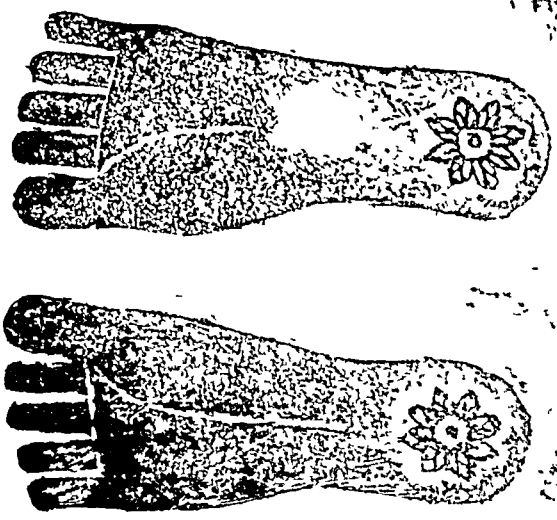
पाषाणपर ।

[164]

॥ शुभ सं० वीर गतावदा १४०५ विक्रम नृपात् १९३६ रा जेष्ठमासे वरे शुक्लपक्षे त्रयो
दश्यां तिथौ — चम्पा नगर्या श्री वासुपूज्यजी पञ्चकल्याणक चूम्बुपरि ओश वंशे पूगड़ गोत्रे
वृ। शा। वा। श्री बुधसिंघजी तत्पुत्र श्री प्रतापसिंघस्य चतुर्थ वधूः महलावकुमरी खन्नव
सफल करणार्थ इच्छा कृतासिच कालवशात् सं० १९३२ श्रावण कृ० ६ दिने कालधर्म प्राप्तस्य
मनोरथाय तत्पुत्र राय श्री लक्ष्मीपत सिंघजी वहाडुर राय श्री धनपत सिंघजी वहाडुर

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

एतद्गुरुवररत्नमञ्जरीनरुचिनिर्देशाञ्जनायदीरादिनिबन्धेनोद्यमप्रसिद्धोत्तमविद्याकाश्यादिप्रोद्यमम् ॥



॥ मन्मथपुस्तिकावैकुण्ठविद्याकेन्द्रियानन्दयित्रीमन्त्रिसिद्धन्तरालम् ॥

तेन द्रव्येण धर्मशास्त्रा जिनालय कारापितं प्रतिष्ठितं सर्वं सूरिभिः श्रीसंघ च संज्ञावत्सी श्री
संघ मादिक श्री रस्तु श्री कल्याण रस्तु श्री जीकटरीया इमपेश राज्ये पूषाब्द १७७९ ।

पापाणके चरणों पर ।

[165]

(१) च्यवन (२) जन्न (३) दीक्षा (४) केवल (५) निर्गण कल्याणक पाडुका ॥
साधु ७२००० । साधु १२५००० । ध्यावक २१५००० । श्राविका ४३६००० ॥ — — — श्री वामु
पूज्य पञ्चकल्याणक चरण कारापितं चंग नगरे थोशवाव ह । शा । छगड़ गोत्रे वा । श्री
बुधसिंघजी तत्पुत्र श्री प्रतापसिंघजी तरदार्या महतावकुमर बीबी तत्पुत्र राय श्री लक्ष्मी
पतसिंघ श्री धनपतसिंघ दडापुर कारापितं प्रतिष्ठितं सर्वसूरिभिः श्री संघस्य शुनंभवतु ॥

[166]

॥ ए ए ० ॥ सम्ब्रह्माणर्षि नागेन्दौ राध शुक्लादशी शृगौ मन्त्रि नभ्योः पदं जीर्णमुद्धृत
खरतरेण श्री जिनहर्ष निदेशी वा चाग्यधीर गणि क्लि मादहू गोत्रस्य प्रणणेन्दोर्वित्तमुद्विष्य
काव्यकृत २ युग्मम् ॥ सं० १७७५ सिती वैशाख सुदि १० शुके तिथिज्ञा नगर्थ्या ७ श्री मन्त्रि
जिन चरणन्यासः ॥

[167]

सं० १७२१ साध शुक्लदशे १२ बुधे श्री वामुपूज्य (धजितनाथ, सप्तवनाथ) जिन

* यह चरण दग्धज्ञा लेन में सीतामढी टिकनेके पास भिविला नगी में उठाकर लाया गया है । वहां हम
समय कोई जैन मन्दिर नहीं है । १९ मां तीर्थेश्वर श्री नन्दिनाथ स्वामीके चार कल्याणक सं० २१ मां श्री ननि
नाथ स्वामीके चार कल्याणक वहां भये थे । श्री मल्लिकार्जुन भिविलीके कुंभ गंगा और प्रभाकरा गंगाकी कुंभी
थी । जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान मार्गके सुदि ११ के दिन भया था । इसी तारके दिन गंगा और सिता
रानीके पुत्र श्री नानिनाथ स्वामी का जन्म हुआ था वही ८, दीक्षा आदि ९, केवल ज्ञान मार्गके सु० ११
के दिन भयाया किन्तु २ अक्षरों " भिविला " के स्थानमें " मधुग " लगाने भी देसके, ज्ञान है । ज्ञान
सत्य ज्ञानोपम्य है । चरण तीर्थेश्वर गुरुदेव स्वामीका भी ६ वें नाम वहां भया ।

विंशं श्रोतृ वंशे झूगड़ गोत्रे वावु प्रतापसिंह पुत्र राय बदाहुर धनपत्तिसिंहेन कारापितं
मखधार पूर्णिमा श्री मद्धिजय गढे चद्दारक श्री जिन शांनिसागर लुंजिः ॥

[138]

॥ सं० १९३३ मा । शु । ११ श्री मद्धिजिन त्रिंमिदं सकसुदावाद वास्तव्य अं
वंशीय लुंपक गणोपाशक झूगड़ गोत्रीय वावु प्रतापसिंहस्य चार्गा महताव कुंवरिकस्य
पुत्र राय धनपत्तिसिंहेन कारापितं प्रतिष्ठितं चाचार्येण अमृतचंद्र सूरिणा लुंकागठीये
श्री मिथिलापुरवरे ।

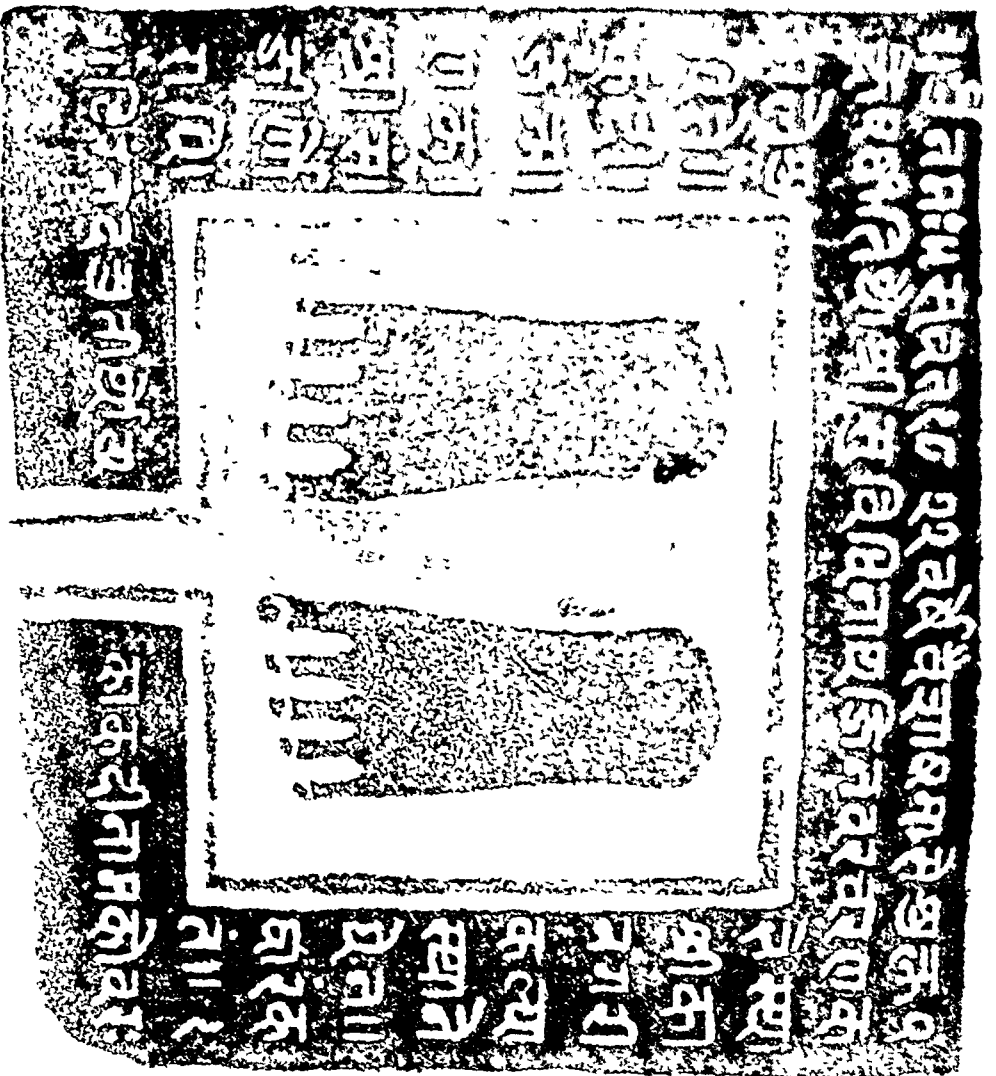
[139]

सं० १९३३ मि । मा । सु । १२ श्री नमिजिन विंमिदं सकसुदावाद वास्तव्य अं
वंशीय लुंपकगणोपाशक झूगड़ गोत्रीय वावु प्रतापसिंहस्य चार्गा महताव कुंवरिकस्य वरु
पुत्र राय धनपत्तिसिंहेन कारापितं प्रतिष्ठितं चाचार्येण अमृतचंद्र सूरिणा लुंकागठीये
सीतामढी मिथिलायां ।

पंचतीर्थी पर ।

[170]

॥ सं० १५ आषाढादि ए६ वर्षे आषाढ शु० ११ दिनेः रा० जण्णारी गोत्रे जं० सिवा
जा० रत्नादे पु० जं० हेमराज वेला जा० बालहदे पु० पता — — विंशं कारापितं पुष्यार्थ श्री
संकेर गढे जं० श्री साव सूरिजिः प्रतिष्ठितं ॥ सू० तानाकेन कृतं ।



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥
 श्रीकृष्ण उवाच ॥

अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥

तीर्थ काकंदी और क्षत्रियकुण्ड ।

लखीसराय स्टेशन से ६ कोस पर काकंदी है । नवमा तीर्थकर श्री सुविधिनाथ जी का चवन-जन्म-दीक्षा और केवल ज्ञान यह चार कल्याणक यहां जये हैं । सुग्रीव राजा रामा रानी के पुत्र थे । सृगशीर वदि ५ जन्म, सृगशीर वदि ६ दीक्षा और कार्तिक सुदी ३ के दिन केवल ज्ञान जया । जैन मुनि धन्ना काकंदी जी यहीं जये हैं ।

यहां से नव कोस पर खत्रिय कुण्ड आज कल लठवाड़ गांव के नामसे प्रसिद्ध है । चौविशमां तीर्थकर श्री महावीर स्वामी का चवन, जन्म और दीक्षा यह ३ कल्याणक यहां जये हैं ।

भूतियों पर ।

[171]

संवत् १५०४ वर्ष फागुण सुदि ९ महतियाण वंशे मुंरतोड़ गोत्रे । सं० महणसी पुत्र सं० देपाख जार्या मू० माहिणि खकुटुंवेन ज्ञाता व० मित्र लखमी पुत्र व्य० हंसराज पुत्र —
— श्री महावीर विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर वा० शुचशील गणित्तिः — — — ।

[172]

संवत् १५०४ फागुण सुदि ९ दिने महतियाण वंशे मुंरतोड़ गोत्रे । सं० — — राजपुत्र सं० महादेपाख ज० माहिणि पुत्र सं० सिवाई ।

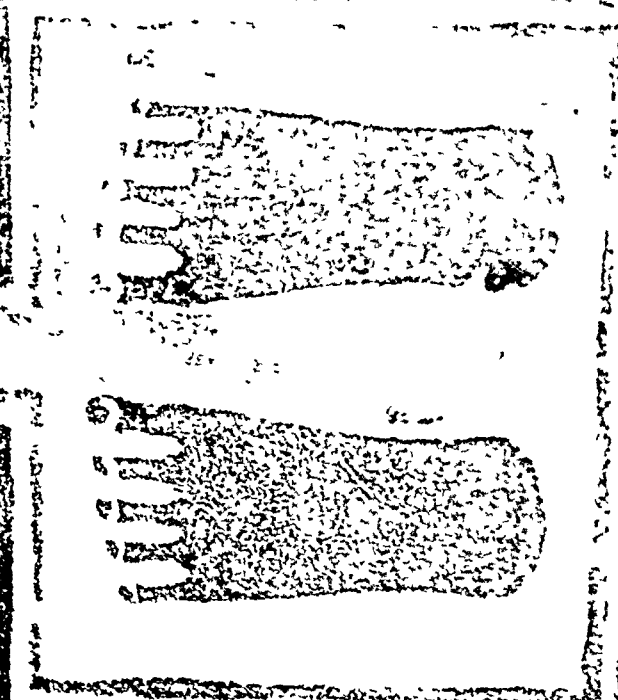
चरण पर ।

[173]

ओं नमः । संवत् १७२२ वर्ष वैशाख मासे शुद्ध पक्षे पटी तिथौ श्री सुविधिनाथ जिन-
वर चरण कमले शुभे स्थापिते ॥ श्री काकंदी नगरी जन्म कल्याणक न्याने श्री संयत
जीर्णोद्धारं कारापितं ॥ ३ चिरं नन्दतु तीर्थेयं काकंदी नामको वरः ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ २ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ३ ॥
 श्रीविष्णवे नमः ॥ ४ ॥
 श्रीशिवाय नमः ॥ ५ ॥
 श्रीब्रह्माय नमः ॥ ६ ॥
 श्रीमहादेवाय नमः ॥ ७ ॥
 श्रीनारायणाय नमः ॥ ८ ॥
 श्रीवसुदेवाय नमः ॥ ९ ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ १० ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ १ ॥
 श्रीविष्णवे नमः ॥ २ ॥
 श्रीशिवाय नमः ॥ ३ ॥
 श्रीब्रह्माय नमः ॥ ४ ॥
 श्रीमहादेवाय नमः ॥ ५ ॥
 श्रीनारायणाय नमः ॥ ६ ॥
 श्रीवसुदेवाय नमः ॥ ७ ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ ८ ॥



श्रीगणेशाय नमः ॥ १ ॥
 श्रीविष्णवे नमः ॥ २ ॥
 श्रीशिवाय नमः ॥ ३ ॥
 श्रीब्रह्माय नमः ॥ ४ ॥
 श्रीमहादेवाय नमः ॥ ५ ॥
 श्रीनारायणाय नमः ॥ ६ ॥
 श्रीवसुदेवाय नमः ॥ ७ ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ ८ ॥

श्रीकृष्णाय नमः ॥ १ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ २ ॥
 श्रीविष्णवे नमः ॥ ३ ॥
 श्रीशिवाय नमः ॥ ४ ॥
 श्रीब्रह्माय नमः ॥ ५ ॥
 श्रीमहादेवाय नमः ॥ ६ ॥
 श्रीनारायणाय नमः ॥ ७ ॥
 श्रीवसुदेवाय नमः ॥ ८ ॥

श्रीकृष्णाय नमः ॥ १ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ २ ॥
 श्रीविष्णवे नमः ॥ ३ ॥
 श्रीशिवाय नमः ॥ ४ ॥
 श्रीब्रह्माय नमः ॥ ५ ॥
 श्रीमहादेवाय नमः ॥ ६ ॥
 श्रीनारायणाय नमः ॥ ७ ॥
 श्रीवसुदेवाय नमः ॥ ८ ॥

तीर्थ काकंदी और खत्रियकुण्ड ।

लखीसराय स्टेशन से ६ कोस पर काकंदी है । नवमा तीर्थकर श्री सुविधिनाथ जी का चवन-जन्म-दीक्षा और केवल ज्ञान यह चार कल्याणक यहां जये हैं । सुग्रीव राजा रामा रानी के पुत्र थे । मृगशीर वदि ५ जन्म, मृगशीर वदि ६ दीक्षा और कार्तिक सुदी ३ के दिन केवल ज्ञान जया । जैन मुनि धन्ना काकन्दी श्री यहीं जये हैं ।

यहां से नव कोस पर खत्रिय कुण्ड आज कल लठवाड़ गांव के नामसे प्रसिद्ध है । चौविंशमां तीर्थकर श्री महावीर खत्री का चवन, जन्म और दीक्षा यह ३ कल्याणक यहां जये हैं ।

भूर्तियों पर ।

[171]

संवत् १५०४ वर्ष फागुण सुदि ९ महतिषाण वंशे मुंस्तोड़ गोत्रे । सं० महणसी पुत्र सं० देपाल चार्या मू० माहिणि खकुटुंवेन द्राता व० मित्र लखमी पुत्र व्य० हंसराज पुत्र —
— श्री महावीर विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर वा० शुचशील गणित्तः — — — ।

[172]

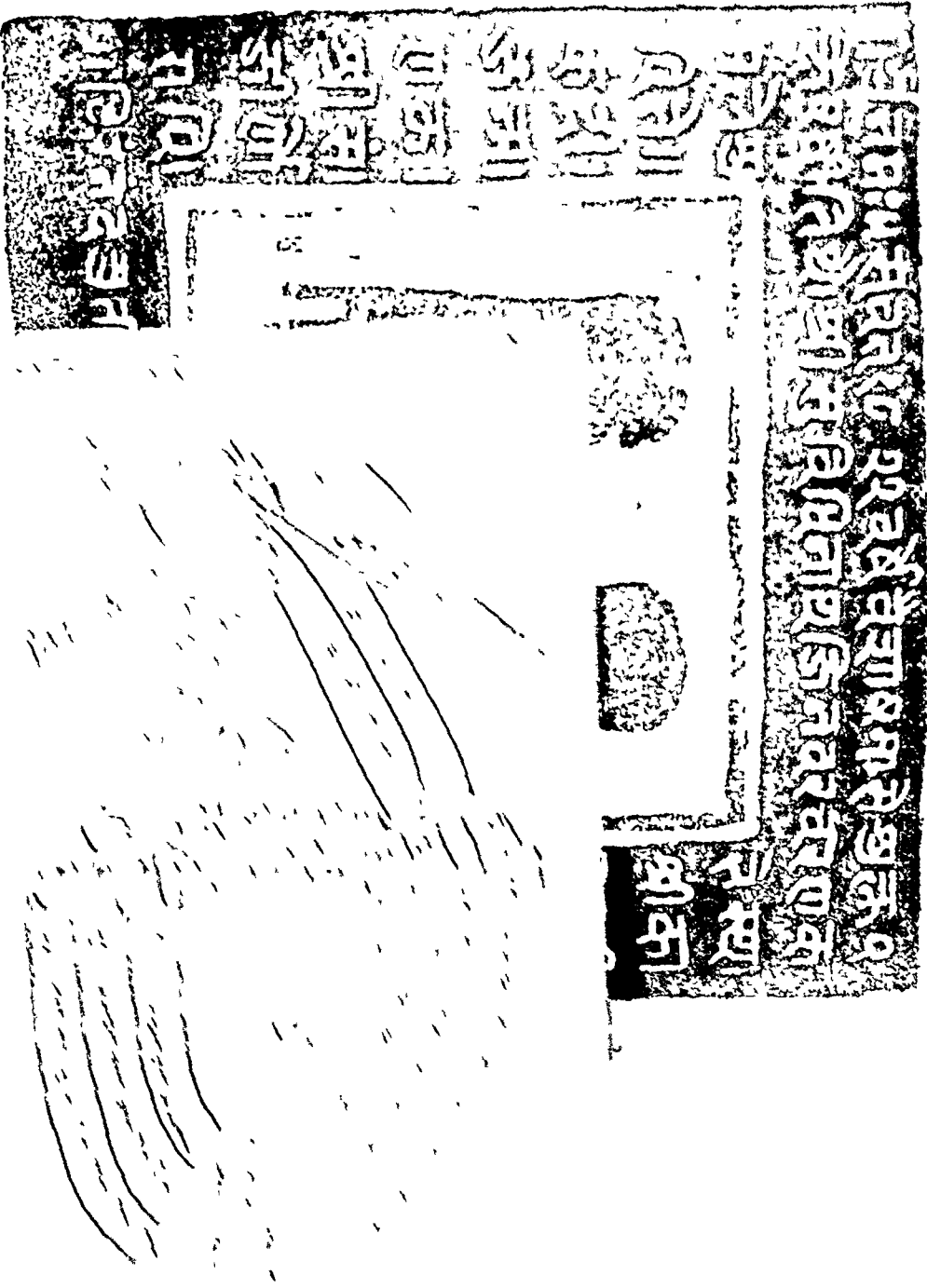
संवत् १५०४ फागुण सुदि ९ दिने महतिषाण वंशे मुंस्तोड़ गोत्रे । सं० — — राजपुत्र सं० महादेपाल ज० माहिणि पुत्र सं० सिवाई ।

चरण पर ।

[173]

ओं नमः । संवत् १७२२ वर्ष वैशाख मासे शुक्ल पक्षे पटी तिथौ श्री सुविधिनाथ जिन-
वर चरण कमले शुभे स्थापिते ॥ श्री काकंदी नगरी जन्म कल्याणक न्याने श्री संवेन
शरं कारापितं ॥ १ चिरं नन्दतु तीर्थेयं काकंदी नामको वरः ।

Footprints Kakandi temple, dated 3 1822 (1703 A D)





मकशूदावाइ अजीमगञ्ज वास्तव्य हुगड़ गोत्रे वावु प्रतापसिंहजी तज्ञागी मयता
तत्पुत्र राय लक्ष्मीपत तत्पुत्र सइोदर राय धनपतसिंह वहाडुरेण न्याग डव्याण व
प्रभू का जिनालय करापितः लठवाड़ मध्ये उ० श्री सागरनंज गणि प्रतिष्ठितं । सं
मिती बैशाख वदी २ चन्द्रे -- ।

श्री गुनाश्याजी ।

नवादा (गया लाईन) ऐसनसे १॥ नाईव पर यह स्थान है । इसका नाम
"गुणशील चैत्य" से प्रसिद्ध है । यहां २४ मां तीर्थकर श्री महावीर स्वामीका १७ वं
अयाथा । स्थान मनोहर और श्री पावापूरी तीर्थके जलमन्दिर की तरह तादाव वा
मन्दिर है ।

धातूके मूर्त्तिपर ।

संवत् १५१० वर्षे फागुण वदि १२ उसवालान्वये मूधाला गोत्रे स० — मीला ज्ञा०
पुत्र सा० तोदहा ज्ञा० पई नासुन्या खपुण्यार्थ पद्मप्रज्ञ विंवं कारितं प्र० श्री पद्मानंद सू

पाषाणके चरणोंपर ।

संवत् १६०० वर्षे बैशाख सुदि १५ तिथौ मंत्रीदल वंसे चोपरा गोत्रे ठा० विमलदास
तत्पुत्र ठा० तुलसीदास तत्पुत्र श्री ठा० संग्राम गोवर्द्धनदास तस्य माता ठकुरी श्री निहाली
तत्पु० जार्या ठकुरेटी जु० ज० श्री जिनकुसल सूरिका कारापिता पूज्य श्रीश्री ५ श्री श्रीराज
सुरि विद्यमाने उपाध्याय अज्ञय धर्मेन प्रतिष्ठा कृता स्थिर लगे खरतर गछे ।

... 1088 (1631 A D)



1

2

[177]

संवत् १९३४ मिति माघ शुक्ल ५ तौमे श्री गणेशाय चैत्ये श्री हृगड़ प्रतापसिंह
 जीत्कानां चार्या महताव कुंवर तत्कुक्षितोत्पन्न कनिष्ठ पुत्र श्री राय धनपतासिंह बहादुर
 नाम्ना स्वपत्नी प्राणकुंवर जन्म सफली करण्ड श्री अष्टावद तीर्थे श्री शत्रुंजय निर्वाण
 द्वाजतया श्री आदि जिन चरण पादुका कारापिता श्री जिनदत्ति सूरि शास्त्रार्थं च सदा
 साधु गणित प्रतिष्ठितं शुद्ध

[178]

संवत् १९३० माघ शुक्ल ५ सकल संकेत श्री दीक्षापादुका कारापिता श्री गुण-
 शील चैत्ये आत्महिताय ॥

पापाय ष ।

[179]

संवत् १९३४ मिति माघ शुक्ल ५ तौमे गुजराते चैत्ये हृगड़ नोत्रे श्री प्रतापसिंहजी
 तत्चार्या महताव कुंवर तत्पुत्र चिरु माय बहादुर तत्प्रथम पत्नी प्राणकुंवर जन्म साधु
 कारापिता लीपोंसरं । च श्री अष्टावद बहून् गणित तन्निष्य च श्री सागरचंद गणित च-
 देशात् ॥ श्रीः ॥ शुभंभूतात् ।

पापाय ष ।

[180]

— । श्री जिनैन्द्र जयती । सुस्ती श्री नद बीरजिनैन्द्र संवत् २४७२ वि० संवत् १०७७
 वर्षे वैश्व ७ शुभवारि श्री तथा गठाननाय धान्य सुप्रायक दम्न श्रीमाधु कार्याय माधु
 रूपचन्द रंगीधरास देवचन्द पाटनवासा दास सुकान पेवसा सुवर्द्ध ये वनना मन्नाथं नन
 बन्धु चतुर चन्द सुत वैश्व चन्द बाध चन्द मन्ना चन्द उर = ३ ये ॥ श्री गुजरातीष चै

ज्ञा० करगिणि पुत्रेण स० शुभकरेण ज्ञा० पद्मिन्याः पु० लक्ष्मीसेन हाडू जनन्याः श्रेणी
श्री संजवनाय विंशं का० श्री खरतर श्री जिनचंद्र सूरि पदं श्री जिनचंद्र सूरिजिः
ष्ठितं श्रेयोस्तुः ॥

[187]

सं० १५६२ वर्षे वैशाख सु० १० दिने श्रीशाल ज्ञात्रीय गोत्रे सौठिष्ण सा० रणमण्ड
सा० दीपचंद ज्ञार्या जीवादे कारितं । श्री खरतर गण्ड जट्टारिक श्री जिनहंस सूरि
नमः ॥ प्रतिष्ठा श्री शान्तिनाथ विंशं कारितं ॥

षाषागके चरण पर ।

[188]

सं० १६४५ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ — — — इयचंद पुत्र जसराज डव्येण ज्ञार्या
श्री चर्द्धमान जिनस्येयं पाडुका कारा — — ।

[189]

॥ संवत् १७७२ वर्षे माह सुदि १३ दिने सोमवारे श्री पुष्करक चरण कमल
— — — ।

मध्यके चरणपर ।

[190]

॥ १० ॥ स्वस्ति श्री जयोमंगलान्युदयश्च ॥ श्री गौतमस्वामिनोखविधः ॥ संवत् १६-
वैशाख सुदि ५ सोमवासरे ॥ श्री विहार नगर बास्तव्य श्री कृषज जिनेश्वर प्रथम पुत्र श्री
चरत चक्रवर्त्ति राजान मुख्य संत्रिदल संतानीय महतीयाण ज्ञात्री मुख्य चोपड़ा गोत्रा
संवनायक सं० संग्राम । राहदिया गोत्रीय संघ० परमाणन्द प्रमुख श्री वृहत खरतर गडी
नरमणि मरुत्त जाडस्यव श्री जिनचंद्र सूरि प्रतिबोधित महतीयाण श्री संघ कारित
श्रीर जिन निर्वाण चूमि श्री पादापूर्वी समीपवर्त्ति वरविमानानुकार श्री बीर जिन प्रासाद

[The text in this image is extremely faint and illegible due to high contrast and heavy noise. It appears to be a traditional Indian manuscript, possibly in Devanagari script, but the individual characters are not discernible.]

सूत्रो धाम प्रतिष्ठित श्री महावीर वर्द्धमान जिनराज पाहुके महतिपाण श्री संघेन कारिते ।
 प्रतिष्ठिते श्री बृहत्खरतर गणाधीश्वर श्री शत्रुंजयाष्टमोद्धार प्रतिष्ठाकर युगप्रधान श्री
 जिनसिंह सूरि पद्मोदयगिर दिनकर युगप्रधान श्री जिनराज सूरिभिः ॥ श्रीर्जवतु । श्री
 कमल लालोपाध्यायः पं० छब्धकीर्ति राजहंसादि शिष्य सहिताः प्रणमंति ।

११ गणधरोके चरणों पर ।

[101]

१ । संवति १६९७ प्रमिनं । वैशाख सुदि ५ सोमवारे । श्री विहार नगर वास्तव्य श्री
 जगत चक्रवर्ति महाराजान सक्रम मंत्रि सुख्य मंत्रिश्वर दक्षान्वीय नरमणि संस्मित श्री जिन
 चंद्र सूरि प्रवेधित महतिपाण ज्ञाति मण्डन चोपड़ा गोत्रीय संघवी संग्राम सगरिदरेण ।

श्री गौतम स्वामि ॥ १ श्री अजिन्तुनि ॥ २ श्री वायुज्जति ॥ ३ श्री व्यक्तस्वामि ॥ ४
 श्री सुधर्मा स्वामि ॥ ५ श्री मण्डिच्युत स्वामि ॥ ६ श्री मौर्यपुत्र स्वामि ॥ ७ श्री अकंपिक
 स्वामि ॥ ८ श्री अचञ्जराता स्वामि ॥ ९ श्री मेतार्य स्वामि ॥ १० श्री प्रजास स्वामि ॥ ११

मंदिर प्रशस्ति ७ ।

[102]

। ए० ॥ स्वस्ति श्री संवति १६९७ वैशाख सुदि ५ सोमवासरे । पानिमाह श्री साहि-
 जां हसकख नूर मण्डवाधीश्वर विजयिराज्ये ॥ श्री चतुर्विंशतितम जिनाधिगज श्री वीर
 वर्द्धमान स्वामि निर्वाण कल्याणक पवित्रित पावापूरी परिमरे श्री वीर जिन चैत्य निवेशः ॥
 श्री श्यम जिनराज प्रथम पुत्र चक्रवर्ति श्री जगत महाराज सक्रम मंत्रि मण्डन श्रेष्ठ मंत्रि
 श्री दल संतानीय महतिपाण ज्ञाति शृंगार चोपड़ा गोत्रीय संघनायक संघवी नुसर्नी नार्या
 निहालो पुत्र सं० संग्राम छद्मजात गोदछेन तेजपाख जोजगज । रोहृदिय गोत्रीय न० पर-

* यह वेशिके मन्दिर देवा भवा है इस कारण उन पदा नहीं गया ।

दादिने श्री स्यूजनद्र कोठरी के चरणों पर ।

[200]

श्री ॥ नगनिधि गज गोत्रा सम्मितायां समायां (१७७३) नयन रस मारतावन
 बुकेषु शाके (१७६२) ॥ सित पटधर पाटो फाट्युने शुक्र पक्षे जुजमपति त्रयो (५)
 सङ्गर्गे वासरेहें ॥ १ ॥ श्री मद्ब्रह्मचर्य्य धर्म ब्रह्मर्ष श्री स्यूजनद्रानार्ग गारुड प्रवि
 बृहत् खरतर गणेश श्री जिनहर्ष सूरि पट्ट प्रजाकर श्री जिन भद्रेश नृगिण कविता उ
 श्री हीरधर्म गणि विनय विद्वत्कृष्णकज प्रजाकर श्री कृष्णचंद्र गणपुत्रेश ॥ । कर्म
 श्री संवै ॥ बदखिया गोत्रीयोत्तम चंद्रात्मज मुनिवाजाजिनन ॥

[201]

(१) ॥ सं श्री ५ श्री जिन विमल चूरि पाडुका । (२) ॥ श्री जिन ललित स
 पाडुका ।

[202]

सं १७७७ वर्षे कार्तिक मासि शुक्र पक्षे पूर्णिमा तिथौ १५ गुरुवासरे वृहत्
 षष्ठे यु० ज० श्री जिनरंग — — — ।

[203]

सं १७७७ वर्षे कार्तिक शुक्र पक्षे राका तिथौ १५ गुरु वासरे वृहत् खरतर गणे
 श्री जिनरंग सूरि शाखायां आचार्य श्री जिनचंद्र सूरिणां शिष्य वा० श्री सुमतिनां
 गणिनां पादपद्मे स्थाप्यते० वा० जुवनचंद्रेण । वा० सुमतनन्दन गणिनां चरण कमले ज
 श्री जिनचन्द सूरिणां चरण कमले इमे जवतः ।

श्री चंदनवाद्या कोठरी के चरणों पर ।

[204]

॥

प्र० श्री सुजाण विजयाजी पाडुका ।

सं० १९०० मा वर्षे सिते १२ ॥ वृहत् खरतर गृहे शु० ज० श्री जिनरङ्ग सुरि शाखायां
शि० चरण रेणुना दीप विजयायाः स्थापिते । श्री कीर्ति विजयायां -- चरण सरसी रुद्दे
प्रतिष्ठितं ॥ साध्वी ॥ श्री सौजन्य विजयाया । पादपद्मे प्रतिष्ठितं ।

[206]

सन्वत १८४८ शाके १९१३ वर्षे मिति वैशाख शुक्ल ३ तिथौ मृगु वासरे श्री मत् खरतर
गृहे जहारक श्री जिनरङ्ग सुरि शाखायां साध्वीमहत्तरा मति विजयाकस्य पादुका शिष्यनी
रूपविजया पादापूर्वी रध्वे प्रतिष्ठापितेः

[207]

॥ श्री संवत १९३१ का मिति साव शुक्ल दशमी तिथौ चन्द्र घारे श्री मद्बृहल्लोका
गुर्जराधिपति ॥ श्री पूज्याचार्य जी श्रीश्री १००८ श्रीश्री अक्षयराज सुरिजी चरण कमलौ
स्थापितौ श्री अजयराज सुरिजिः प्रतिष्ठितं च श्री शुचंनवतु =

[208]

॥ ॐ नमः ॥ संवत १८१९ वर्षे माघ मासे शुक्लरक्षे पटौ तिथौ गुरुवासरे श्री महावीर
जिनवर चरण कमले शुभे स्थापिते । हुगली वास्तव्य ॐत वंशे गांधि गोत्रे बुझाकी दास
क्युत्र साह माषिकचंदेन श्री अत्रीकृष्ण नगर जन्मस्थाने जन्मकव्याणक तीर्थे जीर्णोद्धारं
करापितं ॥ स्वपरयोः शुभाय ॥ १ पादपद्मस्तवे सुरि चंद्रनसौ स्थितौ वरौ तावन्नंदतु तीर्थेयं
स ----- ।

[209]

॥ ॐ नमः ॥ संवत १८१९ वर्षे श्री महावीर जिन चरण कमले स्थापिते श्री अत्रीकृष्णे
संघाटे साह माषिकचंदेन जीर्णोद्धारं करापितं ॥ श्री रस्तु ॥

संवत् १६०४ वर्षे -- माघ शुदि ए दिने जोमवासरे श्रवण नक्षत्रे ---
ठाकुर --- ठाकुर जाडेन तपुत्र ठाकुर दुधीचंद श्री जिन कुशल सूरीणं पाडुके कारितं ।

[228]

सं० १६०४ शाके १५५९ ईश्वर वर्षे सम्बतसरं चेत्र वदि १३ शुके शुभे मुहुर्ते द
देशे ज० श्री कुमुदचंद्र दिनंद पहे ज० श्री मूल शृंगार हा --- वधेरवाल झातौ
श्री तोला जा० सं --- पुत्र सं श्री कृष्ण ॥ --- देव जार्या सोहि ---
--- श्री महावीर पाडुका स्थापितं ।

[229]

सं० १०३० माघ शुदि ५ -- श्री सकल संघे श्री पार्श्व ना० पा० कारापि -- ।

[230]

सं० १०३० माघ शु० ५ सकल संघेन शांतिनाथ पाडु० कारापिता --

[231]

प्रथमद्विये गृणवीम सय वरमे वइसाह -- सुद्ध -- -- वद्द पियामह सिरि
कुमल नृरि पाद छदगा कारिया सिरिमाल वंसे वदलीया गुत्ते साह कमला वइणा विसाह
हउर उद सयव नृरीहि ॥ श्री ॥ ;

[232]

श्री वादार्जी श्री कुमल सुरजी सहायः
सं० १०३६ मीनी वेसाव सुदी १३ --- !

सं० । १९३९ फाद्युन कृष्ण ७ गुरौ श्री जिन कुशल सुरी पादन्यास । जं० । यु । प्र
त । श्री जिन मुक्ति सूरिश्वराणामादेशात् श्री दालचंद गणितः प्रतिष्ठितं ॥ सेठ गोत्रीय
नाराचंदात्मज रामचंद्रेण कारितः स्वश्रेयोर्थं मिरजापुर वरो

॥ ॐ नमः सिद्धम् । संवत् १९५० सि० फागुण सुदि ३ श्री मूलसंधे सरस्वति गढे वला
त्कार गण कुंद कुंदाचार्य आजाय सकल कीर्त्ति जट्टारक तत्पट्टे । जट्टारक कनक कीर्त्ति
उपदेशात् शा० कुवेरचंद हरीचंद तज्जार्या केशरवाई खुरदेवाळे प्रति०

संवत् १९५५ पोत्त सुद १५ गुरु ॥ श्री लुंपक गढे श्री पूज्य अजयराज सूरिः प्रतिष्ठी-
तम् ॥ बाबू लठमीपत गोविंदचंद की माजी करापितं श्री दादाजी चतुः चरण पादुकेज्योः
॥ श्री स्थूलजट्ट सूरिः ॥ श्री जिनदत्त सूरिः ॥ श्री जिनकुशल सूरिः ॥ श्री जिनचंद्र सूरिः ॥

राज गृह ।

मगध देशकी राजधानी यह राजगृह (राजगिरि) बहुत प्राचीन नगर है । १० मां
तीर्थंकर श्री मुनि सुव्रत स्वामीका ३ कल्याणक ज्येष्ठ वदि-० जन्म फाद्युन सुदि-१२ दीदा
फाद्युन वदि-१२ केवल ज्ञान यहां होनेके कारण यह स्थान पवित्र है । १२ मां तीर्थंकर
श्री नेमिनाथ के समयमें जगत्संघकी जी यही राजधानी थी । १४ मां तीर्थंकर श्री महावीर
स्वामी के समयमें प्रसिद्ध नगर था । गौतम बुद्ध की जी यही लीडा जूमि थी । प्रसेन जिन
उनके पुत्र श्रेणिक. उनके पुत्र कोणिक यहांके राजा थे । श्री महावीर स्वामी ती १४ चोमाने
यहां किये । जंबुस्वामी. धन्ना. शादिकज्जनी आदि दंडे २ लोग यहांके रहने वाले थे । यहां

पर पहाड़के निचे ब्रह्मकुण्ड, सूर्यकुण्ड आदि उष्ण कुण्ड बहुतसे हैं और स्थान देखने हैं। पांच पाहाड़ जो सामने दिखाई देते हैं (१) विपुलगिरि (२) रत्नगिरि (३) गिरि (४) स्वर्णगिरि (५) वैज्रारगिरि। पहाड़ पर बहुतसे जैन मंदिर बने हुये हैं। से चरण वा मूर्ति इधरसे उधर बिराजमान है इस कारण यहांके सब लेख एक साथ दिया गया है।

पार्श्वनाथ मंदिर प्रशस्ति । ॐ

[236]

(१) प० ॥ ॐ नमः श्री पार्श्वनाथाय ॥ श्रेयः श्री विपुलाचलामरगिरि स्थेयः स्थि स्वीकृतिः पत्र श्रेणि रमाजिराम जुजगाधीशस्फटासंस्थितिः । पादासीन दिवस्पतिः फल श्री कीर्त्ति पुष्पोद्गमः श्री संघाय ददातु बांछित फ

(२) लं श्री पार्श्वकल्पद्रुमः ॥ १ यत्र श्री मुनि सुव्रतस्य सुविजोर्जन्म व्रतं के साम्राजां जय राम लक्षण जरासंधादि न्यूमीजुजां । जज्ञे चक्रि वलाच्युत प्रतिहरि शालिनां संभवः प्रापुः श्रेणिक नृधवादि

“ जैन तीर्थ गाईड ” के तवारिख सुवे बिहार में उसके ग्रंथकर्ता लिखते है कि मथीयान महल्लाके “ में एक शिला लेख जो अलग रखा हुआ है — — संवत तियि वगेरा की जगह टुटी हुई है पंक्ति (१६) उमदा मगर घीस जानेकी वजह से कम पढ़नेमें आता है अखीर की पंक्तिमें जहां गच्छ का नाम है वहां किसी तोड़ दिया है वज्र शाखा बगेरह नाम वेशक मौजूद है ” यह पढ़ कर मुझे देखने की बहुत अभिलाषा हुई । लगाने पर १७ पंक्तिका एक लेख दिवार पर लगा भया पाया । किसी २ जगह टूट गया है संवत वगेरह साफ और दुसरा टुकड़ा मालून भया । पहिले टुकड़ेके लिये बहुत परिश्रम करने पर पता लगा और अब वहां रईस बाबु धन्नुलालजी सुचंति के यहां रखा गया है । यह प्रशस्ति पूर्व देशकी अपूर्व वस्तु है आज तक अशिशित था । इसमें श्री खरतर गच्छकी पट्टावली है जिसे बहुत पक्षपातीयों का भ्रम दूर हो जावेगा । यह पांच सौ साठ वर्ष प्राचीन है आर उस समयके मुसलमान सम्राट और प्रादेशिक शासन कर्ताका भी नाम विद्यमान पांडित्य और पद लालित्य भी पुरा है ।

(३) ज्विनो बीराञ्च जैनीं रमां ॥ २ यत्राजय कुमार श्री शालिधन्यादि माधनाः ।
सर्वार्थ सिद्धि संज्ञोग जुजो जाता द्विधापिहि ॥ ३ यत्र श्री विपुलान्निधोवनि धरो वैज्जार
नामापिच श्री जैनेन्द्र विहार जूषण धरौ पूर्वाप

(४) राशास्थितौ । श्रेयो लोक युगेपि निश्चित मितो लक्ष्यं ब्रुवाते नृणां तीर्थं राज-
गृहान्निधानमिह तत्कैः कैर्न संस्तुयते ॥ ४ तत्रच संसारापार पारावार परपार प्रापण प्रवण
महत्तम तीर्थे । श्री राजगृहम

(५) हातीर्थे । गजेंद्राकार महापोत प्रकार श्री विपुलगिरि विपुल चूडा पीठे सकल
महीपाल चक्रचूडा माणिक्य मरीचि मंजरी पिंजरित चरण संरोजे । सुरत्राण श्री साहि
रोजे महीमनुशासति । तदीय

(६) नियोगान्मगधेषु मलिक वयोनाम माण्डलेश्वर समये । तदीय सेवक सह णास
रदीन साहाय्येन । यादाय निर्गुण खनिर्गुणि रंग जाजं ॥ पुंमौक्तिकावलि रत्नं कुरुते सुराज्यं
ऋः श्रुती अपि शिरः

(७) सुतरां सुतारा तोयं विज्ञाति जुवि मंत्रि दक्षीय वंशः ॥ ५ वंशेमुत्र पवित्र धीः
हज पादाख्यः सुमुख्यः सतां जज्ञे नन्यसमान सद्गुणमणी शृंगारितांगः पुरा । तत्सूबुस्तु
नस्तुत स्तिहुण पालेति प्रतीतो जव

(८) ज्ञातस्तस्य कुले सुधांशु धवले राहान्निधानो धनी ॥ ६ तस्यात्मजोजनिच ठकुर
रुनाख्यः सद्धर्म कर्म विधि शिष्ट जनेषु मुख्यः । निःसीम शील कमलादि गुणाधिधाम जज्ञे
हेस्यः गृहिणी धिर देवि नाम

(९) ॥ ७ पुत्रास्तयोः समजवन् जुवने विचित्राः पंचात्र संतति भृतः सुगुणैः पवित्राः ।
त्रादिमास्त्रय इमे सहदेव कामदेवान्निधान महाराज इति प्रतीताः ॥ तुर्यः पुनर्जवति
संप्रति षष्ठराजः श्री मा

(१०) न सुबुद्धि लघु बांधव देवराजः । याच्यां जनाधिकतया घनपंक पूर्व देशेपि धर्म-
ए धुर्य पदं प्रपेदे ॥ ९ प्रथम मनव माया षष्ठराजस्य जाया समजनि रत नीति स्कीति
जज्ञीति रीतिः । प्रजवति पहाराजः सद्गु

(२७) वशतः प्रभु पार्श्वनाथ प्रासाद मुत्तम मची करत - - - । श्रीमद्विहारपु
वस्त्रिति वधराजः श्रीसिद्धये सुमति सोदर देवराजः ॥ ३१ महेन गुरुणा चात्र वधराजः ...
न्धवः । प्रतिष्ठां कारयामास मंरुनान्वय

(२८) मंरुनः ॥ ३२ श्रीजिनचंद्र सूरीन्द्रा येषां संयम दायकाः । शास्त्रेष्व
श्रीजिनखन्धि यतीश्वराः ॥ ३३ कर्तारोश्च प्रतिष्ठाया स्ते उपाध्याय पुङ्गवाः । श्री मंतो
द्विताजिधाना गुरु शासनात् ॥ ३४ न

(२९) यनचंद्र पयोनिधि जूमिते ब्रजति विक्रम जूद्धनेहसि । बहुल षष्ठि दिनेशु
मागमे मही मचीकर देव मयं सुधीः ॥ ३५ श्रीपार्श्वनाथ जिन नाथ सनाथ मध्यः ।
एष कजसध्वज मणिमो

(३०) ऋः । निर्माप कोस्य गुरवोत्र कृत प्रतिष्ठा नंदंतु संघ सहिता जुवि सुप्रि
३६ श्रीमन्निर्गुवन द्विताजिपेक वर्ये प्रशस्ति रेपाच । कृत्वा विचित्र वृत्ता लिखिता श्री
गि नूर्णा ॥ ३७ उत्कीर्णाच सुवर्णा ठकुर मा

(३१) व्हांगजेन पुण्यार्थं । वैज्ञानिक सुश्रावक वरेण वीधाजिधानेन ॥ ३८ श्री
दिग्गज संयत १४१२ थापाद् वदि ६ दिने । श्रीखरतर गठ शृङ्गार सुगुरु श्रीजिनखन्धि सा
पहाण्डत श्रीजिनैन्द्र मृरिणामुपदे

(३२) जेन । श्रीमंघ्रि वंश मंरुन ठं० मंरुन नंदनाच्यां । श्रीजुवन रि
९० हरिप्रत गणि । मोद मूर्ति गणि । दर्प मूर्ति गणि । पुण्य प्रधान गणि सहितानां
देश विहार श्रीमहातीर्थ यात्रा संमूत्र

(३३) एदि मद्दा प्रदावनया सकद्व श्रीविधि संघ समान नंदनाच्यां । ठं० वधराज
ठं० देवराज सुश्रवकाच्यां कारि - - - - - म्य । श्रीपार्श्वनाथ प्रसादस्य प्रशस्तिः ॥ शुभ
रवतु श्रीमंदन ॥ ३४ ॥ ३ ॥



(६३)

गांव मन्दिर-धातुओंके मूर्ति पर ।

(237)

सम्बत् १११० चैत मास सुदि १३ संतनाथ प्रतिमा कारित--।

(238)

सं० १४६७ वर्षे आपाढ़ वदि ८ रवौ ज० ज्ञा० सा० सपुरा भा० सीतादे पु० कर्मसिंहेन
ने नमिनाथ विंविपितृ मातृ श्रेयसे कारितं उक्तेषु गच्छे श्रीसिद्धाचार्य संताने प्र० श्रीदेव
प्रसूरिभिः ।

पाषाण पर ।

(239)

सम्बत् १५०४ वर्षे फागुण सुदि ९ दिने महतिआण वंशे जाटङ्गोत्रे सा० देवराज पुत्र
० पीमराज पुत्र सं० तिवराज तेन पुत्र सं० रणमल धर्मदास । श्रीशांतिनाथ विंविं
कारितं प्रतिष्ठिते खरतर गच्छे श्री जिनवर्द्धन सूरिपट्टे श्रीजिन चन्द सूरिपट्टे श्री जिन
नागर सूरिणां निदेशेन वाचनाचार्य शुभशील गणिभिः ।

(240)

ॐ नमः सिद्धं ॥ सम्बत् १८१६ वर्षे माघ मासे शुक्लपक्षे ६ तिथौ गुरुवासरे श्रीमुनि
सुव्रत स्वामि जन्म कल्याणक धरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओसवंशे गंधी गोत्रे
मुलाकीदास पुत्र साह माणिक चंदेन राजगृहे जीर्णोद्धारं करापितं ।

(241)

सं० १८२५ माघ सु० ३ गुरुपेतासाह पुत्र्या उमरवाई केन शांतिनाथ विंविं कारापिता ।

श्री शुभ सम्बत् १९०० वर्षे मार्गशीर्षमासे शुक्ल पक्षे दशम्यां त्रिंशो शुभवासरं
वर्द्धमान तीर्थंकरस्य चरण पादुका प्र० श्री बृहत्खरतर गच्छे जंगम युग प्रधान
श्री जिनरंग सूरेश्वर शाषायां य० यु० भट्टारक श्रीजिन नंदीवर्द्धन सूरि राज्ञे श्री
नाचार्य श्री मुनि विनय विजयजी तत् शिष्य पं० कीर्त्योदयोपदेशात् ओसवाल
द्वय बाबू खुस्यालचन्दस्य पत्नी वीवी पराण कवरी तेन प्र० का० श्री संघस्य
कारिणो भवतु शुभमस्तु ।

शु० स० १९०० व० मार्गशीर्षमासे शु० वा० श्रीचन्द्रप्रभकस्य च० क० प्र० श्री वृ
ग० श्री जिन नन्दी वर्द्धन सू० व० मुनिकीर्त्युदयोपदेशात् महतावचन्द संचीतीकस्य
चीरोंजी वीवी प्र० का० शुभमस्तु ।

सं० १९११ व० शा० १७७६ प्र० शुचि शु० १० ति० श्रीचन्द्र प्रभ विंशं प्र० । प्र०
जिन महेंद्र सूरिभिः का० सा श्री हकु-----खरतर गच्छे ।

विपुलगिरि ।

संवत् १७०७ शाके १५७२ प्रवर्तमाने आश्विन शुक्ल पक्षे त्रयोदश्यां शुक्ल वासरे ।
बिहार वास्तव्येन महतीयाण ज्ञातीय चोपड़ा गोत्रेण म० तुलसीदास तत्भार्या
निहालो तत्तनयेन मं० संग्रामेण यवीसात्पुत्र गोवर्द्धनेन सह श्रीराजगृह विपुलगिरी
अमै जीर्णा उद्वरिता संघवी संग्रामेण प्र० कल्याण कीर्त्युपदेशात् श्रीखरतर गच्छे
लिपतं रतनसी खंडेलवाल गोत्रे पाटनी गुमानासिंही रासिंग ग्राम मुकाम राजप्रिही ।

(६५)

(246)

सं० १८४८ मिती कातिक सुदि ७ तिथौ । श्रीसंघेन । श्रीविपुलाचले मुक्तिंगतस्याति
ककमुने मूर्तिः कारिता । प्रतिष्ठिता च श्रीअमृतधर्म वाचकेः ।

(247)

सम्बत १९३८ ज्येष्ठमासे शुक्ल पक्षे द्वादशी गुरु वासरे श्रीचन्द्रप्रज्ञ जिन चरण न्यासः
तिष्ठतं वृद्ध विजय गणि प्रथम जीर्णोद्धार माणिकचन्द गंधी करापितं विपुलाचल
तिय जीर्णोद्धार राय लछमीपति सिंह धनपति सिंह करापितं । श्रीरस्तु ॥

(248)

संवत् १९३८ ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे द्वादश्यां श्री मुनि सुव्रत जिन चरण न्यासः वृद्ध
विजय प्रतिष्ठितं राय लछमीपति सिंह धनपति सिंह जीर्णोद्धार करापितं श्रीरस्तुशुभं
प्रायात् विपुलाचल ।

रत्नगिरि ।

(249)

॥ अंनमः ॥ सम्बत १८१९ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्रीनेमिनाथ जिन चरण कमले
स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक चन्देन
श्रीराजगृहे रत्नगिरौ जीर्णोद्धार करापिते ॥ श्रियोस्तु ॥

(250)

॥ अंनमः ॥ सम्बत १८१९ वर्षे माघमासे शुक्ल पक्षे ६ तिथौ श्रीशांतिनाथ जिन चरण
कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओशवंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक
चन्देन श्रीराजगृहे रत्नगिरौ जीर्णोद्धारं क० ।

॥ अंनमः ॥ संवत् १८१९ वर्षे माघमासे शुक्ल पक्षे ६ तिथी श्री पार्श्वनाथ
चरण कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओशवंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र
माणिक चन्देन श्रीराजगृहे रतनगिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥ श्रीः ॥ १ ॥

अंनमः ॥ संवत् १८१९ वर्षे माघमासे ६ तिथी श्री वासु पुज्य जिन चरण
स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र माणिकचन्देन
राजगृहे रतनगिरि पर्वते जीर्णोद्धारं करापितं । स्वपरयोः शुभम् ॥ श्रीः ॥

उदयगिरि ।

॥ अं नमः ॥ संवत् १८२३ वर्षे वैशाख शुक्ल पक्षे ६ तिथी श्री अभिनन्दन जिन
कमले स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र साह
चन्देन उदयगिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥

॥ अंनमः ॥ संवत् १८२३ वर्षे वैशाख शुक्ल पक्षे ६ तिथी श्री सुमति जिन चरण
स्थापिते हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधी गोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र माणिकचन्देन
गिरौ जीर्णोद्धारं करापितं ॥

अंनमः ॥ संवत् १८२३ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे पष्टी तिथी श्री पार्श्वनाथ
चरण कमल स्थापिते ॥ हुगली वास्तव्य ओश वंशे गांधीगोत्रे बुलाकीदास तत्पुत्र
माणिकचन्देन श्री राजगृहे उदयगिरि राजे जीर्णोद्धारं करापितं ॥ स्वपरयो
हिते ॥ श्रीः ॥

(६७)

स्वर्ण गिरि ।

(256)

सं० १५०४ फागुण सुदि ९ दिने महत्तियाण वंशे जाटड गोत्रे सं० देवराज सं० पीमराज
[सं० सिवराजेन । भार्या सं० माणिकदे पुत्र सं० रणमल धर्मदास सकुदुम्बेन श्री
दिनाथ विवंकारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिन वर्द्धन सूरि पट्टे श्रीजिन चन्द्र सूरि पट्टे श्रीजिन
गरसूरीणां निदेशेन वाचकाचार्य शुभ शील गणिभिः श्रीखरतर गच्छे ।

वैभार गिरि ।

(257)

सं० १५२४ ज्येष्ठ सुदि १३ खरतर गणेश श्रीजिन चन्द्रसूरि विजय राज्ये तदादेशे
वैभार गिरौ मुनि मेरुणा भि० ॥ — श्री कमल संयमोपाध्यायैः स्वगुरु श्री जिन भद्र
रि पादुके प्र० का० श्री माल वं० श्रीपू पुत्र ठ० छीतमल श्रावकेण ।

(258)

सं० १५२७ ज्येष्ठ सुदि १३ श्रीजिन चंद्र सूरिणा मादेशेन श्री कमल संयमोपाध्यायैः
लाशालि भद्र मूर्ति -- का० प्र० पीमसिंह (?) श्रावकेण ।

(259)

अंनमः ॥ सम्वत् १८२६ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे १३ तिथौ श्री जादिनाथ जिन चरण
मले स्थापितं हुगली वास्तव्य लोत्तवंशे गांधि गोत्रे युलाकीदास तत्पुत्र साह माणिक
दिने राजगृहे वैभार गिरे जीर्णोद्धार करापितं ॥ स्वपरयोः शुभाय ॥ श्री ॥

॥ श्री सम्बत १८३० माघ शुक्ल ५ चन्द्रे ओसवंशे गहलडा गोत्रे जगत्सेठजी श्री चन्दजी तत्पुत्र सेठ आणंदचन्दजी तत्पुत्र जगत्सेठजी श्री महताव रायजी तद्गर्भ जगत्सेठाणीजी श्रीशृंगारदेजी श्रीमदेकादश गणधर पादुका कारापितं । स्यात् नगरोपरि वैभार गिरी ॥

सम्बत १८७४ वर्षे शाके १७३९ मिति ज्येष्ठ वदि ५ सोमदिने श्री व्यवहार गिरि श्री पार्श्वनाथ चरणन्यासः प्रतिष्ठितं । श्री जिन हर्ष सूरिभिः ।

सम्बत १८७४ वर्षे शाके १७३९ मिति ज्येष्ठ वदि ५ सोम दिने । श्री व्यवहार शिपरे । श्रीयुगादि देव चरण न्यासः प्रतिष्ठितं । महारक श्री जिन हर्ष सूरिभिः ॥

सुभ स० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्लपक्षे १० दशम्यां तिथौ शुभवासरे । शांतिनाथ चरण कमल प्र० श्रीमत् बृहत्स्वरतर ग० श्री जिन रंगसूरीश्वर साखायां वृ० चं० युं० श्री जिननन्दी बहंन सूरि राज्ये वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शिष्य पं० कीर्त्युदयोपदेशात् ओसवाल चं० वायू मोहन लाल कस्यात्मज वायू हकुमत रायेन का० शुभमस्तु ॥

अंनमः सु० सं० १९०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शु० पक्षे १० द० श्री पद्म प्रभुकर्य क० प्र० श्री वृ० प० ग० प्र० श्री जिननन्दी बहंन सूरि वा० श्री मुनि विनय विजयजि नि० सु० कीर्त्युदयोपदेशान् वायू पुस्याल चन्द पीपाडा गोत्रीयास्य पत्नी पराण प्र० वा० श्री वैभार गिरे सुभमस्तु ॥

(६६)

(265)

॥ सु० स० १६०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्र पक्षे १० दशम्यां शुभवासरे श्रीमत्पार्व-
णस्य चरण कमल प्र० श्रीमत् वृहत परतर ग० श्री जिन रंग सूरेश्वर सापायां श्री जिन
दी वर्द्धन सूरि राज्ये वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् शि० मु० कीर्त्युदयोपदेशात्
० वं० पुस्यालचन्द पीपाडा गोत्रस्य पत्नी पराणकुंवरश्राविका प्र० का० वैजार गिरे।

(266)

॥ अंनमः सिद्धं सं० १६०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्र पक्षे १० दशम्यां तिथी शुभ वा०
कुंथनाथस्य चरण क० प्र० श्री मत्स्य० ख० ग० श्री जिन रंग सूरेश्वर सापा० श्री जिन
दी वर्द्धन सूरि व० वा० श्री मुनि विनय विजयजि तत् त्रिण्य मुनि कीर्त्युदयोपदेशात्
सवाल वंसोद्भव बाबु मोहनलालजीकस्यात्मज बाबु हकुमत राय- -कस्य गोत्रीय
० कारापित शुभमस्तु । वैजार गिरी ।

(267)

ॐ नमः सिद्धं ॥ शु० सं १६०० वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्र पक्षे १० दशम्यां तिथी शुभ
० श्रीचिंतामणि पार्वनाथस्य च० प्र० श्री मत्स्य० खरतर ग० श्री जिन रंग सूरेश्वर
सापा० प्र० यं० यु० प्र० श्री जिन नंदी वर्द्धन सूरि वर्द्धमान वा० श्री विनय विजयजि तत्
० मुनि कीर्त्युदयोपदेशात् दाबु महताय चन्दस्य सचिती गोत्रीयो तत्पत्नी चिरांजी
वती प्र० का० शुभ मस्तु वैजार गिरे ।

(268)

सं० १६११ ७ । शाके १६९६ प्र० । मुचिः सुदि । तिथी श्रीनेमनाथपाठ्यागोसागः
० प्र० श्री जिन महेंद्र सूरिजि वा । सं० । गौ । श्री उदयचन्द्रस्य पत्नी सता सुभा — तस्या
सौम्य प्रयत्नः ।

कुण्डलपुर ।

आज कल यह स्थान बडगांव नामसे प्रसिद्ध है परन्तु शास्त्र में इसका गुव्वर नाम है । यहां श्री महावीर स्वामीजीके प्रथम गणधर श्री गोतमस्वामी (इन्द्रभूति) का जन्म स्थान है । बौद्धोंके समयमें निकटमें नालंदा नामका प्रसिद्ध और छात्रावास था । चारों तर्फ प्राचीन कीर्तियोंके चिन्ह विद्यमान हैं । के तर्फसे इस वर्ष यहां खुदाई आरम्भ हुई है आशा है कि प्राचीन इतिहासके बहुतसे साधने यहां मिलेगी ।

पाषाणपर ।

(269)

॥ ५ ॥ संवत् १४७७ वर्षे ज्यैष्ठ्य वदि ६ शुक्रे श्री आदिनाथ ऋषभ विंवं का० ।

(270)

॥ सं० १५०४ वर्षे फागुण सुदि ६ दिने महत्तियाण वंशे काणा गोत्रे स० कउरसी म० श्रीपण कारित श्री महावीर विंवं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसागर निदेशेन वाचकाचार्य सुभ शील गणिभिः ।

(271)

सं० १६८६ वर्षे वैशाख सुदि १५ दिने मंत्रिदल वंशे चोपरा गोत्रे ठा० विमलदास तत्पुत्र ठा० तुलसीदास तत्पुत्र ठा० संग्राम गोवर्द्धनदास तस्य माता ठा० नीहाली तत्पुत्र श्रीराम ठा० देहुरा गोतमस्वामीका चरण गुव्वर ग्राम -- कारा पिता बृहत्खरतर गच्छे श्री श्री जिनराज नृरि विद्यमाने उ० अन्नय धर्मेन प्रतिष्ठा कृता ॥

संवत् १६८६ वर्षे शाके १५५१ प्रवर्त्तमाने---- मासि शुक्ल पक्षे राक्षसी गुरु वासरे
 इत् श्री परतरगच्छे युग प्रधान श्रीजिन चन्द्रसूरि पादुका ठाकुर देवा तस्यात्मज मांडन
 य ज्ञार्यान्हालो श्राविका पुण्य प्रभाविका तस्य पुत्र दुलि चन्द्रेण प्रतिमा कारापिता
 माहतीयाल (महत्तियाण) श्रावकेन गुरु भक्ति दुलिचन्द्र प्रतिष्ठा क० श्री उपाध्याय श्री
 तिलक गणि पादुके प्रतिष्ठितं वा० लब्धिसेन गणि प्रतिष्ठा० ।

पटना (पाटलिपुत्र)

मगधके राजाओंकी राजधानी राजगृहीसे राजा श्रेणिकके पुत्र कोणिक चंपा नगरी
 राजधानी बनाया । उनके पुत्र उदाई राजा वहांसे यह पाटलिपुत्र नवीन नगर बसा
 राजधानी कायम किया । पश्चात् यहां पर नवनन्द मौर्य वंशी चन्द्रगुप्त अशोक
 इदि बड़े २ राजा राज्य कर गये । पं० चाणक्य, आचार्य उमास्वाति, मद्रब्राह्म-आर्य
 गिरि, सुहस्त्रिय, वज्र स्वामि महान् लोग यहां रह गये हैं । आचार्य धीस्थूल मद्रजी
 र सेठ सुदर्शन जी का भी यहीं स्थान है । दादा जी की छत्री भी यहां प्राचीन है
 हरका मंदिर जीर्ण होगया है—आज कल बिहार उड़ोसाके शासन कर्त्ता यहां रहनेके
 ारण और प्रधान विचारालय स्थापित होनेसे यह स्थान उत्तति पर है ।

सहर मन्दिर—पाषाण पर ।

संवत् १८५२ वर्षे पोष शुक्ल ५ भृगुवासरे श्री पडलीपुर वास्तव्य । श्री उल्ल संघ समु-
 य्येन श्री विशाल स्वामी । श्री पार्श्वनाथ स्वामी प्रासादस्य जीर्णोद्धारं कारापित ।
 य्यस्याग्रेस्वरो तथा गच्छोय श्राद्धः । कुहाड श्री ज्ञानचन्द्रजो प्रतिष्ठितं च श्री सकल
 रिभिः शुभं भूयात् ।

धातुओं के मूर्तिपर ।

(274)

सं० १४८६ वर्षे वैशाख सुदि ७ सोमे श्री श्रीदूगड गोत्रे सा० अर्जुनपुत्रेण सा०
सिंहेन भार्या जयताही पु० सा० मूला सा० नगराज सा० श्रीपालादियुतेन
श्रीचंद्र प्रभं कारितं प्रतिष्ठितं वृहद्गच्छीय श्री मुनीश्वर सूरि पते प्रभ सूरिभिः ॥

(275)

सं० १४८२ वर्षे श्री आदिनाथ विंवं प्रति० श्रीखरतर गच्छे श्री जिनप्रद
कारितं कांकरिया सा० सोहड़ भार्या हीरादेवी श्री--कया ।

(276)

सं० १५०३ वर्षे माघ सुदि ६ बुधौ वासरे घौरपट श्री देवां कीर्ति मटकी घौरिय
सहिजै पतिमर्जर्षिः भयमिरि पुत्र उदत्य-पिम्बराजामन । शुभं ॥

(277)

सं० १५०८ वर्षे वैशाख सु० ५ चन्द्रे उप० सा० पेता भा० पेतलदे पुत्र चाचा
देपा पेताकेन डूंगर निमित्त श्री धर्मनाथ वि० का० प्र० चैत्र गच्छे भ० श्री मुनि
सूरिभिः ॥

(278)

सं० १५०९ माह सुदि १० के० सा० ला गो० दो० सालहा भा० सालही पु० जदा
ऊमादे पु० राणा थिरदे कुंपा पांचा स० जदाकेन पीकातमि० (?) श्रीवासुपुत्र्य
का० प्र० श्री संदेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः ॥

(७३)

(279)

सं० १५१४ जलवाह ग्राम वासि औसवाल रा० लीला भा० अमरी पुत्र सा० नाथू
ना भा० चनू पुत्र डूंगशादि युतेन भातृ उगम श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत विंवं का० प्र०
तपा गच्छेश श्री रत्नशेपर सूरि पुरंदरैः ॥

(280)

सं० १५१७ वर्षे फा० शु० ११ लीणुरा वासि प्रा० वा० माई (?) आज वाकुंसुत सम-
ण भा० राजू पुत्र वानर पर्वतादि युतेन स्व श्रेयसे श्री कुंयु विंवं का० प्र० तपागच्छे
रत्नशेपर सूरिपदे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः आचंद्रार्कं जपतत् ॥ श्री ॥

(281)

सं० १५१९ वर्षे आपाड़ वदि १ श्री मंत्रि द० श्री काणा गोत्रे सा० लाधू भार्या घर्मिणि
त्र सं० अचल दासेन पुत्र उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन ब्रुह्मिसेन देवपाल महिराजादि युतेन
श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन सुन्दर सूरिपदे
जिन हर्ष सूरिभिः ।

(282)

सं० १५२३ वर्षे फा० व० ८ छाव गोत्रे उकेश स० सान्हा भा० कलह पुत्र सं-नरसिंह
नामलदे पुत्र सं० साधूकेन श्री यमना भातृ साहसमथर प्रमुख कुटुम्ब युतेन स्व
यसे श्री घर्मनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री - रिभिः : ॥ देप । तप--श्री ॥

(283)

सं० १५२४ वै० शु० १३ प्राग्वाट सं० आस० भा० रात् सुन सा० जाग्रा माः सोनी
त्र हासादि कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री वासु पूज्य विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री लक्ष्मी
सागर सूरिभिः ॥ जाणांधारा (?) वास्तव्य वासियाः ॥

सं० १५३१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय घेवरीया गोत्रे सा० केलहण
ऋणी पुत्र साहसू जगपतिकेन भा० साभू पुत्र सहसू युतेन श्री विमल नाथ विं व
प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन हर्ष सूरिभिः ॥

सं० १५३४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० सोमे लीवडी वास्तव्य सं० खेमा भा० गोरी
पुत्र धेडसीम हितया निज श्रेयसे श्री अंचल गच्छे श्री कुंथ केसरि सूरिणामुपदेशेन
कुंथनाथ विं व का० प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

सं० १५३५ श्री मूलसंघ श्री विद्यानंदि गुरु रोहिणी व्रतोद्यापन वासु पूज्य स्व
प्रतिष्ठितं सदा प्रणमंति गुरवः ।

सं० १५३६ फा० सु० ८ ओसवाल ज्ञा० सा० देरहाणघा सुः सरठवणेन (?) सु० सरव
श्री शांतिनाथ विं व का० ॥ प्र० ॥ उके । - कव ।

सं० १५३८ वर्षे जापाढ़ वदि ५ स -- र मूलसंघ श्री मानिक चंद ल --- श्री ॥

सं० १५६३ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने श्रीमाल ज्ञातीय भांडिया गोत्रीय सा० अर्जु
पुत्री सा० लाया भार्या जाढी सुश्राविकया श्री चन्द्र प्रभविं व कारितं स्व पुण्यार्थं प्रि

खरतर गच्छे श्री जिन समुद्र सूरि पहार्लंकार श्री जिन हंस सूरिभिः कल्याणं भूयात्
माह सुदि १ ॥ दिने ॥

(290)

सं० १५६६ वर्षे ज्यैष्ठ शुक्ल नवम्यां श्रीमाल वंशे महता गोत्रे सा० हालहा तस्य पुत्र
१० तक्तनेनेदं पार्वनाथ विंवं कारितं खरतर गच्छे श्री जिनदत्त (?) सूरि अनुक्रमे श्री
धनराज सूरिपते श्री जिन चन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(291)

सं० १५६६ वर्षे माघ व० ५ गुरौ लघु शाखायां सा० वीरम ज्ञा० कलापुत्र सा० आसा
१० कुंजरि नाम्न्या मुनि सुव्रत विंवं का० स्वश्रेयसेप्र० तपागच्छे श्री हेम विमलसूरिभिः
नलकच्छे ॥ (?) ॥

(292)

सं० १५७६ वर्षे वैशाख सु० ३ शुके श्री श्री (?) वंशे । सा० माला ज्ञा० खाजू नाम्ना
प्यो (?) जावड़ श्री० अदा समस्त कुटुम्ब युतया श्री अंचलगच्छे श्री ज्ञावसागर सूरिणा-
पदेशेन श्री आदिनाथ विंवं कारितं श्री संघेन ॥ अयोऽयं ॥

(293)

सं० १५७६ वर्षे वैशाख सु० ६ सोमे पं० अजयसार गणि पुण्याय शिष्याः पं० अजय
दिर गणि अजय रत्न मुनि युताभ्यां श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं त्रिय तपा
हे श्रीसौभाग्य सागर सूरिभिः ।

(294)

सं० १५७६ वर्षे माह सुदि ५ दिने उसवाल ज्ञातीय नवतपा गोत्रे माहधान ज्ञा०-
सिरि पु० पदमा-पापदना-पांशा हेमादि युतेन सा० पहमाकेन पूर्यंज पुण्याय श्री

सं० १९०० मिः आषाढ सिः ९ गुरौ श्री महावीर जिन विंवं प्रति० स्वरत्न
गच्छे महारक श्री जिन हर्ष सूरिपट्टे दिनकर ज्ञ० श्री जिन सौभाग्य सूरिभिः
तेन ओसवंशे दूगड़ गोत्रे भोलानाथ पुत्र दोलतरामेन स्वश्रेय सोर्थम् ।

पाषाण के मूर्तियों और चरणों पर ।

(307)

(चन्द्रप्रभ विंवर)

सम्बत १६७१ श्री आगरा वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे गाणी वंसे
ऋषभदास भार्या सुः रेष श्री तत्पुत्र संघराज सं० रूपचन्द चतुर्भुज सं० घ
युते श्रीमदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ धर्ममूर्ति सूरि तत् पट्टे पूज्य श्रीकल्याण सागर
मुपदेशेन विद्यमान श्री विसाल जिन विंवर प्रति --

(308)

संवत् १६७१ वर्षे ओसवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे गाणी वंसे साह क्रुर पाल सं० सोनपाल
प्रति० अंचल गच्छे श्री कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन वासु पूज्य विंवर प्रतिष्ठापितं ।

(309)

॥ श्री मत्संवत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनी आगरा वास्तव्योसवाल
लोढा गोत्रे गावंसे संघपति ऋषभ दास भा० रेष श्री पुत्र सं० क्रुरपाल सं० सोनपाल
प्रवरौ स्वपितृ ऋष दास पुन्यार्थं श्रीमदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरीण
मुपदेशेन श्री पदम प्रभु जिन विंवर प्रतिष्ठापितं सं० चागाकृतं ।

(310)

श्री मत्संवत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनी श्री आगरा वास्तव्य उपकेठ
ज्ञातीय लोढा गोत्रे सा० प्रेमन भार्या शक्तादे पुत्र सा० पेतसी लघुभ्राता सा० प्रेमसा

तेन श्री मदंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन श्री वास पूज्य
विं प्रतिष्ठापितं सं० क्रूरपाल सं० सोनपाल प्रतिष्ठितं ।

(311)

श्री मत्सवंत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ श्री आगरा नगरे ओसवाल ज्ञाती
गोत्रे — गा वंसे सा० पेमन भार्या श्री सक्तादे पुत्र सा० पेतसी भा० सक्तादे
पुत्र सा० - सांग — श्री अंचल गच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन
श्री विमलनाथ विं प्रतिष्ठितं सा० क्रूरपाल - - ।

(312)

(सं० १६७१) ॥ संघपति श्री क्रूरपाल सं० सोनपालैः स्वमातृ पुण्यार्थं श्री अंचलगच्छे
पूज्य श्री ५ श्रीधर्ममूर्ति सूरि पट्टाम्बुजहंस श्री ५ श्री कल्याण सागर सूरीणामुपदेशेन
श्री पार्श्वनाथ विं प्रतिष्ठापित पुज्यमानं चिरं नंदतु ।

(313)

॥ सं० १७६२ वर्षे कार्तिक शु० ६ सा वेणीदास पुत्र श्रीमसेन पुत्र मयाचन्द्र प्रतिष्ठा
करापितं बीराणी गोत्रे पाटली पुरे ।

(314)

सं० १७६२ वर्षे कार्तिक शुक्ल ६ सा० वेणीदास पुत्र श्रीमसेन पुत्र मयाचन्द्र बीराणी
गोत्रे - - - प्रतिष्ठा करापितं पाटली पुरवरे ।

(315)

॥ सं० १७६२ व० का० सु० ६ सा० वेणीदास पुत्र श्रीमसेन पुत्र मयाचन्द्र प्र०
बीराणी गोत्र पटना नगर श्री नेमनाथ ॥ श्री शांतिनाथ ॥

॥ सं० १७८९ वर्षे आसोज सुदि ८ श्रीपासचन्द गच्छे ॥ श्री उपाध्याय
जीना पादुका ॥

(317)

॥ संवत् १८१९ वर्षे श्री संभवनाथ जिनचरण कमल स्थापिते साह माणिक
जीर्णोद्धार करापितं ॥

(318)

सं० १८२५ वर्षे साघ शु० ३ गुरौ गोवर्द्धन सुत सरुपचंदेन प्रति महि -- नाप
कारापितं ।

(319)

॥ संवत् १८२९ श्री ५ पं० लालचन्दजी पादुकं ॥ मनसारामेन स्थापितं ॥ संवत्
श्री ५ पं० सरुपचन्दजी पादुका ॥ संवत् १८२९ श्री ५ श्री वा० भारमल्लजी ॥

(320)

॥ गुप्त संवत् १८७७ वर्षे ॥ वैशाख शुक्ल पंचम्यां चंद्रवासरे श्री जिन कुशल
रुद्रगुरणा चरण पादुका प्रतिष्ठिता श्री मद्रवृहत्खरतर गच्छे भहारक श्री जिन
सूरि पहाळं कृत श्री जिनचन्द्र मूरिजिः श्री मत्पाटलिपुर वास्तव्य । समस्त श्री
प्रतिष्ठा कारापिता । पं । गणि श्री कीर्त्युदयोपदेशात् ॥ श्री रस्तु ।

(321)

॥ संवत् १८७७ ॥ वर्षे वैशाख शुक्ल पंचम्यां चन्द्रवासरे श्री जिन कुशल
रुद्रगुरणा चरण पादुका प्रतिष्ठिता भहारक श्री जिन अजय सूरि पहाळं कृत श्री

॥ अलसक्तरुणवर्षीविस्तारवृत्तपवमावर्षापरेश्वरी
जिनऊतलसूरीश्वरमुद्ररुणवर्षावृत्तकाप्रतिष्ठि

ताश्रीम
रुणवृत्ति
श्रीजिन
प्रियवृत्त
नेवजस्त
व्याद्विउ
समस्तश्री
शास्त्रस
प्रियाका
देराता



हृदतवरत
तदारक
अक्षयस
कतश्रीजि
रतिश्रीम
रवस्तुवा
मृष्टेवनि
मिनापग
द्युदयोप
श्रीरक्त



न्द्र सूरिभिः मनेर वास्तव्य श्रीमालान्वये--वदलिया गोत्रे सुश्रावक श्री कल्याणचन्द्र
पुत्र श्री भग्गुलाल की त्तचन्द्र तत्पौत्र किसनप्रसाद अन्नय चंद्रादि सपरिवारेण स्वश्रे-
ष्ठं प्रतिष्ठा कारापिता पं । ग । कीर्त्युदयोपदेशात् ।

(322)

श्री आगरा नगर वास्तव्य सं० पति श्री श्री चन्द्रपालेन प्रतिष्ठा कारिता ।

(323)

॥ संवत् २४९ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्री मुलसंघे महारक जी श्री जिन चन्द्रदेव साह
जिवराज पापडीवाल नित्य प्रणमति सर मम श्री राजाजी स संघे--

(324)

संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदि ३ मुलसंघे महारक श्री जिन चन्द्र सा० जिवराज
पापडीवाल सहैरज्ञ-सा श्री राजसी संघ रावल ॥

(325)

॥ संवत् १६०४ ज्येष्ठ वदि ३ सोमवारे क्रुखंशे महाराजधिराजजी श्री मत्त स्याहजा
उय म० ॥ चंद्रकीर्तिजी तत्पदे म० श्री देवेन्द्र कीर्तिजी सदाभनाये सरस्वती गच्छे
लात्कारगण कुंदाचार्यानवये शुभां ।

(326)

संवत् १७३२ वर्षे मार्गशिर्ष वदि पंचमी गुरौ ढाकामध्ये ---- काष्ठा संघ माथुर
च्छे पुष्कल गण लोहाचार्या न्वये दिग्भवर धर्म महारक रूपचन्द्र प्रतिष्ठितं अग्रवाल
गिलु गोत्रे सा० गुलाल दास ज्ञा० मुलादे पुत्र० । सावलसिंघवी जमरसिंघवी केसर
सिंघ वि---प्रतिष्ठा कारापितानि सेरपुरेन्तिके ---- ढाकायां प्रतिष्ठा । ---
पादुकानां ॥ श्रेयोस्तुः ॥ पादुका आदिनाथकी । गुरुपादुका ॥

श्री समेत शिखर तीर्थ ।

यह प्रसिद्ध जैन तीर्थ पूर्व देश जिला हजारीबागमें है । १ । १२ । २३ । २४ तीर्थंकरोंके सिवाय और २० तीर्थंकरोंका निर्वाण कल्याणक यहां हुवे हैं । यह पहाड़के २० टोंकमेंसे १६ टोंक पर छत्रिमें चरण पादुका विराजमान हैं और श्री नाथ स्वामीके टोंक पर मंदिर है । तलहटी मधुवनमें मंदिर और घर्मशालावने हुवे । यहांसे ४ कोस पर ऋजुवालुका नदी बहती है जिसके समीपमें श्री वीर भगवानका ज्ञान भया था । यहां पर चरण पादुका है । यहांका और मधुवनका लेख जैन तीर्थ डसे लिया गया है ।

ऋजुवालुका नदीके किनारे छत्रिमें

चरण पर ।

(३३६)

ऋजुवालुका नदी तटे श्यामाक कुटुम्बी क्षेत्रे वैशाख शुक्ल १० तृतीय प्रहरे के ज्ञान कल्याणिक समवसरणमभूत् मुर्शिदाबाद वास्तव्य प्रतापसिंह तद्वार्या कुवर तत्पुत्र लक्ष्मीपतसिंह बहादुर तत्कनिष्ठ भ्राता धनपतसिंह बहादुरेण सं० १८३१ जीर्णोधारं कारापितं ।

मधुवनके मन्दिरके मूर्तियों पर ।

(३३७)

संवत् १८५४ माघ कृष्ण पंचम्यां चंद्रवासरे श्रीपार्श्व जिन विंवं प्रतिष्ठितं -- ।

(३३८)

संवत् १८५५ फाल्गुण शुक्ल तृतीयायां रवी श्रीपार्श्वनाथस्य शूभ स्वामी गणधर प्रतिष्ठितं जिन हर्ष सूरिभिः कारितं च वालुचर वास्तव्य श्रीसंचेन ।

(८५)

(३३९)

व्रत १८७७ -- श्रीपार्श्व विंशं प्रतिष्ठितं श्री जिन हर्ष सूरिणा कारितं -- सांवत्
हज पदार्थ मल्लेन -- -- ।

(३४०)

संवत् १८७७ वैशाख शुक्ल १५ श्रीपार्श्वविंशं प्रतिष्ठितं श्रीजिनहर्ष सूरिणा गोलेछा
इतावी -- मूलचन्द्र धर्मचन्द्रेण कारितं ।

(३४१)

संवत् १८८७ वर्षे फाल्गुन शुक्ल १३ श्रीपार्श्वनाथ जिन विंशं दुगड़ ज्येष्ठमल्ल भार्या
ती नाम्न्या वाचक चारित्रनंदि गणि उपदेशात् कारितं प्रतिष्ठितं च ।

(३४२)

संवत् १८८८ माघ शुक्ल पंचम्यां सोमवासरे श्री शितलनाथ विंशं कारितं ओशवंश
गड़ गोत्र प्रतापसिंहेन प्रतिष्ठितं च श्री जिन चंद्र सूरिभिः ।

(३४३)

संवत् १८८८ माघ शुक्ल पंचम्यां चंद्रवासरे श्रीचंद्रप्रभ जिनविंशं कारितं ओशवंशे
बलखा गोत्रे मेढामल पुत्र जसरूपेन प्रतिष्ठितं च वृहद् भहारकखरतर गच्छ श्री जिना-
यसूरी चंचरीक श्रीजिनचंद्र सूरिभिः ।

(३४४)

सं० १८९७ वर्षे ---श्री ऋपभ जिनविंशं कारितं प्रतिष्ठितं ---।

(८६)

(345)

सागरांकवसुचंद्र वर्षे (१८९७) नेत्रषण गणधरायुते शके (१७६२) सुनागके (५) भार्गवे सितपटौघपालके वाणारस्यां श्रीमद्भक्त । पार्श्वनाथ जिनमूर्तिः कारापितं श्री० उदय चंद्र धर्म पत्नी महाकुवराख्यया युतया बृहत्स्वरतर गणेश श्री जिन हर्ष गणि पदालंकृत श्री जिन महेंद्र

(346)

सं० १९०० वर्षे-- श्री गोडी पार्श्वनाथ विंवां का० ---- ।

(347)

सं० १९१० शाके १७७५ माघ शुक्ल द्वितीयायां श्री पार्श्वविंवां प्रतिष्ठितं टोंकपरके चरणों पर ।

(348)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय सा० खुसाठ अजितनाथ पादुका कारापिता श्री मत्तपा गच्छे ।

(349)

॥ संवत् १९३१ । माघे । शु । १० चंद्रे । श्री अजितनाथ जिनेन्द्रस्य चरण जीर्णोद्धार रूपा श्री संघेन कारापिता । मलघार पूर्णिमा श्री मद्दिजय गच्छे । श्री जिन शांतिसागर सूरिभि प्रतिष्ठितं च ॥

(350)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय सा० खुसाठचंदेन श्री पादुका कारापिता श्री मत्तपा गच्छे ॥

(६७)

(351)

संवत् १९३० । माघे । शु० १० । चंद्रे । श्री संभव जिनेंद्रस्य चरण पादुका श्री संघेन
कारापितां । मलधार पूर्णिमा ॥ विजय गच्छे । श्री महारकोत्तम श्री पूज्य श्री जिन
शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(352)

॥ सं० १९३३ का जेष्ठ शुक्ले द्वादश्यां शनिवासरे श्री अभिनन्दन जिनेंद्रस्य चरण
पादुका जीर्णोद्धार रूपा श्री संघेन कारिता मलधार पूनमीया विजय गच्छे श्री जिन
सागर सूरि पद्मोदय प्रभाकर महारक श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितां ।
कारापितांच । शुभं श्रेयसे भवतु ।

(353)

॥ सं० । १९२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय सा० खुसाल चंद्रेण श्री सुमति
नाथ पादुका कारापिता च । सर्व सूरिभिः श्री तपा गच्छे ।

(354)

॥ सं । १९३१ । माघे । शु । १० श्री सुमतिनाथ जिनेंद्रस्य चरण । पादुका । जीर्णो-
द्धार रूपा । गुज्जर देसे श्री संघेन स्थापिता । कारापिता । विजय गच्छे । म । श्री जिन
शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥

(355)

॥ सं १९४६ माघ सु० १० सुक्रवा । श्री समेत शैल पर्वते श्री पद्म प्रभु जिन चरण
स्थापितं प्रति । म । श्री विजय राज सूरि तपा गच्छे ।

(८८)

(३५६)

॥ संवत् १८२५ मह सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री सुपा
पादुका कारापिता ग्र० ।

(३५७)

संवत् १८३१ । माघे । शु । १० । सुपार्श्वनाथ जिनेंद्रस्य । चरण पादुका
रूपा । सेठ उमा भाई हठी सिंहेन तथा स्थापना कारापित पूर्णिमा विजय गच्छे
भहारक । श्री जिन शांति सुरिभिः । प्रतिष्ठितं च ।

(३५८)

॥ संवत् १८४९ माघ मासे शुक्र पक्षे पंचमी तिथौ बुध्वारे । श्री चंद्र प्रभु
चरण न्यासः श्री संघाग्रहेण । श्री वृहत् खरतर गच्छीय । जंगम । युग प्रधान भहारक
श्री जिन चंद्र सूरिभिः । प्रतिष्ठितः ॥ श्री ॥

(३५९)

॥ संवत् १८३१ वा वर्षे । माघ सुदि १० तिथौ श्री सुविधि जिनेंद्रस्य चरण पादुका
अहमदावाद वास्तव्य सेठ उमा भाई हठी सिंहेन कारापिता । मलधार पूर्णिमा
गच्छे । भहारक । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥

(३६०)

॥ संवत् १८३१ । माघे । शु । १० तिथौ । चंद्रे । श्री सुविधि जिनेंद्रस्य चरण
जीर्णोद्धार रूपा । अहमदावाद वास्तव्य । सेठ उमा भाई हठी सिंहेन स्थापिता
च । मलधार पूर्णिमा । श्री मद्विजय गच्छे । श्री भहारकीत्तम । श्री श्री जिन
सूरिभिः ॥ प्रतिष्ठितं । स्थापितं च शुभ श्रेय ।

(८६)

(361)

॥ सं० । १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरे विरानी गोत्रीय सा० श्री खुसाल चंद्रेण । श्री
।तल जिन पादुका कारापिता श्री तपा गच्छे ॥

(362)

॥ संवत् १८३१ वर्षे माघे । शु । १० । चंद्रे श्री सीतल नाथ जिनेद्रस्य चरण पादुका
गेर्णोधार रूपा गुजराती श्री संघे कारापिता ॥ मलधार पूर्णिमा विजय गच्छे । महा-
६ । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं । स्थापितं च ।

(363)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरी विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री श्रेयांस
। पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च श्रीमत्तपा गच्छे ।

(364)

॥ संवत् १८३१ माघे शु । १० तिथौ । श्री श्रेयांस नाथ जिनेंद्रस्य चरण पादुका
गेर्णोधार रूपा । गुजरातका श्री संघेन तया स्थापना कारापितं पूर्णिमा श्रीमद्विजय
गच्छे । म । श्री पूज्य । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्र ।

(365)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरी विरानी गोत्रीय साह खुसालचंदेन श्री विमल
। पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च श्रीमत्तपा गच्छे ॥ श्री ॥

(366)

॥ संवत् १८३१ माघ शुक्ले १० चंद्रे श्री विमलनाथ जिनेंद्रस्य पादुका धीर्णोधाररूपि ।
जरात का श्री संघेन । तया स्थापना कारापिता । मलधार श्री विजय गच्छे । जं । यु
। । महारक । श्री पूज्य । श्री जिन शांति सागर सूरि प्रतिष्ठितं च ।

(६०)

(367)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री
प्रभु पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च सर्व्व सूरिभिः श्रीमत्तपा गच्छे ॥ श्री रस्तुः ।

(368)

॥ संवत् १८३१ वर्षे माघ शु० १० चंद्रे श्री अनंत नाथ जिनेन्द्रस्य चरण
जीर्णोद्धार रूपा । श्री संघेन स्थापना कारापिता । मलधार पूर्णिमा श्री मद्भिज्य
भहारक । श्री शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं । स्थापितं ।

(369)

॥ सं १८१२ वर्षे शाके १७७७ मिते माषोत्तम माषे मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षौ
सोमवासरे विजय योगे कुंभ लग्ने श्री सम्मेत शैले श्री धर्मनाथ चरण पादुका
वृहत् खरतर भहारकोत्तम भहारक श्री जिन हर्ष सूरीणां । पद प्रभाकर श्री जिन
सूरिभिः स साधुभिः कारिताश्च वाराणसीस्य श्री संघेन कालिपुरस्य संघेनया ।

(370)

॥ संवत् १८३१ माघे । शु । १० तिथौ श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रस्य चरण पादुका
रूपा । मम्बई वास्तव्य । सेठ नरसिंह भाई । केसवजी केन स्थापना
पूर्णिमा विजय गच्छे । जं । यु । प्र । भहारक जिन शांति सागर सूरिभिः ।
स्थापितं च । शुभं भवतु ॥

(371)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंदेन श्री
नाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठितं च सर्व्व सूरिभिः श्री मत्तपा गच्छे ॥

(६१)

(७७)

॥ संवत् १८३१ । माघे । शु । १० । चंद्रे । श्री शांतिनाथ जिनेंद्रस्य । अरण्य पादुका
गौडार रूपा । अहमंदावाद वास्तव्य । सेठ जगु भाइ येम चंडेन स्थापना कारा-
णा । पूर्णिमा विजय गच्छे । जं । युग प्रधान । ज । श्री पूज्य श्री जिन शांति सागर
ऋषिः प्रतिष्ठितं स्थापितं च ॥

(७७)

॥ संवत् १८३५ वर्षे माघ शुद्ध ३ तुरी विरानी गौडी प्रसाद स्वामी चंडेन श्री कुंगुनाथ
दुका कारापिता प्रतीक श्री गण गच्छे ।

(७७)

॥ संवत् १८३५ माघ शुद्ध १० चंद्रे श्री पूज्य जिनेंद्रस्य । अरण्य पादुका - गोपीनाथ
साम्प्रतं चारण्य सेठ ये सदा श्री माघे तत्र अरण्य कारापिता - - - - - । श्री जिन
श्री जिनसागर सागर गुरि परांशु - - - - - । श्री जिन सांति सागर
ऋषिः । प्रतिष्ठिता स्थापिता च ।

॥ संवत् १८३५ वर्षे माघ शुद्ध ३ तुरी विरानी गौडी प्रसाद स्वामी चंडेन श्री कुंगुनाथ
दुका कारापिता प्रतीक श्री गण गच्छे ।

॥ संवत् १८३५ वर्षे माघ शुद्ध १० चंद्रे श्री पूज्य जिनेंद्रस्य । अरण्य पादुका - गोपीनाथ
साम्प्रतं चारण्य सेठ ये सदा श्री माघे तत्र अरण्य कारापिता - - - - - । श्री जिन
श्री जिनसागर सागर गुरि परांशु - - - - - । श्री जिन सांति सागर
ऋषिः । प्रतिष्ठिता स्थापिता च ।

(९२)

(377)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे ३ गुरौ विरानि गोत्रीय साह खुसाल
श्री मल्ली नाथ पादुका कारापिता प्र ० श्री तपा गच्छे ।

(378)

॥ संवत् १८३१ माघे । शु । १० चंद्रे । श्री मल्लि नाथ जिनेंद्रस्य । चरण
जीर्णोद्धार रूपा अहमंदावाद वास्तव्य । सेठ भगु भाई पेम चंद स्थापना
मलधार पूर्णिमा । श्री मद्धि जय गच्छे । महारक । श्री पूज्य । श्री जिन शांति सागर
प्रतिष्ठितं । स्थापितं च ॥

(379)

॥ सं० । १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंद्रेण श्री
जिन पादुका कारिता श्रीमत्तपा गच्छे ॥

(380)

॥ संवत् १८३१ माघे । शु । १० । श्री मुनि सुब्रत जिनेंद्रस्य । चरण पादुका ।
रूपा । गुजरातका । श्री संघेन स्थापना कारापिता । मल । पूर्णिमा । श्री
गच्छे श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥ स्थापितं च ॥

(381)

॥ संवत् १८२५ वर्षे माघ सुदि ३ गुरौ विरानी गोत्रीय साह खुसाल चंद्रेण श्री
नाथ पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता सर्व सूरिभिः श्री तपा गच्छे ।

(६३)

(382)

॥ संवत् १९३१ माघ शुक्ले दशम्यां चंद्रवासरे श्री नमिनाथ जिनेंद्रस्य चरणपादुका ।
र्णोद्धार रूपा । अहमंदावाद वास्तव्य । सेठ उमा भाई हठी सिंहेन स्थापना कारा-
॥ । पूर्णिमा विजय गच्छे महारक । श्री जिन शांति सागर सूरिभिः । प्रतिष्ठितं ॥

तेजपूर (आसाम)

रायमेघराजजीका मंदिर ।

(383)

संवत् १५१३ वर्षे वैशाख शुदि ७ शनौ श्रीश्रीमाल ज्ञातीय श्रे० सानंद भार्या हीसू
पूनसीकेन मातृपितृ श्रेयोर्थं श्रीशीतलनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ।

(384)

सं० १९४३ का मिति वैशाख शुक्ल सप्तम्यां ----

(385)

सं० १९५७ वर्षे ज्ये० शु० १२ तिथौ शुक्रवासरे ॥ श्री जिन कीर्ति सूरि प्रतिष्ठितं श्री
नदत्त सूरि नाम पादुका का० ।

कलकत्ता

श्री कुमरसिंह हल - नं० ४६ इंडियन मिरर स्ट्रीट ।

धातुयोंके मूर्ति पर ।

(386)

श्रीपार्श्वनाथ विंवं ।

ब्रह्माण सत्व संयकः धियावे लुनः सुपुण्यक श्री द्वः (?) सीलगण नृरि प्रत्न्य (?)
दुले कारयामास संवत् १०३२

(८४)

(387)

सं० ११५० ज्येष्ठ सुदि १० श्री महेशराचार्य श्रावक पूना सुताभ्यां पालहण
स्वमातृ सोमा श्रेयसे चतुर्विंशतिः कारिता ॥

(388)

श्री मूलसंघे गुणभद्र सूरः संडिल्ल (खडिल्ल = खंडेल ?) बालान्वय सारम्भः
यो विस्तु (श्रु) लोसौ सिवदेवि पुत्रः सच्छ्रावकोऽभून्मुनिचंद्र नामा ॥ १
तरमाच्छीतेति विख्याता भार्या शील विभूषणा ।
कारिता कर्मनाशाय चतुर्विंशतिका शुभा ॥ २ संवतु १२३६ फा सु० २ गुरौ ॥

(389)

संवत १४८५ वर्षे जेठ सुदि १३ चंद्रवारे उपकेश गच्छे कक्क० उ०केश ज्ञातीय
सा० छाहउ त्रजीदा (?) भा० जईतलदे पु० साचा माय — सिवराजकेन
श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवां कारा० प्रतिष्ठितं श्री सिद्ध सूरभिः ।

बडाबजार-पंचायति मंदिर ।

(390)

रीषभनाथ वीतनाग पत्नीलं मुलसत्क ॥ सं० १०८३ वै० सु० १५

[पृ० २२ के लेख नं० (८८) का संशोधित पाठ]

संवतु ११५४ माघ सुदि १४ पद्मप्रभ सुत स्थिरदेव पत्न्या देवसिया श्रेयो नूहेन
कारिता ।

यति पन्नालालजी मोहनलालजीका घर देरासर ।

(391)

॥ संवत १५०६ वर्षे श्री श्रीमाल ज्ञातीय दोसी डूंगर ज्ञार्या म्यापुरि सुत पूजाकेन
ज्ञार्या सोही सुत श्रीका युतेन आत्मश्रेयसे श्री सुविधिनाथादि चतुर्विंशति पद कारितः ।
तागम गच्छे श्री जमरसिंह सूरि पद श्री हेमरत्न सूरि गुरूपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥ गंधार
स्तव्य ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीः ॥

(392)

सं० १५१६ वर्षे फा० शु० ८ प्राग्वाट सा० जोगा ज्ञा० मरगदे सुत सा० हदाकेन ज्ञा०
रमी पु० पालहादे कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ त्रिवं का० प्रतिष्ठितं तपागच्छे
श्री सोमसुंदर सूरि पद श्री रत्नशेपर सूरिभिः ।

(393)

सं० १७७१ वै० वदि ५ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय वृद्धशापायां सा० प्रेमचंद ग्रामीदास
श्रेयसे श्री शांतिनाथ प्रतिष्ठितं श्री विजय ऋद्धि सूरिभिः ।

कलकत्ता अजायव घर (म्युजियम) के पाषाणके मूर्तियों पर ।

(394)

--संवत १-८१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १५ गुरौ श्रीश्रीमाली ज्ञातीय जंघहरा स० केशव
सुत सं० मंडिलक सुत सं० चांपा ज्ञार्या चापलदेसुत सं० ---- ज्ञार्या श्री गांगी सुत-
घाकेन ज्ञार्या राजु पुत्र सा० नाकर सा० नागादि तथा (?) पत्नी जीवादि प्रमुत्र
सुत (?) कुटुम्ब युतेन निज श्रेयोऽवाप्ताय श्री श्रेयांसनाथ त्रिवं कारितं ॥ वृद्ध तपागच्छे
जायक ज्ञ० श्री रत्नसिंह सूरि पदालंकरण ज्ञ० श्री उदय बल्लभ नूरिभिः श्री ज्ञान भागर
सूरि सुतो प्रतिष्ठितं ।

* वनारस *

काशीदेशका यह वाराणसी वा वनारस सहर जैनियोंका बहुत पवित्र स्थान। हिन्दुओंका भी प्रसिद्ध तीर्थ है। यहां प्रतिष्ठ राजा और पृथ्वी राणीके पुत्र ० तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथजी का च्यवन और जेठ सुदि १२ जन्म, जेठ सुदि १३ फागुन वदि ६ केवल ज्ञान और अश्वसेन राजा वामा राणी के पुत्र २३ मां श्री पार्श्वनाथजी का भी च्यवन, पौष वदि १० जन्म, पौष वदि ११ दीक्षा और वदि ४ केवल ज्ञान यह ८ कल्याणक भये हैं। महल्ले भेलुपुरा और भदेनीमें बने हुए हैं सहरमें कई एक मंदिर हैं। यहां से ४ कोस पर सिंहपूरी है यहां ११ मां श्री श्रेयांसनाथजी का च्यवन, फागुन वदि १२ जन्म, फागुन वदि १३ दीक्षा और वदि ३ केवल ज्ञान भया है। निकटमें वौड्डोंका सारनाथ नामक प्राचीन स्थान है।

सुत टोलेका मंदिर ।

पंच तीर्थों पर ।

(403)

सं० १५१५ वर्षे माह शुक्ल १३ दिने श्री ओसवाल ज्ञातीय श्री० मूंघा भार्या :
सु० धनदत्तेन पितृ श्रेयोर्थं श्री शिसलनाथ विंवं पूर्णिमा पक्षे भ० श्री सागर तिलक
पद्वे श्री महितिलक सूरि कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ॥

(404)

सं० १५५६ वर्षे आपाढ़ सुदि ८ दिने चंपकनर वासि श्री० जावड़ भार्या पूरी सुत
पाकेन भार्या हर्पाई सुत नाकर प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्रीशांतिनाथ विंवं श्री निगमाग
भार्या कारितं प्रतिष्ठितं श्री निगमा विभावक श्री इन्द्रनंदि सूरिभिः ॥ श्रीः ॥ श्रीः ॥

(६६)

बट्टूजिका मंदिर ।

(405)

सं० १५११ वैशाख शु० ५ प्राग्घाट सा० सिधा भा० लादां सु० साह हीराकेन भा०
जत्री प्रमुख सुरत श्री-जिनावति का० प्र० तपा रत्न शीखर सूरिभिः ॥

पटनी टोलेका मन्दिर ।

(406)

सं० १४८५ वर्षे जा० सुदि १० रवौ मालहू -- ज० ज्ञा० साह बीजड पु० साह हरपाल
भा० हेमादे पुत्र साह साडाकेन श्रीपार्श्वनाथ विंवं राजावर्त्तक रत्नमयं सपरिकरं का०
प्रतिष्ठितं श्रीमल धारि गच्छे श्रीविद्यासागर सूरिभिः ।

(407)

सं १५८६ वर्षे वैशाख सुदि ३ भोमे श्री श्रीमाल ज्ञातीय परी० नरसिंघ भ्रातृपरी
यनपा ज्ञार्या हीरूपुत्र कुरपालेन श्री श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सुविहित
सूरिभिः ॥

चुन्निजी यतिका मन्दिर गणेशघाट ।

(408)

संवत् १२५७ ज्येष्ठ सु० १० महेष्टीराचार्य --- स्वमातृ सोमा येवसे चतुर्थिगतः
कारिताः ॥

रामचन्द्रजी का मंदिर ।

(409)

सं० १४०६ वर्षे फागुन सु० ११ गुरौ सूराना गोत्रे सा० जतरा शु० सा० जमद
जयत श्री पु० नरपाल रणमीरभ्यां मातृ श्री० महावीर वि० का० प्र० श्रीधर्म घोष
श्री ज्ञान चंद्र सूरि शिष्यै श्री सागरचंद्र सूरिभिः ॥

(410)

सं० १४५९ ज्यैष्ठ्य वदि १२ शनी सूराना गो० सा० जमर प्रा० अइहव दे सुतसा०
साल्हा श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ वि० का० प्र० श्रीधर्म घोष ग० प्र० श्रीमलय चन्द्र सूरिभिः

(411)

सं० १४८१ वर्षे वैशाख वदि ८ शुक्रे श्री उकेश वंशे मणी सा० पासड प्रार्या
देवी सुत सा० सिवाकेन सा० सिघा मुख्य ४ जिनोनुजैः सहितेन स्वश्रेयसे श्री
विंवं श्री अंचल गच्छेश श्रीजय कीर्त्ति सूरिन्द्राणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठतं श्री संघे
शुभं भवतु सर्वदा सर्वकुटुम्ब ॥ श्रीः ॥

(412)

सं० १५०७ वर्षे मार्गशिर सुदि २ शुक्रे श्रीमाल ज्ञातीय गोवलिया गोत्रे सा० हेमा
पु० --वाल्हा उपा ---- उपदेशेन विमलनाथ विंवं का० प्रति० पवीर्य गच्छे श्री यशो
सूरिभिः ॥

(413)

सं० १५४९ वर्षे ज्यैष्ठ्य सुदि १३ धेवरिया गोत्रे श्री साल बीलीजदेवी गोवेद पु० पीसा
पु० सा० सिंघण सुमेरु आत्म पुण्यार्थं कुंथुनाथ विंवं श्रीमल धार गच्छे प्र० गुण कीर्त्ति
सूरि प्रतिष्ठितं वा० हर्ष सुन्दर शिष्य उपदेशेन ।

(१०१)

(414)

सं १५६२ वर्षे वैशाख सु० १० रवौ श्रीमाल मडवीया गोत्रे सा० परसंताने सा०
राज पुत्र सा० ईसरेण भा० तिलकू पु० त्रिपुर दास युतेन पार्वनाथ विंवं स्वपुण्यार्थं
कारितं । प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन तिलक सूरिप० श्री जिनराजसूरि पट्टे श्री जिनः ॥

श्रीकुशलाजी का मन्दिर—रामघाट ।

(415)

सं० १३७६ ज्येष्ठ वदि ७ शुभ दिने श्रीपंढेरकीय गच्छे श्रीवाहङ्गु भार्य धीरु पु० धरा
मयणल---णिग भार्या केल्हण सहितेन विंवं कारितं प्र० श्री सुमति सूरिजिनः ।

(416)

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० गुरौ उक्ते० व० सा० रेवा भार्या रण श्री पुत्र पद् सादा
केन श्री जंचल गच्छेश श्री जय केसरि सूरिणामुपदेशेन श्री संजयनाथ विंवं का०
ष्ठितं च ॥ श्री ॥

(417)

सं० १५०६ वै० वदि० ११ शुक्रे श्री कोरंट गच्छे श्री नवाचार्य संताने उग्रपुत्र यंगे
लिक गोत्रे साह धना पु० सं० पाठवीर भार्या संपूर्दे नाम्न्या निज धेतोर्थ श्री कुंभनाथ
कारितं प्र० श्रीदक्ष सूरिपट्टे सद गुरु चक्रवर्ति महारक श्री सायदेय सूरिभिः ।

(418)

सं० १५१६ वर्षे ज्येष्ठ वदि १ मंत्रिदलीय क्रापा गे १० नाग राज सु० छट्टू भार्या
रंणि सु० सं० श्री केवल दास भार्या वीर लिंगि पु० सं० सूर्यदेव आश्रमे श्री कुंभनाथ
कारितं प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन सागर सूरिपट्टे श्री जिन सुन्दर सूरि पट्टे श्री
न हर्ष सूरिजिनः ॥

सं० १५१९ आषाढ वदि-मंत्रि दलीय श्री काणा गोत्रे ठा० लाघू भा० घमिणि,
अचल दासेन पु० उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेनादि युतेन श्री आदि विं वं का
श्रीजिन भद्र सूरि पहे श्रीजिन चंद्र सूरिभिः श्री खरतर गच्छे ॥ श्रीः ॥

सं० १५३६ वर्षे वै० वदि ११ ओसवंशे साह शिवराजभा० माणिकि सुत देवदत्त,
रूपार्ई सुत साह कर्म सिहन भार्या हंसाई स्वकुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री संभवनाथ
का० प्र० वृद्धतपापक्षे श्रीउदय सागर सूरिभिः श्री मंहुपे ।

सं० १५७० वर्षे माह सुदि ११ रवौ उपकेश वंशे लजलाणी गोत्रे साह श्री पाल
सुहवदे पु० सा० जधा सा० जोधा जधा भार्या उमादे प्रमुख कुटुम्ब सहितेन श्री
स्वामि विं वं कारितं नागुहरी तपागच्छे श्री सोम रसन सूरि प्रतिष्ठितं तिजारा नगी

प्रतापसिंहजी का मंदिर ।

सं० १५२० वर्षे पोष सुदि १३ शुक्रे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० मं०
सुत कामा भार्या कामीदे सुत ज्ञाक्तण नगराज रत्ना सहितेन आत्म श्रेपोथं श्री
विं वं का० प्र० श्रीशील गुण सूरिभिः पाटरी वास्तव्यः ।

सं० १५२० वर्षे वैशाख शुदि ३ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० वीरम सु० वेला
भार्या सोही सु० सहिराज जिणदास महिपति लहूआ कुटुम्ब युतेन आत्म श्रेयो
श्रेयांस विं वं जागन गच्छे श्रीसोम रत्न सूरि गुरुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च वि
घांदू वास्तव्यः ॥

(१०३)

सिंहपूर ।

(१०४)

सं० १५३४ वर्षे मासं शुद्धि १० गती प्राग्व्याट ज्ञातीय सा० राज भार्या वारू पु० सा०
सुपति सा० अनन्त द्वैत्री माहं नून गुणराज नगादि कुटुम्ब युतेन श्रीमुनि सुव्रत विंवं
कारितं प्रतिष्ठितं श्री बृहत्तपाच्छे श्री उदयसागर नृरिभिः ।

(४२५)

पूरण पर ।

सं० १८५७ तिस्रि चैत्रक मासे कृष्ण पक्षे पश्यां कर्मवा-पूज्य महारक श्रीजिन हर्ष
रि विजयराज्ये श्रीसिंहपूर ग्रामे तेषां क्षेत्रलोत्पत्ति स्याने गांधि गोत्रीय मयाचंद्र प्रमुख
मस्त श्रीसंघेन श्री धेयांसास्या नामेकादशानां लोक नाथानां पादन्यासः कारितः प्र०
जिन लाभ सूरिणां शिष्यैः उपाध्याय श्रीहोरधर्म गणिभिः खरतर गच्छे ।

मिर्जापुर ।

पञ्चायती मन्दिर ।

(१२६)

श्रीपार्श्वनाथ विंष पर ।

सं० १३७६ वर्षे उएसज्ञातीय वावेला गोत्रे देवात्मज सा० घीका पुत्रसंघपति आस्ता
त सा०—जूकेन पितृ श्रेयसे का० प्रति० श्री कृष्णार्पिगच्छे श्री प्रसन्न चंद्र सूरिभिः ॥

(४२७)

सं० १४२० वर्षे वैशाख शुद्धि १० शुक्ले श्री श्री मालज्ञातीय ठ० बीजा भार्या मोहनदेवि
यसे सुत जोलाकेन श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं त्रिभवीया श्रीधर्मदेवसूरि
ताने श्रीधर्मरत्न सूरिभिः ॥

सं० १४८२ व० वैशाख वदि १ प्र० झूलर गोत्र सा० लाहड भा० वाहिणदेपु० मा०
जिनपितृव्य सोमसिंह आत्म श्रे० श्री वासुपूज्य विवं कारितं प्र० श्री धर्मघोष गच्छे
मलयचद्र सूरिपहे श्रीपद्मशेखर सूरिभिः ॥ छः । श्री ॥

सं० १४९० व० वैशाख वदि ९ कंठउतिया गोत्रे सा० कमसिंह पुत्र डालणतत्सु
स्वपूर्वज पूण्यार्थं श्रीकुंथु विवं कारितं प्रति० श्रीहेम हस सूरिभिः ॥

सं० १४९१ वर्षे फागुण सुदि २ सोमे श्री श्री माल ज्ञा० श्रे० देवस सुतवाछा मा०
मादे सुत रागा भीमा पीमाभिः न्नात्पेता तथा पित्रोः श्रेयसे श्रीवासुपूज्य विवं कारि
श्री पोपलमच्छे श्री सोमचन्द्र सूरिपहे श्री उदयदेव सूरिभिः ।

सं० १५१९ वर्षे माघ सु० ४ रवी उपकेश ज्ञा० वयव० गोष्ट सा० माडण मा० मोर्हा
पु० कालहा भा० मालूरूपी सहितेन ॥ पित्रो श्रेयसे श्री नेमिनाथ विवं कारितं प्रति०
पूर्णिमापक्षे जयचन्द्र सूरिपहे श्रीजयचन्द्र सूरिभिः ॥ : ॥

सं० १५२९ वर्षे माह व० ६ रवी उप० ज्ञातीय कठउड गोत्रे सा० वरसा मा०
पु० रामा भाडा राजा चांदा मा० मरधू पु० जीवा समस्त कुटुंबेन पितृ श्रेयर्थं श्री
प्रमरशामि विवं कारा० प्रति० श्री चैत्रायाल गच्छे ज० श्री सोमकीर्ति सूरिभिः स
श्रिया नगरे ।

(१०५)

(433)

श्री मत्संवत् १६७१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनी श्री आगरा वास्तव्योसवाल ज्ञातीय
गोडा गोत्रे गावं-ज्वा स० ऋषभदास भार्या रेपश्री तत्पुत्र श्री कुरपाल सोनपाल संघाधिपे
वानुवर दुतोत्रंदस्य पुण्यार्थं उपकाराय श्री अंचलगच्छे पूज्य श्री ५ कल्याण सागर
रिणामुपदेशेन श्री आदिनाथ विवं प्रतिष्ठापितं ॥

(434)

सं० १८७७ मि० फा० शु० १३ श्री कुंथुनाथ जिन विवं दू० विचनचंद्रेन कारितं प्रति-
ठितं श्री जिनहर्ष सूरिभिः ॥

(435)

सं० १८८७ फा० शु० ५ श्रीपाश्र्वनाथ त्रि० प्र० श्री पारंगनाथ त्रि० प्र० श्री जिनमहेन्द्र
रिणमुपदेशेन कारिता । सेठ उदयचन्द्र प्रसं पत्नी नगानुमारिभिदया । गावनागार्ग श्री
चारित्र नन्दन गणिभिर्देश- --

(436)

सं० १८८७ फा० शु० ५ श्री आदिनाथ त्रि० प्र० श्री जिनमहेन्द्र सूरिणा सा० योग्या
नाथूरान् पत्नी साहबां नाम्नात्म क्षेपहे वाचक चारित्र नन्दन गणमुपदेशः ॥

सेठवनलुखदानजी वा मंदिर ।

(437)

सं० १९०३ वर्षे माघ वदि १ सुदि श्री मीना - ज्ञातीय वरः नरपाठ ज्ञायां नवपाठं
सुत देवारीन श्रीमदनमम विदं कारितं प्रतिष्ठितं -- गच्छे श्रीमुपदेशसूरिभिः ॥

सं० १५३३ वर्षे माह सुदि १३ सोमदिने वचेरवाल ज्ञाती राय भंडारी गोत्रे का
सीहा भा० पूरी पुत्र ठाकुरसी भा० महू पुत्र आका आत्मपूजार्थं श्री आदिनाथ त्रिं
करापितं श्रीसर्व सूरिभिः शुभं भवतु ॥

सं० १८७७ वै० सु० १५ श्रीपार्श्वविंशं प्र० जिन हर्ष सूरिना कारितं । छजलानी
चतुर्भुज पुत्र्या दीपो नाम्न्या चीरडिया मनुलाल वधू - -

सं० १८९७ का० भु० ५ श्रीपार्श्वविंशं प्र० श्रीजिन महेन्द्रसूरिणा का० । सकल श्रीसंघे ।

देहलि वा दिल्ली सहर ।

यह भारतवर्षका एक प्राचीन स्थान है । कुरु पांडवके समयमें यही 'इंद्रप्रस्थ' था ।
हिन्दुराजा पृथ्वीराजकी राजधानी थी । मुसलमानोंके समयमें बहुत काल तक यह राज-
धानी रही । कुछ दिनसे अपने सरकार बहादुरने भी दिल्लीमें भारतकी राजधानी
स्थापनकी है और आज कल उन्नतिपर है, यहां से ४ कोस पर आचार्य महाराज
श्रीजिन कुशल सूरिजीका स्थान है जिस्को छोटे दादाजी कहते हैं और ७ कोसपर
प्रसिद्ध कुतुब मिनारके पास बड़े दादाजीका स्थान है वहां कोई लेख नहीं है ।

बेलपुरी का मंदिर ।

धातुयोंके मूर्त्तिपर

सं० ११६३ मार्गशिर सुदि १ अं गागसादेव धर्म्मोयम्- -(आगे अक्षर अस्पष्ट पढ़ा
नहीं जाता)

(१०७)

(४४२)

सं० १५१६ वर्षे जे० व० ११ शुक्रे सोमसर घासि उकेश सा० मेहा ज्ञा० मालहणदे पुत्र
धाकेन ज्ञा० सहही प्रमुख कुटुम्बयुतेन श्री कुंधुनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं-- श्री फक्त
रिभिः ॥ सचिंतीगोत्रे ॥

(४४३)

सं० १५२१ वर्षे माघ शुदि १२ शुभे छोढा गोत्रे जा० हरिचन्द गोरा गोरा संताने
गधु साधपाल पुत्रेण सं० तेजपालेन पुत्र परवत् लाडादि युतेन ज्ञातृ पूनपाल पुण्यार्थं
श्रीपार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपानच्छे श्री हेमहंस सूरिण्डे ज्ञ० । श्री हेम समुद्र
रिभिः ॥

(४४४)

संवत् १५२१ व० माघ सु० १६ श्रावणादि ६ वज्रना ज्ञा० रांटे सुत पुना ज्ञा० हमा
सुत सांपालेन ज्ञा० धर्मिणि नामाजिनादि सुदंभसुंन नरदेवीयं नमिनाथ विंवं कारितं
रिभिः ॥ तपानच्छे श्री लक्ष्मी सागर सूरि णि सौमदेन सूरिभिः सप्तमद्रावादि ।

(४४५)

सं० १५२४ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १० दिने लज्जे वंशे साधुनाथनाथ सा० साधुनाथ साधुना-
थदे तोलही सा० देवा ज्ञा० जयती पुत्र सा० देवादेन तोलही पुत्र साधुनाथ साधुना
सांथा वरमा युतेन सा० सोपा पुण्यार्थं श्री सुनि सुत्रा सा० प्र० नमत्त नच्छे श्री विम
संभ सूरिभिः ।

(४४६)

सं० १५३१ माघ शुदि ५ दिने श्रावणादि ज्ञादि सा० साधुना ज्ञा० साधु पुत्र सा० साधुना
थेन ज्ञा० नार्थ प्रमुख सुदंभयुतेन श्री साधुनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपानच्छे श्री
लक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

संवत् १५६० वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ दिने श्रीमाल वंशे सिंगुन गोत्रे व० अमय राज.
जामलदे पुत्र चउ० ठकुरसीहेन भा० ठकुरादे पुत्र व० भारमण्ड प्रमुरा पवित्रे
आदि जिन विं वं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीरत्तर गच्छे श्री पूज्य श्री जिनहंस सूरिभिः ।

सं० १५६६ वर्षे फागुण सुदि ३ तिमे ब्रह्मणीया गच्छे बहुरा हीरा भा० हीरादे
जीदा सोमा रूपा पुण्यायं श्री शान्तिनाथ विं वं का० प्रतिष्ठितं श्री गुणसुन्दर
बहिठाणी ।

॥ श्री पार्श्वनाथ सं० १६०५ फागुण सुदी दसमी धरवहिया गोत्रे गागपती
मिनी पुत्र पेतु लघु प्रनमल गुरु श्री जिन मद्र सूरि रुद्रपला गच्छे भ० श्रीभा
सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री समेत सिपर ।

सं० १६१२ वर्षे ज्येष्ठ सु० ११ शनौ उकेशवंसे----- ।

सं० १६६० वर्षे फागुण वदि ५ गुरुवासरे महाराजाधिराज महाराजा मानसिं
जी राजे श्री मूलसंधे आमनाये बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे कुंदकुंदाचार्यन्वये भ० श्री
विई कीर्ति स्तदाम्नाय बंडेलबालान्वये पोस ॥ सं श्री होला भा० कोसिगदे पु० भ० श्री
कचराज भा० उमदे कोउमदे गुजरि पु० २ थातु दानु सं० श्रीरायस भा० रयणदे-----पु०
हरदास ---भा० महिमादे लाड़मदे -- ।

(१०९)

(452)

सं० १६७७ मार्ग शु०-रवौ श्रीमाल ज्ञातीय सा० तेजसी नाम्ना श्रीपार्श्व विं० का०
तपा गच्छे श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

(453)

सं० १६८१ व० फा० शु० १० ज० चंद्रकीर्ति प्र० अग्रवाल ज्ञाती गोयल गोत्रे सा०
गोमा भा० सरूपादे ।

(454)

नवपदजी पर ।

सं० १८५१ वर्षे कार्तिक मासे कृष्णपक्षे प्रतिपदा तिथी गुरुवासरे- -सुधायक
य प्रभावक देव गुरुभक्ति कारक फतेचन्द्र भार्या विदामो तत्पुत्र वस्तिरामजी ॥
गोमाल ज्ञाती ।

नवघरेका मन्दिर ।

मूलनायक श्रीसुमतिनाथजीके विं० पर ।

(455)

संवत् १६८७ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ला १३ गुरौ मेरुना नगर वास्तव्य दुहाड गोत्रे नं० जय-
राव जा० सोजागदे पु० सं० लोहपकेन श्रीसुमतिनाथ विं० का० प्र० तपागच्छे प्र० श्री
विजयदेव सूरिभिः लाचार्य धी विजयचिंह सूरि परिदृतिः ।

(११०)

सर्व धातुयोंके मूर्तियों पर ।

(456)

आं । संवत् ११ ६७ वैशाख सुदि ५ श्री चंद्रप्रभाषार्य गच्छे सतु श्री वि---

(457)

संवत् १२८० वर्षे ---सांडा प्रणमंति ।

(458)

सं० १३३१ अ० व० २ हल --- ।

(459)

सं० १४३३ आपाह शु०--आ० लघु व्य० आसा मा० ललतदे--श्री पार्ष्णनाथ
का० श्री गुणभद्र सूरीणामुपदेशेन ।

(460)

सं० १४४५ पौष शुदि १२ बुधे ज० श्री० जोला मा० हीरी पुत्र लालाकेन श्री शांतिनाथ
विं वं कारापितं प्र० ज० गच्छे श्री सिद्ध सूरिभिः ।

(461)

सं० १४५२ वर्षे जोडा गोत्रे उ० ज्ञा० सा० पोपा मा० पापी पुत्र लापाकेन स्वपुत्र
श्रीसल श्रेयसे श्री पार्ष्णनाथ विं वं का० श्रीरूपलठीय गच्छे सूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीदेव
सुन्दर नृरिभिः ।

(१११)

(462)

सं० ११६३ वै० शु० १०-सा---

(463)

सं० ११७१ माघ शुदि १० रवी प्राग्वाट ज्ञातीय साः रामा भा०--ठाकुर पितृ
योर्थं श्री आदि नाथ लक्ष्मी --- ।

(464)

सं० ११७२ वर्षे फागुण सु० ९ शुक्रे ज० ज्ञा० सा० तिहुणा भा० तिहुणांसार पु० चाहड
रा० केलहु पु० हापा भा० तेजू पु० करमोकेन पितृ--श्री पद्मप्रभ वि० का० प्र० श्री
संढेर गच्छे श्री श्री यशोभद्र सूरि सं० श्री शांति सूरिभिः ॥

(465)

सं० ११७९ वर्षे माघ सु० ४ दिने सा० धरणा पुत्र संग्राम समरासिंध श्राद्धः श्री
महावीर विं० पुण्यार्थं कारिते प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभिः ॥

(466)

सं० ११८२ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे नाहर गोत्रे सा० छाटा पु० जयता भार्या साल्ही
पुत्र घोपाकेन पित्रो धैयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विं० का० प्र० श्री धर्म घोषण० श्री धर्म घोष
ठा० श्री लडयचन्द्र सूरि पहे श्री--देव सूरिभिः ।

(467)

सं० ११८२ वर्षे माघ सु० ५ सोमे ज० ज्ञा० पालडेवा गोत्रे सा० टागर भा० तेजउदे
पु० जगडकेन भा० सहितेन पित्रो स्वश्रेय० श्री वासुपूज्य विं० का० प्र० श्री सुविप्रभ
सूरिभिः श्री बोरभद्र सूरि सहितेन ॥

(११२)

(468)

सं० १४८३ फा० व० ११ ऊ० ज्ञा० टपगोत्रे व्यव० रूपा भा० रूपाई पु०
पाचाभ्यां भ्रा० अदा भा० आल्हणदेविः श्री पद्मप्रभ त्र० का० प्र० श्री संडेर ।
शांति सूरिभिः ॥

(469)

सं० १४८६ वै० शु०-प्राग्वाट सा० साजण भा० लापू पुत्र केल्हाकेन भा०
भ्रातृ भीम पदमदि कु० यु० श्री धर्मनाथ विं० कारितं प्रति० तपा श्री
सूरिभिः श्री-५ ।

(470)

सं० १४८६ वर्षे जेष्ठ सु० १३ सोमे श्री दूगड़ गोत्रे सं० सिवराजभार्या सीधरही
सा० मोहिल धण राजाभ्यां पितुः श्रेयसे श्रीअजितनाथ वि० का० प्र० वृहडा
श्वर सूरि पद्मे श्रीरत्नप्रभसूरिभिः ।

(471)

सं० १४९९ व० फा० व० २ उपकेश ज्ञातौ आदित्य नाग गोत्रे सा० देसल भा० देसल
पु० धमी भा० सुहगदे युतेन स्व श्री० श्री आदिनाथ विं० का० उपकेश ग० ककुदाचार्य
सं० प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ।

(472)

सं० ५०४ वर्षे आ० सु० ६ श्री मूलसंघे भ० श्री जिनचंद्र देवाः जैसवालान्वये ज्ञा०
भार्या श्री सिरि लत्पुत्र सोनिग भार्या बेमा प्रणमति ।

(११३)

(473)

सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सु० २ दिने उकेश वंशे नाहटा गोत्रे सा० जयता भार्या जयसलदे
पुत्र सा० संगरेण पुत्र सलपा अजादि परिवार युतेन श्री सुमतिनाथ वि० का० प्र०
श्री जिन भद्र सूरिभिः खरतर गच्छे ।

(474)

सं० १५०७ वर्षे माघ सु० १३ शुक्ले श्रवाणा गोत्रे उदा भार्या लावि पु० देवराजेन स्व
प्यार्थं श्री वासुपूज्य वि० का० प्र० श्री घर्मघोष गच्छे श्री पद्मसिंह सूरिभिः ।

(475)

सं० १५०७ वर्षे वै० व० ५ दिने उकेश ज्ञातीय सा० चापा सा० चापलदे सुत गूंगन
सा० वापू सु० चाईयादि कुटुम्बयुतेन श्री पार्श्वनाथ वि० का० प्र० तपगच्छे श्री
अध्वन्द्र सूरि शिष्य श्री उदयनंदि सूरिभिः । कायपा ग्राम ।

(476)

सं० १५०७ वर्षे वैशाख वदि ६ गुरौ श्री धीनाल ज्ञातीय श्रे० घोटा सा० कुटिकदे
नयोः सुताः श्रे० भार्या समरानायक पांचा एतेषां मध्ये श्रे० ज्ञाटा सा० ज्ञप्रकृतेन ज्ञानम
श्रेयोर्धे श्री मुनिसुब्रत स्वामि वि० कारितं प्रतिष्ठितं श्री ज्ञानम गच्छे श्री भादर
सूरिभिः गोलोपा वास्तव्यः ।

(477)

सं० १५०७ वर्षे फा० सु०- सं० हना पांपुत्र सा० सागर सा० पुत्र नःथा
साहादि कुटुम्ब युतेन श्री सुपाश्व का० तपा श्री सोम सुन्दः श्री
सूरिभिः ।

(११४)

(478)

संवत् १५१२ वर्षे फा० शु० १२ दिने लोढा गोत्रे स० पासदत्त भार्या अपूदे
सा० कमलाकेन पुत्र जावा गौरादि परियुतेन श्रेयसे पुण्यार्थं श्री अभिनन्दन
श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पद्वे श्री जिनभद्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

(479)

सं० १५१३ वर्षे फा० वदि १२ ज० ज्ञा० सोधिल गो० रणसी पु० गहणा पु० वीरहा
जसमी पु० सादाकेन भा० चांदा सहितेन पितृ पुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ वि० का० प्र० श्री
गच्छे श्री यशोभद्र सूरि संताने श्री श्री ५ शांति सूरिणां पद्वे श्री ईश्वर सूरिभिः शुभं भूय

(480)

सं० १५१५ वर्षे माघ सु० १४ दिने ज० वं० जांगड़ा गोत्रे सा० कालहा भार्या
सुभ मा० मपाकेन सपरिवारेण श्री सम्भवनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री प० ग
जिन राजसूरि पद्वे श्री जिन सुन्दर सूरिभिः ॥

(481)

सं० १५१७ वर्षे मा० सु० १ शुक्ले श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० गूंगा भार्या लालू पुत्र
केन पितृ पाल् जिनित्तं आत्मश्रेय्यर्थं श्री धर्मनाथ विं० प्र० श्री नागेन्द्र गच्छे श्री वि
प्रसन्न सूरिभिः कात्परवास्तव्य ।

(482)

सं० १५१९ वर्षे वैशा० शु० १३ हस्तार्के दिने महनिजाण सा० सुरपति भा० त्रिओ
सुभ मा० ममान जिनिया सा० चाचियं भार्या नारंगदेव्या श्री अजित विंवं का
गच्छे श्री जिन सागर सूरिपद्वे श्री जिनसुन्दर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(११५)

(483)

सं० १५१७ वै० शु० ८ प्रा० सा० देपाल सु० हउसी करणा ज्ञा० चन्हडा घर्मा कर्मा
सा काला भ्रातृ हीराकेन ज्ञा० हीरादे सुत अदा वरा लाजादि कुटुंबयुतेन श्री शांति-
थ विवं का० प्र० तपा श्री सोमदेव सूरि शिष्य श्री रत्न शेषर सूरि शिष्य श्री लक्ष्मी
गर सूरिभिः ॥ कमल मेरु ।

(484)

सं० १५२५ वर्षे मा० शु० ६ सीणुरा वासि प्रा० सा० राजा ज्ञा० स्या पूरि पु० तीपा-
न ज्ञा० रानू पुत्र सधारण हीरायुतेन श्री पद्म प्रज्ञ विवं स्वश्रैयसे का० प्र० तपा श्री सोम
दर सूरि शिष्य श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥

(485)

सं० १५३० फा० शु० २ गोखरु गोत्रे सा० पासवीर ज्ञा० कुडी नाम्न्या पुत्र साधारण
प्र देवा सब-युत श्री मुनि सुव्रत स्वामि विवं का० प्र० तपा गच्छनायक श्री लक्ष्मी
सागर सूरिभिः ॥ बहादुर पुरे ॥

(486)

सं० १५३४ वैशाख सुदि ५ गुरौ ---सिवो पुत्र काला तिरिपुत्र---

(487)

सं० १५३५ श्री मूलसंघे ज्ञ० श्री भुवन कीर्ति ख० ज्ञ० श्री ज्ञान भूषण गुरुपदेगात् ॥
० पेतसी ज्ञा० ऋषूः ।

(११६)

(488)

सं० १५३६ वर्षे फा० सुदि ३ दिने उकेश वंशे श्रेष्ठि गोत्रे श्री कीहट भार्या
देवण मांडण धर्मा श्रावकैः श्री० देवण भार्या दाडिमदे सुत समरादि परिवार पुत्रे
धर्मनाथ विंवं प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्रसूरि पहालंकार श्री जिनचंद्र

(489)

सं० १५३७ वर्षे वै० शु० १० सोमे उमापुरवास उ० व्य० महिराज भा०
श्रीपाल सहिजाभ्यां भा० सुहवदे । अदादि कुटुंबयुताभ्यां श्री वालुपूज्य विं० का०
श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

(490)

सं० १५४५ वर्षे वैशाख वदि ९ जडिया गोत्रे स० नासण पु० स० पिमघर
पागा पहिराज आढू लाल्ला लेषसी पितरनिमित्तं श्री शांतिनाथ विंवं कारापितं
ष्टितं तपागच्छे भहारक श्री सोमरतन सूरिभिः ॥

(491)

सं० १५४८ ज्ये० वदि ६ बुधे म० श्री हेमचन्द्राम्नाये स० नगराज पु० दामू भा०
हंसराज हापु --- ।

(492)

संवत् १५५१ वर्षे वै० सुदि ६ रवौ उपकेश ज्ञातीय नाहर गोत्रे सा० लापा भा०
सोहिणी-पु० चांपा भाय पौत्र पुत्र पौतादि सहितेन आत्मपुण्यार्थं श्री धर्मनाथ
का० श्री धर्मनाथ विंवं का० श्री धर्मघोष गच्छे प्र० श्री पुण्यवर्द्धन सूरिभिः ।

(११९)

(503)

सं० १६१९ सिंघुड़ सा० गोपी भार्या विमला सुत घणराजेन कारितं ।

(504)

सं० १६४३ वर्षे फाल्गुन सु० ११ गुरु प्रा० ज्ञा० से विधोगा भार्या वाई पूराई सुत
वचन्द भार्या वाई हासी सुत रायचन्दभीमा श्री शीतलनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं
वृहत्तपा गच्छे श्री विजयदान सूरितत्पद्मे श्रीहीर विजय सूरिआचार्य श्री विजयसेनसूरि
श्री पत्तन वास्तव्यः ।

(505)

सं० १७०० फा० सु० १२ श्री मूल स० स्वर० गच्छे व० ग० श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये सं०
सांवल । साकार-साहमल ज-जा । गा--- ।

(506)

सं० १७०१ व० मार्ग व० ११ दिने श्रीमाल ज्ञाती वाई गूजरदे सुत स० हीराणंद भा०
सबरंगदे श्री पद्मप्रभ विः का० प्रति० तपागच्छे श्री विजयसिंह सूरिभिः आगरा वा०

चीरेखानेका मन्दिर ।

(507)

सं० १४८९ वर्षे पौस वदि १० गुरी श्री हुं वड़ ज्ञातीय श्री० उदवसीह भार्या वईराऊ तयोः
पुत्र तथा दौहीदा सुत दोगा--पत्नी वई चमक नाम्न्या आत्म श्रेयसे अजितनाथ --
विंवं कारापितं श्रीवृहत्तपा पक्षे श्रीरत्न सिंह-- ।

(११८)

(498)

सं० १५६२ वर्षे वैशाख शु० १३ बुधे श्री श्री मालीज्ञातीय सा० पूजा मात्र मूजा.
विमलाई श्री मुनि सुव्रत स्वामि विंवां कारापितं-श्री साधुसुन्दर सूरि प्रतिष्ठितं।
लषराज श्री अभयराज ॥

(499)

सं० १५६८ वर्षे माह सुदि ४ दिने उकेशवंशे नाहटा गोत्रे सा० राजा मा० अपू
सा० पीम भार्या रत्तू पु० श्रोपाल नाथूभ्यां मातृ पुण्याथं श्री चंद्रप्रभ विंवां का० प्र०
खरतर गच्छे श्री जिन हंस सूरिभिः ॥

(500)

सं० १५७४ वर्षे माह सु० १३ शनी उ४ वं० पमार गोत्रे स० वक्राभा० बुलदे पु०
पतोला श्री अंचल गच्छेश भाव सागर सूरीणामुपदेशेन ।

(501)

सं० १५९९ वर्षे वै० सु० ५ गुरी श्री रुद्र पल्लीय गच्छे भ० श्री गुण सुन्दर सूरि विंवां
उ० श्री गुणप्रभ -- श्री आदि नाथ विंवां का० प्रतिष्ठितं ।

(502)

सं० १६०८ वर्षे वैशाख सु० ३ सोम श्री मूलसंधे सरस्वती गच्छे भ० श्री ज्ञान मूजा
देवा स्तत्पदे भ० श्री विजय कीर्ति देवास्तत्पदे प्रहारक श्री शुभचंद्रोपदेशात् हूवा
ज्ञातीय गंगागोत्रे । सं । धारा । भार्या सं ॥ धारु सुत सं० डाईआ भार्या सिरिक्षमनि।
सुतसा० श्री पाल श्री शांतिनाथ विंवां कारापितं नित्यं प्रणमंति ॥

(११६)

(503)

सं० १६१६ सिंघुड़ सा० गोपी भार्या विमला सुत घणराजेन कारितं ।

(504)

सं० १६४३ वर्षे फाल्गुन सु० ११ गुरु प्रा० ज्ञा० से विधोगा भार्या वाई पूराई सुत
देवचन्द भार्या वाई हासी सुत रायचन्द भीमा श्री शीतलनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं
वृहत्तपा गच्छे श्री विजयदान सूरितत्पद्मे श्री हीर विजय सूरि आचार्य श्री विजयसेन सूरि
श्री पत्तन वास्तव्यः ।

(505)

सं० १७०० फा० सु० १२ श्री मूल स० स्वर० गच्छे व० ग० श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये सं०
सांवल । साकार-साहमल ज-जा । गा --- ।

(506)

सं० १७०१ व० मार्ग व० ११ दिने श्रीमाल ज्ञाती वाई गूजरदे सुत स० हीराणंद भा०
सबरंगदे श्री पद्मप्रभ विः का० प्रति० तपागच्छे श्री विजयसिंह सूरिभिः जागरा वा०

चीरेखानेका मन्दिर ।

(507)

सं० १४८६ वर्षे पौष वदि १० गुरौ श्री हुं वड़ ज्ञातीय श्रे० उद्वसीह भार्या वर्हाराऊ तयोः
पुत्र तथा दौहीदा सुत दोगा --- पत्नी वई चमक नाम्न्या आत्म श्रेयसे अजितनाथ ---
विंवं कारापितं श्री वृहत्तपा पद्मे श्री रत्न सिंह --- ।

(१२०)

(508)

सं० १४९२ वैशाख सुदि २ -- ओसवाल ज्ञातिय भूरि गोत्रे -- श्रीश्रेयांस विवं क
प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री श्री महेन्द्र सूरि प्र० -- ।

(509)

सं० १५०९ माघ सुदि ५ श्री जकेश वंशे चोपड़ा गोत्रे सा० ठाकुरसी सुत सा०
केन पुत्र मेघा माला नालहा पौत्र सुरजन प्र० परिवारेण स्वश्रेयोर्थं श्री विमल विवंक
श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(510)

सम्बत् १५१७ वर्षे फाल्गुण सुदि ९ गुरौ श्री श्री माल ज्ञातीय मंत्रि पोपा
पालहण्डे सुत मण्णयाकेन भार्या सोहासिणि सुत उधरण प्रमुख कुटुंब सहितेन
पितृ श्रेयोर्थं आत्म श्रेयोर्थं च श्री संभव नाथ चतुर्विंशति पट्ट जीवत स्वामी
गच्छे श्री गुण समुद्र सूररूपदेशेन आचार्य श्री गुणदेव सूरिभिः प्रतिष्ठितं च
वास्तव्यः । श्री ।

(511)

सं० १५-५ फा० वदि ९ सोमे प्रा० ज्ञा० -- सा० घेरा भा० पूजी पुत्र पूना प्रा०
पुत्र तोला पु० कर्मसिंह श्री संभव नाथ विवं कारितं प्र० श्रीसर्व सूरिभिः ॥

(512)

सं० १६०५ फागुण सुदि दशमि समेत सिखरे प्रतिष्ठितं मागपती त्वरमिनी पुत्र
लक्ष्म प्रनमल गुरु श्रीजिन भद्र सूरि --

(१२१)

(513)

सं० १६६३ वर्षे ज्ये० व० ८ श्री-धर्मनाथ विंवं प्रति०- ।

(514)

सं० १७०३ वर्षे ज्ये० व० ७ शुक्रे श्री आसवाई नाम्न्या श्री पार्श्व वि० का० प्र० तप०
ग० श्री विजय देव सूरिभिः ।

(515)

सं० १७२५ वर्षे मार्गसिर सुदि ५ रवौ श्री मालदास ज्ञार्या -- पार्श्व वि० कारापित ।

(516)

सं० १८५२ पोस सु० ४ दिने वृहस्पति वासरे श्री सि० च० यं० मिदं प्र० लालचन्द्र
गणिना कारितं जैनगर वास्तव्य श्री माल रत्नचंद्र टोडरमल्लेन श्रेयोर्यं ।

लाला हजारीमलजी का घर देरासर ।

(517)

सं० १२१४ जापाढ़ सुदि २ श्री देवसेन संघे सं० रामचन्द्र ज्ञार्या मना- ।

(518)

सं० १३०७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ गुरौ -- सुहव ज्ञा० --- ।

(१२२)

(519)

ॐ संवत् १३५० वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ श्री षंडेर गच्छे श्री यशोमद्र सूरि संताने । प्र० ज्ञान
भार्या जमति पुत्र क्कांक्षण अरि सिंह लघुभ्राता अरिसिंहेन ज्येष्ठ भ्रातृ क्कांक्षण श्रेयं
श्री अजितनाथ विवं कारितं । प्र० श्री सुमति सूरिभिः ॥

(520)

सं० १४६९ माघ सु० ६ सागरदास भार्या नालू -- ।

(521)

संवत् १४८३ वर्षे श्री श्रीमाल ज्ञातीय बहरा धड़ला भार्या ललता देवि सावित्रीदा
हीराकेन भार्या हीरा देवि स० संघ श्रेयसे श्री शांतिनाथ विवं कारित प्रतिष्ठितं । नार्
गच्छे श्री रत्नप्रभ सूरि पद्वे श्री सह दत्त सूरिभिः शुभं भवतु ।

(522)

सं० १४८९ वर्षे माघ वदि ११ बुध श्री देवीसिंग संघवो श्रे० कावा भार्या वित्री
परनागड प्रणमति ।

(523)

सं १६६१ व० चै० वदि ११ शु० सा० वदी या कारितं श्रीपाश्वर्व विवं प्रतिष्ठित श्री
खरतर गच्छे । श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

(524)

संवत् १५६६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ श्री माल ज्ञातीय सिंधुड गोत्रे सा० घोरहरण पु० सा
छेयतन श्री श्रेयांसनाथ विवं कारितं प्र० श्रीजिनचंद्र सूरिभिः ।

(१२३)

(526)

सं० १८३५ वर्षे माघ कृष्ण पंचमी भृगु अहमदाबाद वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय
वृद्ध शाखायां सा० हठी संघ केशरी संघ भार्या वाई रुकमिणि स्वश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ
वैव कारापितं महारक श्रीशांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं सागर गच्छे तपा वीरुटे ।

छोटे दादाजी का मन्दिर ।

(527)

संवत् १८७१ वर्षे वैशाख शुक्ल पक्षे तिथी ८ बुधे महारक श्रीजिन कुशल सूरि पादुका
कारिता श्री स्वाहजानाबाद नगर वास्तव्य श्री संघेन प्रतिष्ठितं च बृहद्महारक सरतर
गच्छीय श्रीजिनचंद्र सूरिभिः स्वश्रेयोर्थं श्री महादस्याह अकरर स्वाह विजय राजेशुभं
भूयात् ॥ संवत् १८०८ मित्ती चैत्र शुदि १२ सूर्य्यशारे श्रीजिन नंदि यद्गुन सूरिभिः विजय
सधर्म राज्ये श्री दिल्लि नगर वास्तव्य सकल श्रीसंघेन जीर्णोधार पूर्वकं कारापितं पूज्या
राधकानां मङ्गलमाला वृद्धितरां यायात् ॥ श्रीमान्नादिव्य नृरि शाखायां पादक मति
कुमार तच्छिष्य हर्ष चंटीपटेशात् ॥

॥ संवत् १८२६ वर्षे वैशाख माघ शुक्ल पक्षे ३ श्रीमात्र ज्ञातीय श्रीश्रीद गोत्रे वगनाथ
सिंघरस्य भार्या नानाव गोत्रे श्रीशांतिनाथ दिः प्रः कारापित प्रतिष्ठित बृहन् सरतर
गच्छे श्रीजिन शांतिनाथ सूरः ।

(१२४)

(529)

श्री सं० १९७२ मिः माघ शुक्ल ९ शनिवासरं रंग विजय खरतर गच्छीय जं० यु० प्र०
भ० श्रीजिन कल्याण सूरि चरण पादुका कारापितं । इन्द्रप्रस्थ नगर वास्तव्य समस्त
संघेन प्रतिष्ठितं जं० यु० प्र० वृ० भ० रंग विजय खरतर गच्छीय श्री जिनचंद्र सूरि पद
श्रिते भ० श्रीजिनरत्न सूरिभिः पूज्याराधकानां मंगल मासा वृद्धितरां यायात् श्री संवत्
शुभं भूयात् ॥ श्री ॥

अजमेर ।

यह भी प्राचीन नगर है । मुसलमानोंके पूर्वमें यहां श्री खरतर गच्छनायक
प्रभाविक श्री जिनदत्त सूरि संवत् १२११ आषाढ़ ११ देवलोक हुए ।

श्री गौडी पार्श्वनाथका मंदिर ।

पंचतीर्थीयों पर ।

(530)

संवत् १२४२ आषाढ़ वदि—गुरी श्री यश सूरि गच्छे श्री० नागड सुत आसिग त
रालहण थिरदेव मान् सूरपादि पुत्रैः आसग श्रेयोर्थं पार्श्वनाथ विवं कारापिता ।

(531)

संवत् १४९५ वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ उप० ज्ञातीय तातहड़ गोत्रे सा० वीकम भा० देव
दे पुत्र रेडा भा० हीमादे पुत्र सुहड़ा भा० सुहड़ादे पु० ससारचंद । सामंत सोभा स० श्री
सुमतिनाथ विं० श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य स० श्री सिंह सूरिभिः ।

(१२५)

(532)

सं० १५०७ वर्षे वैशाख वदि ३ गुरी श्री श्री माल ज्ञातीय श्रे० चांपा भा० चापलदे तयो
सुता श्रे० व्यघा वीघा विरा भार्या पीमा पूना भगिनी हरप् एतेपां मध्ये पूनाकेन स्वमातृ
पितृ श्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः अष्टार वास्तव्यः ।

(533)

सं० १५१३ वै० सु० २ सोमे उसवाल ज्ञातीय छाजहड गोत्रे माघाहूरु पु० रानपाल
भा० कपूरी पुत्र - हारलण भा० सारतादे माता डासाडा सहितेन श्री शीतलनाथ विं०
प्र० श्री पल्लि गच्छे श्री यश सूरि ।

(534)

सं० १५१५ वर्षे फागुन सु० ९ रवी ऊ० आर्द्धघणा गोत्रे सा० समदा भा० सवाही पुत्र
दसूरकेन आत्मश्रेयसे सितलनाथ विं० का०—प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ॥

(535)

सं० १५२१ वर्षे ज्ये० शु० ४ प्राग्वाट सा० जयपाल भा० वासू पुत्र्या सा० हौरा भा०
हीरादे पुत्र सा० माउण भार्या रंगू नामा श्रेयसे श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र० तपोपक्षे
श्री रत्न शेषर पट्टे श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

(536)

सं० १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ गुरौ श्री राजपुर वास्तव्य श्री श्री मालज्ञातीय श्रे०
सारंग भार्या मवकू सुत लाईयाकेन भा० हीरू सुन्न गाईया गुदा प्रमुख कुटुम्बयुतेन भार्या
श्रेयसे श्री संभवनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं बृहत्तपा श्री उदय बल्लभ सूरिभिः ॥

(१२३)

(१२४)

संवत् १५०५ वर्ष चैत्र वदि ६ शनी पाशवात् ज्ञातीय थ० श्रीमा भा० मरुता सु
सिधा नार्या सोभागिणि सुन् पद्मा नार्या पदनी श्री सुविदिनाय विं० का० मरुता
देशेन विधिना प्र० विं० --- ॥

(३३)

सं० १५२७ वर्षे पोष वदि १ श्री० मागवात् ज्ञा० म० हेमादे सु० श्रुजा म्रसाह
नाम्या श्री नेमिनाथ विं० कारित प्र० श्रुत तपापक्षे भ० श्री जिन रत्न सूरिभिः ।

(५३०)

सं० १५२८ माह व० ५ वृधे श्री आंस वंशे धनेरीया गोत्रे साह भाहृत् पुत्र वीम
नार्या वील्हणदे पुत्रैः साह फोहा केल्हा मोकलामयेः स्वश्रं यसे श्रीधर्मनाथ विं० का०
श्री पल्लिवाल गच्छे श्री नन्द सूरिभिः प्र० ।

(५३०)

सं० १५७० वर्षे माघ वदि १३ वृधे श्री पत्तन वास्तव्य मोह ज्ञातीय ठ० श्रीजा नार्या
वाली सुत० ठ० रत्नाकेन नार्या रूपार्इ सुत ठ० जसायुतेन श्री आदिनाय विं० कारितं स्व
श्रेयोर्थं श्रीवृद्धतपा पक्षे श्री रत्न सूरि संताने श्री उदय सूरिः ॥ शोलदमी सागर सूरिणा
पहं प्रतिष्ठितं श्री धन रत्न सूरिभिः श्री रस्तु ।

(५३१)

सं० १६०३ वर्ष आषाढ वदि ४ गुरौ भिन्नमाल वास्तव्य म० देवसी भा० दाडिमदे
पुत्र मानसिंध भा० धेतसी युतेन स्वश्र यसे श्री वासुपूज्य विं० का० प्र० तपगच्छे भ०
श्री ५ श्री विजयदेव सूरिभिः ।

(१२७)

(542)

सं० १६८३ वर्षे आषाढ़ वदि ४ गु० उत्सवाल ज्ञातीय वेद महता गोत्रे म० अयरव
जा० अरमादे पुत्र मे० सुरताणाख्येन श्री सुविधिनाथ विं० का० प्र० तपा गच्छे म०
श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

(543)

संवत् १६८७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ गुरौ मेडता नागर वास्तव्य उत्सज गोत्रको० जयता
भार्या जसदे पुत्र की० दीपा धनाकेन श्रीपाश्वर्व वि० का० प्र० तपा गच्छे म० श्री विजय
देव सूरिभिः स्वपद स्थापित श्री विजयधर्म-सू-- ।

श्री संभवनाथजी का मन्दिर ।

(544)

सं० १२९० माह सुदि १० श्रे० घनल सुत जैमल धेपोर्थ--कारितः ॥

(545)

सं० १३७९ वर्षे वै० वदि ५ गुरौ प्राग्वाह ज्ञातीय महं कंधा भार्या--- पुत्र मालह
श्री शान्तिनाथ वि० का० प्र० धी महेंद्र सूरिभिः ।

(546)

सं० १४८१ माघ शु० १० प्राग्वाह --- स्व धेवसे पद्मप्रज विं० का० श्री सीम
सुंदर सूरिभिः ।

(१३८)

(५१७)

सं० १४८१ वर्षे वैशाख सु० ३ रवौ रहुराली (?) गोत्रे सा० बीजल भायां विजय श्री
पु० रावा-----श्रेयोर्थं श्री अजितनाथ वि० प्र० श्री धम-----श्रीपद्म शेषर सूरिभिः।

(५४८)

सं० १४८५ वर्षे माघ सुदि १४ बुधे लिगा गोत्रे सा० माला सागू युतेन सा० जीणा
केन निज पित्रोः श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री हेम
हंस सूरिभिः ।

(५४९)

॥ॐ॥ सं० १४८६ वर्षे माघ सु० ११ शनी श्री पंडेरकीय गच्छे उपकेश ज्ञा० गूगलीया
गोत्रे सा० महूण पु० पोना पु० नेमा पु० नूनाकेन भा० लपी पु० करमा नालहा सहितेन
स्वश्रेयसे श्रीमुनि सुव्रत विंशं का० प्रतिष्ठितं श्री शांति सूरिभिः शुभं भूयात् ॥श्री॥

(५५०)

सं० १४८८ वर्षे पोष सु० ३ शनी उकेश ज्ञाती तीवट गोत्रे वेसटान्वये सा० दाहू
भा० अणुपदे पु० सचवीर भा० सेत पु० देवा श्री वंताभ्यां पित्रो श्रेयसे श्री विमलनाथ
विंशं का० प्र० श्री उकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने श्री सिद्ध सूरिभिः ।

(५५१)

सं० १४९० वै० सु० शनी श्री मूलसंघे नंदिसंघे वलात्कार गणे सरस्वती गच्छे श्री
कुंद कुंदाचार्यान्वये भहारक श्री पद्मनंदि देवाः सत्पद्मे श्री सकल कीर्त्ति देवाः । उत्तर

(१२६)

श्रुत्योभि (१) हं० ज्ञातीय व० आसपाल भा० जाणी सु० आजाकेन भा० मधूसुत विरुआ
मातृ वीजा भा० वानू सुत समधरादि कुटुंब युतेन श्रीपद्म प्रज चतुर्विंशति पट्टः कारितः
तंच सदा प्रणमति सुकुटुंबः ।

(५५२)

सं० १४ ६२ वर्षे मार्गशिर वदी ४ गुरुवारि श्री उपकेश वंशे लूसड गोत्रे सा० देव
राज भार्या हेमश्रिया पुत्र सा० वाहडेन आत्मा कुटुंब श्रेयोर्थं श्री विमलनाथ विंवं
कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीधर्म घोष गच्छे न० श्रीपद्मशेखर सूरिभिः ।

(५५१)

सं० १४६६ माघ सु० ५ प्राग्वाट व्य० धीरा धीरलदे पुत्र्या व्य० भीमा भावल दे
सुतव्य० वेला पत्न्या वीरणि नाम्न्या श्रीसंभव विंवं का० प्र० तपा श्री सोम सुंदर
सूरिभिः ॥श्री॥

(५५३)

सं० १५१६ वर्षे वैशाख वदि १२ शुक्रे श्री धीमाल ज्ञातीय पितृ नं० रामा मातृ
शाणी श्रेयोर्थं सुत सागाकेन श्रीश्री अग्निनंदन नाथ विंवं कारितं श्री पूर्णिमा पत्ने श्री
साधुरत्न सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना श्री संघेन गौरुंड्या यान्तव्य ॥

(५५४)

॥ १५१६ आषाढ सु० ५ अष्टौ गोत्रे तीका भार्या इपा पु० तीकटा नेजा -----
पद्मावति प्रणमति ।

(१३०)

(576)

सं० १५१७ वर्षे फागुन सुदि २ उकेश वंशे बुहरा गोत्रे सा० सोढा भा० शाणी
नगाकेन भा० नायक दे पुत्र नापा गोपा प्र० परिवार सहितेन स्वपितृ सा०
पुण्यार्थं श्री श्रेयांस विंवं का० श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरि पद्वे श्री
सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(557)

सं० १५१७ वर्षे माघ सु० ५ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० डडढा भा० हरपू सु० श्रे० नागा
आजी सुत श्रे० जिनदासेन स्वश्रेयसे श्रीधर्मनाथ विंवं आगम मच्छे श्रीदेवरत्न
गुरुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं ।

(558)

सं० १५१९ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय चोरवेडिया गोत्रे उएस
सा० सोमा भा० धनाई पु० साधू सुहागटे सुत ईसा सहितेन स्वश्रेयसे श्री सुमति
नाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीकक्क सूरिभिः ॥ सीणोरा वास्तव्यः ॥

(559)

सं० १५२० वर्षे वै० शुदि ५ भौमे श्री ज्ञातीय श्री पलहयउ गोत्रे सा० भीषात्मज सा०
वेल्हा तत्पुत्र सा० सांगा---प्रभृतिभिः स्वपितृ पुण्यार्थं श्री आदिनाथ विंवं कारितं ।
वृहद्गच्छे श्रीरत्नप्रभ सूरि पद्वे प्रतिष्ठितं श्री महेंद्र सूरिभिः ।

(१३१)

(560)

सं० १५२४ ज्येष्ठ शु० १० शुक्रे उकेश वंशे -- भा० सपूरा पु० जेसाकेन भा० धर्मि-
णि पु० माईजा पौत्र इसा वीसालादि कुटुंब युतेन पु० माइया श्रेयसे श्री नमि विंवा का०
प्र० तपा श्रीसोमसुंदर सूरि संतान श्रीलक्ष्मी सागर सूरिभिः ।

(561)

सं० १५३२ वर्षे चैत्र षदि २ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञा० सं० जोगा भा० जीवाणि स० गो-
ला भा० कर्मी पु० नरवदेन श्री श्रेयांसनाथ विंवा कारितं श्री पूर्णिमा पक्षीय श्री साधु
सुंदर सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिना बलहरा ।

(562)

सं० १५३५ वर्षे फागुण सुदि ३ दिने श्री उकेशवंश भ० गोत्रे सा० नीवा भार्या पूजा
सा० पूना श्रावकेण भातृ सजेहण मा० अंवा परिवार युतेन श्री संभवनाथ विंवा कारितं
प्रतिष्ठित श्री खरतर गच्छे श्रीजिन भद्र सूरि पहे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ॥

(563)

संवत् १५४७ वर्षे मा० षदि ८ दिने प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० रूपा भा० देवू पुः मेग
भा० हीरू श्रेयोर्थे श्री वासुपूज्य विंवा प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ।

(१३२)

(564)

॥ संवत् १५५७ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने मंगलवासरे उ० ज्ञातीय वेंछात्र गोत्र मा०
पीमा पु० जालू नारिगदे अगस---श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथ विंवं का० प्र० श्रीसंदेश
गच्छे श्रीशांति सूरिभिः तत्प-श्रीर-सूरिभिः ।

(565)

सं० १५५६ (?) वर्षे आपाड सु० १० सूराणा गोत्रे स० शिवराज भा० सीतादे पुत्र स०
हेमराज भार्या हेमसिरी पु० पूजा काजा नरदेव श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्र० श्रीधर्म
घोष गच्छे भ० श्रीपद्मानंद सूरि पद्वे नंदिवर्द्धन सूरिभिः ।

(566)

सं० १५५६ वर्षे आपाड सुदि १० आर्चिणाग गोत्रे तेजाणी शाषायां सा० सुरजन
भा० सूहवदे पु० सहस मल्लेन भा० शीतादे पु० पाडा ठाकुर भा० द्रोपदी पी० कसा पीघा
श्रोवंत युतेनात्मपुण्यार्थं श्रीसुमतिनाथ विंवं कारितं प्र० श्रीउपकेशगच्छे भ० श्रीदेव-
गुप्त सूरिभिः ॥ श्रीः ॥

(567)

सं० १५६७ वर्षे श्री माह सुदि ५ बुधे गोठि गोत्रे सा० - - - तत्पु० पहराज तत्पुत्र
राठा- - - त्यादि परिवार युतेन सुविधि नाथ विंवं का० प्र० खरतरगच्छे श्रीजन-
चन्द्र सूरिभिः ।

(१३३)

(568)

संवत् १५७६ वर्षे आषाढ सुदि १३ दिने रविवारे श्री फसला गोत्रे मं० सधारण पुत्र
तन मं० माणिक भार्या माणिकदे पुत्र मूलाकेन पुत्रपौत्रादि परिवृतेन श्री.पाशर्वनाथ
वंचं कारितं प्र० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनहंस सूरिभिः श्रीपत्तन महानगरे ।

(569)

सं० १६०४ वर्षे पौष मासे शुक्ल पक्षे पूर्णिमायां तिथौ श्रीअजमेर पूर्वा श्री चतुविंशति
जनमातृका पद्म लुनिया गोत्रेन सा० पृथिराजेन का० प्र० श्रीवृहत् खरतरगच्छाधीश्वर
तंगमयुगप्रधान भ० श्रीजिन सौभाग्य सूरिभिः विजयराज्ये ।

श्रीदादाजीके छतरिके पास मन्दिरमें ।

(570)

सं० १५३५ वर्षे आषाढ सुदि ६ शुक्ले वड़नगर वास्तव्य उकेशज्ञातीय सा० साजण
भार्या तारु पुत्र सा० लपाकेन भार्या लीलादे प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीशांतिनाथ
वंचं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छनायक श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ पं० पुण्यनन्दन
गणीनामुपदेशेन ।

(१३४)

जयपूर ।

यति श्यामलालजी के पासकी मूर्तियों पर

(571)

सं० १३ -- वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्रीकाष्ठासंघ श्रीलाड वागड (?) गण श्रीमन्-
मुरूपदेसेन हुंवउ ज्ञातीय व्य० वाहड भार्या लाछि सुत पीमा भार्या राजलदेधि श्रेयोप
सुत दिवा भार्या संभव देव नित्यं प्रणमति ।

(572)

सं० १४३६ वर्षे पौष ६ सोमे श्रीब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमा० -- -- मायलदे पु० सामले
श्रीशांतिनाथ विवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीबुद्धिसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(573)

सं० १५१५ वर्षे फागुण शुदि ४ शुक्रवारे । ओसवाल ज्ञातीय बच्छस गोत्रे सा०
धीना भार्या फाई पु० देवा पद्मा मना वाला हरपाल धर्मसी आत्मपुण्यार्थं श्रीधर्मनाथ
विवं कारितं श्रीम० तपागच्छे -- -- -- ।

(574)

सं० १५२१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ गुरी रणसण वासि श्रीश्रीमाल ज्ञातीय श्री० धर्मा भा०
धर्मादे सुत भोजाकेन भा० भली प्रमुख कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीशांतिनाथ चतुर्विंशति
पहः कारितः प्रतिष्ठितः श्री सुविहत सूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥

(१३५)

याति किसनचन्दजी के पासकी मूर्तियों पर ।

(575)

सं० १३१८ फागुन--- गेहलडा गोत्रे बटदेव पुत्र विसल पुत्र लयमणेन मातृ वीरी
श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्र० श्री भावदेव सूरिभिः ।

(576)

सं० १५०५ वर्षे माह वदि ९ शनौ श्री---गच्छे--- जलहर गोत्रे सा० लुणा भा० लुणादे
पुत्र पविन पालहा सानाभि पितृमातृ श्रेयोर्थं श्री संभवनाथ विंवं कारि० प्र० ---।

(577)

सं० १५०८ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० श्रीमाल ज्ञाती भांडावत गोत्रे सा० भोजा भार्या सासु
पुत्र नेना भार्या फुला श्री धर्मनाथ विंवं कारितं श्री पल्लि गच्छे ----- ।

(578)

संवत् १५०९ वर्षे ज्येष्ठ वंसे सा० हजडा भार्या आल्णादे पुत्र केन्हाकेन श्री अंचल
गच्छेश श्री जय केशरि सूरिणां उपदेशेन पितृ श्रेयोर्थं श्री आदिनाथ विंवं कारितं ।

(579)

सं० १५३२ वर्षे ज्ये० व० ३ रवौ वणागीजा गोत्रे सा० वादी ज० पोमाइ सु० तिउण
श्रेयोर्थं सा० सावउन श्रोवंत साजण प्र० कुटुंब युतेन श्री पद्मप्रभ विंवं कारितं रोद्रपल्लिय
गच्छे श्रीदेव सुंदर सूरि पद्मे प्रतिष्ठितं श्रीगुण सुंदर सूरिभिः ।

संवत् १५५६ वर्षे माघ सुदि १५ गुरौ ओसवाल ज्ञातीय सा० हासा पुत्र हरिचंद्र
भा० हीरादे पुत्र पुना घूनार्द कुटुंब युतेन गहिलडा गोत्रे श्री सुविधिनाथ विंशं का० प्र
तपागच्छे श्री हेम विमल सूरिभिः नागपुरे ।

संवत् १६७४ वर्षे माघ वदि २ दिने गुरु पुण्ययोगे ओसवाल ज्ञातीय चोरडिया गोत्रे
स० सिधा भार्या नवलादे तत्पुत्र स० भैरवदास भार्या भर्मादे नाम्न्या श्री नमिनाथ विंशं
कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे भट्टारक श्री विजयदेव सूरिभिः ।

सं० १६८८ व० माघ व० १ गुरौ ---हस गोत्रिय सा० वंजाकेन --- सुविधिनाथ
विं० गृहीत घ० ट० श्रोतपा गच्छे श्री विजयदेव आचार्य श्री विजयसिंह सूरि प्रति० ।

जोधपुर ।

सह मारवाड़की राजधानी एक प्रसिद्ध स्थान है ।

श्रीमहावीर स्वामीका मन्दिर (जुनी मंडि)

घातुओंके मूर्तिपर ।

सं० १२५६ वर्षे माह सुदि ११ स० हाप-सीह पुत्री सपदे-केन पुत्र पूजा काजा युतेन
दिने श्रीघोर्यं श्री आदिनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज सूरिभिः ।

(३३७)

(584)

सं० १४६० वर्षे वैशाख सु० ३ धांधगोत्रे सा० सोलहा पुत्रेण सा० सांचडेन स्वपुत्रेण
भार्या निरिधादे श्रेयसे श्री आदिनाथ विवं कारितं प्र० श्री विद्यासागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(585)

सं० १५०१ प्रा० ज्ञा० डोडा भा० राणी सुत सुपाकेन भा० सरसू पुत्र साजणादियुतेन
श्री अजितनाथ विवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः ।

(586)

सं० १५०३ आषा० सु० ६ शु० राउ खावरही गोत्रे सा० महिराजभा० सीता पु० पीट
भा० लोली पु० कीडा देताभ्यां युतेन श्री धर्मनाथ विवं कारापित श्री - - पि गच्छे
श्री जयसिंह सूरि पट्टे श्रीजय शोपर सूरिभिः तपा पक्ष ।

(587)

सं० १५०३ वर्षे मार्ग वदि २ खुचंती भंडारी गोत्रे सा० सोमाभा० सोमश्रीपुत्र हीरा
केन आत्म० श्री श्रेयांत विवं का० प्र० श्री धर्म घोष गच्छे श्री पद्म शोपर सूरि पट्टे श्री
विजय नरेन्द्र सूरिभिः ॥

(588)

सं० १५१७ वर्षे वैश्र सु० १३ गुरी उप० ज्ञा० म० नूणा भा० नागिकटे पु० नांडा भा०
वालहणदे पुत्र पेतति वास० प्रा० ना० अ० श्री सुमतिनाथ विवं का० प्र० ब्रह्मानीया ग०
श्री उदय प्रभू सूरिभिः ।

सं० १५२२ वर्षे वैशाख सु० ३ नना ज्ञा०श्रे० जइता भा० परि पुत्र गेला भा० वार्ता
नाम्न्या पुत्र अमरसी भा० तिलू सजन कवेला मातृदूसी ज्येष्ठमाला प्रमुख कुटुंब युता
स्व श्रेयोर्थं श्री विमलनाथ विंवं का० प्र० तपा श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

सं० १५२४ वै० शु० ३ श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्य भ० पद्मनाथ
सत्प० भ० श्रीसकल कीर्त्ति सत्प० भ० श्री तामल कीर्त्या श्री शांतिनाथ विंवं प्रतिष्ठितं ।
श्री जे संग भा० मरगादे सु० तेजा टमकू सु० सिवदाय ।

सं० १५२७ वर्षे माह सु० ९ बुधे श्री - - - गोत्रे सा० भादा भा० सावलदे पु०
भा० मालूणदे पुत्र वींक्ता कान्हा रूपादि युतेन स्व श्रेयसे श्री आदिनाथ विंवं कार्ति
प्रतिष्ठितं जिनदेव सूरि पढे श्रीमत् श्री भावदेव सूरिः ।

सं० १५३२ वर्षे वैशाख वदि ५ रवौ उप० ज्ञा० गो० उरजण भा० राउं सु० मीदा भा०
भावलदे सु० गारगा वरजा युतेन आत्म० श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र० श्री जीरापलीय
गच्छे श्री उदयचन्द्र सूरि पढे श्रीसागर नांद सूरिभिः शुभं भवतु

सं० १५३५ श्री मूलसंघे ज० श्री भुवन कीर्त्ति स्व० भ० श्री ज्ञान भूषण गुरुपदेशे --

(१३६)

(594)

सं० १५५४ वर्षे फागुण मासे शुक्लपक्षे ३ वृष वासरे साह चांपा भार्या मेथू हुंगर
भार्या चांदू पु० डाहा भा० मालू श्री नमिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं पूर्णिमा पक्षिक
छोली वाल गच्छे भहारिक श्री विजय राज सूरिभिः ॥ श्री ॥

(595)

सं० १५६३ वर्षे माह सुदि १५ गुरौ प्रग्वाट ज्ञा० सा० कला भा० भमणादे पु० सदी
--- पु० घना --- सहितेन आत्म पुण्यार्थे श्रीसुमति विंवं का० प्र० पूणिमाक गच्छे
---सागर सूरि--- ।

(596)

सं० १५६५ वर्षे चैत्र सु० १५ गुरौ उप० भंडारी गोत्रे सा० नरा भा० नारिगदे पु०
तोली भा० लाछलदे पु० चिजा रूपा कूणा विजा भा० वीक्तलदे पु० नाम्ना डामर
द्वि० भा० वालादे पु० खेतसी जीवा स्वकुटुंबेन पितृ निमित्तं श्रीसुमतिनाथ विंवं कारितं
प्र० श्री संडेर गच्छे भ० श्री शांति सूरिभिः ।

(597)

सं० १५६५ वर्षे माह सुदि ८ रवौ श्री उपकेश वंशे वि० सांडा भार्या घम्माई सुत वीसा
सूरा भार्या डाली द्वि० भार्या अरघाई घम्म क्षेयसे श्री शीतलनाथ विंवं प्रति० सिद्धांती
गच्छे श्रीदेव सुंदर सूरिभिः प्र० ।

(598)

॥ ॐ संवत् १५६५ वर्षे वैशाख वदि १३ रवौ ढेढीया ग्रामे श्री उएसयंशे सं० पीदा
भार्या घरणू पुत्र सं० तोला सुभ्रावकेण भा० नीनू पुत्र सा० राणा सा० लपमण भ्रातृ

(१४०)

सा० आसा प्रमुख कुटुंब सहितेन स्वश्रेयोर्थं श्री अंचल गच्छेश श्री भावसागर सूरिणा
मुपदेशेन श्री अजितनाथ मूलनायके चतुर्विंशति जिन पद कारितः प्रतिष्ठितः श्रीसंघेन।

(569)

सं० १५७० वर्षे आ० सु० ३ सोमे ओसवाल ज्ञातीय चंडलिआ गोत्रे सा० सारिण
पुत्र कालू भा० हामी पु० हासा देवा गणाया भार्या दमाई पु० साह विमलदास सा०
हरवलदास सा० विमलदास भा० सोनाई पु० सुन्दर वच्छ रिपनदास भार्या अमरादे सुत
अमरदत्त पूर्वत भु० श्री सुविधिनाथ विंवं कारितं प्र० श्रीमलधार गच्छे भ० श्री गुण
सागर सूरिपद श्री लक्ष्मीसागर सूरि प्रतिष्ठितः ॥

(600)

सं० १८२१ मि० वै० सुदी ३ श्री पार्श्वजिन-भ० श्री जिन लाभ सू० यति हीरानंद
करार्पितं ।

देविजीके मूर्तिपर ।

(४ भूजा + सर्प छत्र)

(601)

सं० १४७२ वर्षे ज्येष्ठ वदि १२ सोमे बीजापूर वास्तव्य नागर ज्ञातीय ठा० भवासुत
घरणाकेन कुटुंब सम-- श्रेयोर्थं देवी वेङ्करुठा० रूपं प्रतिष्ठापितं ।

(602)

सं० १५५४ माह सुदि ५ दिने उ० ज्ञातीय मंडोवरा गोत्रे सा० पासवोर पु० सा० सूर
भा० सूहवदे पु० सा० श्रीकरण सा० शिवकरण सा० विजपाल आ० सूहवदे आत्मपुण्यार्थं
श्री शांतिनाथ विंवं का० प्र० श्रीधर्म घोष गच्छे भ० श्रीपुण्यवर्द्धन सूरिभिः ।

(१४१)

(603)

संवत् १५७९ वर्षे वैशाख सुदि ७ बुधे उशवाल ज्ञातीय वृद्धशापीय पोसालेवा गोत्रे
सा० पीमा भा० अधी-पु० सा० श्रीवंत भा० सोनाई पु० सकल युतेन स्वश्रेयसे श्रीपा-
श्वरनाथ विंवं का० श्री कीरट गच्छे श्री कक्क सूरिभिः ॥ श्री ॥

(604)

स्वस्ति श्रीः ॥ सं० १५९८ वर्षात्पौष वदि ११ सोमे उकेशवंशे व्य० परवत भा० फदकु
तत्पुत्र व्य० जयता भा० अहिवदे पु० व्य० श्री ५ सपरिवारेण सोक्तं विहान कर्मा निज
- - - परिवार श्रेयोर्थं आदिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री पूर्णिमा पक्षे श्रीमपल्लीय ज्ञ०
श्री मुनिचन्द्र सूरिपट्टे श्री विनयचंद्र सूरिणामुपदेशेनेति जद्रं ।

(605)

ॐ संवत् १६३८ वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्री स्तंज तीर्थ वास्तव्य सोनी मनजी भायां
मोहणदे सुत सोनी मंगलदास नाम्ना श्रीश्री माल ज्ञातीय श्री अजितनाथ विंवं कारा-
पितं तपागच्छे श्री हीर विजय सूरेश्वरै प्रतिष्ठितं ।

श्री केसरियानाथजी का मंदिर-मोती चौक ।

(606)

ॐ ॥ संवत् १२३९ द्विः वैशाख सुदि ६ शुक्ले पलयपट्ट वास्तव्य श्री ति-नि गच्छे ज्ञ०
श्री देवाचार्य सत्क श्री नवत्सार सुत-ष्टे-गुण स्वपत्नी सलखणायाः श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ
प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्री बुद्धि सागराचार्यैः ॥

(१४२)

(607)

सं० १४५८ वर्षे माह सुदि ५ लोढा गोत्रे सा० देवसीह भार्या देलूणदे पुत्र रेडा प्रा०
रूपादे पुत्र सा० सालू सायराभ्यां पितृ मातृ पुण्यार्थं श्री आदिनाथ विंका० प्रति
श्री धर्मघोष गच्छे श्री मलयचन्द्र सूरिभिः ।

(608)

सं० १५१३ वर्षे पोष वदि ४ शुक्रे श्रीमाल ज्ञा० श्रे० संग भा० श्रेयादे सु० महिराजे
पितृ मातृ भ्रातृ समधर सारंगा श्री मान मित्रं स्वात्म श्रेयसे श्रीश्री सुमतिनाथ विं
पंचतीर्थी कारापिता प्रतिष्ठितं पिप्पल गच्छे भ० श्री गुण रत्न सूरिभिः गंधारवास्तव्य ।

(609)

सं० १५२४ चैत्रवदि ५ -- ड माणिक भा० वारूदे-श्री विमलकीर्ति -- धर्मनाथ विं
प्र० वाई तपदे जा० कालहा -- ।

(610)

सं० १५२८ वर्षे वैशाख वदि ६ दिने सोमे उकेश वंश कुर्कट शाखायां व्यै० तोला प्रा०
षेतलदे पुत्र सदस मल्लेन तीलहादि पुत्र पौत्रादि युतेन स्व श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ विं
कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनचंद्र सूरिभिः ।

(611)

सं० १५७२ वर्षे फागुण सु० ९ मं० भंडारी गोत्रे सा० तोला भा० पलाछदे पुत्र सा०
विद्रा सा० परूपा सा० कूपा भा० करमादे पु० माता - पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ विं
कारितं प्रतिष्ठितं श्री संडेर गच्छे भ० श्री शांति सूरिभिः ।

(१४३)

(612)

सं० १८६३ ना मा । सु० १० वु० । श्री जोधपूर वास्तव्य श्रीओसवाल ज्ञातीय बृद्ध
शाखायां संघ माणक चंद्र तेउ स्वश्रेयार्थं श्री चतुर्विंशति जिन विवस्य जरापोतं ।

(613)

सिद्ध चक्रके पट्ट पर ।

श्री सिद्धचक्रो लिखती मया वै । महारकीयेन सुयंत्रराजः ॥ श्री सुन्दराणां किल
शिष्यकेन । स्वरूपचंद्रेण सदऽर्थ सिद्धैः ॥ १ ॥ श्री मन्नागपुरे रम्ये चंद्रवेदाऽष्ट भूमिते ।
अब्दे वैशाखमासस्य तृतियायां सिते दले ॥ २ ॥

श्री मुनिसुव्रतस्वामीजी का मन्दिर ।

(614)

सं० १४२३ वर्षे फागुन शु० १ श्री श्री० ज्ञा० व्य० काळा ज्ञा० कालहणदे सु० -- पद्म
प्रभु वि० श्री पू० श्री उदयाणंद सू० प्र० ।

(615)

सं० १४४१ वर्षे वैशाख वदि १२ दिने नाहरवंशालंकारेण सा० चंद्रनिह पृत्रेण भ्रातृ
सा० सलकेन सरवणादि युतेन श्री पार्श्वनाथ विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनराज नृरिजिः
श्री खरतर गच्छेत्तः ॥

(१४४)

(616)

सं० १४९९ वर्षे फागुण वदि २ गुरी श्री तावडार गच्छे पांढरा गोत्रे जेसा भा० जस
मादे पु० तोजा भा० वापू पुठीयलमेदा सह० श्री शांतिनाथ वि० प्र० का० श्री कीर्ति
चार्य सं० श्री वीर सूरिभिः ।

(617)

सं० १५३६ वर्षे फा० सुदि ३ रवी उके० पदे दोसी गोत्रे० सा० सीरंग -- पुत्र सा०
डूडकेन भा० दाडिमदे पुत्र कीता तेजादि परिवारयुक्त श्री धर्मनाथ विंवं कारितं श्रेयसे
प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्रसूरि श्री जिन समुद्र सूरिभिः
श्री पद्म प्रभ विंवं ।

(618)

सं० १५८२ वर्षे जे० सुदि १० शुक्रे वडतप श्री वन रतन सूरि --- ।

श्री धर्मनाथजी का मन्दिर ।

(619)

सं० १४९३ जेठ वदि ३ मंगले उप० झा० पावेचा गोत्रे सा० वीरा भा० वीरहणदेपुत्र
कुंभाकेन भा० कामलदे युतेन स्वश्रे० विमल विंवं का० प्र० वृहत गच्छे देवाचार्यान्वये
श्री हेमचन्द्र सूरिभिः ॥ छ ॥

(620)

सं० १५०३ वर्षे दोसी-धर्माकस्य पुण्यार्थं दो० वूछा पुत्र संग्राम श्रावकेण कारितः
श्री श्रेयांस विंवं प्रतिष्ठितं श्री जिनभद्र सूरिभिः श्री खरतर गच्छे ।

(१४५)

(621)

सं० १५०४ वर्षे वै० शु० ३ प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० भंडारी शाणी सुत श्रे० पीमसी सा-
पाभ्यां ज्ञा० मदीखतजता मालादि कुटुंबयुताभ्यां स्वश्रेयसे श्रीमुनि सुत्रत स्वामि विंवं
का० प्र० तपा श्री सोम सुन्दर सूरि शिष्य श्रीजयचंद्र सूरिभिः धार वास्तव्यः शुभं भवतु ॥

(622)

सं० १५०७ वर्षे मार्गसिर वदि २ गुरी उपकेश वंशे जारंडडा गोत्रे सा० पिमपालात्मज
सा० गिरराज पुत्र सहदेवो ज्ञ० लोला समदा सहितेन मातृ गवरदे पूजार्थं श्री नमि वि०
का० प्र० तपा जहारक श्रीं हेमहंस सूरिभिः ॥

(623)

सं० १५१२ वर्षे फागुन सु० १२ जाहतणा (जाईघणा ?) गोत्रे सा० धना ज्ञा० रूपा
पु० मोकल ज्ञा० माहणदे पु० हासादि युतेन स्वमाकठ श्रेयसे श्री संजयनाथ विंवं का०
उकेश गच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने प्र० ज्ञ० श्री कृष्ण नूरिभिः ।

(624)

सं० १५२५ वर्षे दिवसा वासे श्रीमाल ज्ञातीय सा० दगुरय ज्ञा० नार्मिनी सुत माना
केन ज्ञा० राना मातृसालू ज्ञा० सोढी कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोय श्री गान्दिनाथ विंवं वा०
प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री लक्ष्मी जगद सूरिभिः नदुरीया गोत्रः ॥

(625)

सं० १५२८ वर्षे वैशाख वदि १ चंद्रो उपकेश ज्ञाती जाहतिवनाग गोत्रे सा० लेजा
पु० जाही-ज्ञा० जयशिरि पु० सायर ज्ञा० मेहिलि नान्या पु० गुना पृथा, सदा स्वस्ति

(१४८)

श्री केसरियानाथजी (मेवाड़)

यह स्थान जो मेवाड़की राजधानी उदयपुरसे २० कोस पर है रस्वभदेओ नामसे भी प्रसिद्ध है। मूलनायक श्री ऋषभदेवकी मूर्ति स्वामवर्ण बहुत प्राचीन और इनका अतिशय बहुत विलक्षण हैं। मन्दिरके बाहर महाराणा साहबोंके अघाट बहुतसे हैं।

पंचतीर्थी पर ।

(635)

सं० १५१८ वर्षे माघ सु० १३ दिने उप० ज्ञा० श्री० पोमा भा० पोमी सु० जावलके
भा० गोलादे सु० जसा धना वना मना ठाकुर परवतादि कुटुंबयुतेम स्वपितृ श्रीयसे श्री
धर्मनाथ विं० का० प्र० तपा गच्छे श्री सोम सुंदर सूरि संताने श्रीलक्ष्मी सागर सूरिनि

पापाण पर ।

(636)

श्री काचाम्बास वामीता केवलापदाग नमो क्षमाग्रत (१) आदिनाथ प्रणमामि--
विक्रमादित्य संवत् १२३१ वर्षे वैशाख सुदि अक्षय तिथी वृध दिने चादी नाधुराल...

(637)

श्री आदिनाथ प्रणमामि नित्यं विक्रमादित्य संवत् १५७२ वैशाख सुदि पवार सोम-
वार श्री जगन्नाथ श्री कन्या भार्या सोवनचार्ड चीजीराज यहां धुलेवा ग्राम श्री ऋषभ-
नाथ प्रणम्य कहीजा फीर्दजा भार्या भरमी तन्वा पवेर्द सा० भार्या हासलदे तस्य पा-
कादेव रागगाय म्नात वेर्दीदाम भार्या लाम्दी चाचा भार्या लीसा सकलनाथ नरप-
श्री कर्ण संघ --- श्री ऋषभनाथजी श्री नाभिगज कुप श्री तां-री कुल --- ।

(१४६)

(638)

संवत् १४४३ वै० शु० १५ पूर्णिमा तिथौ रविवासरे वृहत्खरतर गच्छे श्रीजिन भक्ति
सूरि पहालंकार भहारक श्री १०५ श्री जिनलाभ सूरिभिः । -- श्री राम विजयादी प्रमुखे
सहूक -- आदेशात् सनीपुर - श्री ऋषभदेवजी - - ।

सरस्वतीजी महादेवजी के चरण चौकी पर ।

(639)

संवत् १६७६ वर्षे मा० सुद० १३ -- ।

मरुदेवी माताजीके हस्ति पर ।

(640)

संवत् १७११ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे श्री मूलसंघे सरस्वति गच्छे वलात्कारगणे
श्री कुं -- ।

(641)

संवत् १७३४ व० माघ मासे शुक्लपक्षे - तिथौ भृगुवासरे श्री मूलसंघ काष्ठासंघ भहा-
रक श्री रामसेनीन्वये तदास्नाये ज० श्री विश्व भूषण ज० यशः कीर्त्ति ज० श्री चिन्नुवन
कीर्त्ति - - ।

(642)

संवत् १७४६ वर्षे फागुण सु० ५ सोमे श्री मूलसंघ सरस्वति गच्छे वलात्कार गणे श्री
श्री कुंदकुदाचार्यन्वये भहारक श्री सकल कीर्त्ति स्तदन्तर भहारक श्री दामकीर्त्ति - - ।

(१५०)

(643)

संवत् १७६५ वर्षे माघ मासे कृष्णपक्षे पंचमी तिथी सोमवासरे महारक श्री विजय
रत्न केशवर तपागच्छे काष्ठासंधे श्रा० पु० दे० वृ० शा० मुहता गोत्रे मुहताजी श्रीरामचं
जी तस्यभार्या वाई सूर्यदेवि तस्यात्मज मुहताजी श्री सोभाग चंद्रजी मुहताजी श्री बा
जी भाई मुहताजी श्री हरजीजी श्रीपार्श्वनाथ जिन विंवं स्थापितं ।

श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ प्रशस्ति ।

(644)

॥ ॐ ॥ प्रणम्य परया भक्त्या पद्मावत्याः पदाम्बुजं । प्रशस्तिलिलिख्यते पुण्या कवि-
केशर कीर्तिना ॥ १ ॥ श्रीअश्वसेन कुल पुष्पक रथञ्च भानुः । वामांग मानस विकासन
राजहसः ॥ श्रीपार्श्वनाथ पुरुषोत्तम एष भाति । घुलेव मंडनकरा करुणा समुद्रः ॥ २ ॥
श्री मज्जगत्सिंह महीश राज्ये । प्राज्यो गुणैर्जात ईहालयोयं ॥ आपुष्पदत्त स्थि-
तामुपैतु । संपश्यतां सर्वं सुख प्रदाता ॥ ३ ॥

दोहा । सुर मन्दिर कारक सुखद सुमतिचंद्र महा साधः । तपे गच्छमें तप जप तपो
उयत्त उदधी अगाधः ॥ ४ ॥ पुन्यथाने श्रीपार्श्वनो पुहवो परगट कीधः । खेमतपो मनवा
तिसु लाही भवनो लीध ॥ ५ ॥ राजमान मुहता रतन चातुर लषमी चंद्र । उच्छ्रव क्रिधा
अति घणा आणिमन आनन्द ॥ ६ ॥ दिल सुध गोकल दासरे कीध प्रतिष्ठा पास । सारे ही
प्रगटयो सही जगतिमें जसवास ॥ ७ ॥ सकल संघ हरषित हूओ निरमल रविजिन नाम
रायो मुनि महंत सरस करता पुण्य सकाम ॥ ८ ॥

कवित्त । सांतिदास सचितसंत दावडा लषमी चंद्रहः । रंघ मनुष्य सिरदार सहस्र
किरण सुषके कंदहः ॥ वल्लभ दोसी वीर धीर जिन धर्म घुरंधरः । मुलचंद्र गुण मूलहीर
घोया उरगुणहरः ॥ सकल संघ सानिधकरः सुमतिचंद्र महासाधः । पास सदन कियो प्रगट

(१५१)

निश्चल रहो निरवाधः ॥ ९ ॥

श्लोक ॥ तद्वारेक पूज्यकृद कृपाख्यो देवेरप्रविलग्न विचित्रः पूजावतेस्मै प्रविलं
लितावै संघेन सत्सौम्य गुणान्वितेन ॥ १० ॥ गजधर सकल सुज्ञान धराहरी कीघो
गुणहेर । रच्योविंवि जिनराजको करुणा बंत कुवेरः ॥ ११ ॥ आर्या । शशीव सुख राज वर्षे ।
माधव मासे वलक्ष पक्षे च । पंचम्यां भृगुवारे हि कृता प्रतिष्ठा जिनेशस्य ॥ १२ ॥ महा-
गिरि महा सूर्य्य शशिशेष शिवादयः । जगवल्लभ पार्श्वस्य तावतिच्छतु विंविंकं ॥ १३ ॥

श्रीसंवत् १८०१ शाके १६६६ प्रमिति वैशाख सुदि ५ शुक्र वासरे श्री जगवल्लभ
पार्श्वनाथ विंविं प्रतिष्ठितं बृहत्तपा गच्छीय सुमतिचन्द्रगणिना कारापितं ॥ श्रीरस्तु ॥
शुभं भवतु ॥

पगलीयाजी पर ।

(645)

स्वस्ति श्री संवत् १८७३ वर्षे शाके १७३९ वर्तमाने मासोत्तम मासे शुभकारी ज्येष्ठ-
मासे शुभे शुक्रपक्षे चतुर्दश तिथौ गुरुवासरे उपकेश ज्ञातीय वृद्धिशाखायां कोष्ठागार
गोत्रे सुश्रावक पुण्य प्रभावक श्री देव गुरु भक्तिकारक श्रीजिनाज्ञा प्रतिपालक साह
श्री शंभुदास तत्पुत्र कुलोद्धारक कुल दीपक सिलाल अंवाविदास तत्पुत्र दोलतराम
ऋषभदास श्री उदेपूर वास्तव्य श्री तपागच्छे सकल भद्र रक शिरोमणि भहारक श्री श्री
विजय जिनेंद्र सूरिभिः उपदेशात् पं० मोहन विजयेन श्री धुलेवानगरे ॥ भंडारी दुलिचंद्र
आगुंछइं ॥

दादाजी के चरण पर ।

(646)

संवत् १९१२ का मिति फागुन वदि ७ तिथौ गुरु वासरे श्री धुलेवानगरे श्री त्रेम
कीर्त्ति शाख्योद्भव महोपाध्याय श्री राम विजयजी गणि शिष्य महोपाध्याय शिष्यचंद्र

(१५२)

गणि शिष्य-----चंद्र मुनिना शिष्य मोहनचन्द्र युतेन श्री सद्गुरुचरण कमलानि का-
तानि महोत्सवं कृत्वा प्रतिष्ठापितानि स्थापितानि च वर्तमान श्री वृहत्स्वरत्न गच्छुः
रकाज्ञया च श्री अभयदेव सूरि जिनदत्तसूरिजिनचंद्र सूरि जिन कुशल सूरिणां चरणग्यात्

पालिताना ।

श्वेताम्बरियोंका विख्यात तीर्थ श्री शत्रुंजय (सिद्धाचल) पहाड़के नीचे यह काठिया-
वाड़का एक प्रसिद्ध स्थान अवस्थित है ।

मोती सुखियाजीका मन्दिर ।

(647)

संवत् १५०३ वर्षे ज्येष्ठ शु० १० प्राग्वाट ज्ञातीय श्री० आमा भा० सेगू सुत परवतेन
भा० माई कुटुंबयुतेन स्वश्रेयोर्थे श्री श्रेयांस नाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री जय-
चंद्र सूरिभिः ॥ गणघाडा वास्तव्यः ।

(648)

संवत् १५५८ वर्षे फागुण शुदि १२ शुक्रे श्री उकेश वंशे गांधी गोत्रे अंविका प्रक।
सा० छाजू सुत सेधा पुत्र सूरु भा० मेथाई सु० साऊंया भा० मकू नाम्नया स्व श्रेयोर्थे
श्री सुमतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं मलधार गच्छे श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ।

(649)

संवत् १५७१ वर्षे माघ वदि १ सोमे वीसल नगर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय द्य।
चहिता भा० लाली पु० व्य० नारद भार्या नारिग पु० जयवंतकेन भार्या हर्षमदे प्रमुस

(१५३)

परिवार युतेन स्वश्रेयोर्थं । श्री नमिनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठित तपागच्छे
श्री सुमतिसाधु सूरि पट्टे परम गुरुगच्छ नायक श्री हेम विमल सूरिभिः ॥ श्री ॥

सिद्धचक्र पट्ट पर ।

(650)

संवत् १५५६ वर्षे आश्विन सुदि ८ वृधे श्री स्तंभ तीर्थ वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय म०
वछाकेन श्री सिद्ध चक्र यंत्र कारितः ।

सेठ नरसी केशवजकि मन्दिर ।

(651)

संवत् १६१४ वर्षे वैशाख सुदि २ वृधे प्राग्वाट ज्ञातीय दोसी देवा भार्या देमति सुत
दो० वना भार्या वनादे सु० दो० कुधजी नाम्न्या पितु श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विवं कारा-
पितं तपागच्छाधिराज महारक श्री विजयसेन सूरि शिष्य पं० धर्मविजय गणिना प्रति-
ष्ठितमिदं मंगलं भूयात् ॥

(652)

संवत् १८२१ वर्षे शाके १७८६ प्रवर्त्तमाने माघ शुदि ७ तिथी गुरुवासरे श्रीमदंघल
गच्छे पूज महारक श्री रतन सागर सूरिश्वराणामुपदेशात् श्री कच्छदेसे कोठारा नगरे
जोशवंशे लघुशापायां गांधिमोती गोत्रे सा० नायकमणजी सा० नाकनणसी तस भार्या
हीरवाई तस्सुत सेठ केशवजी तस भार्या पावो वाई (तत्पुत्र नरसी भाई नाना मना)
पंचतीर्थी जिनविवं प्ररापितं (अंजन शलाका करापितं) अठास गण ।

(१५४)

सेठ नरसीनाथाका मन्दिर ।

(653)

सं० १५३० वर्षे वैशाख शुदि १० सोमे श्री गंधारवास्तव्य श्री श्री माल ज्ञातीय व्य० साहसा भा० वाल्ही ठ० सालिग भा० आसी ठ० श्रीराज भा० हंसाई । व्य० सहिसा सुत धनदत्त भा० हर्षाई पतै सात्म श्रेयोर्थं आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री वृहत्पा पक्षे श्री विजयरत्न सूरिभिः ॥ श्री ॥

(654)

सं० १६२१ वर्षे माघ सुदि ७ गुरौ श्रीमदंचलगच्छे पूज भहारक श्री रत्न सागर सूरी श्वराणां सदुपदेशात् श्री कच्छदेशे श्री नलितपुर वास्तव्य । ओश वंशे लघुशाखायां नागडा गोत्रे सेठ होरजी नरसी तद्धार्या पूरवाईना पुण्यार्थे श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं सकल सधेन प्रतिष्ठितं ।

(655)

सं० १६२१ वर्षेमाघ सुदि ७ गुरौ श्री मदंचल गच्छे पूज भहारक श्री रत्न सागर सूरीणां सदुपदेशात् श्री कच्छदेशे श्री नलित पुर वास्तव्य । ओशवंशे लघुशाखायां नागडा गोत्रे सा० श्री राघव लषमण तद्धार्या देमतवाई तत्पुत्र सा० अन्नयचंदेन पुन्यार्थं शांतिनाथ विंवं कारितं सकल सधेन प्रतिष्ठितं ॥

सेठ कस्तुरचन्दजी का मन्दिर

(656)

संवत् १६६३ वर्षे वैशाख सुदि ६ गिरौ वास्तव्य श्रीपत्तन नगरे ओसवाल ज्ञातीय वृद्ध शापायां सोनी तेजपाल सुत सोनी विद्याधर सुत सोनी रामजी भार्या वाई अजाई

(१५५)

सुत सोनी बमलदास सोनी धर्मदास सोनी रूपचन्द पुत्री वाई शीति एतेन श्री विजयनाथस्य विवं कारापितं श्री तपगच्छाधिराज श्री विजयदेव सूरि राज्ये प्रतिष्ठितं आचार्य श्री विजयसिंह सूरिभिः ।

श्री गौडी पार्श्वनाथजी का मन्दिर ।

(657)

सं० १३८३ वैशाख वदि ७ सोमे पल्लिवाल पदम भा० कील्हण देवि श्रेयसे सुत नीकमेन श्री महावीर विवं कारित प्रति०

(658)

सं० १४८६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ नाहर गोत्रे सं । आसो सुतेन देवाकेन स्ववांधव महजा हरिचन्द पति पतिता - श्रेयो निमित्तं श्री विमलनाथ विवं कारापितं प्र० श्री हेम सिं सूरिभिः ।

(659)

सं० १५०५ वर्षे माघ सुदि १० रवौ उकेश वंशे मीठडीजा सा० साईंआ भार्या सिरि-
भादे पुत्र सा० मोला सा सुभ्रावकेण भार्या कन्हार्ई लघु भ्रातृ सा० महिराज हरराज पय
राज भ्रातृध्य सा० सिरिपति प्रमुख समस्त कुटुंब सहितेन श्री विधिपन्न गच्छपति श्री
जयकेशर सूरिणापमुदेशेन स्व श्रेयोर्यं श्री सुविधिनाथ विवं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥ आ-
बन्द्रार्कं विजयतां ॥

(660)

सं० १५१५ वर्षे माह शुदि ५ शनी प्राग्वाट ज्ञा० म० राउल भा० राउलदे द्वितीया
हांसलदे सु० मूळ भा० ज्वरपू सु० मोजा हासा राजा भा० ऋ सु० हीरामाणिङ्क इरटाम

(१५६)

युतेन स्वपृथिविंज पितृ श्रियोर्थे श्रीशांतिनाथ विंश कारितं प्रतिष्ठितं आगमगण्डे
श्री पाद प्रज्ञ सूरिभिः सहयाला वास्तव्यः ।

(661)

स १५१० वर्षे ज्येष्ठ वदि ६ शनी प्रा० सा० काला भा० मालहणदे पुत्र स० अर्जुने
भा० देव भा० मं० श्रीम भा० देमति सुति हरपाल भा० टमकू युतेन स्व श्रेयसे श्री शां
पुत्र विंश कार प्र० श्री रत्नसिंह सूरिपद्मे श्री उदय वल्लभ सूरिभिः ।

(662)

स १५२० वर्षे वैशाख वदि १२ रवौ श्री उक्तेश वंशे सा० चाचा भा० मायारि सु
भा० देव भा० मं० श्रीम भा० देमति सुति हरपाल भा० टमकू युतेन स्व श्रेयसे श्री शां
पुत्र विंश कार प्र० श्री रत्नसिंह सूरिपद्मे श्री उदय वल्लभ सूरिभिः ।

(663)

स १५३० वर्षे ज्येष्ठ वदि ३ सोम म० याछा भा० रात्रू सु० महीपायेन भा० अर्जुने
भा० देव भा० मं० श्रीम भा० देमति सुति हरपाल भा० टमकू युतेन स्व श्रेयसे श्री शां
पुत्र विंश कार प्र० श्री रत्नसिंह सूरिपद्मे श्री उदय वल्लभ सूरिभिः ।

(664)

स १५४० वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ रवौ श्रीश्री वंशे श्री देवा भा० पात्र पु० श्री अर्जुने
भा० देव भा० मं० श्रीम भा० देमति सुति हरपाल भा० टमकू युतेन स्व श्रेयसे श्री शां
पुत्र विंश कार प्र० श्री रत्नसिंह सूरिपद्मे श्री उदय वल्लभ सूरिभिः ।

(१५७)

(665)

सं० १५३१ वर्षे माघ सुदि ३ सोमे श्री अंचल गच्छेश श्रीजय केशरसूरिणामुपदेशेन
उपशवंशे स० जहता भार्या जहतादे पुत्र माईया सुश्रावकेण रजाई भार्यायुतेन स्वश्रेय
से श्री अजितनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं सु---।

(666)

संवत् १५३६ वर्षे वैशाख सुदि १० गुरौ श्रीश्री वंशे ॥ श्री० गुणोद्या भार्या तेजू पुत्र
अमरा सुश्रावकेन भार्या अमरादे भातृ रत्ना सहितेन पितुः पुण्यार्थं श्री अंचल गच्छेश
श्रीजय केसरि सूरिणामुपदेशेन वासु पूज्य विंवं का० प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

(667)

सं० १५६६ वर्षे माह वदि ६ दिने प्राग्वाट ६ ज्ञातीय पार विलाईआ भा० हेमाई सुत
देवदास भा० देवलदे सहितेन श्री चंद्रप्रभ स्वामि विंवं कारितं प्रतिष्ठितं द्विवंदनीक
गच्छे भ० श्री सिद्धि सूरिणां पट्टै श्रीश्री कङ्कसूरिभिः कालू-र ग्रामे ॥

(668)

सं० १५८३ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने उसवाल ज्ञाति मं० वानर भा० रही पु० म० नाकर
मं० भाजी म० ना० भा० हर्पादे पु० पद्यु वनु भोजा भार्या भवलादे एवं कृदुंव सहितै
स्वश्रेयोर्थं सुविधिनाथ विं० कारितं प्रति० विवदणीक ग० भ० आ देव गुप्त सूरिभिः ।
भारठा ग्रामे ।

(669)

सं० १६८५ व० माघ सुदि ६ गुरौ देवक पत्तन वास्तव्य उ० ज्ञा० वृदु सा० जसमाळ
सुत सा० राजपालेन भा० बाह पूराई प्रमुख कुदुंव युतेन श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र०
तप गच्छे भ० श्री विजयदेव सूरिभिः ।

(१५८)

(670)

सं० १६६४ व० माघ सुदि १ गुरी देवक पत्तन वास्तव्य उपकेश ज्ञातीय बृद्ध शापाया
सा० राजपाल तद्वार्या वा० पृरार्द्ध सुत सा० वीरपाल नाम्न्या श्री संभव विवं प्र० तथा
गच्छे श्री विजयदेव सूरिभिः ।

याति कर्मचन्द हेमचन्दजी का मन्दिर ।

(671)

संवत् १५५८ वर्षे चैत्र वदि १३ सोमे उपकेश ज्ञा० बर्द्धन गोत्रे श्री० वना भार्या वतादे
सुत श्री० जिणदास केन भार्या आलणदे पुत्र राजा सांढादि कुटुंब युतेन श्री शितलनाथ
विंवं का० प्र० पल्लीवाल गच्छे श्रीनन्द सूरिपट्टे श्री उजोयण सूरिभिः ।

(672)

संवत् १५५९ वर्षे वैशाख वदि ११ शुक्रे उपकेश ज्ञाती पीहरेवा गोत्रे सा-गोवल पु०
सा--भा० धारुपु० साह नर्वदेन भा० सो भादे पु० जावड । भा० बड --- पितुः श्री०
श्री मुनि सुव्रत वि० का० प्र० श्री उपकेश-श्रीकक्क सूरिभिः ॥ श्री कुक्कुदाचार्य सताने ॥

गांव मन्दिर बड़ा ।

(673)

सं० १५०७ वर्षे माघ सुदि १३ शुक्रे श्रीश्रीमाल वंशे वय० जीदा १ पुत्र वय० जेता
णंद २ पु० वय० आसपाल ३ पु० वय० अभयपाल ४ पु० वय० वांका ५ पु० वय० श्रीवाउडि
पु० वय० अणंत ६ पु० वय० सरजा ८ पु० वय० धीघा ९ पु० वय० राजा १० पु० वय० देपाल ११

(१५६)

पु० वसुनाना १२ पु० व्य० राम १३ पुत्र व्य० श्रीना भार्या मांकू पुत्र वसाहर रयणायर
सुश्रावकेण ज्ञा० गउरी पु० भूभव पौत्र लाढण वरदे भातृ समधरीसायर आतृ व्यसगरा
करणसी- सारंग वीका प्रमुख सर्व कुटुंब सहितेन श्री अंचल गच्छे श्री गच्छेश श्री जय
केसरि सूरिणामुपदेशात् स्व श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन श्री
भवंतु ॥

(674)

सं० १५३१ वर्षे श्री अंचल गच्छेश श्रीजय केसरि सूरिणामुपदेशेन श्री श्री माल ज्ञा-
तीय दो० मोटा ज्ञा० रत्तु पु० वीरा ज्ञा० वानू पु० लपा सुश्रावकेन भगिनी चमकू सहितेन
श्री शांतिनाथ विंवं स्वश्रेयोर्थं कारितं श्रीसघ प्रतिष्ठितं ॥

(675)

सं० १५४८ वर्षे कातिक सुदि ११ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय घामी गोवल ज्ञा० आपू
सु० वावा ज्ञा० पोमी सु० गणपति स्वश्रेयसे श्रीचन्द्रप्रज्ञ स्वामि वि० का० प्र० चैत्रगच्छे
श्री सोमदेव सूरि प्रतिष्ठितं ।

(676)

सं० १५४९ वर्षे वै० सु० १० शु० श्री उ० ज्ञा० पीहरेवा गोत्र साह ज्ञावड ज्ञा० नरमादे
जात्मश्रेयोर्थं श्रीजीवित स्वामी श्री सुविधिनाथ विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री उसवाळ
गच्छे श्रीकङ्क सूरि पट्टे श्री देव गुप्त सूरिभिः ॥

(677)

संवत् १५७२ वर्षे वैशाख सुदि १३ सोमे श्री श्री प्राग्वाट ज्ञातीय दोसी सहिजा सुत
दो० नरणा भार्या कूपटि सुत दोसी बहु भार्या बलहादे तेन जात्म पितृमातृणां श्रेयसे श्री

(१६२)

(686)

सं० १३१४ वै० सु० ३ --- विं० का० श्री चन्द्र सूरिभिः ।

(687)

सं० १३७३ ज्ये० सु० १२ श्रे० राणिग भा० लाडी पु० महण सीहेनपिता माता श्रेयोर्ष
श्री महावीर विं० का० प्र०----- श्री सालिभद्र (?) सूरि श्री मणिभद्र सूरिभिः ।

(688)

सं० १३८७ --- श्री आदिनाथ विं० का० प्र० श्री महातिलक सूरिभिः ।

(689)

सं० १४४६ वर्षे वै० व० ३ सोमे प्रा० ज्ञा० पितृ धणसोह मातृ हांसलदे श्रेयसे सुत
सादाकेन श्री अजितनाथ विं० पंचतीर्थी का० प्र० श्री नागेन्द्र गच्छे श्री रत्नप्रभ
सूरिभिः ॥ छ ॥

(690)

सं० १४६३ फा० सु० ९-- श्रीमाल -- श्री तेजपाल भा० - - - श्रेयसे सुत भादाकेन श्री
आदिनाथ विं० प्र० श्री जयप्रभ सूरिणामुपदेशेन ।

(691)

सं० १४८६ वर्षे -- श्रीमाल -- आदिनाथ विं० प्र० श्री नरसिंह सूरिणामुपदेशेन ।

(१६३)

(692)

सं० १५११ व ज्येष्ठ व० ६ रवौ उषवाल ज्ञा० म० पूना ज्ञा० मेलादे सु० वीजल ज्ञा०
डाही तयो श्रेयसे ज्ञातृ आसुदत्त हीराभ्यां श्री विमलनाथ विंवं का० पूर्णिमापक्षे श्रीम
पल्लीय महा० श्री जयचंद्र सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥

(693)

सं० १५१६ व० फा० वा० ४ गुरु श्रीमाली ज्ञा० म० गोवा ज्ञा० नाऊ सुत जूठाकेन
पितृमातृ श्रेयोर्थं श्रीधर्मनाथ विंवं का० प्र० श्रीब्रह्माणगच्छे श्री मुनि चंद्र सूरि पद्वे
श्री वीर सूरिभिः ॥ बलहारि वास्तव्यः ॥ श्री ।

(694)

सं० १६८५ व० वै० सु० १५ दिने क्षत्रि रा० पुजा का --- श्री नमिनाथ विंवं श्री
विजयदेव सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(695)

सं० १७७८ व० ---- श्रीसुनतिनाथ वि० का० प्र० वि० श्रीधर्मप्रज्ञ गृगति
पिप्पलगच्छे ।

सेठ बाल्हा भाई टोंक ।

संवत् १५२५ वर्षे पाल्मुन सुदि ३ मनीं श्रीसुप्रसवे सुगन्धकी गच्छे वयागकार गति
श्री कुंदकुंडाबाबाव्यापदे ज्ञ० श्रीसुप्रसवेदिदेवा तन्वदे प्र० श्री सुप्रसवे कौलिं देवा सुप्रसवे

नस्य । विषम तमाश्रंग सारंगपुर नागपुर गागरण नराणका अजयमेरु मंडोर मंडल
 युंदी खाटू चाट सुजानादि नानादुर्ग लीलामात्र ग्रहण प्रमाणित जित काशित्वाभि
 मानस्य । निज भुजोर्जित समुपार्जितानेक भद्र गजेन्द्रस्य । म्लेच्छ महीपाल व्या
 षक्रवाल क्दिलन विहंगमेन्द्रस्य । प्रचंड दीर्ढ खंडिताभिनिवेश नाना देश नरे
 भाल माला लालित पादारावंदस्य । अस्खलित ललित लक्ष्मी विलास गोविंदस्य ।
 कुनय गहन दहन दवानलायमान प्रनाथ व्याप पलायमान सकल बलूष प्रतिकूल
 क्षमाप श्वापद वृंदस्य । प्रबल पराक्रमाकांत ढिल्लिमंडल गूर्जरत्रा सुरत्राण दत्तातप
 प्रथित हिन्दु सुरत्राण विरुदस्य सुवर्ण सत्रागारस्य षड्दर्शन धर्माधारस्य चतुरंगवाहिनी
 वाहिनी पारावारस्य कीर्त्तिधर्म प्रजापालन सत्रादि गुण क्रियमान श्रीराम युधिष्ठिरादि
 नरेश्वरानुकारस्य राणा श्री कुंभकर्ण सर्वोर्वीपतिसार्वभौमस्य ४१ विजयमान राजे
 तस्य प्रासद पात्रेण धिनय द्विवेक धैर्योदार्य शुभ कर्म निर्मल शीलाद्यद्भुत गुणमणिमा
 भरणप्रासुर गात्रेण श्री मदहम्मद सुरत्राण दत्त फुरमाण साधु श्रीगुणराज संघ पति
 साहस्य कृताश्चर्यकारि देवालयाडंबर पुरःसर श्री शत्रुंजयादि तीर्थ यात्रेण । अत्र
 हरी पिंडर वाटक सालेरादि बहुस्थान नवीन जैनविहार जीर्णोद्धार पद स्थापना
 विषम समय सत्रागार नाना प्रकार परोपकार श्री संघ सत्काराद्य गण्य पुण्य महाप
 क्रयाणक पृथ्यमाण प्रदार्थक तारण क्षय मनुष्य जन्म यान पात्रेण प्राग्वाट वंशावने
 सं भागर (मांगण) सुत सं कुरपाल भा० कामलदे पुत्र परमार्हत घरणाकेन उच्य
 भूत् सं रत्ना भा० रत्नादे पुत्र सं लापा म(स)जा सोना सालिग स्व भा० सं धार
 दे पुत्र ज्ञाना ज्ञानानि प्रवर्द्धमान संतान युतेन राणपुर नगरे राणा श्री कुंभकर्ण
 नरेण्ड्रेण म्दनाप्ता निवेशिते तदीय सुप्रसादादेशतस्त्रै लोक्यदीपकाभिधानः श्री
 चतुर्मुख युगादीश्वर विहार क्वाग्निः प्रतिष्ठितः श्रीचहत्तपा गच्छे श्रीजगच्चंद्र सूरि
 श्रीदेवेन्द्रसूरि संताने श्रीमन् श्रीदेवसुन्दर सूरि षट् प्रजाकर परम गुरु सुविहित पुर
 गच्छाधिराज श्रीमोमसुन्दर सूरिभिः ॥ कृतमिदं च सूत्रधार देपाकस्य अयं च श्रीचतुर्मुख
 विहारः सायं प्राक् नंदानाह ॥ शुभं भवतु ॥

(१६७)

पाषाण और धातुओंके मूर्ति पर।

(701)

सं० ११८५ चैत्र सुदि १३ श्री ब्रह्माण गच्छे श्री यशोमद्र सूरिभिः ---ल स्थाने देव
सरण सुत धीशके ---श्री गुह - - कारिता ।

(702)

संवत् १२९० वर्षे माघ सुदि ५ सुक्रे श्री० बढपाल श्री० जगदेवाभ्यां श्रेयीर्थं पुत्र
सामदेवेन ज्ञातृ पून सिंह समेतेन चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्रतिष्ठितं वृहद्गच्छीयैः
श्री शान्ति प्रभू सूरिभिः ।

(703)

संवत् १४९९ वर्षे सा० साजण ज्ञार्या सिरिजादे पुत्र चांपाकेन ज्ञार्या चापल
देव्यादि कुटुम्ब युतेन जनागत चतुर्विंशत्यां श्री समाधि विंशं का० प्र० तपा श्री सोम
सुन्दर सूरिभिः ।

(704)

संवत् १५०१ ज्ये० सुदि १० प्राग्घाट व्य० करणा सुत रामाकेन ज्ञार्या तीचणि युतेन
श्री क सुमतिनाथ विंशं कारितं प्र० तपा श्री सोमसुंदर शिष्य श्री मुनि सुंदर नूरिभिः ।

(१६८)

(705)

शत्रुजयके नक्सैके निचे ।

॥ ॐ ॥ सं० १५०७ वर्षे माघ सु० १० ऊकेश वंशे स० भीला भा० देवल सुत सं० धर्मा
सं० केल्हा भा० हेमादे पुत्र स० तोल्हा षांगां मोल्हा कोल्हा आल्हा साल्हादिनि
सकुटुं वैः स्वश्रेयसे श्री राणपुर महानगर त्रैलोक्य दीपकाभिधान श्री युगादि देव
प्रासादे --- धन्त -- महातीर्थ शत्रुजय श्री गिरनार तीर्थ द्वय पहिका कारिता प्रति
ष्ठिता श्री सूरि पुरंदरैः ॥ तीर्थनामुत्तमं तीर्थं नागानामुत्तमा नगः । क्षेत्राणामुत्तमं
क्षेत्रं सिद्धांद्रिः श्री जिं --- मं ॥ १ श्री रूसुपूजकरय --- ।

(J06)

संवत् १५३५ वर्षे फाल्गुन सुदि-- दिने श्री उखवंशे मंहोरा गोत्रे सा० लाघा पुत्र
सा० वीरपाल भा० नेमलादे पुत्र सा० गयणाकेन भा० सोतादे प्रमुख युतेन माता
विमलादे पुण्यार्थं श्रीचतुर्मुख देव कुलिका कारिता ॥

(707)

॥ ॐ ॥ सं० १५५१ वर्षे माघ वदि २ सोमे श्री मंडपाचल वास्तव्य श्री उश वंश
शंगार सा० धर्मसुत सा० नरसिंग भा० मनकू कुक्षि संभूत सा० नरदेव भार्या सोनाई
पुत्ररत्न सा० संग्रामेन कायोत्सर्गस्थ श्री आदिनाथ विवं कारितं । प्र० वृ० तपा श्री
उदयसागर नृरिभिः स्थापित श्री चतुर्मुख प्रासादे धरण विहारे ॥ श्री ॥

(१६६)

सहस्रकूट पर ।

(708)

सं० १५५१ व० वैशाख वदि ११ सोमे से० जावि भा० जिसमादे पु० गुणराज भा० सुगणादे पु० जगमाल भा० श्री वच्छ करावित (उत्तर तर्फ) आ० गांगादे नागरदास वा० साडापति श्री सूजा कारापिता आ० नीत्तवि० रामा० भा० कल --- ।

(709)

संवत् १५५२ व० मिगशर सुदि ९ गुरु दिने श्री पाटण वास्तव्य ओस वंस ज्ञातीय म० धणपति भा० चांपाई भाई मं० हरपा भा० कीकी पु० मं० गुणराज म० मिहपाल ॥ करावत ॥

(710)

सं० १५५६ वर्षे वै० सुदि ६ शनी श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री उस वस सा० गणपति भा० गंगादे सु० सा० हराज भा० घरमादे सु० सा० रत्नसीकेन भा० कपूरा प्रमु० कुटुंब युतेन राणपुर मंडन श्री चतुर्मुख प्रासादे देव कुलिका का --- श्री उसयाल गच्छे श्री देव नाथ सूरिभिः ।

(711)

सं० १५५६ वर्षे वै० सुदि ६ शनी श्री स्तम्भतीर्थ वास्तव्य श्री उस वस सा० धानदे भार्या चपांड सुत सा० राजा भार्या राजी सुत सा० श्री जोग राजेन भ्रातृ मत्ताना स्वभार्या प्रध० सोवती देती० सं० लखा --- सहजो सा० नाकर प्रमुग् कुटुंब युतेन

(१७०)

स्वश्रेयसे श्री राणपुर मंडन श्री चतुर्मुख प्रासाद देव कुलिका कारिता श्री चतुर्मुख
प्रासादे श्री उदय सागर सूरि श्री — ष्टि सागर सूरिणामुपदेशेन ।

(712)

संवत् १५८— वर्षे माघ सुदि १० उकेश वंशे छाजहड़ गोत्रे सा० साध पुत्र सा
उमला मातृ पुण्यार्षे श्री धम्मनाथ का० प्र० श्री जिन सा --- सूरिभिः ।

पूर्व सभामण्डपके खंभे पर ।

(713)

॥ॐ॥सं १६११ वर्षे वैशाख शुदि १३ दिने पात साह श्री अकबर प्रदत्त जगद्गुरु
विरुद धारक परम गुरु तपा गच्छाधिराज भद्वरक श्री ६ हीर विजय सूरीणामुपदेशेन
श्री राणपुर नगरे चतुर्मुख श्री घरण विहार श्री महम्मदावाद नगर निकट वच्यु समापुर
वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय सा० रायमल भार्या वरजू भार्या सुरूपदे तत्पुत्र खेता सा
नायकाभ्यां भावरघादि कुटुंब युताभ्यां पूर्व दिग् प्रतीत्या मेघनादाभिधो मंदप
कारितः स्व श्री योर्थे ॥ सूत्रधार समल मंडप रिबनाद विरचितः ॥

दूसरे आंगनमें ।

(714)

॥ ॐ ॥ संवत् १६१७ वर्षे फाल्गुन मासे शुक्लपक्षा पंचम्यां तिथौ गुरुवासरे श्री तपा
गच्छाधिराज पातसाह श्री अकबरदत्त जगद्गुरु विरुद धारक महारिक श्री श्री श्री ६
हीर विजय सूरीणामुपदेशेन चतुर्मुख श्री घरण विहारे प्राग्वाट ज्ञातीय सुश्रावक सा

(१७१)

खेता नायकेन षड्धा पुत्र यशवंतादि कुटुम्बयुतेन अष्टचत्वारिंशत् (४८) प्रमाणानि
सुवर्ण नाणकानि मुक्तानि पूर्व दिक्कसत्क प्रतीली निमित्तमिति श्री अहमदाबाद पार्श्वे
उसमा पुरतः ॥ श्रीरस्तु ॥

(715)

नमः सिद्ध श्री गणेशाय प्रसादात् । संवत् १७२८ वर्षे शाके १५९४ वर्त्तमाने जेठ
सुदि ११ सोम जावर नगरे काठुड गोत्रे दोसी श्री सूजा भार्या कथनादे सुत गोकलदास
भार्या गम्भीरदे समोलिकादे सुत रणछोड़ हरीदास प्रतिष्ठित श्री संडेरगच्छे महारक
श्री देवसुंदर सूरि प्रतिष्ठित उपाध्याय श्री—न सुंदरजी चेला रतनसी

(716 j

सं० १७२८ मा० संडेरगच्छे उ० श्री जनसुंदर सूरि चेला रतन राणकपूर महानगर
त्रैलोक्य दीपकानिधाने --- ।

(717)

संवत् १९०३ वर्षे वैशाख सुदि ११ गुरौ दिने पूज्य परमपूज्य महारक श्री श्री कक्क
सूरिभिः गण २१ सहिता यात्रा सफली कृता श्री कवल गच्छे लि० पं० शिवसुंदर
मुनिना ॥ श्री रस्तु ॥

(718)

संवत् १९०३ वर्षे वैशाख सुदि ११ श्री जिनैश्वराणां चरणेषु । पं० शिवसुंदरः
समागतः ।

(१७२)

सादडि ।

यह ग्राम रैनपुरसे ३ कोस पर है ।

(719)

स्वस्ति श्री ऋद्धि वृद्धि जया मंगलाभ्युदय श्री- अथ श्रीतृ--विक्रमादित्य समयात्-
१६४८ वर्षे वैशाख मासे कृष्णपक्षे अष्टम्यां तिथौ लामदासार गंगाजल निर्मलायां श्री
उसवाल ज्ञातौ कावेडिया गोत्रे साहश्री भारमल गृहे भार्या बहू श्री मेवाडी --- तत्पुत्र
साह श्री तारा चंदजी स्वर्गारूढो जातः तत्र बहू श्री तारादे १ बहू श्री त्रिभवनदे २ बहू
श्री असडवदे ३ बहू श्री सोभागदे ४ सहगत ---।

नाकोडा ।

मारवाड़ के मालानी-परगने के नगरके पास पहाड़ोंके बीच यह एक प्राचीन स्थान है।

(720)

संवत् १६२१ --- पार्श्वनाथ जिन चैत्ये चतुष्किका कारापित श्रावक संघेन ।

(721)

-- संवत् १६३८ आशाढ़ सुदि २ गुरुवार --- ।

(722)

संवत् १६४२ भाद्रपद सुदि १२ सोमवार --- राउल श्री मेघराजजी विजय राज्ये ---।

(१७३)

(723)

संवत् १६६६ भाद्रपद शुक्ल पक्ष तिथि द्वितीया दिने शुक्रवासरे वीरमपुर श्री शांति-
नाथ प्रासाद भूमि गृहे श्री खरतरगच्छे श्री जिन चंद्र सूरि विजयाधिराज आचार्य श्री
सिंह सूरि राज्ये श्री संघेन लिखितं ।

(724)

उपाध्याय श्री ५ देवशेखर विजय राज्ये ॥

॥ ॐ ॥ सं० १६ असाढ़ आदि ६७ वर्षे भाद्रपद शुक्ल पक्षे श्री नवमि दिने शुक्रवासरे
श्री वीरमपुरवरे श्री पार्श्वनाथ श्री महावीर स्वामी श्री पल्लीवाल गच्छे महारिक श्री
यशोदेव सूरि विजय राज्ये राउल श्री तेजसोजी विजय राज्ये कारित श्री संघेन पंडित
श्री सुमति शेखरेण लिपीकृतं सुत्रधार दामा तत्पुत्र मना धना वरजांगिन कृतं ॥ भ्रात्रोज
सामा मेया कला पुत्र कल्याण ॥ ज्ञानेज नासण श्री पार्श्वनाथ श्री महावीरजी रक्षा
शुभं भवतु - - -

(725)

संवत् १६६८ वर्षे द्वितीय आसाढ़ शुक्ल ६ शुक्रवासरे उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रे श्री
तेजसिंहजी राज्ये श्रीतपागच्छे महारिक श्री विजय सेन सूरि विजय राज्ये आचार्य
श्री विजयदेव सूरि विजय राज्ये ।

(726)

स्वस्ति श्री तथा मंगलमभ्युदयश्च । संवत् १६६८ वर्षे भाके १५२२ प्रयत्नमान
द्वितीय आसाढ़ सुदि २ दिने रविशरे रावळ श्री जगमालजी विजय राज्ये श्री पण्डितजीय

(१७४)

गच्छे भहारक श्री यशोदेव सूरजी विजयमाने श्री महावीर चैत्ये श्री संघेन चतुष्किक
कारिता श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ प्रसादात् शुभं भवतु । उपाध्याय श्री कनक शैल
शिष्य पं० सुमति शेखरेण लिखित श्री छाजइ दीव सेखाजी संघेन कारापिता सु
धारः ऊजल भातृ भाक्ता घडिता भवन कंचरा- - ।

छत्रीमें ।

(727)

॥ ॐ ॥ श्रीमत् श्री जिन भद्र सूरि भृत्याणां बुजाप्तोदया । घन्याचार्यपदावदात्
वदिताः श्री कीर्तिरत्नाह्वया ॥ नम्रा नम्र सरोज रसमणि विभा प्रोच्छासितां हि द्वया
राजा नन्द करा जयंतु विलसत् श्री शंखबालान्वया ॥ - - - - -

वालोतरा ।

श्री शीतलनाथजी का मंदिर

धातु मूर्तियों पर ।

(728)

सं० १२३४ ज्येष्ठ सुदि ११ सा० जणदेव आर्या जेउत पुत्र वीरा देवेन भात वाइ
वीरदे श्री यार्यमकारि प्र० देव सूरभिः ।

(१७५)

(729)

सं० १४०१ वैशाख ४ श्री आदित्य नाग गोत्रे सच० कुलियारमजा सा० क्षाम पुत्रेण
स -- पुत्र श्रेयसे श्री शान्ति विवं कारितं प्रति० श्री कक्क सूरिभिः ।

(730)

सं० १५०१ वर्षे माघ घदि ६ बुधे उपकेश ज्ञाती आविणाग गोत्रे सा० कालू पु०
वील्ला भार्या देवा सात्म श्रेयसे श्री श्रेयांस विवं कारितं श्री उकेश गच्छे ककुदाचार्य
संताने प्रतिष्ठितं श्री कुंकुम सूरिभिः ।

(731)

सं० १५०४ वैशाख सु० ७ दिने श्री उकेश वंशे सा० डीढा पुत्र सा० नाय ---
सहितेन स्वपुण्यार्थं श्री पार्श्व जिन विवं का प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरिभिः ।

(732)

सं० १५०६ वर्षे कार्तिक सु० १३ गुरी उपकेश वंशे बहरा गोत्रे सा० --- पुत्र
हरिपाल भार्या राजलदे पुत्र सा० धरमा भार्या धनाई पुत्र सा० सहजाकेन स्वपितृ
पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य विवं कारितं । श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पद्वे श्री जिन
भद्र सूरि युगे प्रधान गुरुभिः प्रतिष्ठितः ।

(733)

सं० १५०६ वर्षे -- उपकेश वंशे बहरा गोत्रे सा० --- श्री सुमतिनाथ विवं
कारिता श्री खरतर गच्छे श्री जिनराज सूरि पद्वे श्री जिन भद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(१७६)

(734)

सं० १५२५ वर्षे मार्ग शीर्ष यदि ९ शुक्ले श्री उपकेश ज्ञातीय त्री दूगड़ गोत्रे मं०
पनरपास पु० वछराज भा० कम्मी पुत्र सारंग सुदय वच्छाभ्यां पितु पुण्यार्थं श्री कुंभु
नाथ विंवं कारिता प्र० श्री रुद्र पल्लीय गच्छे श्री देवसुंदर सूरि पहे मं० श्री सोम
सुंदर सूरिभिः ।

(735)

सं० १५३७ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिने श्री उपकेश वंशे व - रा गोत्रे अभयसिंह संताने
सा० कुता भार्या लषमादे सा० डाहृत्य श्रावकेण भा० पूराई पुत्र मरा जीवा देवादियुतेन
श्री घर्मनाथ विंवं का० श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पहे श्री जिनचंद्र सूरि पहे
त्री जिन समुद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितः ॥

भावहर्ष गच्छके उपासरेमें केशरियानाथजी का देरासर ।

(736)

॥ ॐ ॥ सं० १०९—वैशाख यदि ५ - - - - प्रतिमा कारितेति ।

(737)

सं० १५३३ श्री माल फोफलिया गोत्रे सा० बूहड़ भा० नापाई पुत्र बुढाकेन मा० - -
कुटुंबेन युतेन श्रीविमलनाथ विंवं का० प्र० श्रीधर्म घोष गच्छे श्री पद्मानन्द सूरि श्री -

(738)

सं० १०१८ सा० रामजा सुत तेजसी श्री आदिनाथ विंवं का० प्र० श्री विजय गच्छे
वापणा सुमति सागर सूरिभिः आचार्य श्री - - - ।

(१७७)

वाङ्मैङ्ग ।
गोपोंका उपासरा ।
धातुके मूर्त्तियों पर ।

(739)

सं० १५२७ व० माह शु० १३ उ० सा० साल्हा भा० ह्वीसलदे पुत्र सा० गुण दत्तेन भा०
गेलमदे पु० तिहणा गोपादि कु० युतेन श्रीसुमतिनाथ विंवं का० प्र० तपागच्छे श्री सोम
सुन्दर सूरि संताने श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(740)

सं० १५८० वर्षे वैशाख सुदि १३ शुक्रे श्री श्री माल ज्ञा० म० डोरा भा० सपो सु० सं०
हेमा भा० हमीरदे मं० ज्जाकेन भा० वमी सु० अमरा युतेन स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ
विंवं श्री पू० श्री पुण्य रत्न सूरि पदे श्री सुमति रत्न सूरिणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च
विधिना ॥ श्री ॥

यति इंद्रचन्दजीका उपासरा ।

(741)

सं० १५१२ वर्षे वैशाख सुदि ५ श्री श्रीमाल ज्ञा० श्री सहसा भा० मोली पुत्र जिन-
दास महाजल युतेन स्वश्रेयसे श्री कुंधुनाथ विंवं का० जागम गच्छे श्री हेम रत्न सूरिणा
मुपदेशेन प्रतिष्ठितः ॥

(742)

सं० १५१४ मा-शु० - प्राग्वाट ज्ञा० रुद्रहाकेन भा० वर्जू सुत ना० वीरा माणिक

(१७८)

बछादि कुटुंब युतेन पितृव्य सा० चांपा श्रेयोर्थं सुमति नाथ विंशं कारितं प्र० तथा श्री
सोम सुन्दर सूरि श्री मुनि सुन्दर सूरि पद्वे श्री रत्न शेखर सूरिभिः ।

बडा मन्दिर श्रीपार्ष्वनाथजीका ।

सभ्ना मण्डप ।

(743)

ॐ नमो जगवते श्री पार्ष्वनाथाय नमः ॥ संवत् १८५६ वर्षे माह सुदि ५ शुक्र पक्ष
प्रतिपदा तिथौ सोम वासरे राठउड़ वंशे राउत श्री उदयसिंह श्री वाक् पत्राका
नगर - - - राज्ये कुपा - श्री त्रां - कीय सहिभिः ॥ श्री विधि पक्ष मुख्याभिधान यु
प्रधान श्री पता श्री धर्म मूर्ति सूरि अंचल गच्छीय समस्त श्री संघमें शांति श्रेयोर्थं
श्री पार्ष्वनाथ प्रासाद कारितः ।

पञ्च तीर्थियों पर ।

(744)

सं० १९०३ माह यदि ५ शुक्रे श्री उदयपुर नगर वास्तव्य श्री सहस्र फणा पार्ष्व-
नाथजीकी घरिसातांता संघ समस्त मीणक बाई श्री शांतिनाथ पञ्च तीर्थ कारापितं
तथा गच्छे पं० रूप विजय गणिभिः प्रतिष्ठितं च ।

दुसरा मंदिर ।

(775)

संवत् १५४० वर्षे जेष्ठ सुदि १० सोमे श्री श्री माल ज्ञातीय पितामह रा० बस्ता
पितामहो कोल्हणदे सुत पितृ स० पवा मातृ राजूश्रेयोर्थं सुत सं० सहसा सागा सहदे

(१७६)

घरणा एतै श्री आदिनाथ मुख्यश्चतुर्विंशति पट्टः कारितः पुनिम पक्षे साधु रत्न
सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठित शंङलि वास्तव्यः ।

(746)

सं० १५२० श्री मूल संघेन महारक श्री विजय कीर्त्ति श्री०

सभा मंडप ।

(747)

॥ ॐ ॥ संवत् १६७६ वर्षे माघ शुद्धि १५ रवि वासरे खरतर गच्छ महारक श्री जिन
रत्न -- पुष्य नक्षत्रैः राजत श्री उदयसिंहजी विसरि विजय राजे जयराजे ॥ श्री
सुमतिनाथ रठ नववु कीउ श्री संघ करादउ सूत्रधार पीसा पुत्र नता नववु कीउ ।
सूत्रधार नारयण नट संघ धन ।

(748)

सं० १६२८ वर्षे मद्रपद कृष्णपक्ष ७ बुध -- बृहस्पतिरतर गच्छे महारक श्रीमगत
सुर रावतजी श्री बाकीदासजी -- । जुहारसिंग विजय राजे श्री सुमतनाथजी-
शिणगार कीधी -- ।

(749)

॥ ॐ ॥ संवत् १६५२ वैशाख शुद्धि २ श्री बाहडमेरी महाराज कुल श्री कामंत गिंत
देव कल्याण विजय राजे तन्निपुस्त श्री करण सं० दीरामेठ देवाउठ ज्ञाः निगन प्रभु
योधं लक्ष्मणापि प्रपच्छति यथा । श्री आदिनाथ मध्ये संविष्टमान श्री विनमदंग

क्षेत्रपाल श्रीचण्ड राज देवयो उभय मार्गीय समायात सार्थ उष्ट्र १० वृष २० उभया-
दपि उर्द्धुं सार्थं प्रति द्वयो देवयोः पाइला पदे प्रियदश विशोप का० अर्द्धोर्द्धुंन ग्रहीत-
व्याः । असौ लागो महाजनेन सांमतः ॥ यथोक्तं बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजान्नः सगरा-
दिभिः । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदाफलं ॥ १ ॥ छ ॥

मेडता

यह भी मारवाडका एक प्राचीन नगर है ।

श्री आदिनाथजी का मंदिर—डानियोंका सुहल्ला ।

संवत् १६७७ वसंत ॥ वैशाख मासे शुक्ल पक्षे तृतीयाया तिथौ शनि रोहिणी योगे
श्री मेडता नगर वास्तव्य श्री माल ज्ञातीय पाताणी गोत्रीय सं भोजा भार्या भोजलदे
पुत्रेण संघपति पेतलीकेन स्व० भा० चतुरंगदे पुत्र डुंगसी प्रमुख कुटुंब युतेन स्व श्रीय
से स्वकारित रंगदुत्तंग शिखर बहु श्री ऋषभदेव विहार मंडन सपरिकरं श्री आदिनाथ
विवं कारितं प्रतिष्ठापितंच प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितंच तपागच्छे श्रीमदकव्वर सुरप्राण
प्रदत्त - - - क श्री शत्रुंजयादि कर मोचक महारक श्री हीर विजय सूरि राज पट्टोदय
पर्वत सहस्र किरण यमान युग प्रधान महारक श्री विजयसेन सूरिश्वर पट्ट प्रभावक श्री
श्री मद्र जांहगीर साहि प्रदत्त श्री महातपा विरूद्धधारक श्री महावीर तीर्थंकर प्रतिष्ठित
श्री सुघनर्म स्वामि पट्टधर - - सुविहित सूरि सत्ता शृंगार महारक श्री विजय देव
सूरिभिः ।

(१८१)

सर्व धातुकी मूर्तियों पर ।

(751)

सं० १५३४ वर्षे आषाढ़ सुदि २ गुरी जंडारी गोत्रे सा० वील्हा संताने मं० मायर
मार्या सुहदे पुत्र स० अस्का मार्या लपमादे मातृ सांपायने श्री कुंधुनाथ विंवं कारितं
प्रियसे प्रति० संडेरग गच्छे श्रीईश्वर सूरि पहे श्री शांति सूरिभिः ।

तपगच्छका उपासरा ।

(752)

सं० १६५३ वर्षे वै० शु० ४ श्री कुंधुनाथ विंवं गांदि गोत्रे श्री—स० सुरताण जा०
सवीरदे पुत्र साटूल - - - श्री तपागच्छे श्री विजयतेन सूरि - - पं० विनय सुंदर गणि
प्रतिष्ठितं ।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

(753)

सं० १५२८ वर्षे फा० वदि १३ श्री माली श्री० लमरा जा० धर्मिणि पु० त्रं० मूयू जा०
प्र० काका जा० काडं पुत्री लापू नाम्ब्या पु० सांगा जा० याधी २० कुटुम्ब युनया श्री
शांति विंवं का० तपा श्री लोम सुन्दर सूरि - - - ।

(754)

सं० १६७७ वर्षे ज्ञान्य तृतीया दिने शनि रोहिणी जंमि मेटका नगर आन्तक्य साः

(१८२)

छापा ज्ञा० सरूपदे नाम्न्या श्री मुनि सुत्रत विंशं कारितं प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री विजय-
सेन सूरेश्वर पह प्रभाकर जिहांगीर महातपा विरुद्द विख्यात युग प्रधान समान
सकल सुविहित सूरि सभा शृंगार भट्टारक श्री ५ श्री विजय देव सूरि राजेंद्रैः ।

श्री वासुपूज्यजी का मंदिर ।

(755)

सं० १५३२ वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ बुध प्राग्वाट ज्ञा० श्री० आसधर ज्ञार्या गागी सुत
मदन दमा जिनदास गीवा पुत्र पौत्रादि सहितेन आत्म श्रेयार्थं श्री श्री शांतिनाथ
विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री वृहत्तपा गच्छै श्री जिनरत्न सूरिभिः ।

(755)

सं० १६८७ व० ज्येष्ठ सुदि १३ गुरी स० जसवंत ज्ञा० जसवंत दे पु० अचलदास
केन श्री विजय चिन्तामणि पार्श्वनाथ विंशं का० प्र० तपा श्री विजयदेव सूरिभिः ॥

श्री धर्मनाथजी का मंदिर ।

(757)

सं० १७५० वर्षे फाल्गुन सुदि १० बुधै ज० गुगलिया गोत्रे सा० चीरा प० सोहाकेन
श्री ज्ञादिनाथ विंशं स्व श्रेयसार्थे संहर गच्छे प्रतिष्ठा श्री शांति सूरिभिः ।

(758)

सं० १७६६ वर्षे माघ सुदि ६ रवी जकेश ज्ञा० टप गोत्रे सा० ललना ज्ञा० ललनादे
पुत्र लपना ज्ञार्या लाखणदे पुत्र दीणहा ज्ञार्या चीलहणदे पुत्र घडसी सकुटुम्बेन श्री

(१८३)

वासपूज्य विंवं कारापितं श्री संडेर गच्छे श्री यशोभद्र सूरि संताने प्र० श्री सुमति
सूरिभिः ।

(759)

सं० १५१५ वर्षे आषाढ षदि १ दिने श्री उकेश वंशे घुल्ल गोत्रे सा० सादूल
जाया सुहवादे पुत्र स० पासा आवकेण भार्या रूपदे पुत्र पूजा प्रमुख परिवार युतेन
श्रीशांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरिभिः ।

(760)

सं० १५१७ वर्षे माह सुदि १० सोमे सोनी गोत्रे सा० घन्ना पुत्र सा० हिमपाल
पुत्राभ्यां सा० देवराज खिमराजाभ्यां स्वपितृ पुण्यार्थं श्री श्रेयांस विंवं कारित प्रति-
ष्ठित तपागच्छ महारक श्री हेम हंस पदे श्री हेम समुद्र सूरिभिः ।

(761)

सं० १५१७ वर्षे माघ सु० १३ रवौ श्रीमाल दो० शिवा भार्या हेली सुत दो० घाईया
केन सा० सलपू सु० दो० दासा संना कणोसी गांगा पौत्र कमल सीक भार्या चाढा दाया
प्र० कुटुंबयुतेन श्री शितल विंवं कारितं श्री मधूकरा खरतर - - - ।

(762)

सं० १५५६ वर्षे वैत्र सु० ७ सोम प्राग्वाठ ज्ञातीय सा० चां (?) दरा भार्या संलपणदे
पुत्र लोला सा० पीमा सा० पंतलदे - - - सकुटुम्बयुतेन आत्म पु० श्री चंद्रप्रज्ञ स्वामि
विंवं का० अंचल गच्छे श्री सिवांश सागर सूरि विद्यमाने रा० भाव वर्धन मणीना-
मुपदेशेन प्रतिष्ठित श्रीसंघेन - - - ।

(१६४)

(763)

सं० १५६८ वर्षे माघ सुदि ५ दिन श्री माल वंशे भांडिया गोत्रे सा० साहा पुत्र सा० भरहा सुत सा० नरपाल भा० नामल द्वे स्वपुण्यार्थं श्री श्री श्री श्रेयांस विंशं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिन हंस सूरिभिः खरतर गच्छे ।

(764)

सं० १५७२ वर्षे वैशाख सु० २ सोमवारे षट् षड गोत्रे सा० सा - र - - - श्रेयसे श्री आदिनाथ विंशं कारापितं श्री प्रभाकर गच्छे भट० पुण्यकीर्ति सूरि पद्वे भट्टा० श्री लक्ष्मीसागर सूरि प्रतिष्ठितं ।

(765)

सं० १५८१ वर्षे श्री विक्रम नगरे जकेश वंशे वादि-रा गोत्रे सा० तेमंजउ सा० जीवात्त धावकेण भार्या नीवदे पुत्र जेवा काजी तालहण पंचायण भारमल सांदा नरसिंह सहितेन श्री श्रेयांस विंशं कारित - - ।

(766)

सं० १८८३ माघ व सु० ५ - - पार्श्वनाथ विंशं श्री विजय जिनैन्द्र सूरि - - ।

श्री आदिश्वरजी का नवा मंदिर ।

(767)

सं० १५०० वर्षे फा० अ० ३ बुधे । जोग वंगे बहरा हीरा भा० हीरादे पु० य० यत्ता

(१६५)

भा० बेंतलदे पु० व० हिवति पितृ श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवं कारितं श्री खरतर गच्छे
श्री जिनभद्र सूरि श्री जिन सागर सूरिभिः प्रतिष्ठिता ॥

(768)

सं० १५२७ वर्षे वैशाख वदि ६ शुक्र श्री माल ज्ञातीय पितामह वीरा पितामही वीरादे
सुत पितृ ढाहा मातृ जासू श्रेयोर्थं सुत राजा भोज ठाकुर सी एतै श्री विमलनाथ
मुख्य चतुविंशति पदः कारितः श्री पूणिमा पक्षे श्री साधुरत्न सूरि पद्वे श्री साधु सुंदर
सूरीणामुपदेशेन प्रति० विधिना श्री संघेन आंबरणि वास्तव्यः ।

(769)

संवत् १५७९ वर्षे माघ सुदि १३ दिने बुध वासरे स्तम्भ तीर्थ धासी जकेश ज्ञातीय
सा० पातल भा० पातलदे पुत्र सा जइताभार्या फते पुत्र सा० सीहा सहिजा भा० गुरी (?)
पुत्र सा० पडालिक भा० कमला पुत्र सा० जीराकेन भा० पुनी पितृव्य सा० सीमा पापा
विजा कुटुंब युतेन पितृ वचनात् स्वसंतान श्रेयोर्थे श्री सुमतिनाथ विंवं कारितं प्रति०
तपागच्छे श्री सोम सुन्दर सूरि संताने श्री सुमति साधु सू० पद्वे श्री हेम विमल
सूरिभिः महोपाध्याय श्री जनंत हंस गणि प्र० परिवार परिवृत्तौ ।

(770)

संवत् १६११ वर्षे बृहत खरतर गच्छे श्री जिन माणिक्यसूरि विजय राज्ये श्री माल
ज्ञातीय पापड गोत्रे ठाकुर रावण तत्पुत्र उणगढमल तट्टार्या नपणी तत्पुत्र जीयराजेन
श्री पार्श्वनाथ परिग्रह कारापितं - - धर्म सुंदर गणिना प्रतिष्ठितं शुभं भवतु ।

(१८६)

(771)

सं० १६७७ ज्येष्ठ वदि ५ गुरी ओसवाल ज्ञातीय गणधर चोपड़ा गोत्रीय सं० नामा
भार्या नयणादे पुत्र संग्राम भार्या तोली पु० माला भार्या मालहणदे पु० देका भा० देवलदे
पु० कचरा भार्या कडडमदे चतुरंगदे पुत्र अमरसी भार्या अमरादे पुत्र रत्नसेन श्री
अर्बुदाचल श्री विमलाचलादि प्रधान तीर्थ यात्रादि सद्गुण कर्म करण सम्प्राप्त
संधपति तिलकेन श्री आस करणेन पितृव्य चांपसी भ्रातृ अमीपाल कपूरचंद स्वपुत्र
ऋषभदास सूरदास भ्रातृव्य गरीबदास प्रमुख सस्त्रीक परिवारेण संपरूप जी कारितं
शत्रुजयाष्टमोद्धारमध्य स्वयं कारितं भवर विहार शृंगार हार श्री आदिश्वर विवं
कारितं पितामह वचनेन प्रपितामह पुत्र मेधा कोष्ठा रताना समुख पूर्वज नाम्ना
प्रतिष्ठितं श्री वृहत्स्वरतर गच्छाधीश्वर साधूपद्रववारक प्रतिवोधित साहि श्रीमदक-
वर प्रदत्त युगप्रधान पद धारक श्रीजिन अन्द्र सूरि जहांगीर साहि प्रदत्त युगप्रधान
पदधारक श्री जिन सिद्ध सूरि पहू पूर्वाचल सहस्र करावतार प्रतिष्ठित श्री शत्रुंजया-
ष्टमोद्धार श्री ज्ञाणवट नगर श्री शांतिनाथादि विवं प्रतिष्ठा समयनि—रत्सुधार श्री
पार्श्व प्रतिहार सकल महारक चक्रवर्ति श्री जिनराज सूरि शिरः शृंगार सार मुकुटो-
पमान प्रधानैः ।

(772)

सं० १६०० व० द्वि० वै० तिष्ठ ८ गुरी गोलकुंडा वा० सा० मेधा भा० मीहणदे सुत
सा० नानजी नाम्ना श्री मुनि सुब्रह्म विवं धार० प्रतिष्ठितं तपाधिपति परम गुरु महारक
श्री विजय केन सूरि पहाडद्वार पतिस्वाहि श्री जहांगीर प्रदत्त महातप विरुध धारि श्री
विश्वदेव गुरिभिः ।

(१८७)

चिंतामणि पार्श्वनाथजीका मंदिर ।

(७७३)

सं० १६६६ वर्ष माघ सुदि ५ शुक्रवारे महाराजा धिराज महाराज श्री सूर्य सिंह षडय राज्ये श्री उपकेशि ज्ञातीय लोढा गोत्रे स० टाहा तत्पुत्र स० राय मल्ल भार्या रंगादे तत्पुत्र स० लापाकेन भार्या लाडिमदे पुत्र ॥ वस्तपाल सहितेन श्री पार्श्वनाथ विंवां कारित प्रतिष्ठित श्रीमत् श्रीकृहत्स्वरतर गच्छे श्री जाद्वपक्षीय श्री जिन सिंह सूरि तत्पहोदयाद्रि मार्तण्ड श्री जिन चंद्र सूरिभिः ॥ शुभंभवतु ॥

पंचतीर्थियों पर ।

(७७४)

सं० १७७१ वर्षे माघ सु० १३ बुध दिने ऊकेश वंशे वापणा गोत्रे सा० सोहात सु० दाद सा० -- ण पितृ -- निमित्तं श्री शांतिनाथ विंवां का० प्र० उगुगच्छे श्री देव सुभ सूरिभिः ।

(७७५)

सं० १५१० जैष्ठ सु० ३ दिने प्राग्घाट पोपलिया दानिया हीम सा० श्रीरी पुत्र सा० हुंगर झातृ सा० स्वेतसि लहसा सुमरदे धारवन्ती भार्या जामुदि जल जातं यमादि कुहुन्व सुतेन धी मुनि सुभ्रत ।? विंवां का० प्र० लपा सो सोमसुन्दर सूरि श्री मुनिमन्दर सूरि पहे श्री रत्नशेखर सूरिभिः ।

(१८८)

(776)

सं० १५२६ वर्षे माघ वदि ५ रवौ ज्जकेश ज्ञातीय श्री दणवट गोत्रे सा० भीम भा०
भरमादे पु० - - - दि कुटुंब युतेन श्री कुंचुनाथ विंवं का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री
प्रज्ञ शेखर सूरि पहे श्री पद्मानन्द सूरिभिः ।

(777)

सं० १५३२ जैष्ठ सुदि १३ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० मही श्री भा० राणी सुत हीर
भा० भरमी नाम्न्या स्व श्रेयार्थं श्री सुविधिनाथ विंवं का० प्र० तपा श्री रत्न शेखर
सूरि पहाळकरण श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(778)

सं० १५४७ वर्षे वैशाख सुदि २ सोमे श्री काण्टा - - - भ० श्री सोम कीर्ति आ०
श्री विमलसेन नारसिंह ज्ञातीय थोरठेच गोत्रे सा० पेईया भा० खेइ पुत्र सा० भीमा
जा० प्रटी श्री आदि - - कारापितं नित्यं प्रणमसि ।

(779)

सं० १५५२ वर्षे माघ सु० ५ प्रा० ज्ञा० सा० पुंजा भार्या रमक पुत्र - सोमकेन भा०
गौरी पुत्र सा० हर्षादि कुटुंब्य युतेन श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे
श्री सोमसुन्दर सूरिभिः श्री इन्द्रनन्दि सूरि श्री कमल कलस सूरिभिः ।

(780)

सं० १६५६ वर्षे वैशाख मासे सित ३ दिने रविवारे ज्जकेश वंशे लोढा गोत्र संबधी
टाहा भार्या तेजलदे पुत्र रा० रायमल्ल भार्या रंगदे पुत्र सं० जयवन्त भीमराज तयो

(१६६)

भृंगिनी सुश्राविका वीरा नाम्न्या स्वश्रेयसे श्री अजित नाथ विंवं कारित प्रतिष्ठित
श्री चतुर्विंशति जिन विंवं प्रतिष्ठित श्री बृहत्खरतर गच्छे श्री जिन देव सूरि तरुणं
श्री जिनहंस सूरि तरुणालङ्कार विजयमान श्रीजिनचंद्र सूरिभि सकल संघेन पूज्यमान
आचन्द्रार्कं नन्दतात् शुभं भवतु ॥

कडलाजी का मंदिर ।

(781)

संवत् १६८७ वर्षे माघ शुदि १० सोमे सव हरषा भा० मीरा दे तत् पु० संघे
वत भा० जसवंत दे तत्पुत्र सं० अचलदाससं० शामकरण कारितं प्रतिष्ठितं
महारिक श्री विजय चंद्र सूरिभिः ।

सहावीरजी का मंदिर ।

(782)

सं० १६५३ वर्षे वै० शु० ४ बुधे श्री शांतिनाथ विंवं गादरी
भा० हर्षमदे पु० सं० हांसा भा० लाडमदे पु० पदसची कारितं
श्री हीर विजय सूरि पदे श्री विजयसेन सूरिभिः ॥ पं० विनय
श्री रस्तु ॥

(783)

॥ ॐ ॥ संवत् १६८६ वर्षे वैशाख सु० ८ सहाराज
श्री मेहता नगर वास्तव्य लोचवाल ज्ञातीय सुराणा

(१६०)

र्मणादि सपरिवार - श्री सुमतिनाथ विं वं कारित प्रतिष्ठित तथा गच्छाधिराज महारक
श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठिताचार्य श्री श्री श्री श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख
परिकर परिवृतैः ॥

(784)

संवत् १६७७ वर्षे वैशाख मासे अक्षय तृतीया दिवसे श्री मेढता वास्तव्य ऊ० ज्ञा०
समदडिआ गोत्रीय सा० माना मा० महिमादे पुत्र सा० रामाकेन भ्रातृ राय संगच्छात
भा० केशरदे पुत्र जईतसी लषमोदास प्रमुख कुटुंब युतेन श्री मुनि सुव्रत विं वं का०
प्र० तथा गच्छे महारक श्री पं श्री विजय सेन सूरि पट्टालङ्कार भ० श्री विजय देव
सूरि सिंहैः ।

(715)

सं० १६७७ ज्येष्ठ बदि ५ गुरौ श्री ओसलवाल ज्ञातीय गणधर चौपड़ा गोत्रीय स०
कचरा भार्या कडडिमदे चतुरगदे पुत्र स० अमरसी मा० अमराटे पुत्ररत्न स० अमी-
पालेन पितृव्य चांपसी वृद्ध भ्रातृ स० आसकरण लघु भ्रातृ कपूरचन्द स्वभार्या अपूर
वदे पु० गरीबदासादि परिवारेण श्री अजितनाथ वि० का० प्र० वृ० खरतर गच्छा-
धीश्वर श्री जिनराज सूरि सूरिचक्रवर्त्ति ॥

(786)

पह प्रभाकरै श्री अकथर साहि प्रदत्त युग प्रधान पद प्रवरैः प्रति वर्षापादीया
प्टाहिकादि पामोसिका अमारि प्रवर्त्तकैः श्री-तं तीर्थोदधि भीनादि जीव रक्षकैः श्री
शत्रुंजयादि तीर्थकर मोचकैः । सर्वत्र गोरक्षा कारकैः पंचनदी पीर साधकैः युग प्रधान
श्री जिन चन्द्र सूरिभिः आचार्य श्री जिन सिंह सूरि श्री समय राजोपाध्याय ॥ वा०
हंस प्रमोद वा० समय सुन्दर वा० पुण्य प्रधानादि साधु युतैः ।

संवत् १६७७ ज्येष्ठ वदि ५ गुरुवारे पातसाहि श्री जिहांगीर विजय राज्ये साहियादा
साहिजहां राज्ये ओसवाल ज्ञातीय गणधरचोपड़ा गोत्रीय स० नामा भार्या नयणादे
पुत्र संग्राम भा० तोलो पु० माला भा० मालहणदे पु० देका भा० देवलदे पु० कचरा भा०
कजहिमदे पु० अमरसी—भा० अमरादे पुत्ररत्न संप्राप्त श्री अर्बुदाचल विमलाचल
संघपति तिलक कारित युग प्रधान श्री जिन सिंह सूरि पह नंदि महोत्सव विविध
धर्म कर्तव्य विधायक स० आस करणेन पितृव्य चांपसी भातृ अमीपाल कपूरचन्द्र
स्वभार्या अजाइथदे पु० ऋषभदास सूर दास भ्रातृव्य गरीवदासादि सार परिवारेण
श्रेयोर्थ स्वयं कारित नर्मणीमय विहार शृंगारक श्री शांतिनाथ त्रिवं कारित प्रति-
ष्ठितं श्री महावीरदेव - - - परपरायत श्री बृहत्खरतर गच्छाधिप श्रीजिन ऋद्र सूरि
संतानीय प्रतिशोधित साहि श्री मदकवर प्रदत्त युग प्रधान पदवीधर श्री जिन चंद्र
सूरि विहित कवित काश्मीर विहार वार सिंदूर गज्जणा विविध देशामारि प्रवर्तक
जहांगीर साहि प्रदत्त युग प्रधान पद साधक श्रीजिनसिंह सूरि पद्मोत्तंस उग्र श्री
अम्बिका वर प्रतिष्ठित श्री शत्रुंजयाष्ठमोद्वार प्रदर्शित भाण बहमध्य प्रतिष्ठित श्री
पार्श्व प्रतिमा पीयूष वर्पण प्रभाव बोहित्य वंशमण्डन धर्मसी धारउदे नन्दन भट्टारक
चक्रवर्ति श्री जनराज सूरि दिन करः ॥ आचार्य श्री जिन गानर नृरि प्रभृति यति
राजैः ॥ सुत्रधार सुजा । प्रतिष्ठित भट्टारक प्रभु श्री जिन राज नृरि पुरदरे. या मयता
नगर मध्ये ।

ओसियां ।

ओसियां एक प्राचीन ऐतिहासिक स्थान है, विशेषकर ओसवालोंके लिये यह तीर्थ रूप है । यहां पर बहुतसे प्राचीन कीर्त्ति चिन्ह विद्यमान है । शासन नायक श्री महावीर स्वामीके मन्दिरका कुछ दिनसे जीर्णोद्धार का कार्य चल रहा है । सचियाय देवी का मन्दिर भी बहुत जीर्ण हो गया है और भी बहुतसे प्राचीन मंदिर इधर उधर टूटे फूटे पड़े हैं और समिपमें एक छोटी डूंगरी पर मुनियोंके अनशनके स्थान पर चरण प्रतिष्ठित है ।

मंदिर प्रशस्ति ।

(788)

॥ ॐ ॥ जयति जनन मृत्यु व्याधि सम्बन्ध शून्यः परम पुरुष संज्ञः सर्ववित्सर्व
दर्शी । ससुर मनुज राजामीश्वरीनीश्वरोपि, प्रणिहित मतिभिर्द्यः स्मर्यते
योगिवर्ष्यैः ॥ १ ॥ मिथ्या ज्ञान घनान्धकार निकरावष्टब्ध सद्बोध दृग्दृष्ट्वा विष्टप-
मुद्भवद् घनवृणः प्राणज्ञानां सर्वदा कृत्वा नीति मरीचिभिः कृत युगस्यादी सहस्रां
शुद्धप्रातः प्रास्ततमास्तनोतु भवतां मद्रंस नाजेः सुतः ॥ २ ॥ यो गोर्वाण सर्व-भिद
भिहितां शक्ति मश्रुद्या नः क्रूरः क्रोडा चिकीर्ष्या कृत - - - - वृद्ध - - - - मुष्टया
यस्याहसो सौ मृति मित डयता नामस्त्वं यतो भूत्पुण्यैः सत्पुण्य वृद्धिं धितरनु भगवा-
न्धस्त निहार्य नूनः ॥ ३ ॥ स्वामिन्निकं स्वन्निर्वासालय घन समयोत्माक माहं - - - -
नरयावसाने - - - उत महती काचिदन्याय देपा इत्युद्भ्रान्तगत्मा हरि मति भयतः
मन्त्र जेगुर नीचैर्द्यन्पादांगुष्ठक्रोद्याकनक नगपती प्रेरिते द्यांत्सवीरः ॥ ४ ॥ श्री
मानासीप्रभुरिह भुवि - - - एक वीर रत्रैलोक्येयं प्रकृत महिमा राम नागासयेन चक्रे

.....तायेकुमतेर्मर्मागपि । मि..... । वंसतोपिहि मण्डलेधवान सन्मणीनां
भवतीहकाचता ॥२०॥ यदि वादि.....संज्ञिता.....
जाकठावपि ॥ २१ ॥ तत्र ब्रह्म वी स्वर्गा सम्प्राप्ते तन्महिलया । दुर्गया प्रतिमा कारि स
..... त्रधामनि ॥ २२ ॥ आम्नकात्सर्वदे व्यातु.....यत्.....देवदत्त
..... मिवागमे ॥प्रति दिनमिति
या कार्थं प्रति विदधते यद्वदधिकं ॥ द्यैर्द्यवन्तो पिये त्यन्तं भीरवः परलोकतः । भोगि
..... हिको च दूरगाः ॥ तिबला
वतन्तभिः पुन्रयं भूमण्डनो मण्डपः । पूर्वस्यां ककुभि त्रिभारा
विकलः सन्गोष्ठिकानुजिन्दक मतदुव्य
कृतांचनेन जिनदेव धाम तत्कारितं पुनरमुष्य भूषणं । मत्स दृग्दृश्यते
द्वेजपत्री भूजयन्त ॥ संवत्सर दशशत्यामधिक्यायां यत्सरे स्त्रयो दशभिः
पात्सुन शुक्र तृतीया जाड्य पदाजासं० १०१३
र्यांम ॥ पूजापत्र्यं दधदपि मना गद्वमालो पयोमी शंखं चक्रं स्फुटमपिव
कराशः पादा भुवन गुन्न्ति ॥ भावदूगीर्गूढ यन्निर्गुं
भर विन मन्मूर्तिर्द्विर्द्विते शोचायन्मेर्मन्मन्निनिं ति युते..... ।
वधिसुखच्छेदश्री मद्र दशा पूच नित्यमस्तु ॥ जय
भ्रमंसांसाच कीर्तन्नि गीति वपुः सदा ॥ यस्मादस्मिन्निजम्मन्ववपि पति
वधि श्री सदा प्रकृत सुतारनो सूधधारन्व
तिर्गि विज जिद ।

(१६५)

तौरण पर ।

(789)

सं० १०३५ आषाढ सुदि १० आदित्य वारे स्वाति नक्षत्रे श्री तौरणं प्रतिष्ठापिमिति

स्तम्भ पर ।

(790)

सं० १२३१ मार्ग सुदि ५ वांधल पुत्र यशोधर वोहिव्य मूला देवि - - - ।

२४ माताके पट्ट पर ।

(791)

सं० १२५६ कार्तिक सु० १२ सुचेत गुत्री सहदिग पूत्रैः शशु दरदी सुखदी चल्ल सय्य
प्रसादै चतुर्विंशति जिनः मातृ पहिका निज मातृ जन्हव श्रेयोर्थं कारिता श्री कर्क
सूरिभिः प्रतिष्ठिता ।

मूर्तियों पर ।

(792)

सं० १०८८ फाल्गुन यदि ४ श्री नागेन्द्र गच्छे श्री वासुदेव नूरि नय नानतिहृद्
धैयार्थं राखदीव कारिता ।

(793)

सं० १२३४ वैशाख सुदि १४ मंगल । नागदेव वर्षा शानपट्ट घनाय शोधं । त्रार्था
यशोदेव्या त्रामर्घ्ये पीथं पदे ।

(१९६)

(794)

सं० १२३४ वैशाख शुक्ल १४ मंगलवार सावर्षदेव सुत नागदेव तत्सुतेन पारो पारै
जिन तुत्रित सादेव मणि कुतेन ।

(795)

सं० १४३८ वर्षे आषाढ सुदि ९ शुक्रै मोढ वास्तव्य सा० डा-भार्या यत्सारदे भार्या
सूमलदे सुत साहूण सामल पितृ मातृ श्रेयार्थं ठ० महिपालेन श्री पार्श्वनाथ विवं कारितं
आगम गच्छे, श्री जय तिलक सूरि उपदेशेन ।

(796)

सं० १४९२ वर्षे वैशाख वदि ५ श्री कोरंटकीय गच्छे सा० ३० शंष बालेचा गोत्रे सा०
वास माल भार्या लक्ष्मीदे पुत्र ३ प्रता मिहा सूर्याभां पितृ श्रेयसे श्री संभवनाथ विवं
कारितं पुताकेन का० प्र० श्री सावदेव सूरिभिः ।

(797)

सं० १५१२ वर्षे फाल्गुन सुदि ८ शनि श्री उसन्न से० भार्या माणिकदे सुत रणाग
भार्यायां ४० पिधा भार्या चां सुतयो याते जूखाण श्री कुंधुनाथ विवं कारितं प्रतिष्ठित
श्री वृहद् तपापंकज श्री विजय तिलक सूरि पहे श्री विजय धर्म सारे श्री भूयात् ॥

(798)

सं० १५३४ वर्षे माघ सुदि ५ दिने सीढ ज्ञातीय मंत्रि देव वकु सुत मंत्रि सह साइ-
ताभ्यां श्री धर्मनाथ विवं पित्रो श्रेयसे प्रतिष्ठित श्री विद्याधर गच्छे श्री हेम प्रभु
सूरि मंडलिराभ्यां कृतः ।

(१९७)

(799)

सं० १५४६ वर्षे माघ सु० ५ गुरौ गंधार वास्तव्य श्री श्री माल ज्ञातीय सा० शिवा-
भार्या माणिक्यदे नाम्नी तयो सुत सा० लोजकेन भा० भर्मादे धर्मादे नाम्नी युतेन
स्वमात्री श्रेयसे श्री विमल नाथ विं वं कारितं प्रतिष्ठा श्री वृहत् तपा पक्षे श्री उदय
सागर सूरिभिः ।

(500)

सं० १६१२ वैशाख सुदि ५ दिने श्री छालूणं करापितं ।

(501)

सं० १६८३ ज्येष्ठ सु० ३ कडुया मति गच्छे भादेवा पुत्री राजवाई केन श्री सम्भव
विं वं सा० तेजपालेन प्र० ।

(502)

संवत् १७५६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ । रविवार शुभ दिने श्री वृहत् खरतर गच्छे
भहारक श्री जिन राज सूरि । गणे शिष्य - - - ।

नीवमें प्राप्त मूर्तिके टूटे चरण चौकि पर ।

(503)

ॐ संवत् ११०० मार्गशिर सुदि ६ - - - - - सालीन्द्र - - - - - देव कर्म
श्रेयोर्थं कारित जिनैत्रिकम् - - - ।

(१६६)

श्री सचियाय माताका मंदिर ।

(804)

सं० १२३६ कार्तिक सुदि १ बुधवारे अद्यह श्री केरुहण देव महाराज राज्ये तत्पुत्र
श्री कुंमर सिंहे सिंह विक्रमे श्री माडव्य पुराधिपती - - - दक्षिकान्वीय कीर्ति पात
राज्य वाहके तद्भुक्तौ श्री उपकेशीय श्री सञ्जिका देवि देव गृहे श्री राजसेवक गुहिलंगो
क्रय विषयी धारा वर्षेण श्री क सञ्चिका देवि भक्ति परेण श्री सञ्चिका देवि गोष्ठी-
कान् भणित्वा तत्समक्ष तद्भयं व्यवस्था लिखापिता । यथा । श्री सञ्चिका देवि द्वारं
भोजकैः प्रहरमेकं यावदुडुदाद्य द्वार स्थितम् स्थातव्यं । भोजक पुरुष प्रमाणं द्वादश
वर्षीयोत्परः । तथा गोष्ठीकैः श्री सञ्चिका देवि कोष्ठागारात् मुग मा ।०॥ घृत कर्ष १
भोजकैभ्यो दिनं प्रति दातव्यः ॥

(805)

संवत् १२३४ चैत्र सुदि १० गुरौ घोर घडांशु गोत्रे साधु बहुदा सुत साधु
जालहण तस्य भार्या सूरुवं तयोः सुतेन साधु मारुहा दोहित्रेण साधु गयपालेन-
सञ्चिको देवि प्रासाद कर्मणि चंडिका शीतला श्री सञ्चिका देवि क्षेमं करी श्री क्षेत्र
पाल प्रतिमाभिः सहितं जंघा घरं आत्म श्रेयार्थं कारितं ।

(806)

संवत् १२४५ फाल्गुन सुदि ५ अद्यह श्री महावीर रथशाला निमित्तं पालिहया धीय
देव चन्द्र घघू यशोधर भार्या सम्पूर्ण श्राविकया आत्म श्रेयार्थं आत्मीय स्वजन वर्गा
समन्तेन स्वगृह दत्तं ।

(१६६)

(807)

सं० १२४५ फाल्गुन सुदि ५ अचोह श्री महावीर रथशाला निमित्तं - - - - -
पालिहया धीन देव चंड बधू यशधर भार्या सम्पूर्ण श्राविकया आत्म श्रेयार्थं समस्त
गौण्डि प्रत्यक्षं च आत्मीया स्वजन वर्गं समतेन आत्मीय गृहं दत्तं ।

हूंगरीके चरण पर ।

(808)

सं० १२४६ माघ वदि १५ शनिवार दिने श्री मज्जिनभद्रोप्राध्याय शिष्यैः श्री कनक
प्रभ महत्तर मिश्र कायोत्सर्गः कृतः ।

पाली ।

यह भी मारवाड़का एक प्राचीन स्थान है । यहांके लैख पण्डित रामानन्दजीने
संग्रह किया है ।

नौलखा मंदिर ।

(813)

संवत् ११४४ वैशाख वदि ७ पण्डितजी चैत्ये वीर ।

(814)

संवत् ११४४ ज्येष्ठ वदि ४ शीघरेट - - - ।

(२००)

(811)

संवत् ११४४ माघ सु० ११ वीर उल्लदेव कुलिकायां पुल्ले भाजिताभ्यां सांस्याप्त
कृतः श्री ब्राह्मी गच्छां प्रदेवाचार्येन प्रतिष्ठितः ।

(812)

संवत् ११५१ आसाढ सुदि ८ गुरी - - - ।

(813)

॥ ॐ ॥ संवत् ११७८ फाल्गुन सुदि ११ शनी श्री पल्लिका श्री वीरनाथ महा चैत्ये
श्री मदुद्योतनाचार्य महेश्वराचार्यामनाय देवाचार्य गच्छे साहार सुत धार सधण देवौ
सयोर्मस्य धनदेव सुत देवचन्द्र पारस सुत हरिचन्द्राभ्यां देव चन्द्र भार्या वसुन्धरिस्तस्या
निमित्तं श्री ऋषभ नाथ प्रथम तीर्थंकर विंशं कारितं गोत्रार्थं च मंगलं महावीरः ।

(814)

ॐ । संवत् १२०१ ज्येष्ठ वदि ६ रवौ श्री पल्लिकायां श्री महावीर चैत्ये महामात्य
श्री आनन्द सुत महामान्य श्री पृथ्वीपालेनात्मश्रेयोर्थं जिन युगलं प्रदत्तम् श्री अनन्त
नाथ देवस्य ।

(815)

ॐ । संवत् १२०१ ज्येष्ठ वदि ६ रवौ श्री पल्लिकायां श्री महावीर चैत्ये महामान्य
श्री आनन्द सुत महामान्य श्री पृथ्वी पालेनात्म श्रेयोर्थं जिन युगलं प्रदत्तम् श्री विमल
नाथ देवस्य ।

(२०९)

(816)

सं० १५ - - - सुदि ३ सा - - - - का० सा० मद्या - - - स्व श्रेयसे श्री कुंथनाथ
विं का० प्र० श्री भिन्नमाल गच्छे ।

(817)

संवत् १५०६ वर्षे भाद्र सुदि ५ शबौ - - - ।

(818)

सं० १५१३ माघ सुदि ३ दिने उक्तेष सा० सदा मा० बालहृदे पुत्र सा० क्षेमाकेन मा०
सेलखू मातृ हेमा कान्हर मल प्रमुख कुटुंब युतेन श्री अजित नाथ विं का० प्र० तपा
श्री रत्न शेखर सूरिभिः ।

(819)

सं० १५२६ वर्षे माह सु० ५ रवौ ज० भोगर गो० सा० राणा मा० रत्नादे पु० चाहड़
मा० रङ्गे पु० खरहथ खादा खात खना धितृ श्री नेमिनाथ विं कारि० श्री नागेन्द्र
गच्छे प्रतिष्ठित श्री सोम रत्न सूरिभिः ।

(820)

संवत् १५३२ वर्षे चैत्र सुदि ३ गुरु ज० गुगलिया गोत्र सा० खीमा पुत्र काजा मा०
रत्नादे पु० वरसा नरसा घादा भार्या पुत्र सहितेन स्व श्रेयसे श्री संढेर गच्छे श्री
जिशी भद्र सूरि संताने श्री चंद्र प्रभ स्वामि विं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चालि नू - - ।

(821)

सं० १५३४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० श्री ज्जेश वंशे गणधर गोत्रे साधु पाण्डे भार्या
उल्लनादे पुत्र सा० भोजा सुभात्रकेण मातृ सा० पदा तत्पुत्र सा० कोका प्रमुख परिवार

(२०२)

सहितेन स पुण्यार्थं श्री संभवनाथ विवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन
भद्र सूरि पहे श्री जिन चन्द्र सूरिभिः ॥

(822)

सं० १५३४ वर्षे फागुन शु० २ गुरौ ज० चूदालिया गोत्रे च ज० सा० सिवा भा०
सहागदे पुत्र सा० देवाकेन भार्या दाडिमदे पुत्र आसा भार्या जमादे इत्यादि कुटुंब
युतेन स्व श्रेयसे श्री संभवनाथ विवं का० प्रति० श्री सूरिभिः श्री वीरमपुरे ।

(823)

संवत् १५३६ वर्षे फाल्गुन सुदि ३ रवौ फीफलिया गोत्रे सा० मूला पुत्र देवदत्त
भार्या साह पुत्र सा० बरु श्रावकेण भार्या नामल दे परिवार युतेन श्री आदिनाथ विवं
श्रेयसे कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन भद्र सूरि पहे श्री जिनचन्द्र सूरि श्री जिन
समुद्र सूरि प्रतिष्ठितं ।

(824)

संवत् १५५५ वर्षे जेष्ठ वादि १ शुक्रे उकेस न्यातीय काकरेचा गोत्रे साह जारम
पुः जदा चांपा जदा भा० रूपी पु० वाला खंतावाला भा० बहरङ्गदे सकुटुंब श्रे० उद
पूर्व पु० श्री चंद्र प्रभ मूलनायक चतुर्विंशति जिनानां विवं कारितं प्रतिष्ठित श्री
संडेर गच्छे श्री जसो भद्र सूरि सन्ताने श्री शांति सूरिभिः ।

(825)

संवत् १६६६ वर्षे वैशाख सुदि ८ शनौ महाराजाधिराज महाराज श्री गजसिंह
बिजय मान राज्ये युवराज कुमार श्री अमर सिंह राजिते तत्प्रसाद पात्र चाहमान
वशावसन्त श्री जसवन्त सुत श्री जगन्नाथ शासने श्री पाली नगर वास्तव्य श्री श्री श्री

माल ज्ञातीय सा० मोटिल भा० सोभाग्यदे पुत्र रत्न सा० हुंगर भाखर नाम भ्रातृ
 दूयेन सा० हुंगर भा० नाथदे पुत्र सा० रूपा रायसिंह रत्न सा० पीत्र सा० टीला सा०
 भाखर भा० भावलदे पुत्र ईसर जरोल प्रमुख कुटुंब युतेन स्व द्रव्य कारित नवलखारुय
 प्रसादीयारि श्री पार्श्वनाथ विंवं सपरिकरा स्व श्रेयसे कारितं प्रतिष्ठापितं च स्व प्रति-
 ष्ठायां प्रतिष्ठितं च श्रीमदकबर सुरत्राण प्रदत्त जगद्गुरु विरुद्धारक तपा गच्छाधि-
 राज महारक श्री हीर विजय सूरि पट्ट प्रभाकर महारक श्री विजयसेन सूरि पट्टालंकार
 महारक श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठाचार्य श्री विजय सिंह प्रमुख परिकर
 परिकरितेः ओं श्री पल्लीकीये द्योतनाचार्य गच्छे ब्रह्मी भादा मादा की तयोः श्रेयार्थ
 एवमण सुत देशेन रिखभनाथ प्रतिमा श्री वीरनाथ महानैस्थे देवकुलिकायां कारित ॥

(१०४)

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे अति पुण्य योगे भाद्रपद द्वितीये श्री
 मेहता नगर वास्तव्य सूत्र धार कुधरण पुत्र सूत्र० हुंगर हटासा नामनि पुत्र तमा
 घोखा सुरताण ददा पुत्र नारायण हंसा पुत्र केनापति परिशर परिशरी मया मयी या
 महावीर विंवं कारित प्रतिष्ठापितं च श्री पाली वास्तव्य सा० दमर भागवत याचित
 प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं च महारक श्री विजय सेन सूरि पट्टालंकार महारक श्री विजय
 विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठाचार्य श्री विजय सिंह सूरिभिः ।

(१०५)

सं० १६८६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे पुण्य योगे भाद्रपद द्वितीये नगर वास्तव्य
 महाराज श्री गजसिंह शिल्लमान राजे शत्रुघ्न पुत्रराज कुमार या नामनि विरुद्धारक
 तामसाद पात्रं साहजान वशावन्त श्री लखनवाय नाथिन सा० विरुद्धारक सा० दमर भागवत
 शत्रुघ्न वास्तव्य सा० सा० श्री भाद्रपद सा० मोटिल भा० सोभाग्यदे पुत्र रत्न सा० हुंगर
 भाखर नामना भा० भावलदे पुत्र सा० हुंगर भाखर नाम भ्रातृ दूयेन स्व द्रव्य कारित नवलखारुय

१०५

(३०४)

सुपार्श्व विंश कारितं प्रतिष्ठापितं स्व प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितं पातशाह श्री मदकवर
शाह प्रदत्त जगद्गुरु विरुद धारक तप गच्छाधिपति प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सेन
सूरि ।

(828)

सं० १७०० वर्षे माघ सित द्वादश्यां बुधे श्री श्री योधपुर वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय
मुहंणोत्र गोत्रे जयराज भार्या मनोरथ दे पुत्र सुभा पु० ताराचन्द भाज राजादि
युतेन श्री शोतल पार्श्व वीर नेमी मूर्त्तिस्फूर्त्ति मत्कोशं विंशन्ति जिन विंश विराजित
दल दशकं चतुर्विंशति जिन कमल कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे भहारक श्री विजय
देव सूरि आचार्य श्री विजय सिंह निदेशात् उ० सप्तमे चंद्र गणिभिः ।

श्री गौड़ी पार्श्वनाथजीका मंदिर ।

मूलनायकजी पर ।

(829)

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख सुदि ९ राजाधिराज महाराज श्री गजसिंह विजय मान
रोज्ये मेड़ता नगर वास्तव्य - - - - हा वंशे कुहाड़ गोत्रे सा० हरषा भार्या मिरादे
पुत्र सा० असवंत केन स्व श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ विंश कारितं स्थापितं च । महाराणा
श्रीजगतसिंह विजय राज्ये श्री गोड़वाड़ देशे श्री विजयदेव सूरीश्वरोपदेशतः वीधरला ।
वास्तव्य समस्त संघेन । शिशरिराया उपरि निर्मापितेन विंशेन श्री० श्री प्रतिष्ठितं
तप गच्छाधिराज भहारक श्री मदकवर सुरत्राण प्रदत्त जगद्गुरु विरुद धारक भ० हीर
विजय सूरीश्वर पह प्रभाकर भहारक श्री विजय सेन सूरीश्वर पहालंकार भहारक
श्री विजय देव सूरिभिः स्वपद प्रतिष्ठाचार्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिकर
परिकरितैः ।

(२०५)

लोढारो वासका मंदिर ।

(830)

ॐ ह्रीं श्रीं नमः ॥ श्री पातिसाह पुण साहजी विजय राज्ये । संवत् १६८६ वर्षे
वैशाख सिंहाष्टमी शनिवासरे महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंह जी विजय
राज्ये श्री पालिका नगरे सोनिगरा श्री जगन्नाथ जी राज्ये ऊपकेस ज्ञातीय श्री श्री
माल चंडालेचा गोत्रे सा० गोटिल भार्या सोभागदे पुत्र सा० हुंगर मातृ सा-भापर --
नामभ्यां - हुंगर भार्या नाथलदे पुत्र रूपसी राई त्यघर भना भापर भार्या चाचलदे
पु० इसर आयेल रूपा - पु० टीला युतेन स्व श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवं कारापितं
प्रतिष्ठितं ॥ श्री चैत्र गच्छे शार्दूल शाखायां राज गच्छान्वये भ० श्री मानचन्द्र सूरी
तत्पते श्री रत्नचन्द्र सूरि वा० लिलक चंद्र मु० पति रूपचंद्र युतेन प्रतिष्ठा कृता स्व
श्रेयोर्थे श्री पालिका नगरे श्री नवलषा० प्रासादे जोर्णोद्धार कारापित मूल नायक श्री
पार्श्वनाथ प्रमुख चतुर्विंशति जिनानां विंवं प्रतिष्ठापितानि सुवर्णमय कलश इंडे रुप्य
सहस्र ५ द्रव्य व्यय कृते नाव बहु पुन्य उपार्जितं अन्य प्रतिष्ठा गुरजर देशे कृता श्री
पार्श्व गुरु गोत्र देवी श्री अम्बिका प्रसादात् सर्व कुटुम्ब वृद्धि भूयात् ॥

श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

(831)

संवत् ११४५ आषाढ सुदी ६ - - - ।

श्री सोमनाथका मंदिर ।

(832)

संवत् १२०६ द्वि० ज्येष्ठ यदि १ ज्येष्ठे श्री पालिकायां ग्रामे अणहित पाटकाचिष्टित

समस्त राजावलो विराजित परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर उमापति वर
लब्ध - - - - - निज विक्रमे रणांगन विनिर्जित शाकं भरी मूशल श्री मत्कुमार
पाल देव कल्याण विजय राज्ये - - - - - ।

नाडोल ।

मारवाड़के देसूरी जिलेके समीप यह स्थान भी बहुत प्राचीन है ।

श्री आदिनाथजी का मंदिर ।

(833)

ॐ संवत् १२१५ वैशाख सुदि १० भौमे वीसाडा स्थाने श्री महावीर चैत्ये समुदाय
सहितैः देवणाग नागड जोगड सुतैः देम्हाजधरण जसचन्द्र जसदेव जसधवल जसपालैः
श्री नेमिनाथ विंवं कारितं ॥ वृहद्गच्छीय श्री मद्देव सूरि शिष्येन पं० पद्मचन्द्र गणिना
प्रतिष्ठितं ॥

(834)

ॐ संवत् १२१५ वैशाख सुदि १० भौमे वीसाडा स्थाने श्री महावीर चैत्ये समुदाय
सहितैः देवणाग नागड जोगड सुतैः देम्हाजधरण जसचन्द्र जसदेव जसधवल जसपालैः
श्री शांतिनाथ विंवं कारितं ॥ प्रतिष्ठितं वृहद्गच्छीय श्री मन्मुनिचन्द्र सूरि शिष्य श्री
मद्देव सूरि विनेवेन पाणिनीय पं० पद्मचन्द्र गणिना । यावद्विंश चन्द्र खीस्यातां
घर्मोजिन प्रणीतोस्ति । तावज्जाया देव जिन युगलं वीर जिन भुवने ।

(२०७)

(835)

संवत् १४३२ वर्षे पोह सुदि-यत्रत जैता भार्या० कहु पुत्र नामसी भार्या कमालदे
पितृव्य निमित्तं श्री शांति नाथ विंश कारापित्तं प्रतिष्ठितं श्री नांवदेव सूरिभिः ॥

(836)

सं० १४८५ वै० शु० ३ बुधे प्राग्वाट श्री० समरसी सुत दो० धारा भा० सूहृददे सुत
दो महिपाल भा० मारुहणदे सुत दो० मूलाकेन पितृव्य दो० धर्मा भ्रातृ दो० माईआभयां
च दो० महिपा श्रेयसे श्री सुविधि विंश कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपागच्छेश श्री सोम सुदर
सूरिभिः ।

(837)

श्री चन्दा प्रभु विंश । सं० १६८६ प्रथमापाट वदि ५ शुक्रे राजाधिराज श्री गज
सिंह प्रदत्त सकल राज्य व्यापाराधिकारेण मं० जैसा सुत जयमल्ल जी नाम्ना श्री चन्द्र
प्रभु विंश कारितं प्रतिष्ठापितं स्वप्रतिष्ठायां श्री जालोर नगरे प्रतिष्ठितं च तपागच्छा-
धिराज भ० । श्री हरि विजय सेन सूरि पट्टालंकार भ० । श्री विजय सेन गृरि पट्टालंकार
पातशाहि जहांगीर प्रदत्त महातपा विरुद् धारक भ० श्री ५ श्री विजयदेय गृरिभिः च
पद प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिवार परिकरिः राणा श्री जगत
सिंह राज्ये नाहुल नगर राय विहारे श्री पद्म प्रभु विंश स्थापित ॥

(838)

संवत् १६८६ वर्षे प्रथमापाट व० ५ शुक्रे राजाधिराज गजसिंह जी राज्ये योधपा
नगर वास्तव्य मणोत्र जैसा सुतेन । जयमल्ल जी केन श्री शांतिनाथ विंश कारित

प्रतिष्ठापित स्व प्रतिष्ठाया प्रतिष्ठितं च श्री तपा गच्छेश श्री ५ श्री विजय देव सूरिनि
स्व पहालंकार आचार्य श्री ५ श्री विजय सिंह सूरि प्रमुखः स परिवारः ॥

ताम्र शासन ।*

ओं ॥ ओं नमः सर्वज्ञाय । दिसतु जिन कनिष्ठः कर्म बंध क्षयिष्ठः परिहृत मद मार
क्रोध लोभादि वारः । दुरित शिखरि सम्भ्यः स्वो वशीयं च सम्भ्य स्त्रिभुवन कृतसेवा श्री
महावीर देवः ॥१॥ अस्ति परम आजल निधि जगति तले चाहुमाण वंशोहि तत्रासोन
नडूले भूपः श्री लक्ष्मणादौ ॥२॥ तस्मात् वभूव पुत्रो राजा श्री सोहिया स्तदनु सूनुः । श्री
बलि राजो राजा विग्रह पालोनू च पितृव्यं ॥३॥ तस्यात्तनुजो भूपालः श्री महेन्द्र देवाख्यः ।
तज्जः श्री अणहिल्लो नृपति वरो भूत पृथुल तेजः ॥४॥ तत्सूनुः श्री बाल प्रसाद इत्यजनो
पार्थिव श्रेष्ठः । तद्भ्राताऽभूत् क्षितिपः सुभटः श्री जैद्र राजाख्यः ॥५॥ श्री पृथिवी
पालोऽभूत् तत्पुत्राः सौर्यवृत्ति शोभाढ्यः । तस्माद्भवत्भ्राता श्री जोजल्लो रणरसात्मा ॥६॥
तदेव राजो भूच्छ्रीमान् आशा राजः प्रताप वर निलयः । तत्पुत्राः क्षोणिपः श्री अरुहण देव
नामाभूत् ॥७॥ यस्य प्रताप प्तालं सकुल दिक् चक्र पृथुल विस्तारं । सिंचति सुदिताहित
गण ललना नयन सलिलौघैः ॥८॥ सोय महा क्षितिशः सारमिदं बुद्धिमान् चिन्तयत ।
इह संसार असार सर्व्वं जन्मादि जन्तूनां ॥९॥ यतः । गर्भं स्त्रि कुक्षिः मध्ये पल रुधिर
बसा मेदसा बद्ध पिण्डो मातु प्राणांतकारी प्रसवन समये प्राणिनां स्थान्नु जन्मा
घर्मादीनामवेत्ता भवतिहि नियतम् बाल भाव स्ततः स्यात् तारुण्यम् स्वल्प मात्र
स्वजन परिभव स्थानता वृद्ध भावः ॥१०॥ खद्योतोद्योत तुल्यः क्षणः मिह सुखदाः सम्पदो
दृष्ट नष्टः प्राणित्त्रं चंचलं स्याद्दलमुपरि यथा तोर त्रिन्दुर्नलिन्याः ज्ञात्त्रैमं स्व

* यह ताम्रपत्र प्रसिद्ध कर्नेल टड साहय यहांसे लेकर विलायतके रयल एशियाटिक सुसाइटीमें दान किया है ।

पित्रो स्पृहयनमरताम् चैहिकम् धर्मं क्रीर्त्ति देशान्तो राज पुत्रान् जन पद गणान्
 बोधयत्येव वोस्तु ॥११॥ सं० १२१८ धर्षे श्रावण सुदि १४ रवौ अस्मिन्नेव महा
 षतुर्दशी पर्वणी । स्नात्वा घृत पटे निवेश्य दहने दत्त्वाहुतीन् पुण्य कृन् मार्त्तण्डस्य
 तमः प्रपाटन पटोः सम्पूर्य्य चावञ्जलिं । त्रैलोक्यस्य प्रभुं चराचर गुरुं संस्नप्य
 पंचामृतैः ईशानं कनकान्न वस्त्र नदनैः सम्पूज्य त्रिप्रां गुरुं ॥१२॥ अनुत्तिल कुशाक्ष-
 तोदकः प्रगुणी भूता पसव्यकः पाणिः शासनमेनमयच्छत यावत् चंद्राकं भूपालं ॥१३॥
 श्री नड्डूल महास्थाने श्री संडेरक गच्छे श्री महावीर देशाय श्री नड्डूल तल पद शुल्क
 मंडपिकायां मासानुमासं धूप वेलाथं शासनेन द्र० ५ पंच प्रादात् अस्य देवरस्यनं
 भुंजानस्य अस्मद्वंशे जयिर्भवि भोक्तिर्भिरपरैश्च परिपंधाना न कार्या । यतः सामा-
 न्योयं धर्म सेतु नृपाणां काले काले पालनीयो भवद्भिः सर्वान एवं प्राथीनः
 पार्थिवेन्द भूयो भूयो याचते रामचन्द्रः ॥१४॥ तस्मात् । अस्मदन्वयजा भूपा प्रावी
 भूपतयश्च ये । तेषामहं करे लग्नः पालनीयं इदं सदा ॥१५॥ अस्मद्वंशे परीक्षीणे यः
 कश्चिन् नृपति भवेत् तस्याहं करे लग्नीस्मि शासनं न व्यतिक्रमेत् ॥१६॥ बहुभिर्व-
 सुधा भुक्ता राजकैः सगरादिभिः यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलं ॥१७॥
 पष्टि वर्षे सहस्राणि स्वर्गे तिष्ठति दानदः आच्छेत्ता चानुमंता च तान्येव नरकम्
 वशेत् ॥१८॥ स्व दत्तं पर दत्तं वा देव दायं हरेत यः स विष्टायां कृमिभुत्या पितृभिः
 सह मज्जति ॥१९॥ शून्याटवो व्यतीयासु शुष्क कोटर वासिनः । कृपणा हयोभि जायते
 देव दायम् हरंति ये ॥२०॥ मङ्गलं महा श्रीः । प्राग्घाट वंशे धरणिग्ग नाम्नः सुतो महा
 मात्यवरः सुकर्मा वभूव दूताः प्रतिज्ञा निवासो लक्ष्मीधरः श्री करणे नियोगी ॥२१॥
 आसीत् स्वच्छ मला मनोरथ इति प्राग् नैगमानां कुले शास्त्र ज्ञान सुधारण प्ययिन
 धिष्टज्जो भवत वासलः । पुत्रस्तस्य वभूव लोक वसनिः श्री श्री धरः श्री धर
 सूपस्ति रचयांचकार लिलिखे चैदं महा शासनं ॥२२॥ स्व हस्तोयं महागज श्री
 अरुहण देवस्य ।

तामापल (महाजनों के पास)

(810)

ॐ स्वस्ति ॥ श्रियै भवन्तु वो देवा ब्रह्म श्रीधर शंकराः । सदा विरागवंतो ये जिना जगति विश्रुताः ॥१॥ शाकंभरो नाम पुरे पुरासी च्छ्री चाहमानान्वय लब्ध जन्मा । राजा महाराज नतांहि युग्मः ख्यातो वनौ वाक्पति राज नामा ॥२॥ नड्डूले समाभूत्तदीय तनयः श्री लक्ष्मणा भूपति स्तस्मात्सर्व्व गुणान्वितोः नृपवरः श्री शोभि-
 ताख्यः सुतः । तस्मा च्छ्री बलिराज नाम नृपतिः पश्चात् तदीयो मही ख्यातो विग्रह पाल इत्यभिधया राज्ये पितृव्योऽ भवत् ॥३॥ तस्मिन्तीव्र महा प्रताप तरणिः पुत्रो महेंद्रो भवत्तज्जा च्छ्री अणहिल्ल देव नृपतेः श्री जेंद्रराजः सुतः । तस्माद्दुर्दुर वैरि कुंजर बध प्रोत्ताल सिंहोपमः सत्कीर्त्या धवलाली कृताखिलजग च्छ्री आशराजो नृपः ॥४॥ तत्पुत्रो निज विक्रमार्जित महाराज्य प्रतापोदयो यो जग्राह जयश्रिय रण भरे व्यापाय सौराष्ट्रकान् । शौचाचार विचार दानव सति नड्डूल नाथो महा संख्योत्पादित वीर वृत्तिरमलः श्री अल्हणो भूपतिः ॥५॥ अनेन राज्ञा जन विश्रुतेन । राष्ट्रौड वंश जव रा सहुलस्य पुत्री अन्नल्ल देवीरिति शील विवेक युक्ता । रामेण वै जनकजेव विवा-
 हिता सौ ॥६॥ आभ्यां जाताः सुपुत्रा जगत्प्रधयो रूप सौंदर्य युक्ताः । शस्त्रैः शस्त्रैः प्रगल्भाः प्रवर गुणः गणास्त्यागवन्तः सुशीलाः ज्येष्ठ श्री केलहणाख्य स्तदनु च गज सिंह स्तथा कीर्ति पाली । यद्वन्नेत्राणि शंभो स्त्रि पुरुष वदथामीजने बंदनीयाः ॥७॥ मध्यादमोसां परिवारानथो ज्येष्ठो गंजः क्षीणि तले प्रसिद्धः । कृतः कुमारो निज ज्य धारी श्री केलहणः सर्व्व गुणोरूपेतः ॥८॥ आभ्यां राज कुल श्री आल्हण देव र श्री केलहण देवाभ्यां राजपुत्र श्री कोर्त्तिपालस्य प्रसादे दत्ता नड्डूलाई प्रतिवहु दश ग्राम ततोरज पुत्र श्री कौर्त्तिपालः । संवत् १२१८ श्रावण वदि ५ सोमे ॥ अद्येहं नड्डूले स्नात्वा धौतवाससी परिधाय तिलाक्षत कुश प्रणयिनं दक्षिण करं कृत्वा

देवानुदकेन संतर्प्य । बहलतम तिमिर पटल पाटन पटीयसी निःशेष पातक पंक प्रक्षालनस्य दिवाकरस्य पूजां विधाय । चराचर गुरुं महेश्वरं नमस्कृत्य । हुत भुजि होम द्रव्याहुती दृष्ट्वा नलिनी दल गत जल लव तरलं जीवितव्यमाकलय्य । ऐहिकं पारत्रिकं च फलमंगीकृत्य स्व पुण्य यशोभि वृद्धये शासनं प्रयच्छति यथा ॥ श्री नडूलाई ग्रामे श्री महावीर जिनाय नडूलाई द्वादश ग्रामेषु ग्रामं प्रति द्वौ द्रुमौ स्तपन विलेपन दीप धूपोपभोगार्थं । शासने वर्षं प्रति ज्ञाद्रपद मासे चंद्राङ्कं क्षिति कालं यावत् प्रदत्तौ ॥ नडूलाई ग्राम । सूजेर । हरिजी कविलाडं । सोनाणं । मोरकरा । हरवंदं माहाड । काण सुवं । देवसूरो । नाडाड मउवडो । एवं ग्रामाः एतेषु द्वादश ग्रामेषु सर्वदाप्यस्मामिः शासने दत्तौ । एभिर्ग्रामैरधुना संवत्सरं लगित्वा सर्वदापि वर्षं प्रति ज्ञाद्र पदे दातव्यौ । जत ऊर्द्धं केनापि परिपंथना न कर्तव्या । अस्मद्वंशे व्यतिक्रान्ते योऽन्य कोपि ज्ञविष्यति तस्याहं करे लग्नो न लोप्यं मम शासनं । षष्ठि वर्षं सहस्राणि स्वर्गो तिष्ठति दायकः । आच्छेत्ता चानुमंता च तान्येव नरके वसेत् ॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमि र्तस्य तस्य तदा फलं ॥ स्व हस्तोयं महाराज पुत्र श्री कीर्त्ति पालस्य ॥ नैगमान्वय कायस्थ साढनप्रा शुभं करः दामोदर सुतो ऐखि शासनं धर्म शासनं ॥ मंगलं महा श्रीः ॥

संवत् १२१३ वर्षे मार्गा वदि १० शुक्रे ॥ श्रीमदणहिल्ल पाटके समस्त राजा यथी समलं कृत परम जहारक महाराजाधिराज परमेश्वर उमापति यर लव्य प्रसाद प्रीट प्रताप निज भुज विक्रम रणं गण विनिर्जित शाकंभरी भूपाल श्री कुमार पाल देय कल्याण विजय राज्ये । तत्पाद पद्मोपजीविनि महानात्य श्री महट्ट देय श्री श्री करषादौ सकल मुद्रा व्यापारान्परि पंचयति यथा । अस्मिन् काले प्रयत्नमाने पंगिन्य बोहाणान्वये महाराज० श्री योगराज स्तदे तदीय सुत संज्ञान महामंडलीकः श्री प्रम

राजसूतदस्य सुत संजात ऽनेक गुण गणालंकृत महा मंडलीक० श्री मता प्रताप सिंह शासनं प्रयच्छति यथा । अत्र नदूल डागिकायां देव श्री महावीर चैत्ये । तथाऽऽरुण-
नेमि चैत्ये शील बंदडो ग्रामे श्री अजित स्वामि देव चैत्ये एवं देव त्रयाणां स्त्रीय धर्मा-
र्थे वदर्य मंडपिका मध्यात् समस्त महाजन भट्टारकब्राह्मणादय प्रमुख प्रदत्त त्रिहाइको
रूपक १ एकं दिनं प्रति प्रदातव्यामदं । यः कोपि लोपियति सो ब्रह्महत्या गो हत्या
सहस्रेण लिप्पते । यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलं । बहुभिर्वसुधा मुक्ता
राजभिः । यः कोपि बालयति तस्याहं पाद लग्न स्तिष्ठामीति । गौडान्वये काथस्य
पण्डित० महीपालेन शासनमिदं लिखितं ।

नाडलाई ।

वर्तमानमें मारवाड़के देसूरी जिलेके नाडीलके पास एक छोटासा गांव है परन्तु
प्राचीन कालमें यह एक बड़ा आबादी नगर था और वही स्थान है कि-

संवत् दश दाहोतरे बदिया चोरासी बाद ।

खेड नगर थी लाबिया, नारलाई प्रासाद ॥१॥

यहां पर बहुतसे प्राचीन जैन मंदिर वर्तमान हैं ।

श्री आदिनाथजी का मंदिर ।

संवत् ११८७ फाल्गुन सुदि १४ गुरुवार श्री पंडेरकान्वय देशी चैत्य देव श्री महावीर
दत्तः । मोरकरा ग्रामे घाणक तैल बल मध्यात् चतुर्थ भाग चाहुमाण पत्तरा सुत
विंसराकेन कलसो दत्तः ॥ रा० वाच्छलय समेत । साखिय भण्डौ नाग सिउ । ऊतिवरा

(११३)

बीट्टुरा पोसरि । लक्ष्मणु । बहुभिर्बसुधा भुक्ता राजिभिः सागरादिभिः । जस्य जस्य
यदा भूमि । तस्य तस्य तदा फलं ॥१॥

(843)

ॐ ॥ संवत् ११८६ माघ सुदि पंचम्यां श्री चाहमानान्वय श्री महाराजाधिराज
रायपाल । देव तस्य पुत्रो रुद्रपाल अमृत पालौ । ताभ्यां माता श्री राज्ञी मानल देवी
तया नदूल ढागिकायां ॥ सतां परजतीनां राजकुल पल मध्यात् पलिका द्वयं । घाणकं
प्रति धर्माय प्रदत्तं ॥ नागसिख प्रमुख समस्त ग्रामीणक । रा० तिमटा वि० सिरिया
घणिक पोसरि । लक्ष्मण एते साखिं कृत्वा दत्तं । लोपकस्य यदु पापं गो हत्या सह-
स्रेण । ब्रह्म हत्या सतेन च । तेन पापेन लिप्यते सः ॥ श्री ॥

(844)

ॐ ॥ संवत् १२०० जेष्ठ सुदि ५ गुरौ श्री महाराजाधिराज श्री राय पाल देव राज्ये
--- हास --- समाए रथयात्रायां आगतेन । रा० राजदेवेन । आत्म । पाडुला मध्यात्
सर्व साउत पुत्र विंसीपको दत्तः ॥ आत्मीय घाणक तेल बल मध्यात् । माना निमिरां
पलिका द्वयं । प्ली २ दत्तः ॥ महाजन ग्रामीण । जन पद समलाय । धर्माय निमित्तं
विंसीपको पलिका द्वयं दत्तं ॥ गो हत्याना सहस्रेण ब्रह्म हत्या सतेन च । स्त्री हत्या
भ्रूण हत्या च जतु पापं तेन पापेन लिप्यते सः ॥१॥

(845)

संवत् १२०० कार्तिक अदि १ रवौ महाराजाधिराज श्री राय पाल देव राज्ये । श्री
नदूल ढागिकायां रा० राजदेव ठकुरायां । श्री नदूला इय महाजनेन सर्वं मिष्टिन्वा श्री
महावीर चैत्ये । दानं दत्तं । घृत तैल चीपद नपि पित्त पाडुय प्रति । कः घान एव-

(२१४)

नमपि तद्रोणं प्रति मा० ५ कपास लोह गुठर पाड होंगु माजीठा तौल्ये घडी प्रति । पु० १
पूगहरी तकि प्रमुख गणितैः । सहस्रं प्रति । पुगु १ एततु महाजनेन चेतरेण धर्माय
प्रदत्तं लोपकस्य जतु पापं । गो हत्या सहस्रेण ब्रह्महत्या शतेन च तेन पापेन लिप्यते सः ॥

(846)

ॐ ॥ संवत् १२०२ आसोज घदि ५ शुक्रे । श्री महाराजाधिरान श्री रायपाल देव
राज्ये प्रवर्त्तमाने । श्री नदूल डागि कार्या । रा० राजदेव ठकुरेण प्रवर्त्तमानेन । श्री महा-
वीर चैत्ये साधुतपोधन निष्ठार्थे । श्री अभिनव पुरीय वदाय्या । अत्रेषु समस्त वणजार
केषु । देसी मिलित्वा वृषभ भरित । जतु पाइलाल गमाने । ततु वीसं प्रति । रुआ १
किराड उआ । गाडं प्रति रु० १ वणजारकै धर्माय प्रदत्तं ॥ लोपकस्य जतु पापं गो हत्या
सहस्रेण ॥ ब्रह्म हत्या शतेन । पापेन । लिप्यते सः ।

(847)

संवत् १४८६ वर्षे अषाढ वदि ९ नाडलाई रीमाउहीत को-विसति को तेल सेर० ॥
दीधे छूटि सुपासना श्री संघ मतं दिना १ प्रत देस ।

(848)

१५६८ वीरम ग्राम वास्तव्य श्री संघेन पक्षे

(849)

सं० १५६९ वर्षे । कुतवपुरा पक्षे तपागच्छाधिराज श्री इन्द्र नन्दि सूरि गुरुपदेशात्
मुंजिगपुर श्री संघेन कारिता देव कुलिका चिरनन्दतात् ॥

(850)

सं० १५७१ वष कुतवपुरा तपागच्छाधिराज श्री इन्द्र नन्दि सूरि शिष्य श्री प्रमोद
न्दर सूरराज गुरुपदेशात् चम्पकं दुर्ग श्री संघेन करापिता देव कुलिका चिरं नन्दतात्

(२१५)

(851)

सं० १५७१ वर्षे कुतधपरा पक्षे तपागच्छाधिराज श्री इन्द्र नंदि सूरि शिष्य प्रमोद
सुन्दर सूरि गुरुणामुपदेशात् पत्तनोय श्रो संघेन कारिता देव कुलिका चिरं जीयात् ॥

(852)

श्री यशोभद्र सूरि गुरुपादुकाभ्यां नमः । संवत् १५९७ वर्षे वैशाख मासे शुक्र पक्षे
पञ्चां तिथौ शुक्र वासरे पुनवसु ऋक्ष प्राप्त चंद्र योगे श्री संद्वेरे गच्छे कलिकाल
गौतमावतारः समस्त भविक जन मनोबुज विबोधनैक दिन करः सकल लब्धि
विश्रामः युग प्रधानः जितानेक वादीश्वर वृंदः प्रणतानेक नर नायक मुकुट कोटि
घृष्ट पादारविंदः श्री सूर्य इव महा प्रसादः चतुः पण्डितसुरेन्द्र संगीयमान साधुवादः ।
श्री पंडेरकीय गण बुधावतंसः सुभद्रा कुक्षि सरोवर राजहंसः यशोवीर साधु कुलांबर
नमो मणिः सकल चारित्रि चक्रवर्ति वक्तृ चूडामणिः ज्ञ० प्रभु श्री यशोभद्र सूरयः
तत्पहे श्री चाहुमान वंश श्रृङ्गारः लब्ध समस्त निरवद्य विद्या जलधि पारः श्री
वदरा देवी दत्त गुरु पद प्रसादः स्व विमल कुल प्रयोधनैक प्राप्त परम यशो वादः
ज्ञ० श्री शालि सूरि स्त० श्री सुमति सूरिः त० श्री शांति सूरिः त० श्री ईश्वर सूरिः ।
एवं यथा क्रममनेक गुण मणि गण रोहण गिरीणां महा तूरोणां वंशे पुनः श्री शालि
सूरिः त० श्री सुमति सूरिः तत्पहालंकार हार ज्ञ० श्री शांति सूरि वराणां सपरिकराणां
विजय राज्ये ॥ अथेह श्री मदेपाट देशे । श्री सूर्य वंशीय महाराजाधिराज श्री गिला
दिस्य वंशे श्री गुहिदत्त राउल श्री वप्पाक श्री सुमाणादि महाराजान्वये राणा हमीर
श्री पेत सिंह श्री लखम सिंह पुत्र श्री मोकल मृगांक वयोदांतकार प्रताप मार्तंडा-
वतारः आ समुद्र मही मंडला खंडलः अतुल महाबल राणा श्री कुम्भकर्ण पुत्र राणा
श्री राय मल्ल विजय मान प्राज्य राज्ये तत्पुत्र महाकुमार श्री पृथ्वी राजानुगामनात् ।
श्री उकेश वंशे राय जहारो गोत्रे राउल श्री लाखण पुत्र मं० दूदवंशे मं० मयूर मुन मं०
सादूल स्तत्पुत्राभ्यां मं० लोहा समदाभ्यां सद्वांधव मं० कर्मसाधा गालामादि मयूरमुश्च

(२१६)

मुताभ्यां श्री नंदकुलवत्यां पुर्यां सं० ८६४ श्री यशोभद्र सूरि मंत्र शक्ति समानीतार्या त०
सायर कारित देव कुलिकाद्युद्धारितः सायर नाम श्री जिन वत्यां श्री आदीश्वरस्य
स्थापना कारिता कृता श्री शांति सूरि पट्टे देव सुंदर इत्यपर शिष्य नामभिः आ०
श्री ईश्वर सूरिभिः । इति लघु प्रशस्तिरिय लि० आचार्य श्री ईश्वर सूरिणा उत्कीर्ण
सूत्रधार सोमाकेन शुभं ॥

(४५३)

संवत् १६७४ वर्षे माघ यदि १ दिने गुरु पुष्य योगे उसवाल ज्ञाती मण्डारी गोत्रे०
सायर तुत्र साहल तत पु० समदा लषा धर्मा कर्मा सोहा लखमदा पु० पहराज प्रद मान
गम भार्या तत पु० । भीमा मं पहराज पुत्र कला मं० नगा पुत्र काजा मं० पदमा पुत्र
जईचन्द्र मं भीमा पुत्र राजसी मं वाला पुत्र संकर उसवालः जैचन्द्र पुत्र जस चंद
जादव । मं० सिखा पुत्र पूजा जेठा संयुतेन श्री अदिनाथ विवं कारितं प्रतिष्ठितं तथा
गच्छाधिराज भटा० श्री हीर विजय सूरि तत्पटालंकार श्री विजयसेन सूरि ततपटा-
लंकार भटारक श्री विजय देव सूरिभिः ।

(४५४)

महाराजाधिराज श्री अन्नय राज राज्ये संवत् १७२१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ रवी श्री
नहुलाई नगर वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातोय वृ० सा । जीवा भार्या जसमादे सुत सा ।
नाथाकेन श्री मुनि सुत्रत विवं कारापितं प्रतिष्ठितं च । भटारक श्री हीर विजय
सूरिभिः ।

(४५५)

संवत् १७३६ वर्षे वैशाख सुदि २ दिने ज्जकेश ज्ञात १ वोहरा काग गोत्र साह ठाकुर
श्री पुत्र लाला हेत सुवर्णमये कलस करापितं श्री आदिनाथजी सेतरभेद पूजा गुहिष्ठेव
संभति प्रतय (प्रतिष्ठितं) माषिक्य त्रिजै यि० जित विजय शिष्य ॥ कुश विजय उपदेशाव
शुभे भूयात् ।

(२१७)

(856)

संवत् १६८६ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे शनि पुष्य योगे अष्टमी दिवसे महाराणा
श्री जगत सिंह जी विजय राज्ये जहांगोरी महा तपा विरुद्ध धारक भट्टारक श्री विजय
देव सूरेश्वरोपदेश कारित प्राक प्रशस्ति पट्टिका ज्ञात राज श्री संप्रति निर्मापित श्री
जुषल पर्वतस्य जोर्ण प्रासादोद्धारण श्री नडुलाई वास्तव्य समस्त संघेन स्वश्रेयसे
श्री श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं च पातशाह श्री मंदकवर शाह प्रदत्त जग-
द्गुरु विरुद्धधारक तपागच्छाधिराज भट्टारक श्री श्री श्री श्री हीर विजय सूरेश्वर
पह प्रभाकर भ० श्री विजय सेन सूरेश्वर पहालंकार प्रभु श्री विजयदेव सूरिभिः स्व
पद प्रतिष्ठिताचार्य श्री विजय सिंह सूरि प्रमुख परिवार परिवृत्तैः श्री नडुलाई मंडन
श्री जुषल पर्वतस्य प्रासाद मूलनायक श्री आदिनाथ विंवं ॥ श्री ॥

श्री नैमिनाथजी का मंदिर ।

(857)

ओं नमः सर्वज्ञाय ॥ संवत् ११८५ आसउज वदि १५ कुजे ॥ ज्योह श्री नडुलडागि-
कायां महाराजाधिराज श्री रायपाल देवे । विजयीराज्यं कुर्वतत्ये तस्मिन् काले श्री
मदुर्जित तीर्थः श्री नैमिनाथ देवस्य दीप धूप नैवेद्य पुष्प पूजार्थं गुहिलान्वयः ।
राउत उघरण सूनुना भोक्तारि १ ठ० राजदेवेवन स्व पुण्यार्थं स्वीयादान मध्यात् मार्गे
गच्छता नामा गतानां वृषभानां शेकेषु यदा भाव्यं भवति तन्मध्यात् विंशतिमी भागः
चंद्रार्कं यावत् देशस्य प्रदत्तः ॥ अस्मद्वंशीयेनान्येन वा केनापि परिपंथना न करणीया ॥
अस्मदत्तं न केनापि लोपनीयं ॥ स्वहस्ते पर हस्ते वा यः कोपि लोपयिष्यति । तस्याह
करे लग्नो न लोप्य मम शासनमिदं ॥ लि० पांसिलेन ॥ स्व हस्तोयं साक्षिज्ञान पृथ्वं
राउ० राज देवेन मतु दत्तं ॥ अत्राहं साक्षिण ज्योतिषिक दूडू पाननुना गूगिना ॥ तथा
पला० पाला पृथिंवा १ मांगुला ॥ देवता । रापसा ॥ मंगलं महा श्रीः ॥

(२१८)

(858)

ॐ ॥ स्वस्ति श्री नृप विक्रम समयातीत सं० १४४३ वर्षे कार्तिक वदि १४ शुक्ले श्री नडुलाई नगरे आहुमानान्वय महाराजाधिराज श्री वणवीर देव सुत राज श्री रणवीर देव विजय राज्ये अत्रस्थ स्वच्छ श्री मदवृहद्गच्छ नभस्तल दिनकरोपम श्री मानतुंग सूरिवंशोद्भव श्री घर्मचन्द्र सूरि पह लक्ष्मी श्रवणो उत्पलाय मानैः श्री विनय चंद्र सूरि निरल्प गुण माणिक्य रत्नाकारस्थ यदुवंश शृंगार हारस्थ श्री नेमीश्वरस्थ निराकृत जगद विषादः प्रसाद समुद्धे आचंद्रार्कं नन्दतात् ॥ श्री ॥

कोट सोलंकी ।

(859)

ॐ ॥ स्वस्ति श्री नृप विक्रम कालातीत संवत् १३९४ वर्षे चैत्र सुदि १३ शुक्ले श्री आसल पुरे महाराजाधिराज श्री वणवीर देव राज्ये राउत मालहणान्वये राउत सोम पुत्र राउत वांवी भार्या जाखल देवि पुत्रेण राउत मूल राजेन श्री पार्श्वनाथ देवस्थ ध्वजारोपण समये राउत बाला राउत हाथा कुमर लुभा नीवा समक्ष मातृ पित्रोः पुण्यार्थं टिकुय उवाडी सहितः प्रदत्तः आचंद्रार्कं यावदियं व्यवस्था प्रमाण ॥ बहुभिर्व सुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ शुभं भवतु ॥ श्री ॥

धानेराव ।

(860)

संवत् १२१३ भाद्रपद सुदि ४ मंगल दिने श्री दंडनायक बैजल देन राज्ये श्री वंश

(२१६)

गतीय राउत महण सिंह भुक्ति वंतह उवाट मध्यात श्री महावीर देव वर्ष प्रति दाम
२ खाज चूणो दत्ताः जस्य भूमिः तस्य तदांभत्य । सेठ रायपाल सुत रात्र राजमल्ल
महाजन रक्ष पाल विनाणि यस्त दिवहिं ।

बेलार ।

मारवाह के देतूरी जिलेके घानेराव नामक स्थानके समीप यह ग्राम है ।

श्री आदिनाथ जी का मंदिर ।

(२१७)

जौ संवत् १२३५ वर्षे श्री० साविग भार्या मालही तत्पुत्रा जात्रवीर घटाक जात्रधराः
जात्रवीर पुत्र सालहण गुण देवादि समन्वित जात्म श्रियते लणिकां कारितवान ।

(२१८)

जौ संवत् १२३५ वर्षे फाल्गुन वदि ७ गुरौ प्रौढ प्रथाप श्री महुंघल देव कल्याण
विजय राज्ये बाघल दे वैस्ते श्री नागकीय गच्छे श्री शांति नृरि गच्छायिने शाश्व ।
आसीदु घर्कट वंश मुख्य उत्तमः क्षाहः पुरा शुद्धीमन्तृगोत्रस्य विष्णुपत्नीं समञ्जनि
श्रीष्टि सपारर्वाञ्जिवः । पुत्री तस्य वज्रवतुः क्लित्तडे विहवान कीर्ति भूय पूज्यते प्रथमो
वज्रवतु सगुणी रामाञ्जिवरवापरः । तथान्यः ॥ श्री लखंड प्रदास्यने कृत्त मन्दित्राने दयापु
महुं रायादेव इति क्लित्तौ समन्वित पुत्रीस्य बांदास्यिवः । तन्पुत्रो यति संप्रतिः प्रमि
विम गोसाक नामा सुधीः शिष्टाचार विद्यारवो जित महोदयः इति बांदास्यिवः ॥

(२२०)

कदाचिदन्यदा चित्ते विचिंत्य चपलं धनं । गोष्ट्याच राम गोसाभ्यां कारितो रंग
मंडपः ॥३॥ अद्रं भवतु ।

(863)

संवत् १२३८ पौष वदि १० वला नागू पुत्र श्री० उद्वरण भार्यया श्री० देवणाग
पुत्रिकया उत्तम परम श्राविकया स्व श्रीयोर्य श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोयं
कारितः ।

(864)

अ ॥ संवत् १२३८ पौष वदि १० श्री० आंघ कुमार पुत्र श्री० धवल भार्यया वला०
नागू पुत्रिकया संतोस परम श्राविकया स्व श्रीयार्थ श्री पा ।

(865)

ॐ सं० १२६५ वर्षे थांथां भार्या तिण देवि तत्पुत्रिका पउसिणि पुत्र गोसा भार्या
लक्षा श्री पालहाया - - - मालहा - - - - भार्या श्री ति - - - - भार्या - - - न भार्या
पूरां श्री गोसाकेन सकल वंधु सहितेन सोहि ।

(866)

ॐ गच्छे श्री नाणकाभिरुये सुधम्म सुत वलहणः । अभुच्चारिन्न संयुक्तो वाळ भद्रो
मुनिः पुरा ॥१॥ तच्छिष्यो हरिचंद्राहो मुनिचन्द्र - - परः । तदन्वये धनदे - - पार्श्व दे ।
घोष सोमकौ ॥ २ ॥ पार्श्व देवः स्वशिष्येन वीर चंद्रेण संयुतः । लगिकां कारवामात्र
गुरु कंद विवर्द्धये ॥ ३ ॥

(867)

ओं संवत् १२३५ वर्षे धक्कट वंशे भार्या जिन देवि तत्पुत्रा पंचगोसा० सदेव भार्या
मति तत्पुत्र थांथां कालहा रालह घोष सोह पालहण प्रमुख गोसा पुत्र आम्

(२२१)

वीर आमं जालं कालंहा पुत्रं लक्ष्मीधर महीधर राहण पुत्रं आखै शूर घोरहसी पुत्र
देव जस पारहण पुत्र घण चंडा रथ चंडादि स्वकलत्र समन्विताः स्व श्रेयोर्थं स्तंभ
लगाभिमं कारापयामासूः ।

(868)

ओं संवत् १२६५ वर्षे उंसम गोत्रे श्रेष्ठिं पार्श्व भायां दूल्हैवि तत्पुत्रं मगाकेन
भार्या राजमति राहू तस्याः पुत्राश्चत्वारो लक्ष्मीधर अन्नय कुमार मेघ कुमार शक्ति
कुमार लक्ष्मीधर पुत्र वीर देव अन्नय दे पुत्र सर्वदेवादिषु कुल कुटुम्ब सहितेन स्तंभन
माकारितेदमिति - - - ।

(869)

ओं संवत् १२६५ वर्षे श्रीं नाणंकीय गच्छे धक्कटं गोत्रे आसदेव तत्सुत जागू भार्या-
धिर मति तत्सुत गाहड़स्तस्य भार्या सातु तत्पुत्र आजमटादेः समुत्तिका सूरि काम
कारयदात्म श्रेयसे ॥७॥

फलोदी ।

यह स्थान मारवाड़के मेड़ता नगरके पास है ।

बड़े जैन मंदिरके देहलीके पत्थरों पर ।

(870)

संवत् १२२१ मार्गसिर सुदि ६ श्री फलवर्द्धिकायां देवाधिदेव श्री पार्श्वनाथ चैत्ये
श्री प्राग्वाट वंसीय रोपि मुणि मं० दसादाभ्यो जात्म श्रेयार्थं श्री चित्रकूटीय सिलफट
सहितं चन्द्रको प्रदत्तः शुभं भवत् ॥

(२२२)

(871)

चैत्यो नरवरे येन श्री सल्लक्ष्मट कारिते । पंडपो मंडनं लक्ष्या कारितः संप्र
भास्वता ॥ १ ॥ अजयमेरु श्री वीर चैत्ये येन विधापिता श्री देवा बालकाः ख्याताश्च-
तुर्विंशति शिखराणि ॥२॥ श्रेष्ठी श्री मुनि चंद्राख्यः श्री फलवर्द्धिका पुरे उत्तान पद्
श्री पार्श्व चैत्येऽभीकरदद् भूतं ॥३॥

कोकिन्द ।

यह प्राचीन स्थान भी मारवाड़के मेड़ता जिलेमें है

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर ।

(872)

ॐ ॥ संवत् १२३० आषाढ सुदि ९ श्री किष्कंधर दिवा प्रमुख वाला मलण दास
ददिवा रावधी विधि चैत्ये मूल नायकः श्री आनन्द सूरि देशनया श्रे ॥१॥

(873)

ॐ ॥ संवत् १२३० आषाढ सुदि ९ किष्कंध विधि चैत्य मूल नायकः श्री आनंद
सूरि देशनया श्रे० धाघल श्रे० वाला लण दास ददिवा पीवर दिवा प्रमुख श्राक - - ।

(874)

ॐ ॥ नमो धीतरागाय ॥ श्री सिद्धिर्भवतु ॥ स्वति श्रियामास्पदमापसिद्धिर्ज-
यस्य भवत् प्रसिद्धि । सोऽस्तु श्रिये स्फूर्ज्जदंनं व रिद्धिरादीश्वरः शारद भास्य
॥१॥ यमार्हता शैव मताऽवलंबा । हिन्दु प्रकाराय वन प्रकाराः । सर्वेऽप्यमी

मोद भृतो भजन्ते । युगादि देवो दुरितं सहंतु ॥२॥ दूर्वा प्रसारः सवट प्रसारः । कच्छ
 प्रसारो व्रतति प्रसारः । इमे समे कोटिलमेऽपिभागेऽपत्य प्रसारस्य न यांति यस्य ॥३॥
 गीर्वाण साली नहि काष्ठ भावात् । तथा पशुत्वान्नहि कामधेनुः । सृदां विकारा-
 न्नहि काम कुंभश्चिन्तामणिर्नैव च कर्कुरत्वात् ॥४॥ सूर्या न तापाकुलता करत्वात् ।
 सुधाकरोनैव कलंकवत् त्वात् ॥ सुवर्ण शैलो न कठोर भावात् । नाभ्यंगजातेन तुला-
 मुपैति ॥५॥ दुग्धो दधौ संस्थित तोय विदूत । पुष्पोच्चयान्नंदन कानन स्थान् ।
 करोत्करान् शारदः चन्द्र सत्कान् । कश्चिन्मिमीतेन गुणान् युगादेः ॥६॥ यस्माद् जगत्यां
 प्रभवन्ति विद्याः । सुर्षवलोकादिव काम गव्यः । द्वयोऽपि वांछाधिक दान दक्षाः ।
 पुष्पातु पुण्यानि स नाभि सूनुः ॥७॥ यतोत्तराया स्त्वरितं प्रणेशु । सृगाधिराजा दिव
 मार्गः पूगाः । यद्वा मयूरादि वले लिहानाः । स मारु देवो भवताद् विभूत्यै ॥८॥ राठोड
 वंश व्रतति प्रताना नीकोपमो नीक तिकाय नेता । राजाधिराजो जनि मल्ल देव ।
 स्तिरस्कृतारि प्रति मल्ल देवः ॥ ९ ॥ तस्मोरसस्सम जनिष्ट यलिष्ठ धाहुः प्रत्यर्थिता
 पनकदर्थन पर्व राहुः । श्री मल्लदेव नृप पट्ट सहस्र रश्मिः । श्री मानभूदुदय सिंह
 नृपः सरश्मिः ॥१०॥ कम धज कुल दीपः कांसि कुल्या नदीप । स्तनु जित मधु दीपः
 सौम्यता कौमुदीपः । नृपतिरुदय सिंहा स्व प्रतापास्त सिंहः सितरद मुचुकुंदः सर्व्व
 नित्या मुकुन्दः ॥११॥ राज्ञां समेषामय मेव वृद्धो । वाच्यस्तद न्येय वृद्ध राजः ।
 यस्थेति शाहिर्विरुदं स्मदद्या । दकधरो वर्वर वंश हंसः ॥१२॥ तत्पट्ट हेग्गः कप
 पट्ट शोभा । मवीरत्संप्रति सूर सिंहः । यो माप पेपं द्विपतः पिपेप । निर्मूल कापं
 कपितार्त्तितान्तिः ॥१३॥ राज्य श्रियां प्राजन मिदु धामा । प्रताप मंदी कृत चह धामा ।
 संपन्न नागावलि नाव सिंहः पृथिवी पती राजति सूर सिंहः ॥१४॥ प्रतापतो विक्रमत्
 श्व सूर्य । सिंही गती व्योम वनं च भीती । अन्वयती नाम जगाम सूर्य । सिंहे तियः
 सर्व्व जन प्रसिद्धं ॥१५॥ यदीय सेनोच्छलितै रजोभि । मलीमसांगो दिनसाधि नायः ।
 परो दवा दस्त गिपेण मन्ये । स्नातुं प्रवेशं कुरुते विनम्रः ॥१६॥ अप्येक भीहेतन

शुद्ध वंशौ । धारै चक्रं तृप्ति युतो विशेषात् । स्वयं हताराति वसुन्धरा स्त्री परिग्रहात्
 द्वहुता करस्सः ॥१७॥ तथापि राज्ञः परितोष भाजः । स्तुवन्ति विज्ञा विविधैः कवित्वैः ।
 बहन्ति भक्तिं स्व कुटुंबलोका । अहो यशो भाग्य वशोपलभ्यं ॥१८॥ द्वाभ्यां युगमं ।
 सुरेष यद्वन्मधवा विभाति । यथैव तेजस्त्रिषु चंड रोचिः । न्यायानुयायि षिवव राम-
 चन्द्र । स्तथाधुना हिन्दुषु भूधयोयं ॥१९॥ द्रव्य जिनाचौचित कुंकमादि दीपार्थं मा
 जाद्यममारि घोषं । आचामतोम्लादि तपो विशेषं विशेषतः कारयते स्वदेशे ॥२०॥ ना
 पुत्र वित्ताहरणं न चोरी नन्या समोषो न च मद्य पानं । नाखेटको नान्य वशा निषेवे ।
 त्यादि स्थितिः शासति राज्यमस्मिन् ॥२१॥ अभूद्धानो युवराज मुद्रां तस्मात्कुमारो
 गजसिंह नामा । गत्या गजोऽतीव बलंन सिंहस्ते नैव लेभे गजसिंह नाम ॥२२॥ श्री
 ओसवालान्वय वाह्निचन्द्रः । प्रशस्त कार्येषु विमुक्त तंद्रः । विज्ञ प्रगेयो चितवाल
 गोत्रः पणेष्वपिस्वेष्व चलत्व गोत्रः ॥२३॥ आसीन्निवासो नगरांतरेच । प्रायः प्रभूतैर्द्र-
 विणैरुपेशः जगाभिधानो जगदीश सेवा । हेवाभिरामो व्यवहारि मुख्यः ॥२४॥ द्वाभ्यां
 युगमं । विद्यापुरः सूरि सुवाचकानां । करे पुरे घोषपुराभिधाने । दंतं प्रमाणाद्वया
 जगारुषः सपुष तुर्य व्रतमुच्चचार ॥२५॥ तदंगजन्मा जनित प्रमेदः पुण्यात्मनां पुण्य
 सहाय भावात् । विशिष्ट दानादि गुणैः सनाथो । नाथा मिथो नाथ समाप्त
 मानः ॥२६॥ तस्योज्ज्वलस्फार विशाल शाला । भार्य्या भवद् गूजर दे सुनामा । रूपेण
 वर्या गृह भार घुर्या । श्री देव गुर्वोः परिचर्य्य चार्या ॥२७॥ असूत सा पूर्व दिगेत्र सूर्य ।
 मुक्ता मणिं वंश विशेष यष्टिः । वज्रांकुरं रोहण भूमि केव । नापाभिधानं सुत राज
 रत्नं ॥२८॥ गुणैरनेकैः सुकृतै रनेकैः । लेभे प्रसिद्धि भुवि तेन विश्वक । तदर्थिनोन्गेपि
 समज्जयंतु । गुणान्सपुण्यान्विधुवद्विशुद्धान ॥२९॥ तस्यासीन्नवलादे । वनिता वनितार
 सार रूप गुणा । शीलालंकृत रम्या गम्या नापाहूये नैव ॥३०॥ आसाभिधानोह्यमृता-
 भिधश्व । सुधर्म सिंहोप्युदयाभिधोपि । सादूल नामेति च संति पंच । तयोस्तनूजा
 इव पांडु कुर्त्वाः ॥३१॥ आसा भिधानस्य वभूव भार्या सरूप देवोति तयोः सुतौ द्वौ ।

तयोरभूदादिम वीर दासो । लघुशिवरंजीवित जीव राजः ॥३२॥ वृद्धे तरस्यांऽमृतं
 सञ्जितस्य । मृगे चणाऽमोलक देभिधाना । सुता वज्रतामनयोस्तथा द्वी मनोहराख्ये
 पर वर्द्धमानः ॥३३॥ सदा मुद्दे धारल दे भिधाना । सुधर्म सिंहस्य सधर्मिणीति ।
 कुटुम्बिनी साउच्छ रंगदेवी । प्रिया वज्रवोदय सञ्जितस्य ॥३४॥ इति परिवार युत
 शचोऽजयंत शत्रुंजये ष्वकृत यात्रां । निधि शर नरपति १६५६ संख्ये । वर्ष हर्षेण ना
 पारुयः ॥३५॥ अर्बुद गिरि राण पुरे नारदपुर्यां च शिवपुरी देशे । योत्रां युग पट् पद
 पद । कला १६६४ मितेऽदे चकार पुनः ॥३६॥ श्रोविक्रमाक्कां हतु तक्रं पडम् । वर्ष १६६६
 गते फाल्गुन शुक्ल पक्षे । ती दंपती स्त्री कुरुतः स्मत्तुर्य । व्रत तृतीया हनि सप्य दानैः ॥३७॥
 दानं च शीलं च तथोपकार । स्त्रयात्मकोयं नुत्त योग आस्ते । नापाभिधान व्यवहारि
 मुख्ये । यथाहिलोके गुरु पुण्य पूर्णा ॥३८॥ भुजाजिर्जताया निज चारु सपद्मे । न्याय-
 जितायाः फलमिष्टमिच्छता । बाणागपट् शीतगु १६६५ रंख्य हायने । विधापित
 रत्नैर्नहि नूल मंडपः ॥३९॥ चतुष्किके द्वेऽपि पार्श्वयो द्वयो । नापा भिधानेन विधापिते
 इमे । पित्रोर्यशः कीर्त्ति रुमे इव स्वयोः । कर्त्ता द्वयं तोडर सूत्र धारकः ॥४०॥ विविध
 वादि मतं गज क्लेशरी । कपट पंजर भंग कृते करी । प्रय पयोधि समुत्तरेण तरी । प्रवल
 धैर्य हरैर्वसनेदरी ॥४१॥ असम भाग्य पद्यरक्ष्यसागरः । रय गुण रंजित नायक नागरः ।
 विजय सेन गुरु स्तप गच्छ राड् । विजयते जय तेज उदाहृतः ॥४२॥ द्वाभ्यां युग्मं । नम्य
 होदयि रवयो विजयंते विजय सूर्योः । श्रो उचितदाल नात्रायनस नृपया
 अनूचानाः ॥४३॥ तेषां निदेशेन सदा विना करैः गगा तरंगालिल गद शीतरे ।
 जिनालघोय प्रक्तिभा वधूवरै । प्रदिष्टिनो वाचक लन्धि नागरैः ॥४४॥ पदित पन्नि
 प्रभावः श्रो विजय कुशल विवृथ वरास्तेषां शिष्टेनाठय रुचिनः प्रगन्तिरेषा त्रिनि-
 रमापि ॥४५॥ श्री सहज सागर सुधो विनेय जय सागर प्रगन्ति मेषां । उदर्या
 शिखरुत्कीर्णा वर तोडर सूत्रधारिण ॥४६॥

यशोदेवो बलाधिपः । राज्ञां महाजनस्यापि सन्नायामग्रणी स्थितः ॥७॥ श्री पंहेरक
 सगच्छे बंधूनां सुहृदां सतां । नित्योपकुर्वता येन न भ्रांतं समचेतसा ॥८॥ तत्सुतो
 बाहो जातो नराधिप जन प्रियः । विश्व कर्मैव सर्वत्र प्रसिद्धो विदुषां मतः
 ॥९॥ तत्पुत्रः प्रथितो लोके जैन धर्म परायणः । उत्पन्नः थल्लको राज्ञः प्रसाद गुण
 मंदिर ॥ १० ॥ दया दाक्षिण्य गांभार्य बुद्धिचिद्बुध्यान संयुतः । श्री मत्कटुक राजेन यस्य
 दानं कृतं शुभं ॥ ११ ॥ माद्येन्न्यंबक संप्राप्तौ वितीर्णं प्रति वर्षकं । द्रुमाष्टकं प्रमाणेन
 पल्लकाय प्रमोदतः ॥१२॥ पूजार्घ्यं शांति नाथस्य यशोदेवस्य स्वत्तके । प्रवर्द्धयतु चंद्रार्कं
 यावदादनमुज्ज्वलं ॥ १३ ॥ पितामहेन तस्येदं समीपाट्यां जिनालये । कारितं शांति
 नाथस्य विंशं जन मनोहरं ॥१४॥ धर्मेण लिप्यते राजा पृथिवीं मुनक्ति यो यदा ।
 ब्रह्महत्या सहस्रेण पातकेन विलोपयन् ॥१५॥ संवत् ११७२ ॥

ॐ ॥ संवत् ११६८ अश्वीज यदि १३ रथी जरिष्ट नेमि पृथं द्विसायां अपवर्षिका
 अग्रे भित्ति द्वार पत्रे चर्तुलभाते कर्तुं सम च गोप्या मिडित्या निषेधः कृतः ॥ लिखित
 पं० अश्वदेवेन ।

सं० १२११ आसाढ यदि ६ रथी श्री संभव देव नामुन सुदि ८ अथवा - - - अथ - -
 पथर - - - ॥ - - - सुदि ११ जंती - - - हेतर जिर्त देव ॥ - - - सुदि १५ प्रिन्दा
 - - - हेतु श्री बहेव ॥ - - - कार्त्तिक यदि ६ मासु - - - देव पास देव ॥ - - - सुदि
 ५ रथी - - - ण शांभव ॥

ॐ ॥ सं० १२५१ कार्त्तिक यदि १ रथी अथ आसना नादियेन पथरा नामुदी सुदि

(२२८)

निज गुरु श्री शालि भद्र सूरि मूर्ति पूजा हेतो श्री सुमति सूरिभिः । प्रदत्तात् बलाः
५ मास पाटकेने चके ब्ययनीयाः ॥छ॥

(880)

॥ ॐ ॥ संवत् १२९७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ गुरौ वासहङ्ग वास्तव्य ऊजाजल गोत्रे श्रेष्ठि
घांदा सुत नाना - - - - देव सधीरण सुत आस पाल गुण पाल सेहङ्ग सुत पूसदेव
साबूदेव पूसदेव सुत धण देव सहङ्ग भायां शीत पुत्रिका साजणि जालह सती रण
भार्या राहीअई - - - - सेहङ्ग भार्या अइहव सूमदेव भार्या मदावति सावदेव भार्या
प्रहल सिरि कुटुंब समुदायेन सेहङ्गेन भार्या समन्वितेन देव कुलिका कारापिता ॥ मेद
पुत्रिका दैह साहुसा उसभ दासेन सुभं भवत् ॥

सांडेराव ।

यह भी मारवाड़के थाली जिलेमें है ।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर ।

(881)

श्री पंडेरक चैत्ये पंडित । जिन चन्द्रेण गोष्ठियुतेन धीमता देव नाग गुरो मूर्ति
कारिता धिरपाल मुक्ति घांछतां सं० ११४९ वैशाख वदि— ।

(882)

सं० १२ - - वर्षे फागुण सुदि १४ गुरौ अव्येह श्री पंडेरक निवासी श्रेष्ठि गुणपाल
गो - - - ला - - सुखमिणि नामिकाया । श्री महावीर देव चैत्ये चतुष्किका

(२२९)

(८८३)

ॐ ॥ संवत् १२२१ माघ अदि २ शुके अद्योह श्री केलहण देव विजय राज्ये । तस्य मातृ राज्ञी श्री आनत्त देव्या श्री पंडेरकीय मूलनायक श्री महावीर देवाय चैत्र अदि १३ कल्याणिक निमित्तं राजकीय भोग मध्यात् । युगंधर्याः हाएल एकः प्रदत्तः । तथा राष्ट्रकूट पातू केलहण तद्भातृज ऊचामसीह सूद्रग कालहण आहड आसल अणतिगादिभिः तला रामाव्यथस ? गटसत्कात् । अस्मिन्नेव कल्याण केद्र १ प्रदत्तः ॥१॥ तथा श्री पंडेरक वास्तव्य रथकार धणपाल सूरपाल जीपाल सिगडा अमियपाल जिसहड-केलहणादिभिः चैत्र सुदि १३ कल्याणके युगंधर्याः हाएल एक १ प्र - - -

(८८४)

संवत् १२३६ कार्तिक अदि २ बुधे अद्योह श्री नड्ले महाराजाधिराज श्री केलहण देव कल्याण विजय राज्ये प्रवर्त्तमाने राज्ञी श्री जालहण देवि शुको श्री पंडेरक देव श्री पार्श्वनाथ प्रतापतः थांथा सुत रालहाकेन ज्ञा भ्रातृ पालहा पुत्र सोढा सुज्जकर रामदेव धरणि यवोहीष वर्द्धमान लक्ष्मीधर सहजिग सहदेव सहियगछा ? रासां धीरण हरिचन्द्र वर देवादिभिः युतेन म - - - परम श्रेयोर्थ विदित निज गृहं पदत्तः ॥ रालहाश सत्क मानुषै असद्भिः वर्षां प्रति द्रा० एला ४ प्रदेया । शेष जनानां यत्ततां साधुभिः गोप्टिके सारा कार्या ॥ संवत् १२६६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ शनी सीयं मातृ धारमति पुनः स्तंजको उधृत । थांथा सुत रालहा पालहाभ्यां मातृ पद श्री निमित्ते स्तंजको प्रदत्तः ।

नाना

मारवाडके षाली जिलेमें यह ग्राम है ।

(९९३)

संवत् १२०३ वैशाख सुदि १२ सोम दिने श्री महंत नूरिभिः प्रतिष्ठितः ममन्तः ॥

(२३०)

(886)

संवत् १४२६ माह अदि ७ चंद्रे श्री विद्याधर गच्छे मोठ ज्ञा० ठ० रत्न ठ० अजु
ठं० तिहणा पुत्र मोद देव श्रेयसे भातू टाहाकेन श्री पार्व पंचतीर्थी का० प्र० श्री उ
देव सूरिभिः ।

(887)

सं० १५०५ वर्षे माह अदि ६ शनौ श्री ज्ञावकीय गच्छे महावीर विंमं प्र० श्री शां
सूरिभिः - - - - - षभ ण जिन - - - - - भवतं

(888)

सं० १५०६ वर्षे माघ अदि ११ सा० दूदा वीर मं महिया - - - लहराज - - -

(889)

सं १५०६ वर्षे माघ अदि १० गुरी गोत्र वेलहस ज० ज्ञातीय सा० रत्न भार्या रतना
दे पुत्र दूदा वीरम माह पादे पलूणा देव राजादि कुटुम्ब युतेन श्रीवीर परिकरः कारित
प्रतिष्ठितः श्री शांति सूरिभिः ।

(890)

॥ ॐ ॥ अथ संवत्सरे नृप विक्रमादित समयात् संवत् १६५६ भाद्रपद मासा शुक्ल
पक्षे ७ सातमी तिथौ शनिवारे । श्री वैद्य गोत्रे । श्री सविथा किण्णोत्रजा । मंत्रीश्वर
त्रिभुवन तत्पुत्र पूना० तत्पुत्र मुहता चांदा तत्पुत्र मु० पेतसी तत्पुत्र मुहता नीसल १
चाइमल २ वीसन पुत्र मुहता श्री उरजन तत्पुत्र मुहता पतागढ सिवाणे साको करी
। पिता पुत्र मुहता श्री नाराइण १ सादूल २ सूजा ३ सिंघा ४ सहसा ५ मुहता
नारायण नुराणा श्री अमर सिंघ जी मथा करेने गांव नाणो दीयो मुहता नाराइण
रहट १ साइमल देव श्री महावीर नु सतर अद पूजा सारु केसर दीवेल सारु दीघो

होदूनां वरोस । उत्थापे तियेनुं गाईरी--सुंस । तुरक उत्थापे तियेनुं सुयररी सुंस
 वले - - - - को उथाप जो - - - गांव नाणारो चढियो गांव वीबलाणै - - वी-सि-ए ।
 इ जाएन - गांव - दम १ चेढियो - - - - तको उथाप जो । वीजोको उथापसी तिणनु
 गदहड गाव मुहता श्री नारायण ञार्या नवरंगदे तत्पुत्र सु० श्री राज - - जणयल - - -
 दा पुत्री जपमी - - - - नाराइण बिजी ञार्या नवलदे पुत्र जसवंत १ सहितं श्री - - -
 गच्छै महारक श्री सिद्ध सूरि विद्वमाने - - - । ० श्री - - - - चंद शिष्य चांपा लिपितं ।
 ए - - - - जकी - - - तिणु - - - - ।

लालराई ।

मारवाड़के वाली जिलेके समीप इस ग्रामके एक प्राचीन खंडर जैन मंदिरमें
 यह लेख है ।

(४९१)

संवत् १२३३ वैशाख सुदि ३ संनाणक ञोक्का राज पुत्र लाखण पाल राज पुत्र अजय
 पाल तस्मिन् राज्ये वर्त्तमाने चा० श्रीवडा पडि देह वसी सू० आसधर समस्त सीर
 सहितै खाडि सीर जव मध्यात् जवा से ४ गूजरी जात्रा निमित्तं श्री शांति नाय देवस्य
 दत्ता पूषयाय यः कोपि लुप्यते स पापो न छियतेमंगल भवतू ॥ तथा ञडिया उख
 अरहहे आसधर सीरोइय समस्त सीरण जवा हरीयु १ गूजर दयात्रहि वीन्हस्य
 पुण्यार्थं ॥ १ ॥

(४९२)

ॐ ॥ संवत् १२३३ ज्येष्ठ वदि १३ गुरौ लव्हं श्री नडूले महाराजाधिगज श्री
 केरहण देव राज्ये वर्त्तमानः श्री कीर्तिपाल देव पुत्रे सिनापकं ञोक्का राज पुत्र छापक

(२३२)

पालह राज पुत्र अन्नय पाल राज्ञी श्री महिषल देवि सहितैः श्री शांतिनाथ देव यात्रा
निमित्तं भड्डिया उव अरघट उरहारि मध्यात् गूजर तृहार १ जवा ग्राम पंच कुल
समक्ष एतत् - - - दानं कृतं पुण्याय साक्षि अत्र वास्त - - - दूगण --- सी० देवलये०
समीपाटीय - - - पाजून आप्र - - - समक्ष आदानं - - - मितस्य २ त - - - हस्या
पातकेन लि - - - ११ ।

हठुंदी ।

मारवाड़ के गोड़वाड़ इलाके के बीजापुर के पास यह प्राचीन स्थान है ।

श्री महावीरजी का मंदिर ।

(893)

ॐ ॥ सं० १२९९ वर्षे चैत्र सुदि ११ शुके श्री रत्न प्रभोपाध्याय शिष्यैः श्री पूर्ण
चन्द्रोपाध्यायै रालक द्वय शिखराणि च कारितानि सर्वानि ।

(894)

ॐ सं० १३३५ वर्षे श्रावण वदि १ सोमे ऽद्यह समीपाटी । मंडपिकायां भां पाहट
उभां वां । पथरा महं सजन उ महं० धीणा उधण सीह उ० व० देव सिंह प्रभृति पंच
कुलेन श्री राताभिधान श्री महावीर देवस्य नेचाप्रचयं १ वर्ष स्थितिके कृत द्र० २१ अत्य
विंशति । द्रमाः वर्षं वर्षं प्रति समी मंडपिका पंच कुलेन दातव्याः पालनीयश्च
बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः यस्य यस्य - - - यदा भूमि तस्य तस्य
तदा फलं शुभं भवतु ॥

(२३३)

(895)

सं० १३३६ वर्षे श्रौष्टिको नाग श्र । श्र - - अर सीहेन सय पक्षी दत्त द्र० उन्नयं द्र ३६
समीपाटी मडपिकाद्या व्याण्टपुय माण पंच कुलेन वर्षं वर्षं प्रति आचंद्रार्क - - यावत्
दातव्याः । शुभमस्तु ॥

(896)

ओं नमो श्रीतरागाय संवत् १३४६ वर्षे श्रावण वदि ३ शुक्र दिने खहेड़ा ग्रामे
महादपाल लभारावा कर्म सीहपा - - - ।

माताजके मंदिरके स्तम्भ पर ।

(897)

॥ ॐ ॥ नमो श्रीतरागाय ॥ संवत् १३४५ वर्षे प्रथम जाद्रवा वदि ६ शुक्र दिने खहेड़ा
श्री नडूल मंडले महाराज कुल श्री सम्पंत सिंह देव राजपेत्र तन्निवृत्त ध्या ॥ श्री ऊरण
महं ललनादि पंच कुल प्रच्छति भूमि लक्ष्मराणि पञ्चा ॥ नमो नष्ट पदित्य मंडपिकायां
साधु ० हेमाकेन जाद्वि हाथीउड़ी ग्रामे श्री महावीर देव नेदावं वर्षं प्रति यथा - - क द
२४ चत्वारिंशि द्रमा० प्रदत्ता शुभ भवतु ॥ यदृत्तिर्दमुषा भुक्ता राजभि गमागदिपि ।
जस्य जस्य जदा भूमो तस्य तस्य वदा फलं ॥ कष्टूर प्रियय विषय ॥

खण्डहर में मिला हुआ पाषाण पर ।

- - - ॥ विरके - पजे रक्षा उरवा लक्ष्मणव । पण्डितानु ना - - यथायं यथायथा
जिनाः ॥१॥ ते वः पांतु जिना विनात रुमते यथायद यदृत्तिर्दमुषा प्रेमा यथायथा

श्रीखर नख श्रीगीषु विम्बोदयात् । प्रायैकादशभिर्गुणं दशशती शक्रस्य शुभमदृशांकस्य
 स्योद्गुण कारको न यदि वा स्वच्छात्मनां सङ्गमः ॥२॥ - - क - - नासत्करीलोप
 शोभितः । सुशेखर - - लौ मूर्द्धि रुढौ महीभृतां ॥३॥ अग्नि चिभ्रद्रुचिं कातां सावित्री
 चतुराननः हरिवर्मा वभूवात्र भूविभुर्भुवनाधिकः ॥४॥ सकल लोक विलोचन पंकज
 स्फुरदनं बुद्ध बाल दिवाकरः । रिपु बध्वदनेन्दु हन द्युनिः समुदपोदि विदग्ध नृप-
 स्ततः ॥५॥ स्वाम्याचार्यै र्वा रुचिर बचनैर्बर्वासुदेवाभिधाने र्वाघं नीतो दिनकर करैर्नीर
 जन्मा करो व । पूर्व्वं जैनं निजमिव यशो कारयद्दृष्टिकुण्ड्यां रम्यं हम्मर्यं गुरु हिम
 गिरेः शृङ्ग शृङ्गार हारि ॥६॥ दानेन तुलित बलिना तुलादि दानस्य येन देवाय । भागद्वयं
 व्यतीर्यत भागश्चाचार्य वर्याय ॥७॥ तस्माद्भूच्छुद्धु सत्त्वो मंमटारुयो महीपतिः ।
 समुद्र विजयी श्लाघ्य तरवारिः सद्रुर्मिकः ॥८॥ तस्माद् समः समजनि समस्त जन
 जनित लोचनानंदः । धवलो बसुधा व्यापी चंद्रादिव चन्द्रिका निकरः ॥९॥ भक्तवाधाटं
 घटाभिः प्रकटमिव मदं मेदपाठे भटानां जन्ये राजन्य जन्ये जनयति जनताजं रणं मुंज
 राजे । श्रीमाणे प्रणष्टे हरिण इव भिया गूज्ज रेशे विनष्टे तत्सैन्यानां शरण्यो हरिविव
 शरण्यः सुरणां बभूव ॥१०॥ श्री मट्टल्लभ राज भूभुजि भजैर्भं जत्य भंगां भुवं दंडैर्भण्डन
 शौड चंड सुभटै स्तस्याभिभूतं विभुः । यो दैत्यैरिव तारक प्रभृतिभिः श्री मान्महेद्रं
 परा सेनानोरिव नीति पौरुष परो नैषीत्परां निवृत्तिं ॥११॥ यं मूलादुद मूलयद्गुरु
 बलः श्री मूल राजो नृपो दर्पाधी धरणा बराह नृपतिं यद्वद्वापिः पादपं । आयातं
 भुविकां दिशी कमभिको यस्तं शरण्यो दधौ दंष्ट्रायानिव रुढ मूढ महिमा कोलो मही
 मण्डलं ॥१२॥ इत्थं पृथ्वी भर्तृभिर्नाथ मानैः सा - - - सुस्थितैरास्थितोयः । पाथो
 नाथो वा विपक्षात्स्वपक्षं रक्षा कांक्षै रक्षणे बद्ध कक्षाः ॥१३॥ दिवाकरस्वेव करैः कठोरैः
 करालिता मूर कदम्बकस्य । अशि श्रियं ताप हतोरुताप यमुन्नतं पादप वज्र
 नौघा ॥ १४ ॥ धनुर्हृत् शिरोमणे रमल चर्ममभ्यस्यतो जगाम जलधेर्गुणो गुहरमुष्य
 धारंपरं । समोयुरपि सन्मुखाः सुमुख मार्गणानां गणाः सतां चरितमद्भुतं सकलमेव

लोकोत्तरं ॥१५॥ यात्रासु यस्य वयदीर्घं विपुर्विशेषात् बह्वक्षुरंग खुरखात मही
 रजांसि । तेजोभिर्जित्तमनेन विनिर्जित त्वाद्वास्वान्विलज्जित इवात्तरां तिरा-
 मूर्त् ॥१६॥ न कामनां मनो धीमान् घ - लनां दधी । अनन्योद्धार्य सत्कायं भार धुर्योर्ध-
 तोपि यः ॥१७॥ यस्तेजोभिर्हस्करः करुणया शौद्रोदनिः शुद्धया । भीष्मो वचन वंचितेन
 वचसा घर्मेष घर्मार्तमजः । प्राणेन प्रलाय निलो यलभिदो मंत्रेण मंत्री परो रूपेण
 प्रमदा प्रियेण मदनो दानेन कर्णोर्भवत् ॥१८॥ सुनय तनयं राज्ये बाल प्रसाद मतिष्ठिप
 त्परिपतवया निःसंगो यो यज्ञत सुधीः स्वयं । कृत युग कृतं कृत्वा कृत्यं कृतात्म घमस्कृ-
 ती रकृत सुकृतीनो कालुष्यं करोति कलिः सतां ॥१९॥ काले कलावपि किलामलमेतदीयं
 लोका विलोक्य कलनातिगतं गुणौघं । पार्थादि पार्थिव गुणान्गणयन्तु सत्यानेकं व्यधा-
 द्गुणनिधिं यमितीव वेधाः ॥२०॥ गोधरयति न वाचो यच्चरितं चंद्र चंद्रिका रचिरं ।
 वाचस्पते र्वचस्वी को वान्यो वर्णयेत्पूर्णं ॥२१॥ राजधानी भुवो जसु स्तस्यास्ते हस्ति
 कुण्डिका ललाका घनदस्येव घनाढ्य जन सेविता ॥२२॥ नीहार हार हर हास हिमांशु हारि
 त्कार वारि भुवि राज विनिर्जराणां । वास्तव्य भव्य जन चित्त समं समंतात्संताप
 संपद पहार परं परेपां ॥२३॥ धौत कल धौत कलशाभिराम रामास्तना इव न यस्यां । सत्य
 परेष्य पहाराः सदा सदाचार जनतायां ॥२४॥ समद मदना लीलालापाः प - ना कृताः कुवलय
 दृशां संदृश्यंते दृशस्तरलाः परं । मलिनित मुखा यत्रोद्भृताः परं कठिनाः कुषा निविह
 रचना नीवी वंधाः परं कुटिलाः कचाः ॥२५॥ गाढोत्तुंगानि सार्द्धं शुचि कुच कलशैः
 कामिनीनां मनोज्ञै र्विर्वस्तीर्णानि प्रकारं सहं घन जघनैर्द्वैवता मंदिराणि । भ्राजंते दम्भ
 शुभाण्यतिशय सुजगं नेत्र पात्रैः पवित्रैः सत्रं चित्राणि धात्रो जन हस हृदयैर्विभ्रमैयत्र
 सत्रं ॥२६॥ मधुरा घन पर्वणां हृद्यरूपा रसाधिकाः । यत्रैतु वाटा लोकेभ्यो नाति-
 क्त्वादिदेलिमाः ॥२७॥ अस्यां सूरिः सुराणां गुरु रिव गुरुभिर्गौरवाहो गुणौघै भू पादानां
 शिलोकी वलय विलसिता नंतरानंत कीर्तिः । नान्ना श्री शांति भद्रो भवदभि भवितुं
 भासमाना समानो कामं कामं समर्था जनित जनमनः संमदा यस्य मूर्च्छाः ॥२८॥ मन्येमुना
 मुनीन्द्रेण मनोभू रूप निर्जितः । स्त्रघ्नेपि न स्वरूपेण समगन्स्ताति उज्ज्वलः ॥२९॥

प्रीत्यत्पद्माकरस्य प्रकटित विकटा शेष भावस्य सूरः सूर्यस्थेवामृतांशुं स्फुरित शुभ हवि
 वासुदेवान्निधस्य । अध्यासीनं पदव्यां यम मल विलसज्ज्ञान मालोक्य लोको लोका
 लोकावलोकं सकलमचकलत्केवल संभवीति ॥३०॥ धर्माभ्यास रतस्यास्य संगतो गुण
 संग्रहः । अज्ञग्न मार्गणेच्छस्य चित्रं निर्वर्षण वांछना ॥ ३१ ॥ कमपि सर्वगुणानुगतं
 जनं विधिरयं विदधाति न दुर्विषयः । इति कलंक निराकृतये कृती यमकृतेव कृताखिल
 सद्गुणं ॥३२॥ तदीय वचनान्निजं धन कलत्र पुत्रादिकं विलोक्य सकलं चलं दल मिवा-
 निलांदोलितं । गरिष्ठ गुण गोण्ड्यदः समुददी धरद्वीर धीरुददार मति सुंदरं प्रथम तीर्थ
 कृन्मंदिरं ॥३३॥ रक्तं वा रम्य रामाणां मणि ताराव राजितं । इदं मुख मिवा भाति भाव
 मान वरालकं ॥३४॥ चतुरस्र पट उजन घाड्डनिकं शुभ शुक्ति करोटक युक्त मिदम् । बहु
 भाजन राजि जिनायतनं प्रविराजति भोजन धाम समं ॥३५॥ विदग्ध नृप कारिते जिन
 गृहेति जीर्णं पुनः समं कृत समुद्रुताविह भवांबुधिरात्मनः । अतिष्टिपत सोप्यथ प्रथम
 तीर्थ नाथा कृतिं स्वकीर्त्तिमिध मूर्त्तामुपगतां सितांशु द्युतिं ॥३६॥ शांत्याचार्यं खि-
 पंचाशे सहस्रे शरदा मियं । माघ शुक्ल त्रयोदश्यां सुप्रतिष्ठैः प्रतिष्ठिता ॥३७॥ विदग्ध
 नृपतिः पुरा यद तुलं तुलादेर्ददौ सुदान मवदान धारिदम पोपलन्नाद्भुतं । यतो धवल
 भूपतिर्जिनपतेः स्वयं सात्मजोरघहमथ पिप्पलोप पद कूपकं प्रादिशत् ॥३८॥ यावच्छेष
 शिरस्थ मेक रजतस्थूणा स्थिताभ्युल्ल सत्पातालातुल मंडपा मल तुलामा लंघते भूतलं ।
 तावत्तार रवाभिराम रमणी गंधर्व थीर ध्वनिर्द्वामन्यत्र धिनेतु धार्मिक धियः सद्गुण
 वेला विधौ ॥३९॥ सालंकारा समधि करसा साधु संधान बंधा श्लाघ्यश्लेषा ललित विल-
 सत्तद्धिता ख्यात नामा । सृत्ताह्याखचिर विरतिदुःखमाधुर्यवर्या सूर्याचार्यं ध्यरचिरमणी
 वाति रम्या प्रशस्तिः ॥४०॥ सम्बत १०५३ माघ शुक्ल १३ रवि दिने पुष्य नक्षत्रे श्री
 ऋषभ नाथं देवस्य प्रतिष्ठा कृता महा ध्वज श्चारापितः ॥ मूलनायकः ॥ नाहक
 जिन्दज सशम्प पूरभद्रः नगपोचिस्थ श्रावक गोष्ठिकैर शेष कर्म क्षयार्थं
 संतान भवाब्धि तरणार्थं च न्यायोपाज्जित वित्तेन कारितः ॥वृ॥ परवादि दर्प
 हेतु नय सहस्र भंगकाकीर्णं । भव्य जन दुरित शमनं जिनेंद्र वर शासनं
 ॥१॥ आसीद्धी धन संमतः शुभगुणो भास्वत्प्रतापोज्ज्वला विस्पष्ट प्रतिभः

प्रभाव कलितो भूपोत्तमांगार्चिवतः । योषित्पीन पयोधरांतर सुखाभिष्वङ्ग सन्लालितो
 यः श्री मान्हारि धर्म उत्तम मणिः सद्रंश हारे गुरी ॥२॥ तस्माद्भूव भुवि भूरि गुणोपपेतो
 भूप मभूत मुकुटार्चिवत पाद पीठः । श्री राष्ट्रकूट कुल कानन कल्प वृक्षः श्री मान्बिदग्ध
 नृपतिः प्रकट प्रतोपः ॥३॥ तस्माद्भूप गुणान्वित तमा कीर्त्तः परं भाजनं संभूतः सुतनुः
 सुतोति मतिमान् श्री मंमटो विश्रुतः । येनास्मिन्निज राज वंश गगने चंद्रायितं चारुणा
 तेनेदं पितु शासनं समधिकं कृत्वा पुनः पालयते ॥४॥ श्री बलभद्राचार्यं विदग्ध नृप पूजितं
 धर्मभ्यर्च्य । आचंद्रार्कं यावद्वत्तं भवते मया प्रपालयते सर्वम् ॥५॥ श्री हस्ति कुंडिकायां
 चेत्य गृहं जन मनोहरं ज्ञत्त्या । श्री मद्रुलभद्र गुरोर्यद्विहितं श्री विदग्धेन ॥६॥ तस्मि-
 ल्लोकान्समाहूय नाना देश समागतान । आचंद्रार्कं स्थितिं यावच्छासनं दत्त मक्ष्यं ॥७॥
 रूपक एको देयो बहतामिह विंशतेः प्रब्रह्मणानां । धर्म - - - क्रय विक्रये च तथा ॥८॥
 संभूत गंड्या देयस्तथा बहंत्याश्च रूपकः श्रेष्ठः । घाणे घटे च कर्पो देयः सर्वेण परिपा-
 द्या ॥९॥ श्री महलोक दत्ता पत्राणां चोल्लिका त्रयोर्दशिका । पेल्लक पेल्लक मेतद्
 द्यूत करैः शासने देयं ॥१०॥ देयं पलाश पाटक मर्यादावर्तिक - - - प्रत्यर घटं धान्या-
 दकं तु गोधूम यव पूर्णं ॥११॥ पेड्डा च पंच पलिका धर्मस्य विशोपक स्तथा जारे ।
 शासन मेतत्पूर्वं विदग्धेन राजेन दत्तं ॥१२॥ कर्प्पासकांस्य कुंकुम पुर मांजिष्ठादि
 सर्व्व भांडस्य । दश दश पलानि जारे देयानि विक - - - ॥१३॥ आद्यानादे तरमाद्भाग
 द्यूय महंतः कृतं गुरुणा । शेषस्तृतीय भागो विद्या धनमात्मनो विहितः ॥१४॥ राज्ञा तत्पुत्र
 पोत्रैश्च गोष्ठ्या पुरजनेन च । गुरुदेव धनं रक्ष्यं नोपेक्ष्यं हितमीप्सुभिः ॥१५॥ दत्तं
 दाने फलं दानात्पालिते पालनात्फलं । ज्ञिते पेल्लिते पापं गुरुदेव धनेधिरं ॥१६॥ गोधूम
 मुद्ग यव लवण रालकादेस्तु मेयजा तस्य । द्वैणम् प्रति माणकमेक मत्र नवैण दानव्यं
 ॥१७॥ बहुभिर्व्वस्तुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमिरतन्य तस्य
 तदा फलं ॥१८॥ राम गिरि नंद कलिते विक्रम काले गते तु शुचिमाने । श्री मद्रुलभद्र
 गुरोर्द्विदग्ध राजेन दत्तं निदं ॥१९॥ नवस्तु शतेषु गनेषु तु पद्मवती समधि केषु मायस्य
 कृष्णाकादश्यामिह समर्पितं मंमट नृपेण ॥२०॥ यावद् भूयस् भूमि ज्ञानु ज्ञानं जार्गार्या

परम श्रावकेण संवत् १२३६ वैशाख सुदि ५ गुरी सकल त्रिलोकी तलाजोग भ्रमेण
 परिश्रांत कमला विलासिनी विश्राम विलास मंदिरं अयं मंडपो निर्मापितः ॥ तथा हि ॥
 नाना देश समागतैर्नवनवैः स्त्री पुंसवर्गैर्मुहु र्यस्यै -- -- पाव लोकन परैर्नौ तृप्तिरासाद्यते ।
 स्मारं स्मारमघो यदीय रचना वैचित्र्य विस्फूर्जितं तैः स्वस्थान गतैरपि प्रतिदिनं सोत्कं-
 ठमावर्ण्यते ॥ ४ ॥ विश्वंभरावर वधू तिलकं किमेतललीलारविंदमथ किं दुहितुः पयोधेः ।
 दत्तं सुरै रमृत कुंड मिदं किमत्र यस्यावलोकनविधौ विविधा विकल्पाः ॥ ५ ॥ गर्त्तापूरेण
 पातालं --- ष महीतलं । तुंगत्वेन नजो येन ध्यानशो भुवन त्रयं ॥ ६ ॥ किं च ॥ स्फूर्ज-
 ष्योमसरः समीनमकरं कन्यालिकुंभाकुलं मेपाठय सकुलीरसिंह मिथुनं प्रोद्यद्भवृपालं-
 कृतं । ताराकैरवसिंदुधाम सलिलं सद्राजहंसास्पदं यावत्तावदिहादिनाथ भवने नद्यादसी
 मंडपः ॥ ७ ॥ कृत्तिरियं श्री पूर्णं भद्र सूरीणां ॥ भद्रमस्तु श्री संवाय ॥

ओं ॥ संवत् १२२१ श्री जावालिपुरीय कांचनगिरि गढस्योपरि प्रभु श्री हेमसूरि प्रत्रो-
 धित गूर्जर धराधीश्वर परमार्हत चौलक्य ॥ महाराजाधिराज श्री कुमारपाल देवकारिते
 श्री पार्वनाथ सत्कमूल विंश सहित श्री कुवर विहारान्निधाने जैन चैत्ये । सद्दिधि प्रथ-
 र्चनाय बृहद्गच्छीय वादींद्र देवाचार्याणां पक्षे जाचंद्रार्कं समर्पिते ॥ सं० १२१२ वर्षे
 एतद्देशाधिप चाहमान कुल तिलक महाराज श्री समर सिंह देवादेशेन जां० पामू पुत्र जां०
 यशोवीरेण समुद्भूते । श्री मद्राजकुलादेशेन श्री देवाचार्य गिर्यैः श्री पूर्णं देवाचार्यैः ।
 सं० १२५१ वर्षे ज्येष्ठ सु० ११ श्री पार्वनाथ देवे तोरणादीनां प्रतिष्ठा कार्ये कृते । मृत
 शिखरे च कनकमय ध्वजा दंडस्य ध्वजा रोपण प्रतिष्ठायां कृतायां ॥ सं० १२१८ वर्षे
 दीपोत्सव दिने अग्निवत् निष्पन्नप्रेक्षा मध्य मंडपे श्री पूर्णदेव गुरि गिर्यैः श्री रामचं-
 द्राचार्यैः सुवर्णमय कलसरोपण प्रतिष्ठा कृता ॥ सुप्तं भवतु ॥ ४ ॥

(२१०)

(१००)

संवत् १२९४ वर्षे श्री मालीय श्रे० वीसल सुत नाग देवस्तत्पुत्रो देरहा सलक्षण
भांखाखाः भांवा पुत्रो वीजाकस्तेन देवद सहितेन पितृभां श्रेयोर्थं श्री जावालिपुरीय
श्री महावीर जिन चैत्ये करोदि कारिताः ॥ शुभं भवतु ॥

(१०१)

संवत् १३२० वर्षे माघ सुदि १ सोमे श्री नाणकीय गच्छ प्रतिबद्ध जिनालये महाराज
श्री चंदन विहारे श्री क्षीं व रावेश्वर स्थान पतिना महारक रावल लक्ष्मीधरेण देव श्री
महावीरस्य आसोज मासे अष्टाहिका पदे द्रम्माणां १०० शतमेकं प्रदत्तं ॥ तद्व्याज मध्यात्
मठ पतिना गोष्ठिकैश्च द्रम्म १० दशकं वेषनीयं पूजा विधाने देव श्री महावीरस्य ॥

(१०२)

ओं संवत् १३२३ वर्षे माग सुदि ५ बुधे महाराज श्री चाचिग देव कल्याण विजय
राज्ये तन्मुद्रालंकारिणि महा मात्यः श्री जक्षदेवे ॥ श्री नाणकीय गच्छ प्रतिबद्ध महा-
राज श्री चंदन विहारे विजयिनि श्री महनेश्वर सूरौ तैलं गृह गोत्रोद्भवेन महं नर-
पतिना स्वयं कारित जिन युगल पूजा निमित्तं मठ पति गोष्ठिक समक्षं श्री महावीर देव
भांडागारे द्रम्माणां शनाहुं प्रदत्तं ॥ तद्व्याजोद्भवेन द्रम्माहुं न नेचकं मासं प्रति
करणीयं ॥ शुभं भवतु ॥

(१०३)

ओं ॥ संवत् १३५३ वर्षे वैशाख वदि ५ सोमे श्री सुवर्ण गिरौ अद्येह महाराज कुठ
श्री सामंतसिंह कल्याण विजय राज्ये तत्पादपद्मोपजीविनि ॥ राज श्री कान्हडदेव
राज्य घुरामुद्भवमाने इहैव वास्तव्य संघपति गुणधर ठकुर आंघड पुत्र ठकुर जस पुत्र
सोनी महणसीह भार्या मारुहणि पुत्र सोनी रतनसिंह णाखी मारुहण गजसीह तिहुणा
पुत्र सोनी नरपति जयता विजयपाल नरपति भार्या नायकदेवि पुत्र लखमीधर भुवण

पाल सुहृदपाल द्वितीय भार्या जालहण देवि इत्यादि कुटुंब सहितेन भार्या नायक देवि
 श्रेयोपे देव श्री पार्श्वनाथ चैत्ये पंचमी बलि निमित्त निश्रा निक्षेप हहमेकं नरपतिना
 दत्तं तत् भाटकेन देव श्री पार्श्वनाथ गोष्ठिकैः प्रति वर्षः आचंद्रार्कं पंचमी बलिः
 कार्या ॥ शुभं भवतु ॥ छ ॥

महावीरजी का मन्दिर ।

(१०४)

संवत् १६८१ वर्षे प्रथम चैत्र वाद ५ गुरौ अवोह श्री राठोड़ वंशे श्री सूरि सिंह पह
 श्री महाराजे श्री गजसिंह जी विजयि राज्ये.....मुहणोत्र गोत्रे वृद्ध उसवाल ज्ञातीय
 सा० जेसा भार्या जयवंत दे पुत्र सा० जयराज भार्या मनोरथदे पुत्र सा० सादा सुभा
 सामल सुरताण प्रमुख परिवार पुण्यार्थं श्री स्वर्ण गिरि गढ़ादुर्गी परित्थित श्री मत
 कुमार विहारे श्री मती महावीर चैत्ये सा० जैसा भार्या जयवंतदे पुत्र सा० जयमल जी
 वृद्ध भार्या सरूपदे पुत्र सा० नहणसी सुन्दरदास आस करण लघुभार्या लोहागदे पुत्र सा०
 जगमालदि -- पुत्र पौत्रादि श्रेयसे सा० जयमल जी नामना श्री महावीर बियं प्रिष्टा
 महोत्सव पूर्वकं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री तपा गच्छ पक्षे सुविहिताचारकारकशिष्या-
 चार वारक साधु क्रियोद्वार कारक श्री ६ आणंद विमल सूरि पह प्रभाकर श्री विजय
 दान सूरि पह शृङ्गार हार महा म्लेच्छाधिपति पातशाह श्री अकबर प्रतियोगक
 तद्वत् जगद्गुरु विरुद धारक श्री शत्रुंजयादि तीर्थ जीजीयादि कर मोचक पणमान
 जमारि प्रवर्त्तक प्रहारक श्री ६ हीर विजय सूरि पह मुकुटायमान ज० श्री ६
 विजय सेन सूरि पह संप्रति विजयमान राज्य सुविहित शिरः शेरगायमान प्रहा-
 रक श्री ६ विजय देव सूरीश्वराणामादेशेन महोपाध्याय श्री शिवागगर गणि
 शिष्य पण्डित श्री सहज खानर गणि शिष्य पं० जय नागर गणिना श्रेयसे कारकन्य ॥

(२४२)

(१०५)

संवत् १६८३ अषाढ वदि गुरी श्रवण नक्षत्रे श्री जालोर नगरे स्वर्ण गिरि दुर्गे
महाराजाधिराज महाराजा श्री गजसिंह जी विजय राज्ये महणोत्र गोत्र दीपक मं
अचला पुत्र मं जेसा भार्या जेवंत दे पु० मं श्री जयलला नाम्ना भा० सरूपदे द्वितीय
सुहागदे पुत्र नयणसी सुंदरदास आसकरण नरसिंहदास प्रमुख कुटुंब युतेन स्व श्रेयसे
श्री धर्मनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छ नायक महारक श्री हीर विजय सूरि
पहालंकार महारक श्री विजय सेन - - - ।

(१०६)

संवत् १६८३ वर्षे अषाढ वदि ४ गुरी सूत्रधार ऊद्धारण तत्पुत्र तोडरा इसर टाहा ।
दूहा हाराकेन कारापितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छ भ० श्री विजय देव सूरिभिः ॥

(१०७)

संवत् १६८३ वर्षे अषाढ वदि ४ गुरी । महणोत्र गोत्र । प्र० जमल भार्या सरूपदे
समर्पित । श्री सुपाश्व विंवं । प्रतिष्ठितं तपागच्छे प्र० - - ।

(१०८)

संवत् १६८३ वर्षे श्री अजित विंवं प्र० त० प्र० श्री विजय देव सूरिभिः ॥

(१०९)

संवत् १६८४ वर्षे माघ सुदि १० सोमे श्री मेड़ता नगर वास्तव्य उकेश ज्ञातीय
प्रामेचा गोत्र तिलक सं हर्ष लघु भार्या मनरंगदे सुत संघपति सामीदासकेन श्री
कुंधुनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तपा गच्छे श्री तपा गच्छाधिराज महारक श्री
विजय देव सूरिभिः ॥ आचार्य श्री विजयसिंह सूरि प्रमुख परिवार परिकरितः ॥
श्रीरस्तुः ॥

(२४३)

(910)

संवत् १६८३ वर्षे आ० व० गुरी अ० लठांक श्री माण विप्र आ० विजयदेव सूरिभिः ।

(911)

चौमुखजी का मन्दिर ।

संवत् १६८१ वर्षे प्रथमा चैत्र वदि ५ गुरी श्री श्री मुहणोत्र । गोत्र सा० जेसा भार्या जसमादे पुत्र सा० जयमाल भार्या सोहागदेवी श्री आदिनाथ विवं कारित प्रतिष्ठा महोत्सव पूर्वकं प्रतिष्ठितं च श्री तपा गच्छे श्री ६ विजय देव सूरीणा मादेशेन जय सागर गणिना ।

हरजी

यह मारवाड़के जालोर के पास गांव है ।

(912)

संवत् १२३१ मार्गा सुदि ८ ज० शांति शिष्येण नेमिचंद्रेण आत्म श्रेयार्थं प्रदत्तः ॥

(913)

संवत् १५१७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३-वा० श्री मुनिशेपर शिष्य दया रत्न श्री वीरस्य कथा केकृत ॥

(914)

संवत् १५४७ वर्षे फागुण सुदि ११ दिने रा० श्री विद्यास म० सोम रात्रे आः - -

(२४४)

(915)

श्री शीले सार्थो मतिर्यस्यातः स्पृहा वीर देशिते । महिमा कीर्त्ति लेखा स्या । तस्य
देवेषु दुर्लभा ॥

(916)

-- श्री पञ्जु वधू असोचय -- बहुया भज्जा सुहंकर वणिस्स । सो भन सरावि-
योए धम्मत्थम कारि लग एसा ॥ १ ॥

(917)

--- चंदण वाल नासा --- षा मति सिरी सा --- षी --- लगा कारिता

जूना ।

यह मारवाड़का वाडमेर इलाके में गांव है ।

(918)

ओं ॥ संवत् १३५२ वैशाख सुदि ४ श्री बाहड मेरौ महाराज कुल श्री सार्वत सिंह
देव कल्याण विजय राज्ये तन्निष्ठुक्त श्री २ करणे मं० चीरासेल वेलाउल मां० मिगल
प्रभृतयो धर्माक्षराणि प्रयच्छन्ति यथा । श्री आदिनाथ मध्ये संतिष्ठमान श्री विघ्न
मर्दन क्षेत्रपाल श्री चउंडराज देवयोः उभय मार्गीय समायात सार्थ उष्ट्र १० वृष २०
उभयादीप ऊर्द्धे सार्थे प्रति द्वयोर्देवयोः पाइला । पक्षे भीम प्रिय दशाविशापक अर्द्धादिन
ग्रहीतव्याः । ओसो लागो महाजनेन मानितः ॥ यथोक्तं बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः
सगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलं ॥ १ ॥ छ ॥

(११५)

जूना वैडा (मारवाड)

(919)

ॐ ॥ संवत् ११४४ माघ सु० ११ अं पतेरं प्रदेव्यास्तु सूनुना जेज्जकेन स्वयं प्रपूर्ण
वज्र मानाद्यैर्मिलित्वा सर्व वांधवैः ॥ १ ॥ खल्लके पूर्ण भद्रस्य वीरनाथस्य मंदिरे
कारिता वीर नाथस्य श्रेयसे प्रतिमानघा ॥ २ ॥ सूरै प्रद्योतनार्यस्य ऐन्द्र देवेन सूरिणा
भूषिते सांप्रतं गच्छे निःशेष नय संजुते ॥ ३ ॥

(920)

संवत् १६४४ वर्षे फागुण दि १३ उक्तेषु ज्ञातीय चापणे गोत्रे संधयी टीलु भाग्यां दीदम
दे पुत्र सं० गोपा भाग्या गेलमदे पुत्र रूपा चंद्रा श्री राट्टुलिया भाग्या मन भगोदे पुत्र
भोजा भा० ना - - - - आ पार्श्वनाथ विंश कारित तथा गच्छ महारक श्री श्री हीम
विज - - - - ।

(921)

संवत् १३४७ वर्षे वैशाख सुदि १५ रवौ श्री उदये गोत्रे श्री सिद्धा वार्य मनाने श्री
बेल्हू भा० देम उतत्पुत्र श्री० जन सीहेन सुहृदुन्देन ज्ञातन श्रीदमे पार्श्वनाथ विंश कारित
प्र० श्री देव गुप्त सूरिभिः ॥

संवत् १५०७ वर्षे माहि सुदि १ रवौ प्र० म० श्री म० राट्ट पु० श्री म० भा० विंश कारित
पु० इगर सहितेन स्व पुण्यार्थे श्री विंश कारित विंश कारित प्र० श्री म० राट्ट पु० श्री म० भा०
वीर्ति सूरि जि० माहरेण्यु ग्रामे कारित ।

(१४६)

(923)

सं० १६३० वरषि वैशाख वदि ८ दिने श्री वहडा ग्रामे उसवाल सुते गोत्र सीलाकी
बाघणे सागासाहा भी दाभा० खेमलदे पुत्र राजा भार्या सेवादे पुत्र माना कमरसी श्री
कुंथुनाथ विवं श्री हीर

(924)

सं० १५३० वर्षे सा० व० ६ प्राग्वाट ज्ञाति व्य० चाहड भार्या राणी पु० ठय० वेला प्रमुख
कुटुम्ब युतेन स्व श्रेयसे श्री संभवनाथ विवं का० प्र० तपा श्री लक्ष्मी सागर सूरिभिः
चुंपरा ग्रामे

(925)

सं० १६३० वर्षे वैशाख वदि ८ दिने श्री वहडा ग्राम उसवाल ज्ञातीय गोत्र तिळहरा
सा० सूदा भार्या सीहलादे पुत्र नासण वीदा नासण भार्या न काग देवीदा भार्या
कनकादे सुत वला श्री आदिनाथ विवं कारापित श्री हीर विजय सूरिभिः प्रतिष्ठितः ॥

(926)

सं० १५१५ वर्षे माघ शु० १५ उकेश लोढा गोत्र सा० फांजू आ० कपूरी सुत सा०
वीरपाठेन मा० गांगी पुत्र पनर्वल कर्मसी भातृ दिलहादि युतेन श्री संभवनाथ विवं
कारित प्रतिष्ठितं तपा श्री रत्न शेखर सूरिभिः ॥

(927)

सं० १६२३ वर्षे वैशाख मासे शुक्रवारे १० तिथी इडरनगर वास्तव्य उसवाल ज्ञातीय
सं० श्री । लडुजा सुत सं० जसा सं० श्री रामा महा थाधेन भार्या रला । दम० कडूआ

(२४७)

म० सिंघराज प्रमुख सकल कुटुंब युतेन श्री शांतिनाथ विंवं कारितं । श्री श्रीतपागच्छ
शुभप्रधान विजय दान सूरि पट्टे श्री हीर विजय सूरिभि प्रतिष्ठितं । वैशाख सुदि
दशमी दिन ॥

(२४८)

संवत् १६३४ वर्षे माघ सु० ६ उप० ज्ञाती गादहीया गोत्रे सा० कोहा ज्ञा० रतनादे
पु० जाका ज्ञा० यस्मीदे पु० हराजावड मेरुदि साहि तिथी सति मतं श्री वास पूज्य
विंवं कारि० श्री वपु श्री कुकुदाचार्य संताने प्र० देव गुप्त सूरिभिः ॥ श्री ॥

(२४९)

सं० १४२२ श्री सर प्रभु सूरि उपदेशेन प्रतिष्ठितं ।

(२५०)

संवत् १६४४ वर्षे फागुण वदि १५ उपकेश ज्ञातीय वाहडा गोत्रे - - - - संभवनाथ
- - - - लघ गछ लघ श्री श्री हीर विजर सूरि ।

नगर गांव (मारवाड)

(२५१)

संवत् १५१६ वर्षे पौषप वदि ११ दिने गुरुवारि श्री राहूउड राज्ये श्री सोभ्र थंम पुत्र
श्री श्री वयं रसरुल नरेस्वरेण यांघत्र सामंत सरहा पुत्र इस्व मुख सपरिवारेण तेज थाई
प्ररतार ज्ञाती महिप पुण्यार्थं गोविंदराजेन श्री श्री महावीर चैत्ये वा० मोदराज गणि
उपदेशेन पट्टे श्री वांघव मं० घारा पुत्र थायल नंदाही पुत्र नालहा मं० जाणा मं० दे०
कट प्रमुख श्री संघ समु मटां पट्टे श्री वाद्यमानो चिरं जयातः शुभं भवतु नारदेन लपतं ॥

(२४८)

सांचोर (मारवाड)

(932)

स्वस्ति श्री संवत् १२२५ वर्षे वैशाख वदि १३ दिने श्री सत्य पुर महा स्थाने राज श्री भीमदेव कल्याण विजय राज्ये उपकेश ज्ञातीय मंडारी मंजग सिंह पुत्र मंडारी पालहा सुत छोवाकेन वृद्ध भातृ भ० साम वधू घासकितेन श्री महावीर चैत्ये आत्म श्रेयसे चतुष्किका उद्धारः कारितः ॥

रत्नपुर ।

मारवाडके जसवंत पुरा इलाके में यह स्थान भी बहुत प्राचीन है ।

(933)

ॐ संवत् १२३८ पोष वदि १० वला० नागू पुत्र श्रे० उद्दरण भार्यया श्रे० देवणाग पुत्रिकया उत्तम परम श्राविकया स्व श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोयं कारितः ॥

(934)

ॐ ॥ संवत् १२३८ पोष वदि १० श्रे० आंश कुमार पुत्र श्रे० घवल भार्यया वला० नागू पुत्रिकया संतोष परम श्राविकया स्व श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ देव चैत्य मंडपे स्तंभोयं कारितः ॥

(935)

ॐ ॥ संवत् १३३३ वर्षे माघ सुदि १ प्रतिपदायां महामण्डलेश्वर राज श्री श्राविक देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त महामात्य श्री जारवा प्रभृति पंच कुल प्रतिपत्ती रत्न पुरे देव श्री पार्श्वनाथाय पोष कल्याणिक यात्रा निमित्तं मह माघ

सुत महं मदन सुंग महं धीणां । श्री कुम्भरसिंह सुत महं जदल प्रभृति पंच कुलेन श्री
 पार्श्वनाथः देव प्रतिवद्गु श्री चैत्र गच्छीय श्रीदेवचंद्र सूरि संताने श्री अमरचंद्र सूरि
 शिष्य श्री अजित देव सूरिणा मुपदेशेन हहं दूय भूमिः प्रदत्ता आ चंद्रार्कं नंदतु ॥
 बहुभिर्बसुधा भुक्ता राजभिः सुगरादिभिः । यस्य यस्य यदा भूमि स्तस्य तस्य
 तदा फलं ।

(१३६)

संवत् १३४८ वर्षे चैत्र सुदि १५ गुरावद्येह रत्नपुरे महाराज कुल श्री सांवत सिंह ।
 कस्याण विजय राज्ये तन्नियुक्तमहं कदुआ प्रभृति पंच कुल प्रतिपत्तौ श्री पार्श्वनाथ
 प्रतिवद्गु महा महणा श्री० सांता महं विजयपाल गो० लक्षण प्रभृति समस्त गोष्ठिकानां
 विदितं अह्यराणि प्रयच्छंति यथा रत्नपुर वास्तव्य गूर्जर न्यातीय धे० राजा सुत वादा
 गांगा सुत मंडलिक मदन प्रवृत्ति कानां देव श्री पार्श्वनाथ प्रति वद्गु तोटक प्रवेश
 द्वार दक्षिण हस्त प्रथम हहात् द्वितीय हह श्री० गांगा श्रीयोयं वादा सत्क देव कुलिका
 विंश पूजापनार्थं श्री पार्श्वनाथ देवेन गोष्ठिकैः । विदितं हहं समर्पितं । अस्य हह
 निरुद्ध प्रतिदेव श्री पार्श्वनाथस्य श्री वाचकेन वीसल प्रीययाय एक विंशसत्याधिक
 शत मेकं प्रदत्तं । हह मिदं चत्तुर्भिः गोष्ठिकैः संमिलतै भूत्वा ज्ञाहक संख्या करणीया
 स्वात्मीय परिणां श्रीष्टि वादा भुक्तक सांश्र विनैः ज्ञाहके हहं कस्यापि नार्पणीयं । तथा
 सत्क उत्तपत्ति द्यय कर्ण वाणगोष्ठिकानु विना एकाकिनैः न कर्त्तव्या । उत्तपत्ति मध्यात्
 देव कुलिकाया शिवाणां नेचकप देवी० द्र २ । ३ वर्षं प्रतिदातव्या उत्तपत्ति मध्यात्
 हहे पत्ति दुसित पदे कमठाय कारापनीया । यच्च ज्ञाहक स्वक द्रव्यं वदंति नत् पोप
 कस्याणक दिने देव कुलिकाया विंश जोग करणीय । उरितं द्रव्यं श्री पार्श्वनाथ सत्क
 नालि कार्यां यत्र । न्यां खेपनीयं निक्षेप उचार गोष्ठिकैः करणीय । अत्र यतान महा
 ब्रह्मण मत्तं श्रीष्टि सोता मत्तं धराणे गतो वा हस्तेन महं विजय पाठ मत्त । गोष्ठिक
 उष्या मत्तं ॥ ४

(२५०)

बिलाडा (मारवाड)

(१३७)

सं० १८०३ वर्षे शाके १६६८ प्रवर्त्तमाने मगशिर सुदि २ दिने सोम वारे महाराज राज राजेश्वर महाराजा जी श्री अजयसिंह जी कुंवर श्री रामसिंह जो विजय राज्ये वृद्धत म्बरतर श्री आचार्य गच्छे । महारक श्री जिन कीर्त्ति सूरि जी वर्त्तमाने सति । श्री बिलाडा नगरे कटारीया कलावत साह श्री तुंता जी पुत्र गिरधरदासजीकेन जिनालय करापितः स्यान्को द्यमः उपाध्यायजी श्री करम चंद हरष चन्दाभ्यां कृतः कथायत श्रावकाणामपि विशेषोपदेशो दत्तस्ते नाथ श्री सुमतिनाथ जी देव सो जातः - - - - - द्रपर भीषन कमाभ्यां कृतः उपाध्याय श्री करमचंद गणि पं० हरषचंद गणि पं० प्रभापसी गणि प्रमुख सपरिकरेन विव-श्री भवतु ।

बोईया (मारवाड)

(१३८)

शुभत् १०५० आषाढ वदि ११ रवा सुदपद्र वास्तव्य श्रावक साम्पण भार्या जिसर्वां सुत रोहित रामदेव श्रावदेव वृद्धं सहितेन राम्यदेवेन स्तंभ लता प्रदत्ता द्रा० २० ।

(१३९)

श्रीः संवत् १०५० आषाढ वदि ११ रवौ वृद्धविव वास्तव्य र० रोहित सुत धांधल * सुत सुत धर साकृत्काम्यां मातृ धियमप्रति श्रेयार्थ स्तंभ लता - - - - - द्रा० २०

(२५१)

कोटार (गोड़वाड़)

(१४०)

संवत् १३३५ वर्षे श्रावण वदि १ सोमेऽद्यैह समाण . . . सउ ि . . . या प्रा०
 इनउ . . . पयरा महं रुजन ठ० मह भा . . ठ घणसीह ठ देवसीह प्रभृति पञ्च
 कुलेन श्रीधात भिधान श्रीमहावीर देवस्य ने च के - - - वर्ष स्थितके कृत द्र २४ चतु-
 विंशति द्रम्माः वर्षे वर्षे प्रति - मी मंडपिका पंच कुलेन दातव्याः ॥ पाठनीया शन ॥
 बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिः सगरादिभिः यस्य यस्य यदा भूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥
 पुत्रं भवतु ।

(१४१)

सं० १३३६ वर्षे श्रोष्ठि को सीहत चयपने दत्त १२३ - यउ ३६ ग - प - १ म् वा -
 या स्वस्ति यमाण पञ्च कुलेन वर्षे वर्षे प्रति - - - या दातव्याः ॥

किंगडू ।

मारवाड़ के मालानी परगने में यह स्थान प्राचीन है । हिन्दू-बौद्ध-जैन-संन्यासियों के
 स्थान का नाम किराट कूप या लौर लैनियो के प्रसिद्ध मयसि कुम्हार गाँव के रूप
 में जैन धर्ममें दीक्षित होने के पूर्व कई-कुम्हार कुम्हार मयसि कुम्हार यथागत
 था । काल के चक्र से इस समय उन देवालयों की ध्वस्त स्थिति का दर्शन किया जा सकता
 है ।

ॐ नमः सरवभूय । नमोऽस्तुते नमोऽस्तुते नमोऽस्तुते नमोऽस्तुते नमोऽस्तुते नमोऽस्तुते
 नमोऽस्तुते नमोऽस्तुते नमोऽस्तुते नमोऽस्तुते नमोऽस्तुते नमोऽस्तुते नमोऽस्तुते

विष्णु (भस्म) विभूषणस्य । गवर्धः स कोपि हृदि यस्य पदं करोति गीरी जितं च चिर-
 वल्कल वर्षे दर्शात् ॥२॥ वशिष्ठ - - - - - भूपिते ऋद्ध भूधरे । सुरभ्याः
 परमाराणां वंशो - - - - - नल कुंडतः ॥३॥ तत्रानेक मही पाल - - - - - सिंधु
 धिराजो महाराज - - - - - रणे समभून्मरु मंडले ॥४॥ निरर्गल मिलद्वैरि - - -
 - - - - - प्रतापो ज्वल दूषलः ॥५॥ शंभुवद् भूरि भूमीशाभ्यर्चनीयो भू - - - -
 सूः ॥६॥ खड्ग रणत्कार रावणो लवण वैरिहं भवः ॥ - - - - - ॥७॥ सिंधु राज घरा
 धार घरणी घर धाम वान ॥ मा - - - - - ॥८॥ जो भवत्त स्मात् सुर राजो हराज्ञया
 देव राजेश्वर- - - - - ॥९॥ - - - - - मपहाय मही मिमां । मन्ये कल्प
 द्रुमः प्रायाद दृश्यक - - - - - ॥१०॥ - - - - - दारणात् । श्री मद्दुर्लभ राजोपि
 राजेंद्रो रंजितो - - - - - ॥११॥ - - - - - धंधुक - तः । येन दुर्ध्वार वीर्येण
 भूपितं मरु मंडलं ॥ १२ ॥ धर्म करो वभू - - - - - कृष्ण राजो महा शब्द विभूषितः
 ॥ १३ ॥ तत्पुत्रः सोच्छ्रु राजारुख्यः च्य - - - - - स्व - - - - - कल्पद्रुमो भवत् ॥ १४ ॥ तस्मा
 दुदय राजारुख्यो महाराज - - - - - मंडलीक पदाधिकः ॥ १५ ॥ प्राचोद् गौड कर्णाट
 मालवोत्तर पश्चिमं । - - - - - कृ - शजं ॥ १६ ॥ प्राश्च सिंधु राज भूपालात्पितृ पुत्र क्रमा-
 त्पुनः । तस्मादुदय राजश्च पुत्रः सोमेश्वरः सुतः ॥ १७ ॥ उत्कीर्ण मपि यो राज्य मुदुध्रे
 भुज वीर्यतः । जयसिंह महिपालात् - - - - - यद्वं - ॥ १८ ॥ - - - - - अतश्च नव गत वर्षे ११८६
 १२०० विक्रम भूपतेः प्रसादा उजयसिंहस्य सिंदुराजस्य भू भुजः ॥ १९ ॥ श्री सोमेश्वर
 राजेन सिंधु राजपुरोद्भवं । भूपो निर्व्याज शौर्येण राज्य मेतत्समुद्भूतं ॥ २० ॥ पुनर्द्वादश
 संख्येषु पञ्चाधिक शते १२०५ प्वलं । कुमार पाल भूपालात् सप्रतिष्ठ मिदं कृतं ॥ २१ ॥
 - - - - - रूप मात्मोयं शिव कूप समन्वितं । निजेन क्षत्र धर्मेण पालयामास यश्चिरं ॥२२॥
 ता दशाधिके चास्मिन् शत द्वादशक्रेऽश्विने । प्रतिपद्गुरु संयोगे सार्धयामे गते
 नात् ॥ २३ ॥ दंडं सप्तदश शता न्यश्वानां नृप जज्जकात् । सह पंच नखांश्चैवमय-
 िन्निरष्टभिः ॥ २४ ॥ तणु कोद नवसरो दुर्गो सोमेश्वरो ग्रहीत् । उच्चांगवरहा
 ह्यां चक्रे वैधात्म चादसौ ॥ २५ ॥ बहुशः सेवकी कृत्य चौलुक्य जगती पतेः । पुनः

॥ ६ ॥ तस्माद्धि माद्रि भवनाथ यशो पहारी श्रीशोभितो जनि नृपो स्य तनूद्भवोय । गां-
 भीर्यधैर्यं सदनं बाल राज देवो यो मञ्जु राज बल भंगसचीकरत्तं ॥७॥ साम्राज्याशा क रेणुं
 रिपु नृपति गज स्तोम माक्रम्य जह्ने यत्खड्गो गंध हस्ती समर रस भरे विंधय शैलाय
 माने । मुक्ता शुक्तींदु कांतोऽज्ज्वल रुचिषु लसत्कीर्तिरेवातटेषु प्रीढान् दीपचारो स्वप
 पुलकततिः पुष्कराणां छलेन ॥ ६ ॥ तत्पितृव्य जसयाथ थांधवः श्री महान्दुर जनिष्ठ
 भूपतिः । यत्कृपाण लतिकामुपेयुषां छायाथा विरहितं मुखं द्विषां ॥ ९ ॥ जज्ञे कांतस्तदनु
 ष्वभुवस्तत्तनुजो श्वपालः कालः क्रूरे द्विषि सुचरिते पूर्णं चंद्रायमानः । यः संलग्नो न खलु
 तमसा नैव दोषाकरात्मा तेजो भक्तः क्वचिदपि न यः किंच मित्रोदयेषु ॥ १० ॥ केशूराग्र
 निविष्ट रत्न निकर प्रोद्यत्प्रभाङ्गं वर व्यक्तं संगर रंग मंडपतले यं वैरिलक्ष्मीः श्रिता ।
 धीरेषु प्रसूतेषु तेषु रजसा नीतेषु दुर्लक्ष्यतां लब्धो पायबलापि निर्मल गुणैर्वश्या
 प्रशस्या कृतिः ॥ ११ ॥ पुत्रस्तस्याहिल इति नृपस्तन्मयूख च्छलेन स्रष्टा यस्य व्यधित
 यशसां तेजसां तोलनां नु । गंगा तोले शशि तपनयो दंभतश्चारु चले मध्यस्यापि
 ध्रुवमिष लसत् कंटके कौतुकेन ॥ १२ ॥ गुर्जराधिपति भीम भूभुजः सैन्य पूर मजय-
 द्रुगेषु यः । शंभुवत् त्रिपुर संभवं बलं वाडवानल इवांबुधे र्जलं ॥ १३ ॥ सैन्या क्रांता खिल
 वसुमती मंडलस्तत्पितृव्यः श्रीमान् राजा भवदथ जिताराति मल्लो षहिललः । भीम
 क्षोणी पति गज घटा येन भग्ना रणाग्र हृद्यार्थां भोनिधि रघु कृते बहे पंक्तिः खलानां
 ॥ १४ ॥ अंभोजानि मुखान्यहो मृग दृशां चंद्रो दयानां मुदो लक्ष्मीर्यत्र नरोत्तमानुसरण
 वषापार पारंगमा । पानानि प्रसभं शुभानि शिखरि श्रेणीव गुप्यद्गुरुस्तोमो यस्य
 नरेश्वरस्य तलनां सेनांबु राशेर्दधौ ॥ १५ ॥ उर्वीरुड् विटपावलंब सुगृही हर्म्येषु दखा
 दृशं ध्यातास्यंत मनोहराकृति निज प्रासाद वातायनः । भूस्फोटानि वनांतरेषु वित-
 तान्या लोक्य हाहेति वाक् सस्मारा तपवारणानि शलशो यद्वैरि राज ब्रज — ॥ १६ ॥
 दृष्टः कै नं चतुर्भुजः स समरे शाकंभरी यो यलाज्जग्राहानुजवान मालव पतेभोजस्य
 साढाह्वयं । दंडाघीशम पार सैन्य विभवं तीव्रं तुरुष्कं च यः साक्षाद्विष्णुर साधनीय म-
 यसा शृंगारिता येन भूः ॥ १७ ॥ जज्ञे भूमृत्तदनु तनयस्तस्य बाल प्रसादो भीमस्मा-

मृद्वराण युगली मर्द्दन व्याजतो यः । कुर्वन्पीडा मति बलतया मोचयामास कारागा-
 राद् भूमी पति मपि तथा कृष्णदेवा भिधानं ॥ १८ ॥ श्रीकर्मो जलद भ्रमं दधुरहो सेन्येस्य से-
 वारसा यातर्तुप्रतिमे समुज्ज्वल पटा वासा मराल श्रियं । कंपं वायु वशेन केतु निवहाः
 शस्यानुकारं च ते सङ्गीतानि च कोकिलारव तुलां चिच्छे तु तापं द्विषः ॥ १९ ॥ श्रीमां-
 स्तस्याजनि नर पति र्धांधवो जिंदुराजो यः संहरेऽर्क इव तिमिर वैरि वृंदं शिनेद ।
 यस्य ज्योतिः प्रकरमभितो विद्विषः कौशिकाभा द्रष्टुं शक्ता न हि गिरि गुहा मध्य-
 मध्या श्रितास्तत् ॥ २० ॥ गच्छतीनां रिपु मृगदृशां भूपणानां प्रपाते वाष्पासायै-
 र्पनतति तुलां विभ्रतीनामरण्ये । दूर्ध्वा भ्रांतिं मरकत मणि श्रेणयो यत्प्रयाणे तांश्रुलीय
 धममिष चिरं चक्रिरे पद्म रागाः ॥ २१ ॥ पृथ्वीं पालयितुं पवित्र मतिमान् यः कर्पुका-
 णां करं मुंचन् प्राप यशांसि कुंद घबला न्यानंद हृद्यानतः । पृथ्वी पाल इति ध्रुवं क्षिति
 पति स्तस्यांग जन्माभ्रवत्प्रत्येक्षोरु निधिः स गूर्जर पतेः कर्णरम्य सैम्या पद्मः ॥ २२ ॥
 यत्सेना किल कामधेनु सदृशी कीर्तिं स्ववंती पयः स्वच्छंदं सशरायरेपि शूतने शत्रु-
 स्तुषी कुर्वती । धर्मं व्रत्समिव स्वकीय मनघं वृद्धिं नवंती मुदा करयानंद वरी भाभूपनभुगा-
 श्रीष्टं समातन्वती ॥ २३ ॥ श्री योजकी भूपतिररप यधु विंधेक सीध प्रबल प्रतापः ।
 खेतात पत्रेण विराजमानः शरव्याणहिल्लारय पनेपि रमे ॥ २४ ॥ स्वस्या गीधमुदार
 केलि विपिनं क्रीडाचले दीर्घिकां पत्यंका क्षयणं वरेदुषु मुदां श्यामं समतादपि । गम्या-
 रि क्षितिपाल याल ललनाः शैले वने निररि रधूत प्रावशिरामु नंगुलि मगु पुर्वांगभू-
 श्रियां ॥ २५ ॥ श्री आशा राज नामा रुनजनि वरुधा नायक स्वयं श्रुः साहाय्य भा-
 लवानां भुवि यदसि कृतं वीक्ष्य सिद्धाधिराजः । तुष्टो धनं रम कंभ वनर मय मग
 यस्य गुण्यद्गुरु स्थ तं हर्तुं नैव शक्तः बभुविन हृदय शेषभुवात श्रिया ॥ २६ ॥ २५५
 गिरि शिरः स्थ किं सहस्रप्रंशु दिघं श्रितत शिवाड कीर्तिं मुनिं किं प्रयाप । ययति
 सुभग ताया उद्गता संजरी शिं कनक बलका स्वजाह्नव सुपदुतुम कय ॥ २७ ॥ २५६
 रुचि शरीरः शैलहाराभिराज पति पति मर्यादमयावनाह स विरही । कविश ॥ २८ ॥
 सुताया मंदिरं स्वयं देशे तपस्कनि सुदारामरिज सुनर मुनिं कय ॥ २९ ॥ २५७

तडाग-कानन-हरप्रासाद-वापी-प्रपा-कूपादीनि विनिर्ममे द्विज जनानंदी क्षमा नण्डले
 घर्मस्थान शतानि यः किल युध श्रेणीषु कल्पद्रुमः कस्तेस्यंदु तुषार शील धवलं स्तो
 यशः कोविदः ॥ २९ ॥ श्वेतान्येव यशांसि तुंगतुरग स्तोमः सितः सुम्भुवां चंचन्मौक्तिक
 भूपणानि धवलान्युच्चैः समग्राण्यपि । प्रेमालाप भवं स्मितं च विशदं शुभ्राणि
 वस्त्रौकसां वृंदानीति नृपस्य यस्य पृतना कैलास-लक्ष्मीं श्रिता ॥ ३० ॥ प्रशस्ति रिष
 वृहद्गच्छीय-धी जयमंगला चार्थ-कृतिः ॥ भिषग्निजयपाल-पुत्र-नाम्ब सिंहेन लिखिता
 सूत्र जिसपाल-पुत्र-जिसरविणोत्कीर्णा ॥

ॐ ॥ जटा मूले गंगा प्रबल लहरी पूरकुहना समुन्मील च्छत्र प्रकर इव नम्रेषु
 नृपतां । प्रदातुं श्री शंभुः सकल भुवनाधीश्वर तथा तथा वा देयाद्वः शुभ्र मिह सुगंधाद्रि
 मुकुटः ॥ ३१ ॥ आशा राज क्षितिप तनयः श्री मदाल्हादनाहो जज्ञे भूभृदुवन विदित
 शचाहमानस्य वंशे । श्रीनद्दूले शिव भवन कृदुर्म सर्वरव वेत्ता यत्सा हाव्यं प्रति पद
 महो गूज्जंरेश श्चकांक्ष ॥ ३२ ॥ चंचत्कैतक चम्पक प्रविलसत्ताली तमाला गुरु स्फूर्जं
 चन्दन नालिकेर कदली द्राक्षाञ्च कञ्चि गिरौ । सौराष्ट्रे कुटिलोग्र कण्ठक भिदात्युद्गम
 कीर्त्तिस्तदा यस्या भूदभिमान भासुर तथा सेनाचराणां रवः ॥ ३३ ॥ श्री मांस्तस्यांगज
 इह नृपः केरुहणो दक्षिणा शाधीशोदचद्विलिम नृपते मान हृत्सैन्य सिंधुः । निभिं-
 योच्चैः प्रबल कलितं य स्तुरुष्कं व्यधत्त श्री सोमेशास्पद मुकुट वत्तोरणं कांचनस्य ॥ ३४ ॥
 आतास्य प्रबल प्रताप निलयः श्री कीर्त्तिपालो भवद् भूनाथः प्रति पक्ष पार्थिव चमूदा-
 वाहो पमः । यस्खड्गां वुनिधौ हतारि करिणां कुंभस्यलीभ्यः क्षरन्मुक्तानां निकरो
 ललितं धत्ते स्म धारा श्रयः ॥ ३५ ॥ यो दुर्दांत किरात कूट नृपतिं भिस्वा शरैरासत्
 तस्मि न्कांसहृदे तुरुष्क निकरंजित्वारण्य प्रांगणे । श्री जावालिपुरे स्थितिं व्यरचयन्-
 दृदुल राज्येश्वर शिचंता रत्र निभः समग्र विदुषां निःसीम सैन्याधिपः ॥ ३६ ॥ श्री

घनरिद्ध समिद्धाणं वि पउराणं णिअकरस्स अट्ठमहिअं । लक्खं सयञ्च सरिसं तणं च तह
 जेण दिट्ठाईं ॥ १२ ॥ णवजोठवणरूअपसाहिणुण सिंगार गुणग कक्केण । जणवयाणज्ज
 मलज्जं जेण णेह संवरिअं ॥ १३ ॥ बालाण गुरु तरु णाण तह सही गय वयाण तण
 ओठव । इय सुवरिणैहि णिच्चं जेण जणो पालिओ सव्थो ॥ १४ ॥ जेण णमन्तेणसया
 सम्माणं गुण थुईं कृणं तेण । जम्पन्तेण य ललिअं दिण्णं पणईण धणणिवहं ॥ १५ ॥ मरु
 माइवल्ल तमणी परिअंका अउजगुञ्जरित्तासु । जणिओजेण जणाणं सच्चरिअ गुणेहि
 अणुराओ ॥ १६ ॥ गहिजण गोहणाईं गिरिम्मि जाला उलाओ पल्लिओ । जणिआओ
 जेण विस मेवडणाणय मण्डले पयडं ॥ १७ ॥ णीलुप्पल दल गन्धारम्मा मायं दमहु अविं
 देहि । वरुड्ढुपण्ण छण्णा एसा भूमी कया जेण ॥ १८ ॥ वरिस सएसु अणवसु अट्ठारह
 ममग्गलेसु चेतम्मि । णवसत्ते यिहु हट्ठे वहवारे धवल थीआये ॥ १९ ॥ सिरि कक्कुएण
 हट्ठं महाजण यिप्यपय द्यणि बहुलं । रोहिन्स कुअ गामे णिवेसिअं किस्सि विट्ठिए ॥ २० ॥
 मट्ठोअग्गमे एक्को थीओ रोहिन्स कुअगामंम्मि । जेण जसस्स व पुजांए एरथम्मा स-
 मुत्तविआ ॥ २१ ॥ नेण सिरि कक्कुएणं जिणस्स देवस्स दुरिअ णिट्ठलणं । कारयिअ
 अचल मिमं तवणं त्ताए सुहजणयं ॥ २२ ॥ अप्पिअमेए' भयणं सिट्ठस्स धणेसरस्स
 गण्टम्मि । तह नन्न जम्भ अम्भय वणि भाउड पमुह गोट्ठीए ॥ २३ ॥ श्लाघ्ये जन्म कुले
 कण्ठं रहितं रूपं नयं योवनं । सीतागयं गुण भावन शुचि मनः क्षांति
 यगो नमना ॥ २४ ॥

संस्कृत अनुवाद ।

स्वर्गांश्चानि ज्ञानं प्रथमं सकृदानां कारणं देवं । निःशेषं दुरितं दलनं परमं गुरुं नमन
 जित्वा नाथम् ॥ १० ॥ इत्यु तित्तकः प्रतिहार आसीत् श्री लक्ष्मण इति रामस्य । तेन प्रतिहार
 वरुण समुत्थितस्य समाप्तः ॥ २० ॥ विप्रः श्री हरिचंद्रः भार्या आसीत् इति क्षत्रिया भद्रा ।
 अस्मिन् मुक्तामयः वीरः श्री गजिच्छेद्र ॥ ३ ॥ अस्यापि नर भद्र नाया जातः श्री नाग
 भद्र इति पुत्रस्य । अस्यापि ननयस्त्रातः नस्यापि यगो वरुणो जातः ॥ ४ ॥ अस्यापि

चंदुक नामा उत्पन्नः सिल्लुकोपि एतस्य । ज्जोट इति तस्य तनयः अस्यापि श्री त्रिल्लुका
 जातः ॥ ५ ॥ श्री त्रिल्लुकस्य तनयः श्री कक्कः गुरु गुणैः गर्वितः । अस्यापि कक्कुक नामा
 दुर्लभ देव्यामुत्पन्नः ॥ ६ ॥ ईषद्विकाशं हसितं मधुर भणितं प्रलोकितं सौम्यं । नमनं
 यस्य न दीनं रासः स्येयः स्थिरा मैत्री ॥ ७ ॥ नो जल्पितं न हसितं न कृतं न प्रलोकितं
 न संभ्रतम् । न स्थितं न परिभ्रातं येन जने कार्यं परिहीनं ॥ ८ ॥ सुस्था दुःस्था द्विपदा
 अधमा तथा उत्तमा अपि सौख्येन । जनन्येव येन धृता नित्यं निज मण्डले सर्व ॥ ९ ॥
 उपरोध राग मत्सर लोमैरपि न्याय वर्जितं येन न कृतो द्वयोर्विशेषः व्यवहारे कदापि
 मनागपि ॥ १० ॥ द्विजवर दत्तानुज्ञं येन जन रंक्तवा सकलमपि । निर्मत्सरेण जनितं दुष्टा-
 नामपि दण्डनिष्ठपनम् ॥ ११ ॥ धन ऋद्ध समृद्धानामपि पौराणां निज करस्याभ्यर्थितम् ।
 लक्षं शतं च सद्गुणत्वेन तथा येन दृष्टानि ॥ १२ ॥ नव यौवन रूप प्रसाधितेन ऋद्धार
 गुणज्ञ कक्ककेण जनवचनीयमलज्जं येन जने नेह संचरितम् ॥ १३ ॥ बालानां गुरुस्तरुणानां
 तथा सखा गत वयसां तनय इव । प्रिय सुचरितैर्नित्यं येन जनः पालितः सर्वः ॥ १४ ॥
 येन नमता सदा सन्मानं गुणस्तुतिं कुर्वता । जल्पता च ललितं दत्तं प्रणयिभ्यो धन-
 निवहः ॥ १५ ॥ मरुमाडवल्लस्त्र मणी परि अंका अज्जगुर्जरेषु । जनितो येन जनानां
 सच्चरित गुणैरनुरागः ॥ १६ ॥ गृहीत्वा गोधनानि गिरी जाला कुलाः पल्लयः । जनिता
 येन विषमं वदनाण कण्डले प्रकटम् ॥ १७ ॥ नीलोत्पल दृग्गन्वा रम्यमाकन्द मधुप
 वृन्दैः । वेरक्षु पर्णच्छन्ना एषा भूमिः कृशायेन ॥ १८ ॥ वर्षं शतेषु च नवसु अष्टादश सम
 ग्रलेषु क्षेत्रे नक्षत्रे त्रिधु मस्ये बुधवारे धत्रलि द्वितीयायाम् ॥ १९ ॥ श्री कक्ककेन हटं
 महाजनं विप्र प्रकृति वणिज बहुलम् । रोहिन्स कूप ग्रामे निवेशितं कोर्त्ति वृद्धे ॥ २० ॥
 मण्डोवरे एको द्विभयो रोहिन्स कूप ग्रामे । येन यशस इव पुञ्जावेती स्तंभी समुत्तद्यी
 ॥ २१ ॥ तेन श्री कक्ककेन जिनस्य देवस्य दुरित निर्दलनम् । कारितमषलमिदं भयनं
 प्रकथा शुभ जनकम् ॥ २२ ॥ अपितमेतद्भवन् सिद्धस्य धनेश्वरस्य गच्छे । सह शांत जम्बु
 आचक्र वनि जाटक प्रमुख गोष्ठ्यै ॥ २३ ॥ शलाघ्य जन्म कुले कलंक रहितं रूपं नवं
 यौवनं । सौभाग्यं गुण भावनं शुचिमतः क्षान्तिर्यशो नम्रता ॥ २४ ॥

(२६२)

पिंडवाडा ।

सिरोही राज्यका यह स्थान भी प्राचीन है । यहां रेलवे स्टेशन है और सिरोही जाने वाले लोग यहां उतर कर जाते हैं ।

(946)

ओं ॥ संवत् १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्ले श्री सिरोही नगरे रायि दूर्जण सालजी श्री विजय राज्य प्राग वंशे साह गोयंद भार्या थनी पुत्र केलहा भार्या चापलदे गुसदे पुत्र जीवा जिणदास केल्ला पीडरवाडा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी कारापितं श्री तपा गच्छे श्री कमल कलस सूरि तत्पहे श्री विजय दान सूरि । साः जीवा श्री योर्थे सा० जीवा दिने १० अणसण सीधा संवत् १६०२ का० फागुण वदि ८ दिने अणसण सीधा शुभं भवतु कल्या० ॥

(947)

ओं ॥ संवत् १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्ले श्री सिरोही नगरे । रायि श्री दूर्जण साल जी विजय राज्य प्राग वंशे कोठारी छाछो भार्या हासिलदे पुत्र कोठारी श्री पाल भार्या पेतलदे तस्य पुत्र कोठारी तेजपाल राज पाल रतन सी राम दास - - - - - वाई लाछल दे श्रेयोर्थे पीडरवाडा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी कारापितं । श्री तपा गच्छे श्री हेम विमल सूरि तत्पहे श्री आणंद विमल सूरि तत्पहे श्री विजय दान सूरि । शुभं भवतु कल्याणमस्तु प्रा० वा० लाछलदे श्री० ।

(948)

सं० १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्ले श्री सिरोही नगरे रायि श्री दूर्जण साल जी विजय राज्ये प्राग वंशे कोठारी छाछा भार्या हासल दे पुत्र कोठारी श्री पाल भार्या पेतलदे ।

(२६३)

लाछलदे ससारदे पुत्र कोठारी तेज पाल राजपाल रतन सी रामदास शहंस कर्ण पीडरवा
ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी करापित कोठारी तेजपाल श्रेयोर्थे श्री तपा गच्छे श्री
हेम विमल सूरि तत्पहे श्री आंगद विमल सूरि तत्पहे श्री विजय दान सू० शुभं भवतु
कल्याणमस्तु ॥

(१५१)

ओं ॥ संवत् १६०३ वर्षे माह वदि ८ शुक्ले श्री सिरोही नगरे रायि श्री दूर्जण सालजी
विजय राज्ये प्राग वंशे सा याथा भार्या गांगादे पुत्र सा - मा भार्या कसमीरदे पुत्री
रानी पीडर वाडा ग्रामे श्री माहावीर प्रासादे देहरी करापितं धार्ई गांगादे श्रेयोर्थे श्री
तपा गच्छे श्री कमल कलस सूरि सुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥

(१५०)

ओं ॥ संवत् १६१२ वर्षे मागुण वदि ११ शुक्ले श्री सिरोही नगरे माहाराज श्री उदर
सिंह जी विजय राज्ये प्राग वंशे कोठारी छाछा भार्या हंसलदे पुत्र कोठारी श्री पाठ
भार्या लाछलदे पुत्र रामदास करण सी सहस करण - - - पीडर वाडा ग्रामे श्री
माहावीर प्रासादे देहरी करापितं श्री तपा गच्छे श्री हेम विमल सूरि तत्पहे आंगद
विमल सूरि - - - -

(१५१)

आंनमः श्री वर्द्धमानाय ॥ प्राग्वाट वंशे दण्डहारि मागा सूनुः प्रसूनोत्तमः काम
कारिः । श्री पुण्य पुष्पा जनि पूर्ण सिंह स्वस्य प्रिया जागहन देवि नाम्नी ॥ १ ॥ मद्रार
मद्रारत रोस - - - - कलापः क्लिष्ट कुर पाठः । जाया घर्म मोदिकन्दो प्रसूनोत्तमः
भवत्कामल देवि नाम्नी ॥ २ ॥ सद्यो २ वामान्तैः सुदृष्टो कुर हिनी मतां मति ।

सनयो विनयो चिती धनी विजयते सनयो तयोरिमी ॥ ३ ॥ तत्राद्यः सज्जन धेणी रत्न
 रत्नाभिधो धनं । धनाण्ड्य जन मूढ - राज मान्यो धियां निधिः ॥ ४ ॥ द्वितीय सुद्विती-
 येंदु कांति कांच गुणोच्चयः । धरणः शरणं श्रीणां प्रवीणः पुण्य कर्मणि ॥ ५ ॥ रत्ना देवी
 धारल देव्यी जात्यौ तयोरनुक्रमतः । समभूता मति निर्मल शीलालंकार धारिण्यौ
 ॥ ६ ॥ तस्य सुता ५-तेजा पासल वास जालहणेनाख्याः । शांत स्वभाव कलिसा गुण
 सरु मलयाः कला निलयाः ॥ ७ ॥ इतश्च । श्री प्राग्वाटाभिध जाति शृंग शृंगार
 शेखरः । पुरा भून्महुणा नामा व्यवहारी धरस्थितिः ॥ ८ ॥ तस्य जोला मिधः सूनु स्त-
 त्पुत्रो भावठोऽद्यठः ॥ ९ ॥ तदीय पुत्रः सुगुणैः पवित्रः स्वाजन्य वित्तः सुनया सूचितः ।
 लींवाभिधानः सुकृति प्रधानः सत्कार्य धुर्यो व्यवहार वर्यः ॥ १० ॥ नयणा देवी नाम सू
 देवी विख्यात संज्ञिक तस्या दयिते ढययो पेटे शीलद्युद्यम गुण कलिते ॥ ११ ॥ नयणा
 देवी तनुजो मनुजो चित चारु लक्ष्मणो पेतः । अमरो अमरो गुरु जन जन - जनन्यादि
 पद कमले ॥ १२ ॥ भीम कांत गुण ख्याते प्रजा पालन लालसे । हाजाभिधे घरा धीशे
 प्राज्य राज्य - रीक - ॥ १३ ॥ आस्यामुष्माभ्यां धनि पूर पाल लींवाभिधाभ्यां सद्-
 पासकाभ्यां । ग्रामेऽग्रिमे पीडर वाढकाख्ये प्रसाद - - - विरुद धारि सारः ॥ १४ ॥
 विक्रमाद्वाण तर्कान्धि भूमिते वत्सरे तथा । फाल्गुनाख्ये शुभे मासे शुक्लायां प्रतिपत्तियौ
 ॥ १५ ॥ कल्याण वृद्ध्य भ्युदयैक दायकः, श्री वर्द्धमान श्चरमो जिनेश्वरः । श्री मत्तपः
 संयम धारि सूरिभिः प्रतिष्ठितः स्पष्ट महा महादीह ॥ १६ ॥ आरवींदु समयादनया श्री
 वर्द्धमान जिन नायक मूर्च्या । राजमानमभिनंदतु विश्वानंद दायक मिदंवर चैत्यं
 ॥ १७ ॥ श्लो० ॥

राज श्री अमर सिंह जी लपावता देहनारा देहयी आरोहरो - कमनइ काथोछइ ।
 आजक - वान देरा माहि घोलसइ तिनइ गधइ ड - गाल छइ संवत् १७२३ वर्षे
 मगसिर सुदि - ॥

(१६५)

वीरवाडा (सिरोही)

महावीर स्वामी का मंदिर ।

(953)

सं० १४१० वर्षे श्रे० महिषा ज्ञा० कपूर दे० पु० जगमालेन ज्ञा० सुतलदे पु० कडूया देहहा समं वीरवाडा ग्राम श्री महावीर चैत्योद्धारः कारितः कछोठीवाल गच्छे भ० श्री नरसिंह सूरि पद्वे श्री रत्नप्रज्ञ सूरिणासुपदेशेन प्रतिष्ठितः । मंगल ॥ प्राग्वाट ज्ञातीचः ॥

वसंत गढ़ (सिरोही)

(किले के अन्दर जैन मंदिर के मूर्ति पर ।

(जसन के दोनो तरफ पीठ पर)

(954)

सं० १५०७ वर्षे माघ सुदि ११ बुधे राणा श्री हुंज कर्ण राज्ये वसंत पुर श्रीसो तद्वृत्तार कारको प्राग्वाट व्य० जगद्धा ज्ञा० मेघादे पुत्र व्य० संतनेन ज्ञा० माणिक दे पुत्र कान्हा पीत्र जोषादि युतेन प्राग्वाट व्य० घणसी ज्ञा० लोधी पुत्र व्य० भाटादेन ज्ञा० छातट्ट पुत्र जावहेन जोजादि युतेन मूल नायक श्री शांतिनाथ त्रिधं कारितं प्रतिष्ठितं तथा श्री सोम सुन्दर सूरि हत्पहालंकरणं श्री मुनि सुन्दर सूरि श्री जय चन्द्र सूरि पद्वे प्रतिष्ठित गण्ठाधिराज श्री रत्न घोपर सूरि गुरुभिः ।

पालडी (सिरोही)

(955)

सं० १२४६ वर्षे माघ सुदि १० बुधे जयदेव श्री नकुडे महाराजाधिराज श्री जयदेव देव राज्ये हरपुर राज श्री जयदेव देव देवो विजयी ज - - प्राग्वाट-प्रज्ञापीयत्र महा

(२६६)

श्रीरामय वाल्महण प्रभृति पंच कुलेन महं सूत देव सुत राजदेवेन देव श्री महावीर
प्रदत्त द्र० १ पाटह्यली मध्यात् । बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभि सागरादिभि यस्य यस्य
यदा दत्तं तस्य तस्य तदा फलं ॥

कालाजर (नवाना के निकट)

(956)

सं० १३०० वरषे जेठ सुदि १० सोमे अद्येह चंद्रावत्यां महाराजाधिराज श्री आल्हण
सिंह देव कल्याण विजय राज्ये तन्नियुक्त मुद्रायां महं श्री पेंता प्रभृति पंच कुल शासन
मभि लिखयते-यथा महं श्री पेंताकेन - - - नान कलागर ग्रामे - - - - - श्री पारवं
नाथ देवस्य लो - - - - रहिता - - - एवं ॥ आचंद्रार्क - - - यस्य यस्य यदा भूमी तस्य
तस्य तदा फलं ॥ साखि राउल० ब्रा अलिणव ब्राद उव - ब्रजव - सोहण - - - वपादे
सणा - - - - - कल्हा ।

कामद्रा (सिरोही)

(957)

ओं । श्री मिलमाल निर्यातः प्राग्वाटः वणिजांवरः श्री पतिरिव लक्ष्मी युग्मो ल
(च्छो) - राज पूजितः ॥ आकरो गुण रत्नानां वंधु पद्म दिवाकरः उजुजकरतस्य पुत्र
स्यात् नम्मराम्मै ततो परी ॥ जज्जु सुत गुणाद्ये धामनेन प्रसाद्गयम् । दृष्ट्वा चक्रे गृह
जैनं मुक्तये विश्व मनोहरम् ॥ सम्यत् १०६१ - - - - सपुने - ।

उथमा (सिरोही)

(959)

संवत् १२५१ आषाढ वदि ५ गुरी श्री नाणकीय गच्छे उथण सदधिष्ठाने । श्रीपारवं-
नाथ चेत्ये ॥ घनेश्वर पुत्रेण देव धरेण धीमता । सयुक्तेन यशोभद्र आल्हा पाल्हा

(२६७)

सहोदरैः । यसो जटस्य पुत्रेण । सार्द्धं यरा घरेण मा पुत्र पौत्रादि युक्तेन घर्म हेतु मह
मना ॥ जगनी धारमस्याख्या । मृतश्चैव यशो जटः । कारितं श्रयसे ताम्यां । रम्येदस्तुंग
महप ॥ छ ॥

घर्षाणा (सिरोही)

(१५९)

संवत् १३५९ वर्षे वैशाख शुदि १० शनि दिने न - - - ल देशे वाघ सीणग्रामे महा-
राजा श्री सामंतसिंह देव कल्याण विजय राज्ये एवं काजे वर्षमाने सोलं० पाजट पु० रज-
रसोलं० गागदेव पु० आंगद मंडलिक सोलं० सी माल पु० कुंताघारा सो० माला पु०
मोहण त्रिभुवण पहा सोहरपाल सो० घूमण पर्ट पायत् वणिग् सीहा सर्व सोलंकी समु-
दायेन वाघसीण ग्रामीय अर - - हट अरहट प्रति गोधूम से० ४ ढीवड़ा प्रति गोधूम
सेई २ तथा घूलिया ग्रामे सो० नयण सीह पु० जयत माल सो० मंडलिक अरहट प्रति
गोधूम सेई ४ ढीवड़ा प्रति गोधूम सेई २ सेतिका २ श्री शांतिनाथ देवस्य यात्रा महो-
त्सव निमित्तं दत्ता ॥ एतत् आदानं सोलंकी समुदायः दातव्यं पाठनीयं च । आर्षद्राकं ॥
यस्य यस्य यदा जूमी तस्य तस्य तदा फलं ॥ मंगलं भवतु ॥

लाज-नीताड़ा (सिरोही)

(१६०)

संवत् १२ वर्षे ११ माह सु० ६ धे० जितू आसल प्रति पतेमधिक कुअर सीह
पतिना । पाऊ स्तु ।

(१६१)

मन्दिर घर लयम सिंचेन करावी ।

(२६८)

नोदिया (सिरौही)

(962)

संवत् ११३० वैशाख सुदि १३ नन्दियक चैत्य साले वापी निर्मापिता सिद्ध गणैः ।

(963)

ॐ ॥ सतिणि सील वंता च । सद्भाव भक्ति संयुता ॥
जिनं गृहे सैल स्तंभा द्वौ । मंडपं मूले यापिताः ॥ १ ॥

श्री महावीर स्वामि जी के मन्दिर के स्तंभ पर ।

(964)

ओं ॥ संवत् १२०१ भाद्रपद सुदि १० सोम दिने निधा भार्या वरा पुत्र मोतिजिया
स्तंभ का० २

(965)

श्री विजयते ॥ संवत् १२६८ वर्षे पोस सुदि ३ राठउठ पून सीह सुत रा० कमण
योथें पुत्र भीमेण स्तंभो कारितः ॥ श्री - - - - सूरि श्री - - - ।

कोटरा (सिरौही)

(969)

॥ पूर्वं डीडिला ग्राम मल नायकः श्री महावीरः संवत् १२०८ वर्षे पिप्पल गच्छीय
वजय सिंह सूरिभिः प्रतिष्ठितः पश्चात् वीर परया प्रा० साह सहदेव कारिते प्रसादे
ार्य श्री वीर प्रभ सूरिभिः स्थापितः । संवत् १४६५ वर्षे ।

(१६६)

वरमांण (सिरोही)

(967)

सं० १३५१ वर्षे माघ वदि १ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० साजण ज्ञा० रालू पु० पून
सीह ज्ञा० २ पद्मल जालू पुत्र पदमेन ज्ञा० मोहिणि पुत्र विजय सीह सहितेन जिन
पुगल युग्मं कारितं ॥ छ ॥

(968)

ओं० संवत् १४४६ वर्षे वैशाख वदि ११ बुधे ब्रह्मणीय गच्छे महारक श्री मदन प्रज
सूरि पद्मे श्री नंदिश्वर सूरि पद्मे श्री विजय सेन सूरि पद्मे श्री रत्नाकर सूरि पद्मे श्री
हेम तिलकं सूरिभिः पूर्वं गुरु श्रेयोर्थं रंग मंडपः कारापितः ॥

लोटाना (सिरोही)

(969)

संवत् १३०८ वर्षे उदे सीह सुत पदम सीह ।

माकरोरा [सिरोही]

(970)

श्री सुविधि जिन प्रास्तादात् नाकोडा मध्ये । संवत् १५९० वर्षे कनक कलसा गच्छे
महारिक श्री मत् रत्नसूरि प० कनक विजय गणि वेठाना ६ संयाति श्रीमाम्बुका । संवत् १५९०

(१७०)

मोटा सा० घना मु० दसरथ जीवा सा० अमरा सा० कोठारी करमसी सा० केसर सा० जग-
न्नाथसा० लषमा सा० राजा लाघा संपा तेजाः जीवाः पीथाः जगा अमरा रण छोड़ देवा देवा
भगवान रामजी राज जोगा कल्याणः सुजाणः जोगाः रामजी आसा बाई चांपी बाई जगी
समस्त श्राविक श्रावि-काइ सेवा भगति भली रीति कीधी संघस्य कल्याणाय भवतु ।

धवली [सिरौही]

(१७१)

॥ सं० । १८६१ वैशाख शुक्ल ५ वृध वासरे श्री महावीर प्रसाद जीर्णोद्धार श्री संघेन
प्राग्वाट ज्ञातीय सा० । खुबचंद मोती सा । लुंवा उमा सा । तलका वाला प्रमुख
कारापितम् तस्यो परी धवज दंड गच्छ नायक श्री कमल कलसा गच्छेश भहा० । श्री
वजय महेंद्र सूरिस्वरभिः प्रतिष्ठितम् गं० । पं० हुंगर विजय वां० । नथु प्रमुख,
इति ज्ञेयम् । शुभं

सीवेरा [सिरौही]

(१७२)

संवत् १९६५ वर्षे पंडित श्री माहा शिष्य जय कुशल जस कुसल कातिक चौमासु
कीधु ठाणाः २ सीवेरा ग्रामे ।

जरीवल पार्श्वनाथ [सिरौही]

(१७३)

संवत् १९८३ वर्षे प्रथम वैशाख सुदि १३ गुरी श्री अंचल गच्छे श्री मेरु सुङ्ग सूरिणां
पद्मेद्वरण श्री जय कीर्ति सूरिश्वर सुगुरुपदेशेन पत्तन वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय मोठ

(२७१)

डोया सा० संग्राम सुत सा० सलय्य सुत सा० तेजा भार्या तेजल दे तयोः पुत्रा सा०
डोडा सा० पीमा सा० भूरा सा० काला सा० गांगा सा० डीढा सुत सा० नाग राज सा०
काला सुत सा० पासा सा० जीव राज सा० जिणदास सा० तेजा द्वितीय भ्राता सा० नर
सिंह भार्या कउनिग दे तयोः पुत्री सा० पास दत्त सा० देव दत्त श्री जीराउला पार्श्वनाथ
स्य चेत्ये देहरी ३ कारापिता श्री देव गुरु प्रसादात् प्रवर्द्धमान प्रदं मांगलिकं भूयात् ॥

(७७४)

ओं ॥ सं० १४८३ वर्षे जाद्रवा वदि ७ गुरु कृष्ण पक्षे श्री तपा गच्छ नायक श्री श्री
देव सुंदर सूरि पदे श्री सोम सुंदर सूरि श्री मुनि सुंदर सूरि श्री जय चंद्र सूरि श्री
भुवन सुंदर सूरि उपदेशेन श्री कल वर्या नगरे कोठारी व्याहउ सामत सं नाने को नरपति
मा० देमाई पुत्र सं० उकदे पासदे पूनसी मना श्री उसवाल ज्ञातीय कटारीया गोत्र श्री
जीराउला भुवने देव कुलिका कारापिता ॥ शुभं भवतु ॥ श्री पार्श्वनाथ प्रसादात् ॥
ओं कटारिया गोत्र वरं महीयं नात्तु पिता मे जननी देमाई । श्री सोम सुंदर गुरुगुरव
भदेयाः श्री छालज मंढन मात्र शालं ॥ १ ॥

(७७५)

ओं ॥ सं० १४८३ वर्षे जाद्र वदि ७ गुरु दिने कृष्ण पक्षे श्री तपा गच्छ नायक श्री
देव सुंदर सूरि पदे श्री सोम सुंदर सूरि श्री मुनि सुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि श्री भुवन
सुंदर सूरि श्री उपदेशेन श्री कलवर्या नगरे श्री उसवाल ज्ञातीय सा० घणसी समाने सा०
जयसा मा० वा० तिलक सुत सं० समरसी सं० मोपसी श्री जीराउला भुवने देवकुलिका
कारापिता । शुभं भवतु । श्रीपार्श्वनाथ प्रसादात् ।

(७७६)

ओं ॥ सं० १४८३ वर्षे जाद्रवा वदि ७ गुरु दिने कृष्ण पक्षे श्री तपा गच्छ नायक श्री
देव सुंदर सूरि पदे श्री सोम सुंदर सूरि श्री मुनि सुंदर सूरि श्री जयचंद्र सूरि श्री भुवन

(२७२)

सुंदर सूरि उपदेशेन श्री कलवर्गा नगरे ओसवाल ज्ञातीय म० मलुसी संताने सं० रतन
भार्या वा० वीर सुत सं० आमसी श्री जीराउल भुवने देवकुलिका कारापिता । शुभं भवतु
श्री पार्श्वनाथ प्रसादात् ॥ छ ॥ सा० आमसी पुत्र गुणराज सहस्र राज ।

(977)

स्वस्ति श्री संवत् १४८१ वर्षे वैशाख सुदि ३ वृहत्तया पक्षे ऋता० श्री रत्नाकर सूरि-
णामनुक्रमेण श्री अजयसिंह सूरिणा पठे श्री जय तिलक सूरिश्वर पहावतस ऋता० श्री
रत्न सिंह सूरिणामुपदेशेन श्री वीसल नगर वास्तव्य प्राग्वाटान्त्रय मंडन श्रे० पेत सीह
नंदन श्रे० देवल सीह पुत्र श्रे० षोषा तस्य भार्या सं० प्रणउ देव्ये तयोः सुता सं० सादा
सं० दादा सं० मूदा सं० दूधाभिधै रेतैः कारि ।

(978)

स्वस्ति संवत् १५०८ वर्षे आषाढ सुदि १२ शने सू० काला सहडा नरसी भीमा
मांडण सांडा गोपा मेरा मोकल पांचा सूरानित्य प्रणम्य अष्टांग सकुटुंब ।

(979)

ओं ॥ सं० १८५१ वर्षे आषाढ सुदि १५ दिने श्री जीरावल पार्श्वनाथजीरो जीर्णोद्धार
कारापितः सकल महारक पुरंदर महारक जी श्री श्री श्री श्री १०८ - शत्रु राज्येन
जीर्णोद्धार करापितं हजार ३०१११ रुपीया परचीवी माल लीधो श्री जीरावल वास्तव्य
मु० । अजा । को । दला । सा० कला । सा० रसा । सा० सघा । सा० जोयन सा०
अणला । सा० वारम । सा० रामल । - - - यकी काम कारापितः । जोसी दुरगा ।
भ्रातृ राजा जात्रा सफलः ॥

(२७३)

श्री अंजारा पार्श्वनाथ ।

(१९०)

स्वति श्री संवत् १६५२ वर्षे कार्तिक षदि ५ वृधे येषां जगद्गुरुणां संवेग वैराग्य
सौभाग्यादि गुणगण श्रवणात् चमत्कृतैर्महाराजाधिराज पाति शाहि श्री लक्ष्मणा-
भिधानैः गुर्जरदेशात् दिल्ली मंडलेश बहुमानमाकार्य धर्मोपदेश कर्णेन पूर्वकं पुस्तक
कोश समर्पणं हावराभिधान महासरो मत्स्यवध निवारणं प्रति वर्ष पडमासिकामारि
प्रवर्तनं सर्वदा श्री शत्रुज तीर्थ मुंडकाभिधान कर निवर्तनं जीजियाभिधान करकर्तनं
निज सकल देश दानमृत्त स्वमोचनंसदैव वंद्य रूप निवारणं चित्पादि धर्म कृतानि
प्रवर्तं तेषां श्री शत्रुजये सकल देश संचयुत कृत यात्राणां प्राद्रपद श्रुक्केकादशी दिनेजात
निवाणां शरीर संस्कार स्नानासन्न फलित-सहकारणां श्री हिर विजय सूरिश्चरणां
प्रति दिनं दिव्य नादनाद श्रवण दीप दर्शनादिकै जीय प्रभायाः स्तूप सहिताः पादुकाः
कारिताः पं० मेधेन प्रार्या लाडकी प्रमुख कुटुंब युतेन प्रतिष्टि गश्च तपागच्छाधिराजैः
महारक श्री विजयसेन सूरिभिः ॐ श्री विमल हर्ष गणि ॐ श्री कल्याणविजयगणि ॐ
श्री सोम विजय गणिभिः प्रणता मठ्य जनैः पुज्यमानाशिवरं नन्दन्तु ॥ लियना प्रशस्तिः
पद्म्याणंदगणिना श्री उन्नत नगरे शुभं प्रवतु ॥

श्री कापडा पार्श्वनाथ ।

(१९१)

संवत् १६७८ वर्षे वैशाखसित १५ तिथौ सोमवारे स्थानी महाराजाधिराज महाराजश्री
गणसिंह विजय राज्ये ऊजेशे रायलारखण संनाने प्रांढानारिकगोत्रे जमरा पुत्र प्रांनाकृन्
प्रार्या प्रगतदेः पुत्र रत्न नारायण नरसिंह सेटटा पीत्र तारा चंद्र मंगार-नेमि शाहादि

(२७४)

परिवार सहितेन श्री श्रीकर्पटहेटके स्वयंभु पार्श्वनाथ चैत्ये श्री पार्श्वनाथ
... .. सिंह सूरि पहालंकार श्री जिन चंद्र सूरिभिः सुप्रसन्नो भवतु ।

अलवर ।

अलवर राज्यकी राजधानी यह छोटा और सुन्दर शहर है ।

(982)

सं० १२५५ माघ सुदि ६ - - - ।

(983)

सं० १२६४ वै० व० ५ गुरौ श्री - - - वंशे पिता मही प्याऊपिउ पितृ सोला श्रेयोर्थं पुत्र
नाग दिन् - न भा० जागन्न मातृ एतेन सहितेन श्री पार्श्वनाथो विव्रं कारितः ।
प्रतिष्ठित श्री पार्श्वनदेव सूरिभिः ।

(984)

सं० १३०३ वर्षे माघ सुदि - - सोमे देवानं हित गच्छे श्री० १ माला भार्या सिंगारदेवी
पुण्यार्थं सुत हरिपालादिभिः श्री शान्तिनाथ विव्रं कारित प्रतिष्ठित श्री सिंहदत्तसूरिभिः ।

(985)

सं० १३२१ वैशाख सुदि ३ यरुपति कुलेन साणे छोटा - - - -

(986)

सं० १३७८ जेष्ठ वदि ५ गुरु श्री उपकेश गच्छे लिङ्ग - । गोत्रे - - - सा० शिवधर
सिर पाल भार्या पुत्र कील्हा मुणि चंद्र लाहड वाहडादि सहिताभ्यां कुटुम्ब श्रेयोर्थं श्री
शान्तिनाथ विव्रं का० प्रति० श्री कङ्क सूरिभिः ।

(२७५)

(987)

सं० १४८० वर्षे फागुण सुदि १० -- उ० छत्रवाल गोत्रे सा० तिहुणा पु० सोना भा०
सोनादे - - - - - शांति नाथ विंवं - - - - -

(988)

सं० १४९९ वर्षे मागसिर सुदि ५ काकरिया गोत्र सा० सधारण तत्पुत्र सा० सांगा
श्री आदिनाथ विंवं करापितं श्री नयचन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(989)

सं० १५०१ पोष वदि ६ बुधे श्री हुंभड ज्ञातीय परज गोत्रे ठ० कहुआ भा० कामल दे
सुत ठकुर पीमा भा० रूपिणी -- सुसीया पीमा सुत देवसी करमा देवसी भा० चमकू
सुत लखमा धरमा धना वना देत्री । करमा भा० गांगी लखमा भार्या भोली एवं समस्त
परिवार सहितेन ठ० देव सिंघेन श्री संभव नाथ विंवं कारापित स्य पुण्यार्थं प्र० श्री
सर्व सूरभिः ।

(990)

सं० १५०१ वर्षे माघ वदि ६ उपकेश ज्ञाती लोढा गोत्रे सा० भार्या पूना पु० हांसा-
केम निज पूर्वजा पैमधर मोहा प्रीत्यर्थं श्री आदिनाथ विंवं कारितं श्री रुद्रपण्डीय
गच्छे प्र० श्री देव सुंदर सूरि पदे प्र० श्री सोम सुंदर सूरिभिः ।

(991)

सं० १५१२ वर्षे फागुण सुदि १२ बुधे उ० ज्ञा० नरदयट गोत्रे सा० पाण्ड्या भार्या
पाल्हीदे पुत्र सं० साद्य सायर सोठारय आत्मद्वेषे श्री नुमतिनाथ विंवं कारितं प्र०
श्री मलधार गच्छे गुण सुन्दर सूरिभिः ।

(२७६)

(११२)

सं० १५१६ वर्षे अषाढ वदि ६ शनौ भरतपुर-ज्ञा० डीघोडीया - - - सा जगसी
सा० हर श्री पु० स० हापा स० घर्मा हापा घर्मा भा० खेहा पु० माहवा भा० गागी पु०
नाथ चांदा युतेन श्री शांतिनाथ विंवं का० प्र० श्री चैत्र गच्छे भ० श्री गुणाकर सूरिभिः ।

(११३)

सं० १५२६ वर्षे जेठ वदि १३ मंगल वारे उपकेश जातीय नाहर गोत्रे पेटा पु० रुह्या
भार्या रजलदे खुकांवर अमरा - - - श्री शांतिनाथ विंवं कारित प्र० श्री घर्मघोष गच्छे
श्री महेंद्र सूरिभिः ।

(११४)

सं० १५२६ वर्षे वैशाख वदि ५ दिने उप० ज्ञा० वालत्य गोत्रे सा० - - दे पु० राउल
पु० सुर जल सीहा - - - मातृ पितृ पुन्यार्थं आत्म श्रेयसे श्री वास पूज्य विंवं करापितं
प्र० उप० गच्छे ककु० संताने प्र० श्री कक्क सूरिभिः ।

(११५)

सं० १५२७ वर्षे पोष वदि ४ गुरौ श्री माल ज्ञातीय श्रेष्ठि जोगा भार्या रू सुत हेमा
हरजाभ्यां पितृ मातृ निमित्तं आत्म श्रेयोर्थं श्री अजितनाथ विंवं का० प्र० श्री महूकर
गच्छे श्री धन प्रभू सूरिभिः । मेलिपुर नगरे ।

(११६)

सं० १५२८ वर्षे अषाढ सुदि २ सोमे श्री उकेश वंशे संखवाल गोत्रे सा० मेढा पुत्र
सा० हेफकिन मातृ उधरण चेला पु० पोमादि सहितेन श्री शांतिनाथ विंवं का० प्र०
श्री खरतर श्री जिन चंद्र सूरिभिः ।

(२७७)

(१९७)

संवत् १५५८ वर्षे -- सु० ११ गुरौ उपकेश ज्ञातीय श्री रांका गोत्र साण तथ सुत साठशू-
इडेन महाराज महिय -- युतेन आत्म श्रेयसे श्री मुनि सुव्रत स्वामि विवं कारितं प्रतिष्ठितं
श्रीमदूकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य संताने श्री कक्कसूरि पहे श्री देव गुप्त सूरिभिः ।

(१९८)

सं० १५६१ वर्षे पोस वदि ५ सोमे ओश वंशे लोढा गोत्रे तउघरी छाधा भाया
मैश्राणि सु० प्रेम पाल -- सुश्रावकेण - तेजपाल श्रेयोर्थं श्री अञ्जुल गच्छे श्री नाथ सागर
सूरिणामुपदेशेन श्री आदि नाथ विवं का० प्र० श्री र --

(१९९)

सं० १६६१ वै० सु० ज० प्र० सचटी - - - ।

(१०००)

सं० १९३१ मोघ शुक्र पक्षे द्वा० तिथौ १२ युधे श्री ऋपत जिन विवं कारित अउयर
नगर वास्तव्य श्री संघेग मलघार पुनमियां विजय गच्छे सार्वभौज महारक श्री जिन
चंद सागर सूरि पहाळंकार सोमित श्री जिन शांति सागर सूरिभिः प्रतिष्ठितं
मधुबन मध्ये ।

पटना म्युइयम ।

(३२३)

संवत् १८७४ शके १७३९ प्रवर्तमाने शुभ ज्येष्ठमासे कृष्ण पक्षे पंचम्यां तिथौ गोमदिने
श्री व्यवहार गिरि शिखरे श्री शांतिजिन चरण प्रतिष्ठितं महारक श्री जिनहयं सूरिभिः ॥

(२७८)

(६३४)

संवत् १९११ वर्षे शाके १७७६ शुचि ॥ ० दिने श्री शांतिजिन पाद भ्यासः । प्रतिष्ठितः
स्वरतर गच्छ भट्टारक श्री महेन्द्र सूरिभिः सेठ श्री उदयचंद भार्या पास कुमारजी ॥

उपसंहार ।

सर्व शक्तिमान परमात्माके कृपासे यह "जैन लेख संग्रह" एक सहस्र लेख सहित वर्षत्रयमें समाप्त हुआ । इस संग्रह के लेखोंके गुण दोष विचारकी आवश्यकता नहीं है । जैनियोंकी प्राचीन कीर्त्ति संरक्षण ही मुख्य उद्देश्य है । मुद्राकरके दोष से, संशोधन-कर्त्ताके प्रमाद इत्यादि कारणोंसे छपाई में बहुत अशुद्धियां रह गई हैं । प्रर्थना है कि विद्वज्जन अपराध क्षमा करें और सुधार कर पढ़ें । और पाठक जनोसे निवेदन है कि बहुत सी अशुद्धियां मूल में ही विद्यमान है, जिसको सुधारा नहीं गया है । पाठकोंके सुगमताके लिये ज्ञाति, गोत्र, गच्छ, आचार्योंकी अकारादिक्रमसे तालिका भी दी गई है । जिन सज्जनोने "संग्रहमें" मदद दी है उन सभीका मैं कृतज्ञ हूँ । यदि यह संग्रह जैन भाई आदरसे ग्रहण कर मुझे अनुगृहीत करें तो इसका दूसरा भाग शीघ्र प्रकाशित करने का उत्साह बढ़ेगा । अलमिति विस्तरेण ।

कलकत्ता

संग्रह कर्त्ता

ई० सं० १९१८

ज्ञाति-गोत्र

लेखांक

गांधि	...	५६-६२, ७५, २०८, २४०, २४६-२५५, २५६, ४२५, ६४८, ७५२
गुगलिया	...	५४६, ७५७, ८२०
गोखरू	...	८६, ६३, ४८५
गोलेच्छा	...	१४२, ३४०
चत्तकरिया	...	६८
चंडलीया	...	५९६
चरवडिया	...	४४९
चोरवेडिया	...	५५८
चोरडीया	...	१८२, ३०१, ५८१
चूदालिया,	...	८२२
चोपड़ा	...	५०६
चोपड़ा (गणधर)	...	७७१, ७८५, ७८७
छजलानि	...	३१, ४२१, ४३६
छत्रवाल	...	६८७
छाजहड	...	५३३, ७१२
छाव	...	२८२
जडिया	...	१२०, ४९०
जारडडिया	...	३३
जम्मड	...	२२५
जांगडा	...	४८०
जारडडा	...	६२२
जाणेचा	...	४
टप	...	४६८, ६७८, ७५८
डागा	...	१२१
डागलिक	...	४१७
ढीक	...	४७
तातहड	...	१२८, ४७८, ५३१

ज्ञाति-गोत्र

लेखांक

तिलहरा	...	६२५
तीवट	...	५५०
दणवट	...	७७६
दूगड़	...	३६, ४४, ५७, ६८, ८५, १४६, १४८, १५०-१६३, १६५, १६६-१६८, १७४, १७७, १७६, १८४, २७४, ३०४, ३०६, ३३६, ३४१, ३५२, ४३४, ४७०, ७३४
दुधेडिया	...	२२, ६६२
दोसी	...	२२०
धनेरिया	...	५३९
धाडेवा	...	१८३
धीर	...	३०३
धुल्ल	...	७५९
नवलखा	...	२६४, ३४३
नाहटा	...	४७३, ४६६
नाहर	...	५, ४६६, ४६२, ६१५, ६५८, ६६६, ६६३
पमार	...	५००
पामेचा	...	६०९
पावेचा	...	६१६
पालडेचा	...	४६७
पीपाडा	...	२६४, २६५
पीहरेचा	...	६७२, ६७६
पोसालेवा	...	६३
बच्छस	...	५७३
वरडा	...	१२६
वर्द्धन	...	६७१
वरहुडिया	...	६२

ज्ञाति-गोत्र	लिखांक
{ बहुरा	१०१, ४४८
बुहरा	५५६
बाप(क)पा	३८६, ७३८, ७७४, ६२०
बावेली	४२६
बांठीपा	११८
बांभ	५३
बाँछाच	५६४
भण्णाली	१०
{ भंठ	५६२
भांडागारिक	६८१
भंडारी १७, १७०, ५८७, ५६६, ६१६, ७५१, ८५३	
भूरि	५०८
भोर	१०८
भोडा	४६१
भोगर	८१६
भंहीरा	७०६
भडोवरा	६०२
भिरडीया	६५६, ६७३
स(म)हणोत्र	८२८, ८०४, ६०५
... ..	६०७, ६११
भूधाता	१७५
भाहू	१६६, ३०५
रायजडारी	८५०
रांका	६६७
लिगा	५३
लूणीया	८, ६६६
लूमड	५०२

ज्ञाति-गोत्र	लिखांक
लोडा	६२२, २१३, २१४, ३०७-३११
... ..	३२६, ४३३, ४४३, ४७८, ६०७
... ..	७७३, ७८०, ६२६, ६६०, ६६८
वरलड	२३
वलहि (रांकाशाखा)	७४
{ वाहडा	८३०
वहरा	७३२, ७३३, ७३५, ७६७
घारडेचा	३७
वालत्य	६६३
विदाणा	६०६
वीराणी ३००, ३१३-३१५, ३३५, ३४८, ३५२, ३५३, ३५६, ३६१, ३६३, ३६५, ३६७, ३७१, ३७३, ३७५, ३७७, ३७८, ६८१	
वैलज	८८६
{ वेंच	८६०
वेदमहता	१५२
वोररायग	८५५
सर्चीकी	२४३, २६७
मुचेंत	१५१
मुदिनित्र	३०
सनवडिया	७१४
सावरा	११, १५०
रा	२१५
रायगा	२, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००
सैठान	२२, ३१
सैठ (प्रिडि	६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००
लिपडोया	१०६
सैठान	२२, ३१
सैठान	२२, ३१

ज्ञाति-गोत्र

लेखांक

श्रीमाल—	३, ६, ९, २४, ५५, ६६, १००, १०४,
	१११, ११६, ११७, १२५, १२७, १३२,
	१८०, २५७, ३८३, ४०७, ४२२, ४२३,
	४२७, ४३०, ४३७, ४५२, ४५४, ४७६,
	४८१, ४६४, ४८८, ५०६, ५१०, ५१६,
	५३२, ५३६, ५५४, ५६१, ५७२, ५७४,
	६०६, ६०८, ६१४, ६३०, ६५३, ६७३,
	६७४, ६८२, ६९०, ६९१, ६९३, ६९७,
	७४०, ७४१, ७४५, ७५३, ७६८, ७६९,
	८२५, ८२७, ८६६, ९००, ९१५

श्रीमाल (लघुशाखा) ... २५, ६२८

श्रीमाल (बृद्धशाखा) ... २६५, ६८५

श्रीमाल (गोत्र)

गोबलिया	४१२
मेवरिया	२८४, ४१३
चंडालेबा	८३०
जम्बहरा	३६४
जरगड	१६३
टांक	१२
ढुडडा	३८
ढोर	४३
दोसी	३६१, ७६१
धामी	६७५
श्रीधीद	५२८
नलुरिया	६२४
पाताणी	७५०
पापड़	७७०

ज्ञाति-गोत्र

लेखांक

फोफलीया	७३७, ८२३
बदलीया	२००, २३१, ३२१
बहरा	५२१
भांहावत	५७७
भांडिया	४२, २८८, ७६३
मउवीया	४१४
महता	२१८, २६०
महरोल	६६
माथलपूरा	११०
मीठिप्पा	१८७
बहकटा	४६३
साह	७८
सिघूड	४४७, ५०३, ५२४
श्री श्री	११८, २६२, ६६४, ६६६

,, ,, पलहयड (गोत्र) ... ५५६

प्राग्वाट (पोरवाड)	२, १५, ४०, ५२, ५४, ५८,
	७०, ७२, ८०, ९१, ९४, १०६, १५२,
	१५७, २८०, २८३, ३६२, ३६३, ३८५,
	३८८, ३८९, ४०५, ४२४, ४४४, ४४६,
	४५६, ४६३, ४६६, ४८३, ४८४, ४८६,
	५०४, ५११, ५३५, ५३७, ५३८, ५४५,
	५४६, ५५३, ५५७, ५६३, ५८५, ५९५,
	६४७, ६४९, ६५०, ६६०, ६६१, ६६७,
	६८४, ६८९, ६९८, ७००, ७०४, ७१३,
	७१४, ७४२, ७५५, ७६२, ७७५, ७७७,
	७७९, ८३६, ८३९, ८४६, ८४९, ८५१,
	८५३, ८५४, ८५७, ८६७, ८७१, ८७७,

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक	ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
प्राग्वाट (वृद्धशाखा)	१५५, ८५४	नता	५५६
[गोत्र]		नागर	६५१
बोडारी	६४६, ६४८, ६५६	नारसिंह	
भुलर	४२८	[गोत्र]	
दोमी	६५१, ६६६	कोरडे	६५१
भडारी	६२१	नीमा	६५१
मुडलिया	७३	पल्लीवाल	६५१
लोवा	१२६	पापहीवाल	६५१, ६५२, ६५३
अग्रवाल [अग्रोत्क]		संजिदगी (मद्यतिमाण)	६५१, ६५२, ६५३
[गोत्र]		गोत्र	
गामल	३२६		
गोयल	४५३		
गिषल	१५५		
गामिल	३५५		
अत्ताल			
[गोत्र]			
गोयल	३५५		
भुर			
खेहेलवाल			
[गोत्र]			
गोवा			
नाटलवाल			
खेसवाल			
[गोत्र]			
भुर			
भुर			

ज्ञाति-गोत्र	लेखांक	ज्ञाति-गोत्र	लेखांक
मुंडतोड	१७१, १७२	गरज	८८९
रोहदिया	१६०	गोत्र (ज्ञाति, वंशादि उल्लेख नहीं है)	
चायडा	२१६	उजानल	८८०
वार्त्तिदीपा	१६	ठसम	५४३, ७६७, ८६३
सयला	१६२	ओष्टु	५५५
मान्गण	८५	काठुड	७१५
मोट	५४०, ८८६	गोठी	५६७
राजपूत		मोरवटांगु	८०५
चाहमान	८४४	जलहर	५७८
चौलुकन	६४२	डोसी	६२०
प्रतिहार	६४५	दूताड	६८१
राठउड	७४३	धाय	५८४
सोलंकी	८५६	फसला	५६८
लघुशाखा	२६१	मिधूज	१६२
वधेरवाल	२२८	मुहता	६४३
[गोत्र]		राउखा वरही	५८६
राय भंडारी	४३८	रुहुराली (!)	५४७
शंखवाल	७२७	वणागीआ	५७६
शानापति	६२८	वपुगणा तुडिला	१०२
पंडरेक	८४२	वालडिवा	१९७
सीढ	७६८	श्रवाणा	५८६
हुषड	३४, ५०७, ५५१, ५७१, ६६६, ६८६	पटवड	७६४
[गोत्र]		पांटरा	६१६
	५०२	संखवालेचा	७६६
	१६		
	६५		



संवत्	नाम	लिखांक	संवत्	नाम	लिखांक
१४६७	देवगुप्त सू०	२३८	१५८३	देवगुप्त सू०	६६८
१४६६	कक सू०	२१६।४७१	१६०३	कक सू०	७१७
१५११	"	१३		उत्तराध गच्छ ।	
१५१२	"	४०१।६२३	१६८०	ऋ० ताराचन्द्र	१६७
१५१५	"	५३४		[क] छोलीवाल गच्छ ।	
१५१७	"	५५८		विजयराज सू०	५६४
१५२४	"	५०।२२६	१५५४	कडुआमति गच्छ ।	
१५२५	सिद्ध सू०	५१		८०१
१५२६	कक सू०	६६४	१६८३	कमलकलसा गच्छ ।	
१५२८	देवगुप्त सू०	६२५		रत्न सू०	६७७
१५४६	"	३०	१७९०	कमलविजय गणि	
१५४६	"	६७६		विजयमहेन्द्र सू०	६७१
१५५६	"	७१०	१८६१	डुंमरविजय गणि	
१५५८	"	६६७		कृष्णार्षि गच्छ ।	
१५५६	"	५६६		प्रसन्नचंद्र सू०	४२६
१५५६	कक सू०	६७२	१३७६	जयशेखर सू०	५८६
१५६२	देवगुप्त सू०	१२८।४६७	१५०६	नयचंद्र सू०	६८।७६८
१५६३	"	२०		कोरंट गच्छ ।	
१५७६	सिद्ध सू०	७४		नन्नसू० सं०	
१५८५	"	१५६	१३४०	ककसू० पट्टे	११५
१६३४	देवगुप्त सू०	६२८		सर्वदेव सू०	
१६५६	सिद्ध सू०	८६०		सार्वदेव सू०	७६६
१५०१	कुंकुम सू०	७३०		"	४१७
	विवंदणीक गच्छ ।		१४८२	...	३७
	(उपकेश)		१५०६		६०३
१५२७	मर्त्त सू०	१८	१५५३		
१५६६	कक सू०	६६७	१५७६		

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक	
	स्वरतर गच्छ ।		१५३६	"	२८१४८८	
१४१२	जिनचंद्र सू०	२३६	"	जिनसमुद्र सू०	६१७	
	हरिप्रभगणि		१५३७	"	"	७३५
	मोक्षमूर्त्तिगणि		१५४८	"	"	२२०
	हर्षमूर्त्तिगणि		१५५१	"	"	४१
१४३८	जिनराज सू०	२११	१५५३	"	४६३	
१४४१	"	६१५	१५५८	जिनहंस सू०	१०	
१४५६	"	५८३	१५६०	"	४४७	
१४६६	जिनचंद्रन सू०	२२	१५६३	"	२८६	
१४७६	जिनभद्र सू०	४६५	१५६५	"	१८७	
१४८४	"	११६	१५६८	"	४६६१७३	
१४९५	"	२७५	१५७६	"	४२	
१४९७	"	८	१५७६	"	५६५	
१५०३	"	६२०	१६५६	जिनचन्द्र सू०	७८०	
१५०४	"	४३१	१६५७	"	४३	
१५०७	"	२१४१४७३१७६७	१६६१	"	५०३	
१५०८	"	५०६१७२२१७३२	१६६६	"	१०३	
१५११	"	१२१	१६६८	"	१३५	
१५१२	"	४७८	१६६६	"	७७३	
१५१५	"	१०६१७५६	१६७६	जिनराज सू०	७१७	
"	जिनचन्द्र सू०	४७	१६७८	जिनराज सू०	७७१ ७८१ ७९१	
१५१७	"	७७६	१६८६	"	"	
१५१८	"	१०३.१८६१०१५.२१७१४६६		१० कर्मवर्ष	७७१	
१५२०	"	२१८१ ६१०	१६८८	"	७०७	
१५२८	"	७८	१६९०	जिनराज सू०	}	
१५३२	"	१०७		१० कर्मवर्ष		
१५३४	"	४८०		१० कर्मवर्ष		
१५३५	"	५१०		१० कर्मवर्ष		

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
१८२१	जिनलाम सू०	६००	१५२७	"	१५१२
१८४४	जिनचन्द्र सू०	४५	१५२८	"	६६२
	वा० बमृतधर्म		१५२९	"	२८४
	वा० क्षमाकल्याण		१५५१	"	१५४
१८४८	जिनचन्द्र सू०	६२७।६३३	१५२४	उ० कमलसंयम	२५६
१८४६	"	३५८	१५२७	"	२५८
१८५६	"	१३८।१४४	१५६२	जिनतिलक सू० पट्टे	४१४
१८५५	जिनहर्ष सू०	३३८		जिनराज सू०	
१८६१	"	६३		श्रीभिः	
१८७१	"	८७।५२७	१५६६	जिनचंद्र सू०	२६०।५२४
१८७४	"	२६१।२६२।५२५	१५६७	"	५६७
१८८५	"	१६६	१५७१	जिनरत्न सू०	१६२
१८७७	"	२२४।३३८।३४०	१६६६	आचार्य्य सिंह सू०	७२३
१८००	जिनसौभाग्य सू०	१२।३०६	१६८६	रत्नतिलक सू०	१६६।२७२
१८०३	"	६६६	१७०७	धा० लक्ष्मिसेन गणि	
	पं० हीराचंद		१७०७	कल्याणकीर्ति	
१८०४	जिनसौभाग्य सू०	५६६	१७८०	जिनरंग सू०	२०५
१८०७	"	१४७	१७६७	"	२०२
१८१०	"	३४७	"	वा० भुवनचंद्र	२०३
१८५७	जिनकीर्ति सू०	३८५		जिनकीर्ति सू०	६३७
१५०४	धा० शुभशीलगणि	१७१।२३६।	१८०३	फरमचन्द्र	
		२५६।२७०		हरखचन्द्र	
१६११	धर्मसुन्दरगणि	७७०		प्रतापसी	
१८५७	उ० हीरधर्मगणि	४२५	१८२१	महेंद्रसागर सू०	६७
१५१५	जिनसुन्दर सू०	४८०	१८४६	रूपविजय	२०६
१५१६	"	४८२	१८७६	उ० रत्नसुन्दरगणि	६८
१५१६	जिनहर्ष सू०	४८।१६१।	१८७७	कीर्त्युदयगणि	५८०
		२१६।२८१।४१८			

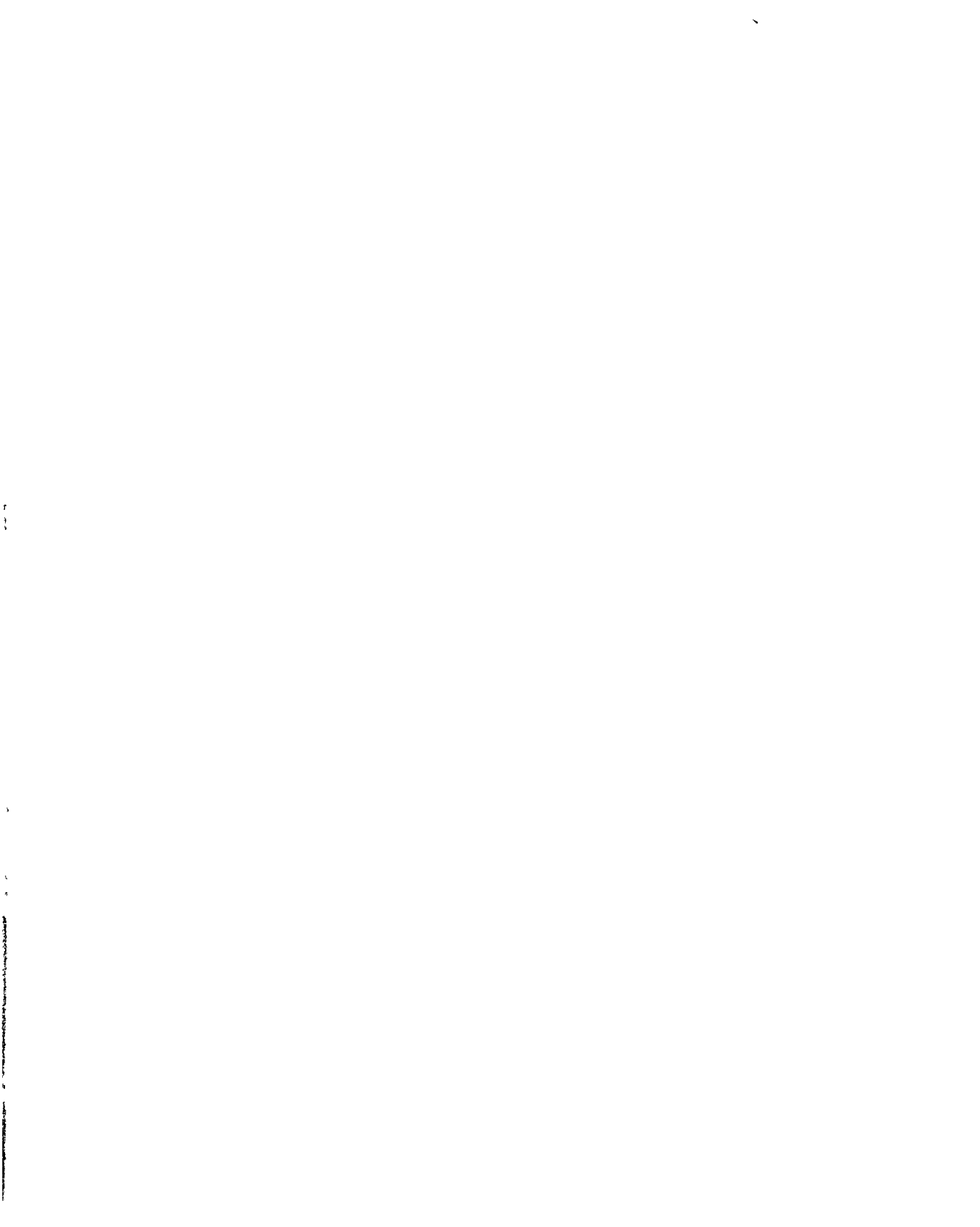
संक्रम	नाम	संख्यांक	संक्रम	नाम	लेखांक
२२०	विद्यालय म०	३०३	१००३	जयपतीयगच्छ	} ३६६
१२१	विद्यालय म०	०००३५५	१५३०	उदयचन्द्र म०	
१२२	विद्यालय म०			नागरनंद म०	
१२३	विद्यालय म०			तपा गच्छ ।	
१२४	विद्यालय म०	२२=१२४३१	१४०५	सोमसुंदर म०	१३१
१२५	विद्यालय म०	२६३-०६७	१४०५	"	८३६
१२६	विद्यालय म०	२४४ २६८ ८६ ३४	१४०६	"	४६६
१२७	विद्यालय म०	३६६	१४०६	"	७००
१२८	विद्यालय म०	६४६	१४०६	"	५५३१७३
१२९	विद्यालय म०	५२०	१४०६	रत्नसिंह म०	६७७
१३०	विद्यालय म०	५२०	१४०६	"	६६
१३१	विद्यालय म०	५२०	१४०६	भुवनसुंदर म०	६७४-६७६
१३२	विद्यालय म०		१४०६	हेमहंस म०	५४८
१३३	विद्यालय म०	८६६	१४०६	"	३३
१३४	विद्यालय म०		१४०६	"	६२२
१३५	विद्यालय म०		१४०६	"	७०४
१३६	विद्यालय म०	४५६	१४०६	मुनिसुन्दर म०	६४७-६६८
१३७	विद्यालय म०		१४०६	जयचन्द्र म०	६३१
१३८	विद्यालय म०	२१३	१४०६	"	४७५
१३९	विद्यालय म०	२७७	१४०६	उदयनंदि म०	४७७
१४०	विद्यालय म०	१०१	१४०६	रत्नशेखर म०	४७७
१४१	विद्यालय म०	४३२	१४०६	"	४१२६७५
१४२	विद्यालय म०	६७५	१४०६	"	४०५
१४३	विद्यालय म०		१४०६	"	८१८
१४४	विद्यालय म०		१४०६	"	२७६१७४२
१४५	विद्यालय म०	६३०	१४०६	"	४०५७३१६२६
१४६	विद्यालय म०		१४०६	"	३४२
१४७	विद्यालय म०	६३५	१४०६	"	३४
१४८	विद्यालय म०	६८२	१४०६	रत्नसिंह म०	

चंद्रप्रभाचार्य गच्छ ।

चित्रवाल गच्छ ।

चैत्र गच्छ ।

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
१५१२	विजयतिलक सू० पट्टे	७८७	१५३६	"	५२०
	विजयधर्म सू०		१५४६	"	७६६
१५१७	लक्ष्मीसागर सू०	२८०१४८३	१५५१	"	७३७
१५१६	"	६६३५	१५४५	सोमरत्न सू०	५१०
१५०९	"	४४४१५३५	१५७०	"	४२१
१५२२	"	५८६	१५५२	सोमसुन्दर सू०	७७६
१५२३	"	१४		इन्द्रनन्दि सू०	
१५२४	"	१०५१०६१२८३१५६०		कमलकलश सू०	१५
१५२५	"	४८४१६२४	१५५३	हेमविमल सू०	
१५२६	"	३८८१७३६		कमलकलश सू०	
१५२७	"	६६३	१६०३	कमलकलश सू०	६४६
१५२८	"	७०१४८५१६२४	१५५६	हेमविमल सू०	५८०
१५२९	"	७४७	१५६४	"	११
१५३०	"	५८१३६६	१५६६	"	२०१
१५३१	"	३६१५३	१६७१	"	६४६
१५३२	"	५७०	१५७६	"	
१५३३	"	७३१४४६		पं० अनंतहराराणि	६६६
१५३४	"	४८६	१५७०	अतरत्न सू०	
१५३५	"	२०२	१५७६	सीनायगागर सू०	२६३
१५३६	विजयसुन्दर सू०	७६०	१५७८	राजराज सू०	२०४
१५३७	"	४४३	१५८०	यत्नराज सू०	६१८
	सोमदेव सू०	४४४	१६०३	त्रिशालासोम सू०	१५३
	सोमदेव सू०	७३६	"	विजयदान सू०	१४६-१४७
१५३८	विजयसुन्दर सू०	५३८	१६१२	"	१५०
१५३९	"	७५५	१६१५	सीमप्रियसू सू०	७१३
१५४०	सोमसुन्दर सू०	७५३	१६२५	"	१०७
१५४१	विजयसुन्दर सू०	६५३	१६२८	"	६५७
१५४२	सोमसुन्दर सू०	६२२	१६३०	"	२११-२३, १२५



संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
	त्रिभुविया गच्छ ।				
१४२०	धर्मदेव सू० सं०	४२७	१४८३	सिंहदत्त सू०	५२१
	धर्मरत्न सू०		१४९५	विनयप्रभ सू०	४८१
	देवानंदित गच्छ ।		१५१७	गुणदेव सू०	५१०
१३०३	सिंहदत्त सू०	६८४	१५२९	सौमरत्न सू०	८१६
	धर्मघोष गच्छ ।		१५७२	गुणवर्द्धन सू०	६७७
१४०६	सागरचन्द्र सू०	४०६	१२३५	नाणकीय गच्छ ।	
१४५८	मलयचन्द्र सू०	६०७	१३२३	शांति सू०	८६२
१४५६	"	४१०	—	धनेश्वर सू०	६०२
१४८२	पद्मशेखर सू०	४२८।४६६		वीरचन्द्र सू०	८६६
१४६२	"	५५२	१५३६	नाणवाल गच्छ ।	
"	महेन्द्र सू०	५०८		धनेश्वर सू०	१०९
१५०३	विजयनरेंद्र सू०	५८७	१५५६	निगमा विभाषक गच्छ ।	
१५०५	साधुरत्न सू०	१७		इन्द्रनदि सू०	४०४
१५१७	"	५		पल्लिवाल गच्छ ।	
१५०९	पद्मसिंह सू०	४७४	१५०८	...	५७७
१५२६	महेन्द्र सू०	८६३	१५१३	यज्ञ सू०	५३३
१५२६	पद्मानन्द सू०	७७६	१५२८	नम सू०	५३१
१५३३	"	७३७	१५५८	उजोयण सू०	६७१
१५५१	पुण्यवर्द्धन सू०	४६२	१६६८	...	७०४
१५५८	"	११०	१६७८	...	७०६
१५५७	"	६०२		पवीर्य गच्छ ।	
१५५६	नंदिवर्द्धन सू०	५६५	१५०७	यशोदेव सू०	४१०
१५५०	उद्यप्रभ सू०	३८		पार्श्वनाथ गच्छ ।	
१५८७	नयचंद्र सू०	७६	१७८१	...	३१६
	नागेंद्र गच्छ ।		१८०१	...	८३
१८८८	...	७३०	१८३०	जिनदत्त सू०	५५
१५५६	रत्नप्रभ सू०	६८६	"	मानुचन्द्र सू०	६०

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
	महुकर गच्छ ।			विधिपक्ष गच्छ ।	
१५२७	धनप्रभ सू०	६६५	१५०५	जयकेशर सू०	६५६
	यशसूरि गच्छ ।			वृद्धपोसल गच्छ ।	
१२४२	५३०	१८८१	आनंदसोम सू०	६८५
	रुद्रपल्लीय गच्छ ।			वृहद् गच्छ ।	
१४५४	देवसुन्दर सू०	४६१	१२१५	पं० पद्मचन्द्र गणि	८३३।८३४
१५०१	सोमसुन्दर सू०	६६०	१२६०	शातिप्रभ सू०	७०२
१५१६	”	१२२	१३१६	जयमङ्गल सू०	६४३।६४४
१५२५	”	७३४	१४३३	विनयचंद्र सू०	८५८
१५३२	गुणसुन्दर सू०	५७६	१४३८२	अमरप्रभ सू०	३६
१५६६	च० गुणप्रभ	५०१	१४८६	प्रभ सू०	२७४
१६०५	भावतिलक सू०	४६९	१४६३	हेमचन्द्र सू०	६१९
	लुंपक गच्छ ।		१५०८	महेंद्र सू०	६८१
१६२५	उ० सागरचंद्र गणि	१४८।१५०	१५११	रत्नाकर सू०	२३
१६३१	अजयराज सू०	१८४।२०७	१५१९	महेन्द्र सू०	५५६
१६५५	”	२३५		सरवाल गच्छ ।	
१६३३	अमृतचंद्र सू०	१६८।१६९	१११०	१
	विजय गच्छ ।			संडेरक गच्छ ।	
१७१८	सुमतिसागर सू०	७३८	१२।८	८३९
१६३१	शातिसागर सू०	१६७।३४६	१३५०	सुमति सूरि	५१६
	३५१।३५४।३५६।३६०।३६२		१३७६	”	४१५
	३६४।३६६।३६८।३७०।३७२		१४५०	शांति सू०	७५७
	३७६।३७८।३८०।३८२।१०००		१४६६	सुमति सू०	७५८
	विद्याधर गच्छ ।		१४७२	शांति सू०	४६४
१४२६	चदयदेव सू०	८८६	१४८३	”	४६८
१५३४	हेमप्रभ सू०	७६८	१४८६	”	५४६

संक्र	नाम	नं०	संक्र	नाम	नं०
१४०१	विद्यागम सू०	१३	१४०१	श्री सू०	२२०
१४०२	विद्यागम सू०	१४	१४०२	साधुसुन्दर सू०	३५५
१४०३	श्रीसुन्दर सू०	१५	१४०३	श्री सू०	५५३
१४०४	रत्नशेखर सू०	१६	१४०४	भ० विद्यागम सू०	५६५
१४०५	सुविद्यमान सू०	४६०	१४०५	श्री सू०	१२३
	श्रीसुन्दर सू०		१४०६	साधुसुन्दर सू०	५६६
१४०६	हेमचन्द्र सू०	१५६	१४०७	श्री सू०	२०
१४०७	भारतिसू सू०	१६२	१४०८	सुप्रसिद्ध सू०	३५३
१४०८	रत्नशेखर सू०	४७०	१४०९	श्री विद्यागम सू०	४६७
१४०९	हेमचन्द्र सू०	४२०	१४१०	विद्यागम सू०	५१०
१४१०	नयनन्द सू०	४८८	१४११	विद्यागम सू०	१६
१४११	श्री सू०	५८५	१४१२	कनकविद्यागम सू०	१८१
१४१२	श्री सू०	५३२	१४१३	शुभकीर्ति	२७
१४१३	नयनन्द सू०	६७	१४१४	विद्यागम सू०	१६८
१४१४	श्री सू०	३८३	१४१५	विजयानन्द सू०	७५
१४१५	सर्वानन्द सू०	१८२	१४१६	भ० श्रीविद्यागम सू०	८५४
१४१६	रत्नशेखर सू०	६४	१४१७	कृष्णविद्यागम	८५५
१४१७	वा० मोदराज गणि	६३१	१४१८	विजयसूक्ति सू०	३६३
१४१८	दयारत्न	६१३	१४१९	कर्म विजय सू०	८१
१४१९	पद्मानन्द सू०	१७५	१४२०	श्रीसुन्दर सू०	६१३
१४२०	उदयवल्लभ सू०	६६९	१४२१	अमृतधर्म	२४६
१४२१	भ० विजयकीर्ति सू०	७४६	१४२२	अमृतधर्म वाचनाचार्य	३०५
१४२२	सुविहित सू०	५७४	१४२३	विजयजिनेन्द्र सू०	७६६
१४२३	साधुसुन्दर सू०	१२५	१४२४	वा० चारित्रनंदि गणि	३४१
१४२४	श्री सू०	१५२	१४२५	विद्यागम सू०	३४२
१४२५	भावदेव सू०	५६१	१४२६	वा० चारित्रनन्दन ग०	४३५
			१४२७	॥	४३६

संवत्	नाम	लेखांक	संवत्	नाम	लेखांक
"	जिनमहेंद्र सू०	४४०		मूलसंघ [चरस्वती गच्छ]	
१९१०	"	१६३/१६६	१५२३	भ० विद्यानन्दि	६८०
१६२०	धर्मचन्द्र सू०	५७	१५२४	भ० विमलकीर्ति	५८०
"	वा० सदाशाम	४४	१५२५	विमलेन्द्रकीर्ति	६६६
१८२४	सागरचन्द्र ग०	१७६	१६०४	भ० देवेन्द्रकीर्ति	३२५
"	ड० सदाशाम ग०	१७७	१६०८	भ० शुभचन्द्र	५०२
१६३०	सागरचन्द्र ग०	१७४	१६३८	भ० मेरुकीर्ति	२०१
१६३५	मुनिपयजय	१८२/१८३	१६६०	विईकीर्ति	४०१
१६३६	जिनमुक्ति सू०	२३३	१६६६	...	१५०
	शालचंद्र गणि		१७००
१६५६	जिनचन्द्र सू०	१६३	१७११	...	६४०
	मूलसंघ ।		१७४६	...	६४०
१९३६	शुणभद्र सू०	३८८	१६५०	कनककीर्ति	२३५
१९३६	जिनचंद्र देव भ०	३२३		मूलसंघ-नन्दिसंघ ।	
१५०३	देवकीर्ति	२७६	१४६०	भ० गवतकीर्ति	१०१
१५०४	जिनचन्द्र सू०	४७२		मूलसंघ-काष्ठासंघ ।	
१५३५	विद्यानन्द	२८६	१५३४	विभुनकीर्ति	१५१
"	भ० ज्ञानभूषण	४८७		काष्ठासंघ ।	
"	"	५८३	१३	...	५०१
१५३८	...	६५३		काष्ठासंघ [मायुर गच्छ]	
"	...	२८८	१५३२	भ० मायुर	३३६
१५४८	भ० जिनचन्द्र देव	३२७	१८८१	जिनकीर्ति	१०५
१५४६	भ० जिनचन्द्र देव	६६	५६१०	महेशकीर्ति	३०५
१५५६	...	६२५		-----	
१६०७	सुमतिकीर्ति सू०	६३६			
१६०३	भ० रावण	१-१			
	जयकीर्ति देव				

AUGARCHAND BHAIRODAN SETHIA.
JAIN LIBRARY.
BIKANER, RAJPUTANA.

एगर्चन्द भैरोदात सेठिया
जैन ग्रन्थालय,
श्रीकान्ठ, (राजपुताना.)

